

इतिहासकार जेम्स टॉड

व्यक्तित्व एव कृतित्व

सम्पादक

डॉ. हुकमसिंह भाटी

निदेशक

प्रताप शोध प्रतिष्ठान उदयपुर



प्रकाशक

प्रताप शोध प्रतिष्ठान

विद्या प्रचारिणी सभा भूपाल नोबल्स संस्थान उदयपुर

(रात्रस्थान)

प्रकाशक ---
प्रताप साध प्रतिष्ठान
उदयपुर 313 001

प्रथम मस्करण 1992

मूल्य 150 रु

७ ३ ९

सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन

मुद्रक
अनुग्रह प्रिन्टर्स
उदयपुर

विषय—सूची

सम्पादकीय	आलेख	(i vi)
		पृष्ठ
1 टाड एन सत्राहक	डा रामनेन कुमार गाभा	1
2 जेम्स टाड जीवन दशत और कृतित्व	डा देवानान पानीवान	12
3 टाड की दृष्टि में राजपूत जाति	डा मीना गौत	30
4 टाड की दृष्टि में पश्चिमी भारत के मंदिर और उनका स्थापत्य	डा गान्धन कृष्ण पुरोहित	6
5 कनल जेम्स टाड समाज सुधारक	डा गायान याम	64
6 कनल टाड का समाज शांतीय योगदान	डा नीलन शमा	6
7 टाड के इतिहास लेखन में सांस्कृतिक आकलन	डा विद्वानसिंह	97
8 टाड के आर्थिक आकड	डा बी एन भागनी	92
9 एनएच के आलोचक में राजस्थान राज्यों के प्रायः प्राय	डा इकमसिंह भागी	110
10 कनल जेम्स टाड का आचार्य लेखा विवरण	डा वृजमोहन जाबलिया	122
11 टाड द्वारा वर्णित राजस्थान के दुर्मि राज्य	डा कमला मालू	130
12 टाड के नाम मन्तराज भीमसिंह के पत्र	डा गिरिशनाथ मायूर	138
13 टाड का मवाद सामन्तों के साथ वैलनामा	डा द्वारकानाथ माथूर	142
14 कनल टाड एवं पुरोहित रामनाथ रायन एथियाटिक सोसायटी लंदन	डा राजद्रनाथ पुराहित	146
15 म टाड का वाडुलिपि मद्रह	शरदचंद्र जाबलिया	152
16 टाड की सिरौही यात्रा	ड वमनसिंह चूडावत	157
17 टाड की बनेप व देगु ठिकाने की यात्राएं		165
18 राजस्थान के इतिहास के सिद्धांत कनल टाड	जमवतसिंह मिश्री	168
19 कनल टाड व्यक्ति व एवं कृतित्व	डा गायानाथ शर्मा	172
20 कालजयी धर्म इतिहासकार टाड	ड वरुणसिंह चूडावत	200

आमुख

साईं दशक पूर्व प्रताप शोध प्रतिष्ठान की स्थापना व समय जो सपना टा स्वरूपसिंहजी व गुमानसिंहजी न सजोया था व प्रथम माकार हान जा रहा है । यह विषय हृष का विषय है कि इस वष प्रतिष्ठान के तत्वावधान म इतिहास साहित्य व संस्कृति से जुड़ी हुई निम्नलिखित घाट यात्राएँ क्रियाविन हा रही है --

- 1- मेवाड के राजस्थानी इतिहासिक प्रथा का सर्वेक्षण
- 2- मेवाड क पट्ट - परधाना का प्रकाशन
- 3- पाण्डुलिपिया का परिरक्षण
- 4- पाण्डुलिपिया की परीक्षा
- 5- शुभ पाण्डुलिपिया का जराकम
- 6- प्रताप शोध प्रतिष्ठान क प्रथा का सूचीकरण
- 7- मेवाड के अभिलेखों का सम्पादन
- 8- महाराणा भामसिंह जागीरदारा रे गाव पट्टा री हकीकत व ' का सम्पादन

इसक लिये भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली और भारत सरकार राष्ट्रीय अभिलेखागार दिल्ली का और स 1 35,000/- रु का अनुदान मिला है । इन योजनामा क माध्यम स प्रतिष्ठान म सक्ता मून पत्र पर वाना व महत्वपूर्ण दस्तावेजा के अतिरिक्त भांडर, गोगूदा और घग्गा घाटि ठिकानो की प्राचीन बहियो, चौपनिया का सप्रह हो चुका है और प्रथा के सम्पादन व प्रकाशा का काम प्रगति के पय पर है । यह विषय सन्तोष का विषय है कि प्रतिष्ठान क निदेशक डॉ हृकमसिंह भाटा निष्ठापूर्वक इस काय मे सजग है । भूपाल नायक संस्थान, अनुसंधान के इस क्षेत्र को विराट स्वरूप देने के लिये कृत सक्षम है ।

इस पुस्तक म इतिहासकार जेम्स टाड क व्यक्तित्व एवं कृतित्व सम्बन्धी विद्वानों के भारत सजोय गय हैं । इसम शोधापियों का अनिष्ठा वश्यक मागजन व प्ररणा मिलगी ऐसा मरा विश्वास है । प्रतिष्ठान की प्रकृतियों स जुडे सभी विद्वानों व सत्यामा का हृदय म आनार व्यक्त करना हू ।

कु मनोहरसिंह कृष्णागत
प्रबंध निष्ठाक
भूपाल नायक संस्थान टाणपुर

सम्पादकीय

गौरवमय इतिहास और उज्ज्वल सस्कृति व बजोड मगम बात हमारे राजस्थान के कई विद्वानों को इतिहास अनुसंधान व लेखन की ओर प्रेरित किया जिसमें इस वीर-वसुंधरा पर राजस्थानी गद्य पद्य में इतिहास लेखन की प्रवाहमयी धारा स्फुटित हुई। इस वगमय धारा में एक विशिष्ट विद्वान जम्म टांड को इतिहासकारों का कड़ी में जोड़कर इतिहास व साथ खोज काय में मवथा जातिवारा परिवर्तन ला लिया। हमारे ज्ञान में यह कह सकें हैं कि यहाँ ख्यात बात बंशावली हाल हकाकत भीगत मान्दागत दचनिका रासो भमाल भूलना दवावत सनक रचनाशा में विगिष्ट याद्धाधो और रजवाडो का इतिहास कलमबद्ध करने की पुरुता परम्परा रही और इसी परम्परा में हमारे राजस्थान के इतिहास को जिलाए रखा। जम्म टांड ने इन परम्परायन इतिहास लेखन का आधुनिक स्वम्प लिया और मवप्रथम बना निकरग में इतिहास लिखकर उसने इतिहास आयाम के अनक नार खान दिए।

व्यक्ति जो पुरुषार्थी हान है और जिनमें कुछ कर दिलान का भावना प्रबल होनी है उस पुरुष बहुषायामा व्यक्तित्व के घनी कृतान के भागीदार हो जान है। टांड इसका एक अनुपम उदाहरण है। उसने एक ओर जहाँ राजनतिक प्रतिनिधि के रूप में कुशल प्रशासक की भूमिका निभाई ता दूसरी ओर राजपूताना के भूगान व इतिहास का गहरा स अध्ययन कर इतिहासवेत्ता के रूप में अपना परिचय दिया।

टांड ने राजस्थान का इतिहास क्या किया? इस विन्दु पर विचार करें और यहाँ के इतिहास लेखन की परम्परा पर अपनी नष्टि डालें ता मुख्यतः तीन बातें हमारे सामने आनी हैं—

- 1- टांड की इतिहास के प्रति अभिरुचि
- 2- राजस्थान का गौरवमय इतिहास
- 3- इतिहास सामग्री की विपुलता

टांड जन्मजात इतिहासज्ञ था। बचपन से ही इतिहास के प्रति उसकी गहरी रुचि था। उसने छठारह वर्ष की आयु में ही यूरोप के इतिहास का ज्ञान अर्जित कर लिया था। भारत में पाँच रलत हा उसने यन् विचार किया कि राजपूत जानि के सम्बन्ध में जिसका ज्ञान यूरोप के लोगों को नहीं है उस उजागर किया जाना समुच मानव समाज के लिए हितकर होगा। वह जब मवाड में आया और राजस्थान के इतिहास की गौरव गाथाओं से उसका परिचय हुआ ता उसके हृदय में इतिहास जानने की जिज्ञासा और प्रबल हो गई। सही अर्थों में देखा गया ता यहाँ के

योरथमय इतिहास ने टॉड की अपनी धीरे धीरे प्रकृष्ट किया। टॉड का महा की स्थानों बाने व तावतियों धीरे प्रकृष्टिहारे इतिहास की घटनाओं से रची हुई मिनी जियम उसके मन के इतिहास लेखन की धारणा धीरे गहरी हा रहा। इतिहास सामग्री की विपुलता न उसके काय का सुगम बना दिया।

इतिहास लेखन का प्रथम चरण है सामग्री संचयन। टॉड इसके महत्व का भवोभाति पहचानता था। उसने राजस्थान के राजवाडों में घूम कर धीरे धारणा व भाग से सम्पक साध कर पाहुनिपिया व प्रकाशित क्यों व अन्तर्गत शिवालय तादृश्य तादृश्य मित्र आदि इतिहास-विषयक विषय सामग्री संचयित की। उसने यह सिद्ध कर दिया कि यहाँ इतिहास नाम के साधना का अभाव नहीं है क्योंकि वाल्स घाट धीरे जम्म मित्र जैसे इतिहासकारों की यह मान्यता रही थी कि यहाँ न तो कोई इतिहास प्रथ है धीरे न ही योग्य म बौद्धिक परिपक्वता। टॉड ने धीरे धीरे परिश्रम कर इन पूर्ववर्ती विद्वानों की धारणा का सफाई कर दिया। टॉड ने सामग्री संचयन व गद्या धीरे एनलज रचना के बाद राजस्थान एथियाटिक सोसायटी की मेट कर अपनी मूर्क-धूम व उदारता का परिचय दिया।

टॉड ने अपने गुरु यती ज्ञानचंद से प्राचीन शिवालय तादृश्य आदि सम्भने में सहायता ली। इसके अलावा उसने पण्डितों व धारणा विद्वानों से यहाँ के परम्परागत रीति रिवाजों सांस्कृतिक पहलुओं धीरे इतिहास घटनाओं की जानकारी संचित कर बागीकि से इतिहास के मम की पहचानन का प्रयास किया। जिससे उसका एनलज बचल घटनाओं का लया जाता हो नहीं बल्कि राजस्थान के अतान का एक कोण बन गया। उसने हर घटना पर चिंतन करते हुए अपने विचार दिए हैं इतिहास सम्बंधित कई जटिल प्रश्नों के उत्तर न्य है, प्रत्येक युद्ध के कारणों धीरे परिणामों पर निष्कर्षों की है तथा घटनाओं के माद के माध अपनी लेखनी की भी साद न्या है जिससे वृत्तत सजीव व मौनिक बन पहा है।

इतिहास के प्रति उसका दृष्टिकोण व्यापक रहा है। उसने अतीत में गान लगाकर युद्ध समियानों के अलावा राजा महाराजाओं के क्रिया-कारण उनसे जावन धादशों, यहाँ कि सांस्कृतिक सोचानों धार्मिक विचारों, सामाजिक धारणाओं, प्राकृतिक प्रकाश भौगोलिक तथ्यों धीरे आधिक पहलुओं धारणा मानव जीवन से जुड़ कर पहलु का महत्व अध्ययन कर इतिहास रचना-विषया का एक नयी दृष्टि दी। यहाँ की न्याता व बाना में बचन घटनाओं का विवरण मिलता है टॉड ने अपने विद्वक से न बचन घटनाओं का विवरण कर उस इतिहास का स्वरूप न्या बकि इतिहास लेखन में यह व स्थानीय मान किम प्रकार उपयोगी सिद्ध न सक्त है इस धार

हमारा ध्यान आकृष्ट कराया। इतिहासकार नैरासी के बावजूद इतिहास लेखन के क्षेत्र में भारी रिक्रान्ता आ गई थी टॉड ने उसकी भरपूर प्रयास किया।

उसने इतिहास रचना के आयाम में चित्र बनाने को स्थान दिया। कप्टीन वाय और घासी नाम के दशों चित्रकारों से दुर्ग महल व मंदिर आदि भवनों के चित्र बनवाने का कार्य सम्पादित करवाया। इस पट्टनू ने उसके प्रयोग में सजीवता ला दी।

टॉड ने राजनतिक इतिहास के परिप्रसंग में सामाजिक व साम्प्रदायिक पहलुओं को मजान का सफल प्रयास किया। इसके लिए उनमें स्थानीय समाज रचना का चारिकी में अध्ययन किया और विशेषतः राजपूत जाति और जागीरदारी प्रथा के बारे में अपने मत लिखे और लोगों के संस्कारों, विश्वासों, धार्मिक और सामाजिक रीति-रिवाजों की स्पष्ट व्याख्या करत हुए। समाज एवं संस्कृति की निरंतरता को उपाहित करने का प्रयास किया जिससे उसका एनलज राजपूत जाति व समाज का काश बन गया। यहाँ का संस्कृति से बहू कितना प्रभावित था इसका प्रतिबिम्ब उसके व्यक्तिगत-वृत्तांत (Personal Narrative)¹ में देखा जा सकता है।

वह इतिहासकार होने के साथ कुशल प्रशासक भी था 1888 ई. में जब मेवाड़ में उसकी नियुक्ति राजनतिक प्रतिनिधि के रूप में की गई उस समय मेवाड़ की स्थिति बड़ी गंभीर थी। पिढारियों व लूटेरों की लूटमार के कारण कृषि, उद्योग पथे और व्यापार चौपट हो गये थे और मेवाड़ राज्य आर्थिक संकट में गुजर रहा था। मेवाड़ के जागीरदारों ने स्वयं महाराणा की आज्ञाओं की अवहेलना करने लग गये थे बल्कि उन्होंने मालमा गावों पर अधिकार जमा लिया था। ऐसी निकट परिस्थिति में सुधार लाने हेतु उसने महत्वपूर्ण कदम उठाए। लूटेरों का दमन किया, व्यापारिका का निभय पत्र जारी किये और मेवाड़ जागीरदारों के साथ कौलनामा कर महाराणा व उमरावों के बीच मत स्थापित करने का प्रयास किया। इसके लिए उनमें अपने सम्बन्ध में यहाँ के जागीरदारों से बनाए और उनकी अपने विश्वास में लिया। जागीर पट्टों की जाच परतान कर उनका नवामीकरण किया। एक बात यह विचारणीय है कि दूररे अग्रज अधिकाधिक की भाँति उनमें नियमों की लागू करने में कभी बल का प्रयोग नहीं किया और अल्प समय में ही एक कुशल व अन्दर प्रशासन के रूप में स्थिति प्राप्त कर ली। व्यक्ति के लिए अधिक प्रसिद्ध होना भी अभिशाप है। राजपूताना का रेजि

1 टॉड एनलज भाग 1 प 519-621 भाग 2 प 477-613 टुवाल्यूम इन दन 1950 ई

दृष्ट' धास्टर लोनी उसस ईर्ष्या करने सगा घोर उसन टाड पर शिवायतो की भडी सगा दी परतु टाड न होमता नही साया घोर बहु अपन कस्तव्य ना पानय करता रहा । अन्तत जाच पडतात करन के बाद लोना टाटा लगाए गए सारे धारोप मिथ्या प्रमाणित हुए ।

उसन एक अच्छे प्रशासक होने के साथ भूगोचवन्ता के रूप म अपनी पृष्ठान दी । अग्रजी सरकार को राजस्थान घोर उसन क्षेत्र म तनिक कायबाइया क लिए विभिन्न मार्गों पहाडों, घाटियों घोर कम्बों की स्थिति का नान हाना जहरी था । कम जटिल काय के सम्पादन का बीडा टाड न उठाया घोर कई भौगोलिक गुत्थियों को सुलभा कर उसन सबप्रथम राजस्थान का मानचित्र तयार करन का ध्य प्राप्त किया । पहल बने नकशा म चित्तौड का उदयपुर के उत्तर-पूव क बजाय दक्षिण पूव म बताया गया था । टाड ने अपन विवेक से इस प्रकार की अनुश्रुतिया का निराकरण किया । इतिहास लेखन म भी उसका यह धम उपयोगी प्रमाणित हुआ ।

समाज सुधारक के रूप मे टाड का योगदान कम महत्व का नहीं है । समाज मे व्याप्त कुरीतियों का धार न केवल यहा क जागीरदारों क शासकों का ध्यान घाट्ट करवाया बलिक जनता म सामाजिक जागति लाने का अनुकरणीय कार्य किया । इसक लिए उसन बेगार प्रथा घोर दामप्रथा उमूलन करन क आवश्यक कदम उठाए । घाटिवासों जानिया क साथ अच्छा आचरण करने के लिए यहा के राजा महाराजाओं को सुभाब लिये ।

जहा तक टाड की भाषा क शली का प्रश्न है उसकी भाषा प्रभावशयी होने क साथ बडी बटकली है । उसकी लेखनी म गतिहासिक तथ्यों का सृजता क साथ अभिव्यक्त करन की क्षमता है । इसक अनिश्चित यहा की स्थानीय भाषा म उस बग लगाव था । राजा महाराजाघा क जागीरदारों स बहु राजस्थानी भाषा म पत्राचार करता था । उसकी पत्रावली म परम्परागत शला के दर्शन हात है । जबकि धाज क प्रशासनिक अधिकारी हिन्दी म पत्र लिखन म कतरान है घोर अंग्रेजी म पत्र व्यवहार करना क अपनो शान सम्भवत है ।

यह नी उतारनीय है कि टाड विदेशी था घोर विदेशी होत हुए उसन राजस्थान क इतिहास - रचना का भारी धम किया । उसे न ना इतिहास लिखन हेतु कोई धांश मिला था न ही निश । उसे न ता पी एच डी की उपाधि लनी था घोर न ना इतिहास - रचना स राजा महाराजाघा का मुक्त करन साथ पगाव अजित करन की उसकी तातसा थी । मून म कोई तव

या ना वह था इतिहास के प्रति रुचि और राजपूत जाति के प्रति घृणा बढ़ा। इस निम्नाय भावना ने उन इतिहासकारों की विशिष्ट श्रेणी में स्थानीय कर दिया।

आज के शोधार्थी परिश्रम करने से कतराते हैं। मूल स्रोत का अध्ययन करना दूर रहा उनके ज्ञान करने की तकनीक नहीं करते। वे प्रकाशित पुस्तक में अपने विषय से संबंधित मन्त्र बना चतुर्थाई के साथ चुराने में दम हान का प्रमाण दे रहे हैं। वे उन विषय है कि कनिष्य निवेशक हमारी धनदेवी कर रहे हैं। यही कारण कि अनुसंधान के क्षेत्र में ठोस व मौलिक कार्य कम हो रहा है और शोध का स्तर घटता जा रहा है। इस में आज शोधार्थियों को टाठ में प्रेरणा लेने की महत्ता आवश्यकता है।

आज भी एक ही की उपाधि प्राप्त कर घबरा एक दा कितारों छपवा कर शोधार्थी इतिहासकारों की कटी में पुढे का प्रयास कर रहे हैं। कनिष्य लेखक जो कुछ पहले काय हुआ है और लिखा गया है आज उमा का दर-फेर के साथ दुबारा प्रस्तुत कर यश अर्जित करने की लालसा में लिप्त है।

नहीं क्यों में देखा जाए तो राजस्थान के वृहत् इतिहास का बीड़ा टॉड के बाद गौरीशंकर हीराचंद झाभा ने उठाया था। परन्तु समयान्तरण का शोषण इतिहास लिखना करने उनके कम की बात नहीं थी। आज शोध खोज काय से इतिहास विषयक विपुल सामग्री प्रकाश में आयी है और इतिहास लेखन में विविध पक्षा का समावेश हान गया है अर्थात् राजस्थान के इतिहास को प्रकाश में लाने हेतु गावों घबरा ठिकानों व परगनों और वहाँ रहने वाली जातियों का इतिहास जानने के अलावा प्रत्येक राज्य का राजनतिक सामाजिक सांस्कृतिक और धार्मिक पहलूमा का शारीक से अध्ययन करना अपेक्षित है। उमा करने से लगभग मी भाग में समूह राजस्थान का शोषण इतिहास तयार होगा। इसके लिए अनुसंधान केन्द्र शोधार्थियों व इतिहासकारों को मिलकर कार्य करना होगा। उमा करने पर ही हम टाठ के कार्य को आगे बना पाएंगे और उसका अच्छी श्रद्धाजलि देने के पात्र बनेंगे।

टॉड ने राजस्थान का इतिहास उजागर कर राजस्थानवासियों का बड़ा भारी उपकार किया परन्तु आज जिन तक उस महान इतिहासकार के व्यक्तित्व व कृतित्व सम्बन्धी समय पहलूमा पर गहराई से चिन्तन नहीं किया गया और न ही उसकी उपलब्धियाँ के बारे में स्वतंत्र पुस्तक लिखी गई। इसकी पूर्ति हेतु प्रताप शोध प्रतिष्ठान में एक विचार गांठी

का ध्यायन किया गया । उसमें विद्वानों ने टांड के व्यक्तित्व व कृतिव्य सम्बन्धी लक्ष्य पढ़े और उन पर विचार विमर्श हुआ । विद्वानों से कुछ ध्यायन गोष्ठी के बाण्ड में प्राप्त हुए । इस पुस्तक में उन सभी ध्यायनों का समावेश कर टांड के व्यक्तित्व व कृतिव्य को भलीभांति प्रकाश में लाने का प्रयास किया है ।

प्रताप शास्त्र प्रतिष्ठान के धनुराध पर जिन विद्वानों ने ध्यायन तैयार कर ध्यायन सहाय लिया उनका प्रति में ध्यायन व्यक्त करता हूँ । प्रताप शास्त्र प्रतिष्ठान - परामर्श समिति के सहायका का समय समय पर ध्यायन ध्यायन मिलता रहा परंतु उनका प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना में ध्यायन कर्तव्य समझता हूँ । सुखाडिया विश्वविद्यालय इतिहास विभागाध्यक्ष डा नारायण सिंह चू डावन का सहायन काय में विशेष सहयोग रहा इसका ध्यायन उहूँ हार्दिक ध्यायन । ध्यायन है टांड के बहुधायायी व्यक्तित्व को समझने में हमारा यह ध्यायन उपयोगी सिद्ध होगा ।

— हुकमसिंह भाटी

टॉड—एक सप्ताहक

—डॉ जमनाथ कुमार ओझा

विश्व-पटल पर 'राजपूताना को 'राजस्थान नाम से अभिहित कराने वाले कर्नेल जेम्स टाड का जन्म माच 20 1782 ई को इंग्लंड के इम्लिगटन में हुआ था ।¹ टाड का प्रारम्भिक उद्देश्य व्यापार था किन्तु उसके मामा पट्रिक हीरली ने उसे ईस्ट इंडिया कम्पनी के उच्च पद पर सैनिक उम्मीदवारों में भरती कर दिया जिससे 1798 ई में ब्रूनविच के रायल मिलीटरी एकेडमी में उसका प्रवेश हो गया । माच 1799 ई में सत्रह वर्षीय टाड को बंगाल भेजा गया जहाँ जनवरी 9 1800 ई को छूमरी यूरोपियन रेजीमेण्ट में उसे स्थान मिला । सैनिक जीवन की सभी परिस्थितियों का अनुभव प्राप्त करत हुये टाड को मई 29 1800 ई को देशी पदल फौज की 14 वी रेजीमेण्ट का सेप्टिनेण्ट नियुक्त किया गया । उसी रेजीमेण्ट के अधिकारी लैफ्टिनेण्ट कर्नल विलियम निकाल ने टाड के मरल-सहज स्वभाव की भूरि-भूरि प्रशंसा करत हुए बताया कि वह उस सेना के सभी अधिकारियों का प्रिय बन गया था । उसमें उस उदीयमानता के सभी लक्षण दृष्टिगत होते थे जो बाद में उसने अपनी प्रतिभा के बल पर प्राप्त की थी । वह इकीनिशरिंग के काम में नियुक्त था । अग 1801 ई में दिनी क निकट पुरानी नहर की पमाइण (सर्वेक्षण) करने का काम सौंपा जिसे उसने

- 1 टाड का पिता मिस्टर टॉड हेनरी टॉड और जेनेट मॉन्गोय का प्रथम संतान के रूप में अक्टू 26 1745 ई में पैदा हुआ था । उनका उस प्राचीन वंश से संबंध था जिसके एक पूर्वज जान टाड ने राबर्ट ब्रूस के वच्चा की उस समय रक्षा की थी जब वे इंग्लण्ड में बंदी थे । जबसे बालशाह ने अपने हस्ताक्षरों से उसको नाइट बैरोनेट का पद और टाड का शीर्षकान्त (स्वाटलड की भाषा में लोमड़ी को टाड कहते हैं) तथा Vigilantia (सतक) का 'आदेश शब्द' (Motto) प्रयुक्त करने की अनुमति प्रदान की थी । द्रष्टव्य-पश्चिमी भारत की यात्रा प 1

2 इतिहासकार जेम्स टॉड

बड़ी तत्परता से किया। तत्पश्चात् 1805 ई. में दौलतराव सिंधिया के दरबार पोलिटिकल एजेंट (मन्त्र) के सहायक के रूप में उसकी नियुक्ति हुई।² डॉ. गो. ही. मोनाक के अनुसार यही से उसकी भावी प्रशासनिक नीति का प्रारंभ हुआ।³

जेम्स टॉड में शोष सोज़ की प्रवृत्ति सूझ-बूझ व समझ लिये हुए थी उसे व्यावहारिक रूप देने का समय उसका समय अपने प्राय ही प्राय जिसे भव्यतया तब वह भी एकाएक समझता नहीं पाया होगा किन्तु इधर-उधर मिलित मिलित, मौखिक-ग्रन्थिक गीत श्रद्धा, कहानी, गल्प-गाथाओं शिलालेखों, पुरातन पत्थरों, प्राचीन स्मारकों आदि स्वरूपों को घंटा देखा, विचारता आदि तौर तरीका की समग्र नीति से स्पष्ट हो गया था कि बनस टॉड में जन्मजात इतिहास प्रिय अभिरुचि थी जिसे वह विविध प्रकार की ऐतिहासिक सामग्री का यथाशक्ति एक यथा साधन संग्रह कर पूरा कर रहा था। सिंधिया के दरबार के साथ मध्य भारत राजस्थान तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में सख्त जायबाही के लिये विभिन्न स्थानों तथा मार्गों का सर्वेक्षण करने-कराने का महत्वपूर्ण कार्य करते हुए बनस जेम्स टॉड ने एक ओर भौगोलिक श्रुतियों का सुलभता एवं गलतियों को दुरुस्त किया ता दूसरी ओर रास्ते में पड़ने वाले गाँवों वहाँ के निवासियों आदि से अपनी ऐतिहासिक सामग्री के संग्रह का कार्य भी किया। जून, 1806 ई. में टॉड आगरा से उदयपुर रास्ते भर की पर्यटन करता हुआ पहुँचा। मन्त्र ने बताया है कि अस्वस्थ होते हुए भी टॉड ने पर्यटन का कार्य इतना मुश्किल किया कि उसमें किसी प्रकार के सुधार की गुंजायश जरूर नहीं आती है। उदयपुर तक सर्वेक्षण का कार्य करने के बाद टॉड की यह प्रवृत्ति इच्छा थी कि राजपूताना एवं उसके समीपवर्ती प्रदेशों का एक अच्छा सा नक्शा तैयार किया जाय। अतः इस कार्य के लिये वह अपना काफी समय देना हुआ उन प्रदेशों का इतिहास जनश्रुति शिलालेख आदि का संग्रह भी करता गया। डॉ. उसकी प्रथम शीर्षक पुस्तक एनाल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ़ राजस्थान की साधन-सामग्री का एकत्र होना उसी रूप प्रारंभ हुआ।³

सर्वेक्षण के दौरान टॉड को कई रास्ता एवं क्षेत्रों से परिचित होने का अवसर भी मिला। अतः वह एक स्थान पर विभिन्न रास्ता में

2 पश्चिमी भारत की यात्रा -म. गोपालनाथरायण बहुरा पृ. 1-4

3 गो. ही. मोनाक बनस जेम्स टॉड का जीवन चरित्र पृ. 4

पहुँचने का प्रयास करता था। इसमें उने अपने जीवन की बहुत बड़ी जोखिम भी उठानी पड़ती थी जम 1807 ई. में सिधिया की सेना ने राहतगड पर घेरा डाला उस समय टाड साहब थोड स सिपाही साथ लेकर बेनवा नदा के किनारा के पास होते हुए चबल तक के घनात स्मलो में पहुँचे और वहाँ से पश्चिम की ओर कोटा तक बढ़े। फिर दक्षिण की ओर बहने वाली सब नदिया का माग मालूम कर चबल के साथ वाली सिध पावती बनास आदि मुख्य-मुख्य नदिया के संगम का पता लगाते हुए आगरा जा पहुँचे। टाड इन यात्राओं के बीच कई बार लूटा भी गया था किन्तु वह हतासाहित नहीं हुआ और निरंतर अपनी शोध समझ व सग्रह हेतु सर्वेक्षण यात्रा करता रहा।⁴ डा. गौ ही घोभा के अनुसार राजपूताना और उसके आस-पास के प्रदेशों का इतिहास भिन्न भिन्न नगरों के बीच का अंतर व भाग वहाँ के रीति रिवाज आदि जानने के लिये वहाँ के निवासियों में स योग्य और वाक्पिकार मनुष्यों की प्रीति या पारितोषिक के साथ किसी ढब में अपने पास बुना सत थे। सन् 1812 से 1817 ई. तक वे खालियर में रहे तब भी सिध घाट ऊमर-मुमरा के रण व राजपूताना के प्रत्येक भाग में वाक्पिगत रखने वाले मनुष्य बटुधा उनके पास रहा करते थे। ऐम ही कासिद और चिट्टी पहुँचाने वाले हरकारा से भी रास्ता व शहरो का दूरी का हान के हर वस्तु दर्शाते करते रहने थे और भिन्न भिन्न देशों के कोसा का शुद्ध मान जान सने के बाद उन लोगों की बतलाई हुई दूरी का यत्र द्वारा नापी हुई दूरी के साथ मिलान कर सते थे। यो कुछ समय में ही कनल टाड ने जिन नक्श तयार कर लिये कि उनकी 11 जिल्ले बनी। उसमें य नक्श तथा सग्रह किये हुये भूगोल सबंधी वृत्तात अतन राजस्थान (एनास) का इतिहास लिखन में काफी सहायक रहे।⁵

सामग्री-सग्रह करने में टाड का खूब धन खर्च हुआ तथा उमने स्वाम्भ्य एक अम की भी कोई परवाह नहीं की थी। इनसे उसका उत्साह की प्रबलता तथा मायनामा की दृढ़ता का परिचय प्राप्त होता है। मनर कहन है कि जब तक में इस रेजीडेन्सी में रहा वह इस प्रश्न के भूगोल सबंधी अपने ज्ञान को अज्ञान के निच प्रत्येक सुलभ और शक्य अवसर का लाभ उठाता रहा, और मेरा विश्वास है कि उनका जिन का बहुत बड़ा भाग

4 वही प 56 पश्चिमी भारत की यात्रा प 4-5

5 घोभा, कनल जेम्स टाड का जीवन चरित्र प 57

जब वह विभिन्न भागों में कायवर्ती भेजकर उनका द्वारा स्थानीय सूचनाएँ प्राप्त कराने में व्यस्त होता था। वह स्वयं भी इस उद्देश्य के लिए अथवा परिश्रम करता रहता था और उनकी योजना को कम करके उस पुनः सुखस्थ बनाने में कभी कभी मुझ तक प्रयत्न भी करने पड़ते थे कि उसकी प्रयत्नियों में रोक पड़ती हो जाय। ...। मगर वह बाद में रिचाड स्ट्रुची सिपिया के द्वारों में एजेंट बनाता पुनः 1855 ई. में टॉड का उमका द्वितीय सहायक बनाया गया। स्ट्रुची का कहना है कि इस पूरे समय में वह मुख्यतः सिंधु और बुन्देलखण्ड तथा जमुना और नर्मदा के बीच के प्रदेशों में सम्बद्ध भौगोलिक नामों को एवमित करने में व्यस्त रहा।⁶

1817-18 ई. में जब मेवाड़ मारवाड़ दुँगाड व अन्य राजपूतों की रियासतों ने प्रदेशों के साथ ब्रिटनीश सत्ता स्थापित किए तब गवर्नर जनरल लॉर्ड वेल्सले ने राजस्थान की स्थिति से सुपरिचित कनल टॉड को पश्चिमी भाग के इन राजपूत राज्यों का पोलिटिकल एजेंट बनाकर उदयपुर में नियुक्त किया।⁷ या भी अपने भारत प्रवास के 24 वर्षों में सन् 1788 व 18 वर्ष राजपूताना में और उनमें भी अंतिम पाँच वर्ष उमका मेवाड़ मारवाड़ जसमेर, काँगड़ वीर और गिराही व राजपूत राज्यों में व्यतीत हुए। इस बीच अपना सारा काम निरन्तर चलता रहा। अक्टूबर 1819 ई. में टॉड नाथनरा कुम्हारों काणराव नाथन आदि म्याना से हात हुए जायपुर गया। नाथन में उनमें राव राजगणेश⁸ के समय में दा गिनालेख के 1024 और 1039 दूढ़ निवाले जिनके सक्षत टों गी ही घोषा व अनुनार अजमेर व नाथन व चौहान जालोर के सोनगर और सिरोही व देवडा का प्राचीन इतिहास लिखने के लिए बड़े उपयोगी मिष्ट हुए।⁹ वहाँ में उनमें दो ताग्र पत्र, कई उपयोगी प्राचीन हस्त लिखित

6 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 7

7 डॉ. जम्मटिह भाटी (द्वारा संपादित), राजस्थान व इतिहासकार, पृ 37

8 राव राजगणेश साबर के शासन राजा वासुदेव राज का दूसरा पुत्र और महाराज का छोटा भाई था जिसने नाथन में अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित किया। द्रष्टव्य घोषा कनल जम्म टॉड का जीवन चरित्र पृ 12

9 "दृष्टव्य डॉ. जम्मटिह भाटी लिखित सोनगर साबौर चौहानों का इतिहास।

पुस्तकें और कई अश्वतदा¹⁰ शली के सिक्के सप्रह लिये ।

जोधपुर पहुचने पर महाराजा मानसिंह न टाड का स्वागत करते हुये विजय विलास सूरज प्रकाश भारवाड की स्वागत भांति जोधपुर राय के इतिहास से संबंधित 6 पुस्तकें दी । तब टाड ने भी महाराजा का फारसी की तारीख परिष्ठा व खुलासउनवारीम का नकलें करवा कर भेजी । जोधपुर से टाड मडोर (परिहार राजपूतों की प्राचीन राजधानी) गया तत्पश्चात् पुष्कर व अजमेर प्रादि प्राचीन स्थल देखत हुये वहाँ से कई प्राचीन सिक्के एकत्र करके दिसम्बर माह में पुन उदयपुर आ गया ।¹¹

टाड के सप्रह-स्नह को वसीसे समझा जा सकता है कि जनवरी 1820 ई में वह काटा बूढ़ी गया जहाँ वह बीमार हो गया । पुन लौटते थ्ये जहाजपुर में भांडनगढ़ आया तब उसकी निल्ली बढ़ी हुई थी । अग 60 जके सगई गई जो उसका रक्त पी रही थी उन पर भी वह राट पर लेटे हुए ब्राह्मण और पटेलों से वहाँ का हात मानूम करके लिखना जा रहा था ।¹²

तदनंतर टाड पुन कोटा से वापसी घातर प्राचीन टूटे फूटे मन्दिरों की खुदाई का काम करने के लिये कुछ दिन बनी ठहरा । तब उसे

10 एक और सवार तथा दूसरी और नयी बने सिक्के अश्वतदों कहलाने थे । चौहान राजा सामंत देव स्पलपति देव भीम देव सल्लक्षणपाल देव महीपाल देव मदनपाल देव अगपाल देव कल्ह देव चाहड देव पीपल देव भादि हिन्दू राजाओं के और मुस्जुदीन मुहम्मद बिन साम इल्तुतमिश जलानुगीन नासिहदीन कुबाचा रकनुदीन पीरोजशाह मुइजुदीन बहरामशाह अलाउद्दीन ममऊन शाह भांति मुयलमान बादशाहा या हाकिमा के अश्व नदी शली के सिक्के मिले हैं । टाड ने यह नादान व चौहान राजाभा के सिक्के बताय हैं किन्तु आभा का मानना है कि अब तक नाटोल के राजाभा का एक भी सिक्का नहीं मिला और न टाड के सप्रह में पाया गया । द्रष्टव्य ही वनज जेम्स टाड का जीवन चरित्र पृ 12 की पाद टिप्पणी

11 आभा वनज जेम्स टाड का जीवन चरित्र पृ 12-13

12 वही पृ 13

वि म 981 का शिलालेख मिलता तथा बाडोली से मानपुरा होकर मौलवा में धूमनार की गुफा प्राचीन स्थान दखता हुआ भालरा पाटन धाया जहाँ उस चन्द्रावता नगरी व सड़हरो में कई प्राचीन शिलालेख प्राप्त हुये जिनमें वि म 746 का राजा दुग्गण¹³ का शिलालेख सर्वाधिक प्राचीन था। इसके अनिर्दिष्ट यहाँ से यह अपने साथ कई देव मूर्तियाँ ल गया। कसबा (कोंटा व थोड़ी दूर) व मंदिर में लगा वि म 795 (ब्राह्मण राजा शिवगण व समय का) का लव भी मिला, डॉ आभा ने बताया कि यह लव भी टॉड के गुरु से पडा नहीं गया था।¹⁴ कनन टाड विज्ञानिया गया जहाँ उस मामेश्वर के काल का (वि म 1226 का) चट्टान पर उत्कीर्ण एक बडा लेख मिला। इसके बाद वह मनाल व सड़हरो का भ्रमलोकन करत हुए फरवरी 24, 1822 ई की बेगू पहुँचा। बेगू में टॉड हाथी पर सवार होकर वहाँ के रावन से मिलन गया। दरवाजा छोटा हान में महावत न हाथी ल जाना ठीक नहीं समझा किन्तु इसमें पूव एक हाथी का भदर पय हुए देख कर टॉड ने महावत को हाथी भदर नजान की आज्ञा दी। लाई व दरवाजे के बीच पुन पर जात ही हाथी भडक गया जिससे हीर्ण टूट गया और टॉड गिर पडा। दो दिन बाद होश धान पर जब वह पुन रावन से मिलन गया तो दरवाज को गिराया हुआ देख कर उमे बडा दुःख हुआ।¹⁵ या ऐतिहासिक यादगार भयबा पराहर को वह किसी भी कीमत पर नष्ट हान हुये नहीं देख सकता था।

टाड की ऐतिहासिक सग्रह की रुचि का या समझा जा सकता है कि जहाँ कहा भी रह जाता था वहाँ के बड और अनुभवी जानकार लोगो को मुला कर राजपुता की वीरता तथा विभिन्न जानिया की रीति-नीति

13 टाड ने इस शिलालेख का जो सारांश दिया उसमें पांडव धनुन के विरोधा नामक रागम व साथ लडन का जा वस्तान लिखा है वह कथान कैल्पित है। आभा को इस शिलालेख के फोटो में कहीं उमका उल्लेख नहीं मिला। उमका सबसे 748 नहीं किन्तु 746 है। ऐसा प्रतात होता है कि टॉड के गुरु उस लेख को ठीक से नहीं पड सका था। इष्टव्य आभा कर्नल जेम्स टॉड का जीवन चरित पृ 16

14 टॉड ने इस लेख का मवत् 597 दिया तथा जागे का बताया जा आभा व अनुमार सबकी गलत है। वही 16 17

15 वही पृ 17 18

अथवा धर्म संबंधी बतान पूछता। साथ ही प्रत्येक प्राचीन मंदिर, महल, भवन आदि के बारे में तथा उनको बनाने वाला का पता लगवाता। युद्ध में काम आये लोगों के स्मारक चबूतरा के लेख पढ़ा कर या लोगों से जानकारी प्राप्त कर उनका हाल एकर करता था। मंडल निवासी यति ज्ञानचंद्र कनक टाँड का गुरु था जो उस प्राचीन समृद्ध लेख आदि के अनुवाह करने में पर्याप्त सहयोग देता था। ऐसा लगता है कि यति ज्ञानचंद्र को प्राचीन भाषा एक निधि का अधिक ज्ञान नहीं था अतएव टाँड के लिए किये गये अनुवाह कार्यों में मज़तियाँ रह जाना स्वाभाविक ही था। दाएँ पड़ित तो वह अपने साथ ही रखता था। अतः जहाँ कहीं भी ठहरने वहाँ के बारे में जानकारी प्राप्त कर के निखर लिया करते थे।

सुदूरस्थ स्थानों पर प्राचीन लेख आदि का पता लगाने के लिए टाँड अपने गुरु एवं उन पंडितों को भेज देता था किन्तु विशेष एवं महत्व की जगह स्वयं टाँड जाकर अवलोकन करता था। उठाने योग्य शिनालेख आदि को ऊँटों पर लाकर अपने साथ ले जाता था। इतना ही नहीं यत्र तत्र घूमते फिरते वहाँ के चारपा भाटों को बुनवा कर वह क्षत्रियों की धोरता के गीत दोहे बातें, आदि सुनता तथा विशेष उपयोगी होते उन्हें लिखवा लेता था। कष्टिन बाग चित्र बनाने में बड़ा लक्ष था। वह टाँड के लिए प्राचीन मंदिर महल जिनके मूर्ति आदि भारतीय शिल्प कला के चित्र बना लिया करता था। धामी नामक एक देशी चित्रकार को भी टाँड अपने साथ रखता था। जो वह राजा महाराजाओं प्रतिष्ठित पुरुषा व चित्र हिन्दी समृद्ध फारसी अरबी आदि भाषाओं में लिख ऐतिहासिक या अन्य आदि प्राचीन ताम्र पत्रा व सिक्कों का संग्रह करता था। सिक्का व संग्रह के सिधे मथुरा आदि नगरों में अपने एक्ट रखे हुए थे जो प्राचीन सिक्कों एकत्र कर टाँड के पास पहुँचाया करते थे। वह तत्कालिन शासकों प्रतिष्ठित लोगों जन मन्त्रियों आदि स्थानों में सुरक्षित हस्तलिखित ग्रंथों का बड़े श्राव से देखता जूनमें से अपने काम के प्रथा को लन का प्रयास करता यदि सुलभ होने में कोई लिखित आनी तो उत्तु प्रतिलिपि करवा लेता था।

मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह ने टाँड का अपनी ऐतिहासिक सामग्री सुलभ कराने में बड़ी मन्त की। महाराणा ने निजी पुस्तकालय में संग्रहीन पुराण, महाभारत रामायण, पृथ्वीराज रामो आदि ऐतिहासिक पुस्तकों में राज पंडिता द्वारा मूर्धे व चन्द्रवशी शासकों की बशावती तैयार कराके टाँड को प्रशन की। या समाह्व टाँड ने इगलड जाने से पूर्व पुराण, रामायण

मन्मथरत्न राजपूताना एवं अन्य अनेक राया और राजवर्गियों की स्थानों पृथ्वीराज रामो कुमारण रामा हमीर रासा रतन रामो धारि कई रासा अन्य तथा विजय विनाम गुरज प्रकाश जगत विलास, जयविनाम राजप्रकाश राज प्रशस्ति नव मान्माक चरित कुमारपान चरित मानचरित हमीर वाव्य जयमिह कल्पम नामक अन्य एवं उनकी तयार कराई हुई राजवशा की वशावली धारि अन्य इतिहास सबकी पुस्तका का संग्रह कर लिया था। पृथ्वीराज रामो तो टाड का बेहतर पत्र था। अतएव उसका अग्रजी में अनुवाद कर लिया। इन इतिहासिक ग्रन्थों के अन्तर्गत टाड ने काय नाटक ध्याकरण का अन्वय, शिल्प, महात्म्य व जन धर्म सबकी कई पुस्तका तथा अरबी व फारसी के कई हस्तलिखित ग्रन्थों का काफी अच्छा संग्रह किया था। इसी भाँति कई प्राचीन स्थानों राजाओं व सुप्रसिद्ध पुरुषों व विश्व चित्तौड़गढ़, मनाल बाडाली, विजोलिया भस्तरागढ़, मौडलगा कुम्भलगढ़, घाटपुर आहाड, नाडान, कसबा धारि अन्य स्थानों के शिवालयों ताम्रपत्रों धारि की प्रतियाँ प्रथम मूल को प्राचीन मूर्तियाँ एवं बीस हजार के लगभग प्राचीन सिक्कों का संग्रह किया था।¹⁶

स्वयं जान से पहले दिन पूव टाड इस अग्रव संग्रह व साथ डबोक में उज्जयपुर धाकर सट्टनिया की बाड़ी में इस ऐतिहासिक निधि का वह पंक्ति कर रहा था। तभी एक दिन महाराणा भीमसिंह उमम विगाई के मिनत हनु वहाँ आया ता टाड को सट्टनिया के बीच में देखकर उस हँसी भी आगई थी। महाराणा ने कहा कि भवान् में पाँच वष तक रहत हुए टाड ने इस राज्य की सेवा की, इस धनि में बचाया किन्तु जाने समय वह यहाँ की एक चुटकी मिट्टी भी नहीं ले जा रहा है¹⁷ निम्नेह टाड का किसी वस्तु या द्रव्य में प्रेम या लगाव नहीं था। उमम लिय ता उमका संग्रह ही सब कुछ था।

या स्वयं जान की सारी तय्यारी हा जाने पर जून 1, 1822 ई को टाड ने उज्जयपुर से सदा मुक्ता व निय अन्तिम विदा ली। जून 9 को वह सिराही हात हुए जून 12 का आरू गया, जहाँ उम कई शिलालक्ष मिन

16 वही पृ 19 21

17 वही पृ 21 22

जिनम विशेषतया बि स 1265 का¹⁸ पन्नाम राजा धारावप क समय का था ।¹⁹ एतिहासिक खोज और उसक द्वारा भुगतानीन इतिवत की अनात लुप्त तथा विशु खलित कडिया को जोडने के लिये टाड सन्व समुसुक रहा । वह जानता था कि इन प्रदेशो मे ऐसी सामग्री की कमी नहीं है जिसका उपयोग शाय (विषयक प्रवृत्ति) को समान रूप म सम्मानित और प्रोत्साहित करने म किया जा सकता है । शिलालेखो क आधार पर चरितो एव ऐतिहासिक वक्तो के तिथिक्रम के तथ्या को निश्चित करना भाटा के लसा से [अनेका नेक] नामधारी विदेशी जातियो के उत्तरी एशिया म चलकर इन प्रदेशा म आ बसन के क्रम का पता लगाना उन विभिन्न पूजा प्रकारो पर विचार करना जो वे अपन पूव पुरुषो की भूमि म यहा पर नाए और उहा से जिन रोगो को हटाकर वे बस गए उनक रहनसहन आदि क तरीको म घुलनेमिलने स जो भी थाडे बहुत परिवर्तन हुए उनक विषय म अनुमान लगाना तथा इम बात की भी शोध करना कि उनको प्राचीन आदता सन्धामो म स कितनी अरु भी बच रही है वे ऐस विषय है जो किसी भा विचारशील मस्तिष्क के लिये क्वापि हीन या उपेक्षणीय नहीं है और यहाँ शोध के लिये पूरी-पूरी सुविधाए प्राप्त है ।²⁰ अत आबू म उसने चन्द्रावती सिद्धपुर अनहिलवाडा (पाटन) खम्भात वलसभी पारिताना शत्रुजय सोमनाथ पट्टन जूनागढ गिरनार गुमना द्वाका आदि क महत्वपूर्ण मंदिरा बावडियो और खडहरो म ही नहीं राह म पडन बात सारे नमण्य और उपेक्षित परतु सभावित स्थाना म भी शिलालेखो की खान की कुछ महत्वपूर्ण शिलालेखा का अनुवात् भी उमने परिशिष्ट म दे लिया है । इन शिलालेखो म परिशिष्ट म 7 का शिलालेख विशेष महत्व का है जो मूलत सामनाथ का होन हुए भी टाड को बेरावल म मिला था । उमम निह सबत् का उल्लेख है जा तब तक अज्ञात ही था ।¹

18 यह लेख आबू पर्वत पर ओरिष्ठा गाँव के पान बनवन तथा क शिव मन्दिर म लगा हुआ है ।

19 ओम्ना कनल जेम्स टाड का जीवन चरित्र पृ 23

20 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 13

21 वही पृ 13-14

पश्चिम भारत की इस यात्रा के दौरान भी टॉड का ऐतिहासिक सामग्री का समग्र नाम निरंतर चाना रहा। चंद्रावता के खण्डों में म म उस परमार-कालीन कुछ मिन मिन थे। माणवी (कच्छ) की सम्राज्य भूमि व खण्डों में म भी उसे मही स्थिति के दा निवने प्राप्त हुए थे। वानी व जन वरवे से देवाड के राजाओं से संबंधित महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री का खर्चा प्राप्त किया। सोमनाथ पट्टा में एक पुराने काजी घराने व अननित काज के पास से एक हिंदी काव्य का खलि प्रति प्राप्त की जिसमें पाटन व पनन की वहाली थी। द्वारका में एक भाना वाद मरुतार से उनकी वशोत्पत्ति की विचित्र कथाएं और वाधला की उत्पत्ति सबधी बहुत सी थालें उसने मुनी। द्वारका के ही एक वंश भाट की वंश वही तथा राजवशावती में म उसने कुछ पत्रा की नक्से करली। मुज नगर पट्टत ही वही व भाने और उनकी वदिया को उपलब्ध किया। वही की रीतनी के प्रमुख मध्य रतनी में जाडेचा शासन का पुरा-पुरा मान प्राप्त किया और राजपूत शासन पद्धति से वह विन वाना में भिन था इसने भी टीर तरह से समझा।²² जमलनर से उतने कागज और तापत्र का नितनी ही प्रतियां प्राप्त कर ली थी। टाट ने पाटन और खमान व जन ग्रथ मडारों में से कुछ ग्रथ प्राप्त करने का प्रयास किया। यति मानव का पाटन के ग्रथ मडार में से 'वण राज चरित और शानिवादन चरित की प्रतियां छूटने का भना। काही परिधम एक पटन पूरा अवपण के वाट भी वंश राज चरित का उपनथ न हा मका म्तिनु कुमार पाव चरित' (बन्धुन 'कुमार पाव राण) की कुछ प्रतियां टाट ने प्रनय प्राप्त कर ली।³ वर्षों के कारण टॉड को कुछ महिनें वशीन म वचना पडा। तय ही उसने अपना समय 'वाध-योज' में व्यतीत करत हुए प्रति जिन अपन मडर में कुछ न कुछ वद्वि ही की या उसका यह सग्रह बनना वग गया था कि 'गलण्ड पट्टचन पर (1823 ई) उस काई 40 मद्रा का 72 पीर चुंी चुकानी पडी। टॉड ने अपन इस प्रमुख सग्रह का अतल इच्छा पाउन तथा लनन रावल एगियाटिव सामायटी में जमा करा लिया जो प्रद्यनन मुगीन एक मुनवस्थित है।²⁴

22 वही पृ 15 16

23 वही

24 आभा बनन जेम्स टाट का भारत चरित पृ 22 पश्चिमा भारत का यात्रा (प्रस्तावना वषण डा रदुवेगिन) पृ 16 17

इस प्रकार बनने टाड एक सप्ताहक इतिहासक था। उसने जितना लिखा उससे कहीं अधिक एकत्र किया था। निगदह तत्कालीन प्रारंभिक इतिहास लेखन की शायद परक प्रक्रिया में उसमें कई गलतियाँ भूलें प्रभाव पानि रह जाते कहीं प्रनहानी बान नहीं थी। उसने यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीयों में इतिहास लेखन की प्रक्रिया व्याप्त रही है और यहाँ ऐतिहासिक सामग्री की विपुलता विद्यमान है। टाड द्वारा निम्न एतान्म ए० ए० ए० की शीर्षक भाग राजस्थान एवं द्रव्यम इल वस्तुन इडिया ग्रंथ भी अपने आप में ऐतिहासिक व ताता व निपल रग्रह कह दिय जायें तो कोई अशुक्ति नहीं होगी। स्वयं टाड ने कहा कि इन विषयों को (एतान्म) इतिहास की श्रेणी में लिखने का मरा काई दरदा नहीं था क्योंकि एता करने में प्रनक एम विवरण छूट जाते ता एक राजनीतिक जितानु व निए उपयोगी मिड हा सकत थ। मैं अपनी एम वृत्ति का जगन व एरुत्रित परिणम व साध दिय गये सग्रह व रूप में प्रस्तुत करता चाहता हूँ।²⁵

सप्ताहकर्ता को कभी सतोष नहीं होता है। टाड ने अप्रूप सग्रह के उपरान्त भी यह स्वीकार किया कि यदि स्वास्थ्य और पर्याप्त प्रवकाश मुक्त मिलता तो जो कुछ मैंने किया है उसमें दस गुना काम करता और यदि विशेष सुविधाएँ मिली होती तो एम एम गुन का भी दस गुना कर लिखता—मरे इस कथन पर विश्वास कर लेना चाहिये।²⁶ नवम्बर 17 1835 ई का टाड ता इस नश्वर समार का छोड गया किन्तु उसने अपने क परिधम में जिस दुलभ मूयदान ऐतिहासिक याता को नष्ट होने में बचाने हुय सुरक्षित किया वह नूतन शाध याज हनु अन्वेषका के लिये निश्चिन ही प्ररणा दीप बनी है तथा उसने एम महान सप्ताहक का विर अमरक प्रदान कर लिया है।

25 डॉ. हृदयसिंह भाटी से राजस्थान के इतिहासकार पृ 43 नोट्स
डॉ. एन. एम. चूण्डावत का शाध नव टाड का बलिब व वृत्तिरव

26 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 256

जेम्स टॉड : जीवन-दर्शन और कृतित्व

— डॉ. दलीलाल पालीवाल

(अ) जीवन

प्रारम्भिक जीवन

लफिनेट कनल जेम्स टॉड का जन्म 20 मार्च 1782 ई. के दिन इंग्लैण्ड में हुआ था। उसके पिता का नाम जेम्स टॉड (प्रथम) और माँ का नाम मरी हाटनी था। उनका विवाह यूवाक अमेरिका में 1780 ई. में हुआ था। जेम्स टॉड प्रथम अमेरिका त्याग कर अपने भाई जान की हिस्सेदारी में भारत में तत्कालीन आगरा एवं अवध के संयुक्त प्रांत मिर्जापुर में तीन बागानों का मानिक बन गया था। वानक जेम्स टॉड (द्वितीय) के दोनो चाचा पट्टिक और एम. स्टिनी ईस्ट इंडिया कंपनी की गिविल सर्विस में सम्मिलित थे। इस भाँति वानक जेम्स टॉड में अपने पिता और दोनो चाचाओं के भारत के साथ सम्बन्धों के कारण भारत के प्रति रुचि उत्पन्न हो गई। इसलिये जब वह सोनह वर्ष की आयु का था उसने अपने चाचा पट्टिक हीटली की सहायता से 1798 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेवा में बटेरशिप प्राप्त की। अनंतर उसको रायल एन्डमी बूलबिच में शिक्षा प्राप्त करने भेजा गया। 1799 ई. में वह भारत के लिये रवाना हुआ और कलकत्ता पहुँचा। उसको दूसरी यूरोपियन रेजीमेट में भर्ती किया गया। 29 मई 1800 ई. का उसको पदोन्नत कर चौन्हवीं दी पदल सना में लफिनेट नियुक्त किया गया। 1807 ई. में उसको उसी पद पर पचीसवीं देशी पदल सना में स्थानांतरित कर दिया गया। 1799-1800 के काल में उसने पहलू मानसका द्वीप और बांग्ला में मराठों के साथ में जंगलपर काम करने में सैनिक सेवा का अनुभव प्राप्त किया। बांग्ला में वह कलकत्ता से हरिनगर के मध्य के भूभाग में सैनिक अभियानों में व्यस्त रहा।

राजनीतिक जीवन में प्रारम्भ

1801 ई. में जब टाड दिल्ली में तनात था उसकी रुचि और क्षमता को देखते हुए उसको दिल्ली की एक पुरानी नहर की परामर्श करने के लिये इंजीनियर बनाया गया। इस कार्य में उसने अपनी सूझ-बूझ और प्रतिभा का परिचय दिया जिससे मराठा सरकार बहुत प्रभावित हुई।

टाड सैनिक सेवा के लिये नहीं पदा हुआ था। वह प्रारम्भ से ही महत्वाकांक्षी रहा। दिल्ली के परामर्श कार्य की सफलता के बाद उसका आत्मविश्वास बढ गया। 1805 ई. में अपने चाचा के मित्र श्रीम मन्तर की सहायता से उसने राजनीतिक सेवा में प्रवेश किया जिससे उसका जीवन ने एक महत्वपूर्ण मोड़ ले लिया। उस समय श्रीम मन्तर मराठा सरदार दौलतराव सिंधिया के दरबार में मराठा सरकार की ओर से राजदूत एवं रेजीडेंट नियुक्त था। उसने टाड की इच्छा और प्रतिभा को देखते हुए उसको अपनी रक्त सैनिक टुकड़ी के कमान में नियुक्ति दिलवाकर अपने साथ ले लिया। इससे वह प्रशासनिक सेवा और राजपूत एवं मराठा राजनीति में परिचित हुआ तथा उसकी बौद्धिक प्रतिभा के प्रस्तुतन के लिये मांग प्रशस्त हो गया।

ऐतिहासिक शोध कार्य का बीजारोपण

1806 ई. के प्रारम्भ में वह श्रीम मन्तर के साथ धारवा में चले जाकर जयपुर होत हुए उज्जैन के निकट प्राचीन नागना स्थान पर पहुँचा। उस समय सिंधिया मेवाड़ राज्य की राजधानी उज्जैन के निकट नागना (एकलिंगजी मन्दिर के पास) में बसा हुआ था। उस वक जून माह में मेवाड़ के तत्कालीन महाराजा भीमसिंह और मराठा सरदार दौलतराव सिंधिया के बीच हुई मुलाकात के समय टाड भी एक मूकदर्शी के रूप में विद्यमान था। एक कृपक पुत्र के सम्मुख प्राचीन एवं इतिहास प्रसिद्ध राजवंश के राणा की दयनाय स्थिति का प्रवर्णन करते गोंड के भावुक मानस पटल पर मार्मिक प्रभाव पड़ा। वहीं टाड ऊँची घराबली पहाडियों के मध्य स्थित नागना और एकलिंगजी के मन्दिर के निकट स्थानों में प्राचीन एवं अत्यन्त भयंकर बना के प्रतीक चिह्न मन्दिरो एवं मूर्तियों के अध्ययन के लिये रुक गये। इस भाँति वह मेवाड़ के प्राचीन राजघराने के उज्ज्वल इतिहास और उनकी तत्कालीन पतनावस्था से परिचित हुआ। उसके मन में राजपूतों के प्राचीन इतिहास और सांस्कृतिक उपलब्धियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई और इस प्रकार अनजान ही उसका मन में एक क्षेत्र के प्राचीन इतिहास सम्बन्धी समस्या और नीरावृत्ति भाँति विषय का प्राथमिक रूप से परिचय का बीजारोपण हो गया।

भौगोलिक सर्वेक्षण और विडारियों का दमन

इस काल में अंग्रेज सरकार विभिन्न विडारी सैनिक दला को मिटाने में लगी हुई थी जो राजपूताना एवं मध्यभारत के विशाल भू क्षेत्र में लूटमार करके अराजकता उत्पन्न कर रहे थे। किंतु इस भू भाग की सही भौगोलिक जानकारी के अभाव में कंपनी सरकार के लिये विडारी दमन का कार्य दुष्कर था रहा था। 1791 ई. में डाक्टर विनियम हटर ने इस क्षेत्र के भौगोलिक सर्वेक्षण का कार्य प्रारम्भ किया था किन्तु वह अल्पकाल रहा। स्वयं टॉड के जन्म से उस समय अंग्रेज अधिकारियों का भौगोलिक जानकारी की यह स्थिति थी कि उदयपुर और चित्तौड़ की स्थिति मानचित्रों में उल्टी लिखाई गई थी। उनमें चित्तौड़ को उदयपुर के उत्तर पूर्व के बजाय दक्षिण पूर्व में लिखाया गया था। राजस्थान के लगभग लगभग पश्चिमी और मध्यभाग के राज्य अंग्रेजी मानचित्रों में नहीं थे और यह माना जाता था कि राजस्थान की सभी नदियों का माघ दक्षिण में नबदा का घोर है। युवक टॉड की प्रतिभा और रुचि का देवत हुए श्रीमंत मन्तर ने राजस्थान और मध्यभारत के विशाल भू क्षेत्र की भौगोलिक परमांश करने का बड़ा उत्तरदायित्व टॉड को दिलवाया। सिंधिया की सत्ता के साथ एक स्थान में दूसरे स्थान पर यात्रा करते हुए टॉड ने अत्यंत परिश्रम करके दस वर्षों में 1815 ई. तक यह कार्य लगभग पूरा कर लिया। उस वर्ष उसने पहली बार राजपूताना का संयुक्त भूगोल तयार करके विडारियों के विरुद्ध एक बड़ी उड़ाई प्रारम्भ होने से पूर्व कंपनी के गवर्नर जनरल मार्क्विज आर्चर हस्टिंग्स का प्रस्तुत किया। उसके तुरंत बाद उसने मालवा क्षेत्र का मानचित्र भी तयार कर लिया। ये मानचित्र विडारियों एवं मराठा के विरुद्ध सैनिक अभियानों में बड़े उपयोगी सिद्ध हुए। इसके साथ टॉड ने लड़ाई शुरू होने पर युद्ध क्षेत्र का विशाल मानचित्र और युद्ध यात्राओं के अन्त में बनाई और विडारियों के उत्थन के लिए और स्वल्प के सम्बन्ध में दस्तावेज तयार किया। ये दोनों जनरल आर्चर हस्टिंग्स और ब्राउन के सैनिक अभियानों में बड़े सहायक सिद्ध हुए। गवर्नर जनरल हस्टिंग्स ने टॉड के इस योगदान की अत्यंत प्रशंसा की। हस्तौता एवं क्रावती नामक स्थानों से उसने कंपनी जानकारी के आधार पर इन अभियानों का निरंतर मार्गदर्शन किया। उसने स्वयं कंपनी सैनिक टुकड़ी की सहायता से कान्ही मिश्र जी की पत्नी में सक्रिय विडारियों का समाप्त किया और वर्षों में लूट में प्राप्त धन में काटा के पूर्व में ली पर हस्टिंग्स पूरा बनवाया जमीन का उनमें राजपूताना के तत्कालीन शीघ्रस्थ दूरदर्शी राजनीतिज्ञ

एव चतुर दूरनीतिज्ञ भाला जातिमहिम्न को अपनी मित्र बनाया और उसको कूटनीति द्वारा ही-कर से अपने करव अग्रजा का पक्षपाती बनाकर अपनी सरकार की वी मूल्यवान सेवा की। 1813 ई. में उसका कप्तन पद पर पदोन्नत किया गया और 1815 ई. में उसको रेजीडेंट का स्थान सहायक बनाया गया। यह उन्नतनाय है कि राजपूत राजा बालू भू क्षेत्र के लिए टाड ने 'सबप्रथम राजपूताना' के स्थान पर राजस्थान नाम का उपयोग किया था। बाद में भी अग्रजों शासन के अन्तर्गत राजपूताना नाम का प्रयोग जारी रहा। स्व. श्री ही भाला ने अपनी पुस्तक का नाम राजपूताना का इतिहास रखा इस क्षेत्र के प्रथम विश्व विद्यालय का प्रारम्भिक नाम 'राजपूताना विश्व विद्यालय' रखा गया था। स्वतंत्रता प्राप्त के पश्चात् राजपूत राज्यों के विलय एवं एकीकरण के बाद नवनिर्मित राज्य का नाम राजपूताने के बजाय राजस्थान रखा गया। इसका अर्थ यह भी होता है।

राजनीतिक प्रतिनिधि

विचारियों के दमन और मराठा का पराजय में महत्पूर्ण योगदान टाड और कोरा में सूक्ष्म दूर पूरा राजनीति कायदादिया भागान्तिक परमाणु के कारण राजपूताना क्षेत्र के सम्बन्ध सभी प्रकार की जानकारी हानि के राजाभा एव मानस से निकट सम्बन्ध बनाने तथा अपने व्यवहार एवं विचारों से जनप्रिय हो जाना भाति वाता वा स्थापित करण हुए अग्रज सरकार ने मार्च 1819 ई. में कप्तन टाड को खासियर रेजाडेंट के प्रथम सहायक के पद में पदोन्नत कर भेवाड में अपनी राजनीतिक प्रतिनिधि नियुक्त किया। उस समय डॉक्टर कोकर अपनी राजपूताना का रेजाडेंट था। सरकार ने उसका दृष्टी में रजिस्ट्रार नियुक्त कर टाड का भेवाड के अतिरिक्त जाधपुर काटा बुंदी जसलमेर और निरोही राज्यों के नियंत्रण में अपने नियंत्रित प्रतिक्रिया का दायित्व दे दिया। टाड की इस भावनात्मक एवं अग्रस्थानित योजना से शासकशासकों के मन में भारी ईर्ष्या उत्पन्न हुई। उनका क्रोध में बर्ण प्रभाव था। उनसे एक प्रकार से टाड की नाचा स्थिति और अग्रस्थान करने के लिए निर्दोष पदचक्र किया और उसका चार वर्ष अधिक अपने पद पर नौकरी स्थित किया।

भेवाड में प्रशासनिक सुधार

जब टाड राजनीतिक प्रतिनिधि बन कर राजपूताना में आया उस समय राजपूत राजा की हानि बर्ण साराव थी। मराठा आक्रमण और विचारियों

की लूटपाट व कारण व बिनाग और भ्रष्टाचार के कारण पर पहुँच गये थे। प्रातरिक प्रशासन नाम मात्र के नियम रह गया था। सामंत लोग विशेष प्राप्ति का वह छीना भपटी और हिंसक कायवाहिया में लीन थे। डाकुआ एव लुटेरा का उत्पात भवत चल गया था। इन कारणों से कृषि, उद्योग और व्यापार चौपट हो गया था। भवाड के राणा भीमसिंह का शासन तो भिन्नतर उदयपुर की पदवीय घाटी तक रह गया था और उसका निर्वाह कोटा के मंत्री राजा जानिसिंह की मन्त्र स हो रहा था। ऐसी स्थिति में उसको दोहर दायित्व का भर उठाना पड़ा। एक ओर उसको अंग्रेज सरकार के आर्थिक एव राजनितिक हितों की रक्षा करनी थी दूसरी ओर मेवाड तथा मय राज्या में प्राप्त भ्रष्टाचार और लूटमार समाप्त कर जनम शांति और सुव्यवस्था कायम करनी थी उसको करने के लिये नया काय मिला था। उसको पूरा करके के लिये वह सम्पूर्ण उसाह योग्यता शक्ति और सामर्थ्य के साथ जुट गया। उसके माहसत नगन और उत्साह में मन्चाई और ईमानदारी थी। वह महत्वाकांक्षी था और कुछ असाधारण करके दिवाना पानना था। उसके इस उसाह और जास की देवकर और प्रधानत मेवाड में शांति और व्यवस्था कायम करने उसकी सीमाशा को सुरक्षित करने और प्राचीन गौरव का पुनर्स्थापित करने के काय में जो सफलता प्राप्त की उनको देखकर अंग्रेज अधिकारी दण रह गये और उमस ईर्ष्या करने लगे। प्रारम्भ में उसका गवर्नर जनरल हर्स्टिंग का विश्वास प्राप्त रहा। टाड ने मेवाड का शासन मीथा अपने हाथ में ले लिया। उमन विद्रोही जागीरदारों को बश में किया और उनको बलात् हडपी सानसा भूमि में हटाने तथा राणा के प्रति आभाकारी बनने के लिये दाय्य किया। मीला एव मीणा लोगों की जोर जबरदस्ती एव लूटमार समाप्त की, राज्य का आय में वृद्धि के लिये भू-कर का नया बनावरत किया व्यापार के लिये भाग सुरक्षित किया और मेवाड छाड़कर गय व्यापारिया का अंग्रेज सरकार का गारटी देकर वापस बुनाया। इन सब कायवाहिया से न केवल राणा का राज्य और गौरव पुनर्स्थापित हुआ अपितु आय में वृद्धि होने और कृषि व्यापार एव उद्योगों के फिर से पनपने से मेवाड पुन तरकी करन लगा।

राजपूत राज्यों के प्रति नीति

भवाड में टाड के प्रशासन में जो परिणाम निकले, उमकी प्रशंसा हुई ता निम्न भा हूँ। आशय की बात यह है कि जिस प्रयोजन की पूर्ति के लिये टाड ने काम किया उसा के विरुद्ध काय करने का उम पर

घारोप लगाया गया। मेवाड़ के आंतरिक मामला में हस्तक्षेप करने मनमाने परिवर्तन करने राणा की स्वतंत्रता और अधिकारों का हनन करने जागीरदारों के परंपरागत अधिकारों पर घाघात लगाने आदि कायवाहियों के लिये उसका दोषी ठहारा गया और कहा गया कि य सब कायवाहिया सधि की शर्तों के विरुद्ध हैं। उसके विरुद्ध भ्रष्टाचार की झूठी बातें भी फैलाई गईं। किन्तु वस्तुतः इन घारोपा को लगाने वान डेविड मास्टर लोनी जम अंग्रेज अधिकारी हैं। अधिक थ जो टाड की महात्वाकांक्षापूर्ण प्रवृत्तियों क्षमताओं और तीव्र प्रगति की सभावना से आशंकित थे। उन्होंने उसके विरुद्ध व्यापक वातावरण बनाया और उमक काय में बाधाएं उत्पन्न कीं। अपनी सफलताओं के जोश में तथा डेविड मास्टर लोनी जैसे प्रतिद्वन्द्वियों द्वारा पदाधिकार प्रशासनिक व्यवस्थाओं की व्यवहृतना करने के लिये टाड ने कुछ ऐसे काम उठा लिये जो सरकारी आदेशों के विपरित थे। इससे उमका सकट और बढ़ गया और केवल प्रशासन विरुद्ध हो गया। जोधपुर और कोटा राज्या में किसी भी प्रकार के परिवर्तन करने से रोका गया। अधिकारों में कमी की गई। जयपुर और कोटा के मामलों में उसका देहली रेजीमेंट मास्टर लोनी के मातहत कर दिया गया। तथा अन्य अधिकारियों का उसके काम में लगाया गया। अप्रैल 1822 तक कोटा बूंदी और जसलमेर पूरी तरह उसके उत्तरदायित्व में ले लिये गये। अंत में मेवाड़ के मामलों में भी अंग्रेज सरकार ने मास्टर लोनी का राजपूताना एवं मालवा क्षेत्र के लिये अपना सर्वोच्च अधिकारी नियुक्त कर टाड को उसका मातहत बना दिया। टाड ने इन कायवाहियों से स्वयं को अपमानित महसूस किया जबकि वह अपनी सफलताओं पर हर्षित हो रहा था, उसका उसके विपरित दृष्टित किया गया। कुपित और विरक्त होकर उमने अस्वस्थता का कारण बनाकर त्यागपत्र दे दिया। 1 जून 1822 का सवा मुक्त होकर वह उदयपुर में रहना हो गया। वहां में वह पश्चिमी भारत के प्रधान प्राचीन ऐतिहासिक एवं सामूहिक महत्व के स्थलाचार सिद्धपुर अणहिलवाडा पाटन बडोचा भावनगर पानागला जूनागढ़ द्वारा सोमनाथ आदि का अवलाकन एवं अध्ययन करने हुए जनवरी 1823 में बम्बई पहुंचा जहां में वह लंन लौट गया।

!

अ व्यज अधिकारियों की अप्रसन्नता

टाड के प्रति उच्च अंग्रेज अधिकारियों की नाराजगी का बड़ा कारण राजपूत राज्यों के प्रति उमकी सहानुभूति उमक द्वारा अंग्रेज सरकार द्वारा उनके साथ की गई सधियों की शर्तों के पालन पर खुल रूप में जोर देना

तथा इन क्षेत्र के सभी वर्गों के लोगों के साथ उमका में जोन और जनप्रियता था। उमका मवाड राज्य के प्रांतीय मामला में सीधा हस्तक्षेप करने शासन के द्वार अधिकार अपने हाथों में लिये थे किन्तु शासन में यह राणा के अधिकारों का पुनस्थापित करने के लिये की गई अस्थायी कामवाही मात्र थी। सिद्धांततः वह राजपूत राज्यों की मूल सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं नियमों एवं रीतिरिवाजों में किसी प्रकार के बाहरी हस्तक्षेप अथवा परिवर्तन करने तथा उन पर अग्रणी कानून प्रारंभिक व्यवहार लादने का विरोधी था। दास्ताअवय परिस्थितियों के कारण जो बुराईया राजपूतों के सामाजिक एवं निजी जीवन में आ गई थी उनमें सुधार लाने के सम्बन्ध में उसका कथन था कि वह सुधार बाहरी शक्ति द्वारा न किया जाकर वे स्वयं करें। भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के स्थायित्व और शक्ति के लिये टॉड ने मुगला के इतिहास का उपाहरण देते हुए अग्रज सरकार का यह राय था कि राजपूत राज्यों के साथ ऐसा कोई कार्य नहीं किया जाय जिससे शासकीय अथवा हीनता की भावना उत्पन्न हो। उनके साथ विवेक अथवा संरक्षक की भाँति व्यवहार न करके मित्र की भाँति व्यवहार करें। उनके प्रति अग्रज अधिकारियों के निकृष्ट एवं स्वच्छाचारी व्यवहार की टाँ न खुलकर आलोचना की और इस आचरण का अधिगतों के विपरीत बताते हुए टॉड ने लिखा था हम ब्रिटेन के संरक्षण में आई इन जातियों का दृढ़ दंत समय दिया का नहीं डड का व्यवहार करत हैं उनका साथ संरक्षक का साथ करत ह। हमारी सरकार के द्वारा तथा अथ सम्बन्धी कानून इन राज्यों के प्रशासकों के हित में नहीं बनाकर हमारा कोष भरने के लिये बनाय जात है। निश्चय ही टॉड की इस प्रकार की कटु स्थोक्ति का कारण वह अथवा के उच्च अधिकारियों का कोष भ्रजन बना और साम्राज्य की सेवा में किया गया उमका अथवा कार्यो के लिये कभी भी सराहना भी नहीं की गई।

अन्तिम वर्ष

भारत छोड़ने के बाद टॉड केवल तैरह वर्ष और जीवित रहा। 1 मई, 1824 ई को उमका मजूर पद और 2 जून, 1826 को सप्टिन्टेंडन्ट जनरल के पद पर पदोन्नत किया गया। 16 नवम्बर 1826 ई का टॉड का विवाह लॉन्डन के एक प्रसिद्ध मजूर की पुत्री जुलिया ने हुआ। जिसने दो पुत्र एवं एक पुत्री हुई। मार्च, 1823 में लॉन्डन में उमका सहायक में रायल एशियाटिक सोसाइटी का स्थापना हुई। वह उमका सहायक बना तथा उमका उमका एशियाटिक सोसाइटी का अध्यक्ष भी ग्रहण किया। उसने स्वयं द्वारा

भारत में सप्रहोत कई प्राचीन पांडुलिपियाँ मिनापनो की छापीं निकले श्राप्ति पुस्तकालय में भेंट किये । उसकी कृतियाँ को दर्जित करने वाले भारतीय कलाकार घामो एण्ड केप्टन वाथ द्वारा तयार किये गये चित्र सूची बढ करके रायन एशियाटिक सोसाइटी लन्दन के पुस्तकालय में रहे गये ।

भारत में अपनी सेवा काल के दौरान टाड निरन्तर राजपूत राजा क इतिहास पुरातत्व साहित्य, सस्कृति कला श्राप्ति विषयों का अध्ययन एण्ड शोध करता रहा और उसने प्रचुर शोध सामग्री एकत्र की । अपने यात्रायात्रा के दौरान उसकी यह शोध प्रवृत्ति अनवरत रूप में सक्रिय रही । अपने अध्ययन और शोध के आधार पर टाड ने पहिले राजस्थान के इतिहास संस्कृति आचार विचार और सामाजिक रीतिरिवाजों के सम्बन्ध में एक विज्ञान ग्रन्थ तयार किया । इस ग्रन्थ का नाम एनासण्ड एटीक्विटीज आफ राजस्थान रखकर उसका प्रथम भाग 1829 ई में प्रकाशित कराया । दूसरा भाग 1832 में प्रकाशित हुआ । उसके बाद उसने 'ट्रैवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया ग्रन्थ निम्ना जो उसकी श्राप्तिभूयुक्त भूयुक्त के कारण चार वर्ष बाद 1839 ई में प्रकाशित हुआ । 17 नवंबर 1835 ई को उसका देहांत हुआ ।¹

(घ) इतिहास दर्शन

भारत सम्बन्धी इतिहास लेखन

अठारहवीं शती के मध्यकाल तक ग्रिगेन का भारत सम्बन्धी इतिहास लेखन बड़ी सीमित परिधि में घबक रहा । उस समय तक बड़े-बड़े इतिहास लेखक प्राचीन भारतय विद्या साहित्य और संस्कृति से अपरिचित रहने के कारण भारत के इतिहास को योग्य मानकर उसको मुस्लिम इतिहास के एक अंग के रूप में ही लिखते थे । अठारहवीं शती के उत्तरार्ध में पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्राचीन भारतीय विद्या एवं ज्ञान विज्ञान सम्बन्धि शोध-सूत्र किये जाने से भारत सम्बन्धी विस्मयकारी नव्य शोधों के समुच्च उदघाटन हुए । उनका ज्ञान स्वरूप रूप से भारत का इतिहास लिखन का प्रथम प्रारम्भ हुआ । विनियम जॉन्स के प्रयत्नों में 1784 ई में कलकत्ता में रायन एशियाटिक सोसायटी की स्थापना और 1788 ई में उसके द्वारा एशियाटिक रिसेर्च पत्रिका प्रकाशित करने के बाद इस प्रकार विज्ञान ध्यान दिया जाने लगा ।

1 मन्मथ प्रथम डा. घामो कनल जेम्स टाड का जीवन चरित्र पश्चिमी भारत की यात्रा से गोपालनारायण बहुरा

तत्कालीन इतिहास दर्शन

उम समय त्रिग्न के इतिहास लेखका म प्रदानत तीन प्रकार की दार्शनिक विचारधाराए बाय कर रही थी- जानोन्धी (Enlightenment) रोमानी (Romantism) और उपयोगितावादी (Utilitarianism)। तीनों विचार धाराओं का संस्कृति समाज, राज्य आदि के सम्बंध म अपना अलग अलग दृष्टिकोण था और उनमें विदेशी जातियों और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के उद्देश्य एव नितिया के सम्बंध म मतभेद था। अठारहवीं शती के अंत म तथा उन्नीसवीं शती के प्रारम्भ में रोमानी और उपयोगितावादी विचारधाराओं बान कई इतिहास लेखका के भारत सम्बंधी इतिहास ग्रंथ प्रकाशित हुए। विलियम जॉन्स (Hindu Culture) विलियम राबर्टसन (Disquisition Concerning Ancient India 1791 ई.), थॉमस कार्लिस (Modern History of the Hindostan 1802-10 ई.) थॉमस बर्नडो (Origin and Affinity of the principal languages of Asia and Europe 1828 ई.) थॉमस ह्यूमिल्टन (Timur 1783 ई.) जैसे रोमानी इतिहास लेखका न प्राचीन भारतीय विद्या एवं ज्ञान को उजागर किया और भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का मानव सभ्यता की महान धरोहर बताया। विलियम जॉन्स ने अपने लेखन में प्राचीन भारतीय भाषा, साहित्य धर्म, राजन बानून नाति विद्या पुरातत्व कला आदि सभी विषयों म विस्तृत विवरण दिया। रोमानी इतिहास लेखका के मतानुसार प्राचीन हिन्दू लोग खोजी प्रतिभा रखने वाले लोग थे। वे सभी प्रकार की कलाओं म निपुण, शासन-काय म राज विधि एवं न्याय के काय म विवेकशील तथा ज्ञान विज्ञान के सभी विभागों के ज्ञाता थे। विलियम जॉन्स ने सिद्ध किया कि संस्कृत भाषा ग्रीक और लैटिन भाषाओं की बहन है। इन भाषाओं में लिखी गई पौराणिक गाथाओं के बीच अनिष्ट संबंध है तथा यूनानी, रोमन एवं भारतीय संस्कृतियों का उत्पन्न एक ही है। उनमें यह भी कहा कि प्राचीन हिन्दू सभ्यता यूनानी एवं रोमन सभ्यताओं से अधिक प्राचीन और बढ़चढ़कर है। जॉन्स ने यह मत भी प्रकट किया कि यूनानी सभ्यता की जो देन यूरोपीय सभ्यता को रही उसी प्रकार की देन हिन्दू सभ्यता की प्राचीन एशियाई सभ्यता को रही है। त्रिग्न भाति प्राचीन यूनानी विद्या एवं ज्ञान को पुनर्जागृत करने से यूरोप में सांस्कृतिक पुनर्जागरण हुआ उसी भांति यदि हिन्दुओं की प्राचीन विद्या ज्ञान, और साहित्य का पुनःप्रकाशित किया जावे तो उनमें न केवल एशिया म पुनर्जागरण प्रारम्भ होगा अपितु उनका प्रभाव यूरोप म भी पड़ेगा।

भारत मधधी विरुधी विचारधाराए

चार्लस ब्राट और जेम्स मिल जैसे उपयोगितावादी विचारधारा के इतिहास लेखकों ने विपरित मत प्रकट करत हुए लिखा कि प्राचीन हिन्दुओं में प्रतिभा तथा बौद्धिक गुणों का अभाव था। उनका अग्रता कोई इतिहास ग्रन्थ नहीं थी कि उन्होंने उसका लेखन के लिये आवश्यक बौद्धिक परिपक्वता कभी प्राप्त नहीं की। उनकी कोई व्यवस्थित एवं निरिक्त "याय प्रणाली और विधि संहिता नहीं रही। जेम्स मिल के अनुसार सम्म भारत कवन कथाया एवं पौराणिक गाथाया तक ही सीमित था। हिन्दू राज्य व्यवस्था राजाओं एवं पुरोहिता की स्वायत्तपूण अरुभिनधि और सयुक्त निरकुश तानाशाही मात्र रही जिसके कारण हिन्दुओं की बौद्धिक उन्नति अवरुद्ध रही। रामानी इतिहास लेखकों ने जेम्स मिल जैसे इतिहास लेखकों की धारणाया का कडा विरोध किया। प्रधानत 1829 ई में प्रकाशित टाड के ग्रन्थ *Annals and Antiquities of Rajasthan* जान ब्रिज के ग्रन्थ *History of the rise of Mohamadan Power in India (1829 ई)* तथा राबट ग्लेग के ग्रन्थ *History of British Empire 4 Vols (1830 1835 ई)* में उन विचारों का पूरा उत्तर दिया गया। इतिहासकार ग्लेग ने ता मिल की स्थापनाया का विदुवार उत्तर दिया। इस भाति ज्यो ज्यो प्राचीन भारतीय विद्या साहित्य कला पुरातत्व आदि विषया की शोध-सोज का विस्तार हुआ भारत मधधी अन्त प्रस्थापनाया का लोप होता गया। 1841 ई में एर्निस्टन का पुस्तक *History of India* के प्रकाशन के बाद तो उनको पूछने वाला ही नहीं रहा।

टाड रोमानी विचारधारा

जेम्स टाड रोमानी विचारधारा का लेखक था। वह राबटसन जोस मिल मारिम अस इतिहास लेखकों की मान्यताया से प्रभावित था। टाड ने अपने लेखन में जेम्स मिल की अन्त धारणाया का खण्डन किया और ब्रिटेन में व्याप्त भारत मधधी निराधार एवं मिथ्यापूण विश्वासा का मिटाने में महत्वपूण योगदान किया। टाड के विचारों ने राबटसन एवं फोकोक तथा अन्य परवर्ती इतिहास लेखकों को प्रभावित किया।

रोमानी दर्शन का इतिहास लेखन काव्यात्मक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति से पूण होता था। वसी ही भापाई अष्टता और राजस्वी साहित्यिक अभिव्यक्ति टाड के इतिहास ग्रन्थों में दृष्टिगत होती है जो इनकी हृदयस्वर्गी एवं प्रभावोत्पादक है कि उनको बार बार पढ़ने की इच्छा हाती है। यही

कारण है कि टॉड का राजस्थान सम्बन्धी ग्रन्थ 'मनात्म' को उसके प्रथम प्रकाशन के एक सौ माठ से अधिक वर्ष बीतने और टॉड की भूलों एवं कमियों का टीका करने वाले कई शोधपूर्ण इतिहास ग्रन्थ प्रकाशित हो जाने के बाद भी मूल ग्रन्थों ग्रन्थ तथा उसके भाषाई अनुवादों की मांग आज तक बना हुई है और बराबर उनके तबिन संस्करण निकलते रहे हैं जबकि लगभग ग्रन्थ सभी स्थानों पर इतिहासकारों के ग्रन्थों के पुराने संस्करण ही पुस्तकालयों में उपलब्ध होते हैं ।

ज जेम्स टॉड का राजस्थान पर दृष्टिकोण

जिन्को के रामानी इतिहास लेखकों की विचारधारा का दूसरा पक्ष उनकी रूढ़िवादिता थी जो किसी भी सम्यता की मौलिक विशेषताओं में सुधार प्रदान करने के विरुद्ध थी । यही दृष्टिकोण टॉड के लेखन में प्रकट हुआ है । उनके मतानुसार किशा भी राष्ट्र की मर्यादा किसी भी काल में उसकी सम्पूर्ण जीवन पद्धति को अभिव्यक्त करती है और प्रत्येक राष्ट्र द्वारा स्वयं के लिये विकसित सामाजिक व्यवस्था ही उसकी अपनी विशिष्ट स्थिति और प्रतिभा (genius) के लिये सर्वोत्तम रूप में उपयुक्त होती है । इस भाँति उनमें उपयोगितावादिता और ईसाईयत के प्रसार के पक्षधर विचारकों के विपरीत दृष्टिकोण प्रदानमा जो एंग्लो-सम्यताओं को बर्बर मानकर उनमें पाश्चात्य आचार विचार के आधार पर सुधार चाहते थे । टॉड ने राजपूत जातियों के प्राचीन इतिहास उनकी सांस्कृतिक एवं सामाजिक विशेषताओं एवं गुणों को उजागर किया । उसमें मुगल और मराठा आधिपत्य की परिस्थितियों में राजपूतों में उत्पन्न चरित्रिक दोषों एवं सामाजिक बुराईयों को दर्शाया और उनको दूर करने पर जोर दिया । किन्तु उसमें लिये टॉड ने राजपूतों की शून्य मर्यादा, नियमों और विशेष आचार विचार में किसी भी प्रकार के सुधार के लिये बाहरी हस्तक्षेप का विरोध किया । उन काल में अंग्रेज अधिकारियों द्वारा राजपूतों की सामाजिक राजनयिक व्यवस्था में मनमाने ढंग से पाश्चात्य प्रकार के परिवर्तन लाने उन पर विशेष प्रकार का शत्रुतापूर्ण तथा ऐसा घपमान जनक व्यवहार किया करने की कोशिशें कर रहे थे जिन्हें कारण उनकी आन्तरिक स्वतंत्रता और जातीय स्वाभिमान का आधार लगे रहे थे । टॉड ने इन व्यवहारों से न केवल एक प्राचीन सम्यता के अवशेषों के नष्ट होने का खतरा देखा, अपितु अंग्रेजों साम्राज्य द्वारा एम्प मिश्रण का खातन का खतरा भी देखा जिन्की मिश्रण का बंधन हा साम्राज्य की रक्षा और स्थायित्व का आधार था । निश्चय ही जेम्स टॉड का उक्त भावुक दृष्टिकोण

इस प्राचीन सभ्यता को छिन भिन्न और लुप्त होने से बचाना चाहता था वही दूसरी ओर उसकी स्पष्ट मान्यता थी कि उनको कुचलने और आत्मसात करन की जायवाही अंग्रेजी राज्य की रक्षा और स्थायित्व के लिय खतरनाक मिद्ध होगी। उमने लिखा था हमारे हर प्रकार के हस्तक्षेप को बंद करन पर ही उनकी स्वतंत्रता निभर करती है अथवा उनके राज्य हमारे राज्य में विलय हो जाने से हमारे प्रतिशय बने हुए शासन के लिये भयानक मकट उत्पन्न हो सकता है टांड उसने स्पष्ट और स्वतंत्र विचारों के लिये कितना ही कामा गया हो उनकी चेतावनी सही निकली। 1857 की विप्लवकारी घटनाओं ने भारत में अंग्रेजी राज्य हिला दिया था।

अतिथयता

टांड के लेखन में जहाँ एक ओर प्राचीन हिन्दू सभ्यता के प्रति प्रशंसा और तत्कालीन हिन्दू समाज की पतनावस्था के प्रति सहानुभूति की भावना प्रकट होती है वहीं दूसरी ओर मुस्लिम विरोधी विचार दर्जित होते हैं। टांड ने मुस्लिम इतिहास के प्रति दुर्भावना से काम लिया है। इसका प्रधान कारण उपरोक्त तत्कालीन इतिहास दर्शन की दो विचार धाराओं का प्रबल पारस्परिक टकराव था। जेम्स मिल जमे उपयोगितावादी इतिहास लेखको न मुस्लिम शासन और उनकी समस्याओं को प्रधान महत्व देते हुए प्राचीन हिन्दू सभ्यता और उनकी समस्याओं की प्रति अज्ञानता करने में दुर्भावना से काम लिया था टांड का लेखन प्रधान रूप से उनका प्रयुक्त था और उस टकराव में टांड भी अतिवादी मनोवृत्ति से प्रस्त रहता। अठारहवीं शती में एक ओर सामाजिक संस्कृति स्तर हिन्दू मुस्लिम सभ्यताओं में समन्वय की प्रक्रिया चल रही थी दूसरी ओर तत्कालीन अराजकता की स्थिति में राजनतिक स्तर पर हिन्दू मुस्लिम शासकों में टकराव की नई स्थिति पैदा होने पर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच बमनस्य और शत्रुता के बीज बोये जा रहे थे अंग्रेज सरकार के अधिकारी साम्राज्य की शक्ति को सुदृढ़ करने के लिये उनको बढ़ावा दे रहे थे। टांड को यह वातावरण भी मिला। किन्तु यह निश्चित है कि टांड के लेखन से हिन्दुओं में पुनर्जागरण पुनरुत्थान एवं स्वाभिमान की भावना प्रबल रूप से उत्पन्न की तथा उनसे अनचाहे ही आगे चलकर भारतीयों में अंग्रेजी शासन से स्वतंत्र होने के लिये आंदोलन किया किन्तु साथ ही उमने भारतीय समाज में हिन्दू-मुस्लिम विषय का साम्प्रदायिक विद्वेष भी फैलाने का कार्य भी किया।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर प्रभाव

टाड ने राजस्थान के इतिहास ग्रंथ में राजपूतों की वीर गाथा का, राजपूतवीरों के महिम्य साहस अमृत वीरता और अनुपम गाय (यूनानी वीर यादगा का साथ तुलना करते हुए) तथा उनके त्याग और बलिदान का जो प्रोजेक्ट बनाना किया है प्रधानतः ब्रिटीश के साका महाराजा प्रताप का वीरता और हल्दी घाटी युद्ध का जो वर्णन दिया है उसको पढ़कर बीमबा जाती के प्रारम्भ में बगाल महाराष्ट्र तथा अन्य राज्यों की भाषाओं में स्वतंत्रता की प्रेरणा देने वाले वीर चरित्रों पर आधारित कहानी नाटक, उपन्यास और काव्य साहित्य लिख गये। उनका पढ़कर अग्नेयी दासना से मुक्ति के लिए युवकों ने गुप्त आतंककारी आतंककारी संगठन स्थापित किए। प्रताप का आदर्श और हल्दी घाटी की मिट्टी उनके प्रधान प्रेरणा श्रोत बन गये। स्वतंत्र भावना के जो बीज टाड ने अपने ग्रंथ में छोड़े। तत्कालीन अग्रज अधिकारियों का उनका पूरा आभास हो गया था¹।

राजपूतों के लिए एक नया इतिहास

टाड एक व्यापारिक कंपनी का नौकर था। उसकी कंपनी के आर्थिक हितों का पूरा रक्षण था। ब्रिटेन में नवोदित व्यापारी एवं उद्यमी वर्ग ने वंग के सामंत वर्ग को आर्थिक अशक्त कर दिया था और बड़ी सीमा तक राजा का उनके प्रभाव से मुक्त कर दिया था। टाड के विचारों में तत्कालीन पतित एवं सूट खसोट में अस्त राजपूत सामंत वर्ग के अधिकारों के लिये कोई उपयोगिता नहीं थी। उनके विचार से राजपूत राजा का अराजकता एवं अज्ञाति से पूर्ण तथा मुक्त करने के लिये उन राज्यों में सामंतों को अतिरिक्त तथा राजाओं को पूर्ण अधिकारी बनाना आवश्यक था जिसमें अग्रज सरकार उनसे आसानी से विराज प्राप्त कर सके और अपने आर्थिक एवं राजनतिक लाभ प्राप्त कर सकें। मेवाड़ में उमने यही नीति अपनाई और अपने सख्त में राजस्थान की सामंतवादी प्रणाली का वर्णन करते हुए इही विचारों का प्रतिपादन किया। राजस्थान के सामंत वर्ग में इनमें बड़ी भूल बली मची और अग्रज अधिकारियों ने बड़ा विरोध किया किन्तु अग्रज सरकार को ऐसा राज्यों के साथ सम्बंधों में मूल रूप में इसी नीति का अपनाना पड़ा।

1 ब्रिटेन दिवस के लिए देव 'राजस्थान के इतिहासकार' पृ 58-61, प्रचारण प्रकाशन (मद्रास)

(ख) इतिहास लेखन

छोटी सामग्री का सर्वेक्षण एवं सङ्ग्रह

1806 ई के दसन्त में उत्तरपुर के निकट एकलिंगजी तथा नागना क खड्गारा में डेरा डान सिंधिया के दरबार में रहते हुए जब टाड की मेवाड़ के प्राचीन राजवंशी महाराजा भीमसिंह से भेंट हुई तो उसने भादुक मन्त्रिण पर ऐसा प्रभाव पड़ा माना वह गौरवमय अनीत की कोर् भाली देख रहा हो । पतनावस्था के गत में डूबे सिसोदिया राजवंश के प्राचीन इतिहास का गाथा सुनकर नागना क प्राचीन कलापूर्ण खड्गहरो का अलोकन कर तथा राजपूतों के विभिन्न चरित्र स्वाभिमान की भावना तथा उनका विभिन्न आचार विचार की भंग्यता देखकर टाड मुग्ध हा गया । उसका देश क कर्म विचारक जिन लोगों का बचक एवं अमम्य कर्तन नहीं बकन थ अत्याचार और अशाय के नीच दब पर उन लोगों में उच्च सांस्कृतिक मूल्यों एवं आचार विचार क दर्शन करके वह आश्चर्य चकित रह गया जम उसका एक नया प्रकाश नजर आया । उनका जगा कि राजपूतों का उच्च चरित्र स्वाभिमान की भावना और अत्या आचार व्यवहार विश्व को सम्पता का पाठ पाने का दावा करन वाली और अपनी उच्चता का अन्कार करने वाली यूरोपीय जातियों में कहा बन् चक्कर ह जिनको विश्व के समुल्ल प्रकट करना उसका जीवन का अन्त मूयवान काय हागा जा पश्चिम के लोगों का अन्वै खान देगा गा- उनका भूठ अहकार तथा उनके सामाजिक राजनतिक दोषों का प्रकट कर दगा । इमनिध दीनतराव सिंधिया के दरबार में रहते हुए जब उसको भीगासिक सर्वेक्षण का काय दिया गया तो उसने साथ साथ राजपूतों क प्राचीन इतिहास धम संहति सामाजिक प्रथाएं आचार विचार तथा उनकी विभिन्न प्रकार की कलात्मक उपसिंधिया सम्बधी जानकारी प्राप्त करन तथा उनमें सम्बन्धित शापपूर्ण सामग्री का सर्वेक्षण करने तथा एकत्र करन के लिय समाज क विभिन्न बग के लोग स सम्पर्क स्थापित किया ।

टाड न राणा के प्राचीन साहित्य-संग्रहालय का अलोकन किया आरणों और भागों की अज्ञातता तथा ऐतिहासिक विषय की गामथी देना प्राचीन पट्टों परवानों ताम्रपत्रों शिलालेखों की नकलें प्राप्त की भागों चांगणों राव लोगों स जोक कथाएं बीर गाथाएं चारण्यी गीता और किम्बदन्तियों का सङ्ग्रह किया । अपनी यात्रा क दौरान प्राचीन स्थानों मन्त्रियों, प्रिन्सों

कनामक मवना घाटि को देखा और उनका सम्बन्ध में विविध एवं प्रतिविकृत सामग्री एवं वही माग में जो भी साहित्य मित्र जिनानस देमें उनकी प्रतिनिधिया टाग घाटि प्राप्त की। टाड निश्चिता है कि जब भी वह प्राचीन स्थान कावृत्ति प्रथवा उसके भग्नावशेष दसता था तो उसका मा में नाना प्रकार के भावा का उचार उठता था। टॉड ने युरोपाय साहित्य प्रधानत प्राचीन यूनानी एवं रोमन साहित्य का विशाल अध्ययन किया था तथा बिलियम जास क विचारा और कलकत्ता में प्रकाशित एणियाटिक रिसर्चेंज में प्रकाशित प्रथम तत्वों के साथ लेखों को पढ़ता रहता था। एशियाय उनके साथ एवं अध्ययन के विषयों में न केवल इतिहास एवं पुरातत्व धवितु मानव जाति विज्ञान समाजशास्त्र तक धम तक कला और लोक विश्वास जन विषय भा शामिल थे। स्वयं भाषा शास्त्री नदी होने से उसने समय समय पर जन प्रति नान चर और वर्त ब्राह्मण पंडिता से पुरान तरा को पढ़ने एवं समझने में सहायता प्राप्त की।

टॉड की ग्राज्यताए

291721

उस समय भारत में प्राचीन शोध का काय धभी प्रारम्भित प्रवस्था में ही था और धपन धल्प समय और सीमित प्रयासा के कारण टॉड तथ्यात्मक साधना वन कम मात्रा में एकत्र कर सता था। धतएव प्राचीन इतिहास के लिए टॉड का विभिन्न राजकुता की धनन धनन संशावलिया से प्राप्त सूचिया का ही उपयोग करना पडा। तत्कालीन सभी राजपूत राजवंश धपना प्राचीन औरवमय परपरा एवं प्रतिष्ठा दशन के विधे पुराणों में धगिन सूचकण एवं चरवण से धपना सूत्र जाहते थे। किन्तु टॉड ने राजपूतों में प्रचलित गीत रिवाजा जन मूर्खों-पासना सतीप्रथा धश्वमय यण, मधपान दत धम्भो और घोडे की पूजा घाटि बातों की सीधियनों धधवा शक सागों में प्रचलित वाता में समानता देखकर टाड ने यह सिद्ध करने का प्रयास कि राजपूत साधियनों प्रथवा ढकों से निरन्तर है। टॉड ने तातारी और शक लोगों की पुराना कथाओं और भारतीय पौराणिक कथाओं में समान धाना की धौर मदन किया *। समानता दिखान में टाड ने धविशयता में धाम लिया *। उदाहरणार्थ साधियनों में गण पूजा का प्रचलित होना बनाना प्रथवा उत्तरी भारत में धस जाट लोगो का नाम में धाधर पर युरोप के 'जट' प्रथवा गोप लोगो के साथ सम्बन्ध स्थापित करना। हनरी हनम ने जिसका धप A View of the state of Europe during the Middle Ages में टॉड ने धपन उचन ध घडी महायता की है, लिखा * - बाहरी तीर पर लिखा * न धानी गनानाओं के सम्बन्ध में सावधानी धावश्यक है

धू कि गहराई से देखने पर व सायब हो जाती है। स्वयं टाट ने एक जगह लिखा है— मानव जाति व विकास की समान प्रकार की अवस्था में अलग अलग स्थानों पर रहने वाली अलग अलग जातियों में एक ही प्रकार की बातों का होना पाया जाता है। इसलिये यह आवश्यक था कि वे एक दूसरे से निकली हों। यह बात यूरोप एशिया और भारत में मध्ययुग में उपलब्ध सामग्री प्रयास के विभिन्न स्वरूपों के सम्बन्ध में की जा सकती है। राजपूतों की सामग्री प्रणाली में वही ऐसी मूल बातें मिलती हैं जो यूरोपीय प्रणाली प्रधानतः फ्रान्स के गान थ्रॉवा इंग्लैंड के नामन लोगों में भी लिखी पड़ती है। किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि उनमें मभी बातें समान रूप से मिलती हैं— यहाँ तक कि यूरोप के विभिन्न लोगों में मिलने वाली वही प्रणाली के स्वरूपों में भी कुछ विभिन्नता लिखी पड़ती है। किन्तु इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह प्राणाली मानव जाति के विकास की समान अवस्था में एक समान आवश्यकता के कारण उत्पन्न हुई।

राजपूत जातियों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्राचीन क्षत्रिय राजवंशों से निकलने सम्बन्धी धारणा बहुत प्रचलित रही है। किन्तु यह मिथ्या हो चुका है कि ईसा पूर्व की दूसरी शती के मध्य में हुए शक एवं कुम्भन आक्रमण तथा उनके बाद के विदेशी आक्रमण प्रधानतः गुप्त साम्राज्य को विनष्ट करने वाले सफल हुए व आक्रमण में भारत में जो राजनीतिक उपलब्धियाँ हुईं उनमें पूर्व के क्षत्रिय राजवंशों के अन्वय लुप्त हो गये जबकि बाहर से आकर भारत में बसने वाली विदेशी गुज्जर जाति जातियों ने सिद्ध धर्म अपना लिया और क्षत्रिय बन गईं। पश्चिम और मध्य भारत में इन जातियों द्वारा राज्य करना पाया जाता है।

जयचन्द्र विशालकार ने लिखा है अमन में राजपूत कर्षी जाति नहीं थी। राजाओं के पुत्र राजपुत्र कहलाते थे और विवाह—सम्बन्ध प्रायः बराबर के राजघरानों में होता था। ग्यारहवीं शती तक यह चलन मिलता है। उसके बाद सामाजिक जीवन में गरीबी का कारण यह जातियों की दृष्टि से राजघरानों निश्चित कर लिये गये जिससे राजपूतपन की श्रुति बनी रहे। इससे राजपूतपन लकीर हा गया। इसके परिणामस्वरूप जिन राजवंशों की मतानों केहाथ में राज न भी रहे फिर भी वे राजपूत कहलाने रहे और दूसरे कुला के लोगों के राजा बनने पर भी वे राजपूत नहीं माने गये। अब राजपूतों को मिलाकर राजपूत बनाने की स्थिति परिपक्व रूप में सोलहवीं शती के लगभग सामने आई जबकि उसके पूर्व मुस्लिम शासन काल में क्षत्रियों के राज्य नष्ट होने पर और उनमें से अनेक क्षत्रिय राजवंशों का

स्वतंत्र राजा न रहकर सामंत बन गये थे। एसी दशा में राजवर्गी होने के कारण उनका नियम 'राजपूत' नाम का प्रयोग हुआ। राजपूत नाम से जानी जान वाली जातियों का संगठन और विकास प्रधानतः गुजरात राजस्थान और मायवा के प्रदेशों में हुआ। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इन कई राजपूत जातियों का उत्पन्न होना पूर्णतः की दूरगामी शताब्दी में मध्य एशिया में आने वाली उन जातियों से हुआ जो हिन्दू धर्म का स्वीकार करके शत्रिय बन गईं। गौरीशंकर हीराचन्द भाभा ने मत व्यक्त किया है कि 'भारत पर आक्रमण करने वाली शक्त और हुए जातियों धर्मों में भिन्न नहीं थीं व अतः शत्रिय भी थी और बहिरंग धर्म को छोड़कर अन्य धर्मों (बाह्य धर्म) के अनुयायी हो जाने के कारण शत्रिय धर्म के आचार्यों ने उनकी गणना शत्रियों में की।

इसका उद्देश्य शत्रियों के प्रारम्भ में टॉड ने राजपूतों का एक संगठित जाति के रूप में देखा और उसको राजपूतों के अन्तर्गत राजकुलों का विस्तृत बखान पत्र और गुणन को मिला। चूंकि पुराणों तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों में अन्तर्गत राजपूत कुलों का बखान नहीं मिलता टॉड की कवि चन्द बरनाई की पृथ्वीराज रामा तथा चारण भाटा द्वारा रचित अन्य काव्यमय गायिका पर आधारित रह कर विस्तृत पद्य और यत्र-तत्र अनुमान का सहारा लेता था।

टॉड का लक्षण की समीक्षा

इतिहास लेखन का दृष्टि में टॉड के राजस्थान सम्बन्धी ग्रंथ की बड़ी समीक्षा हुई है। उनकी कविता भूता और अतिशयोक्तियों के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चाएं हुई हैं। टॉड ने इस सम्बन्ध में स्पष्टतया निष्ठा है प्रस्तुत विषय का इतिहास की कठिन शर्तों में लिखने की मेरी इच्छा नहीं रही क्योंकि उनके कारण मुझे एसी कई बातें छोड़नी पड़नी जो राजनीतिज्ञ एवं जिज्ञानु विद्वानों के नियम उपयुक्त होती हैं। मैं इस ग्रंथ का भावी इतिहासकारों के उपयुक्त के नियम प्रचुर महत्त्व के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ। निम्नलिखित ही टॉड अपने ग्रंथ के लेखन में पुराणों तथा कवि चन्द बरनाई द्वारा लिखित पृथ्वीराज रामा तथा अन्य चारण भाटा की काव्यमय गायिका पर अत्यधिक आधारित रहा, जिसमें अपने काम के रीति व्यवहार और विषयों के सम्बन्ध में जानकारी अत्यन्त मितनी है किन्तु जिनका वर्णन इतिहासिक तथ्या की दृष्टि में पूरी तरह निष्पक्ष एवं विश्वसनीय नहीं था। उनके अपने प्रयोगों के बावजूद समय और अवसर की सीमा के कारण वह अपने प्रकार की शोध सामग्री उतने कम जुटा पाया। किन्तु उनके लेखन में भूता के ग्रंथ कारणों से

उनका धार्मिक उत्साह कल्पना और भावुकता भी रही जो राजपूता और अहिंसक तथा यूरोपीय तथा एशियन जातियों के धार्मिक विश्वासों और कम काबो आदतों और रीति-रिवाजों के मध्य ममानता स्थानों राजपूता प्रधानतः सिसोदियो और राजीश की धार्मिक प्रगति करना धार्मिक के वर्णन से प्रकट होती है ।

टाड के खलन में जो भी कमियाँ और भूलें रही हों इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह राजस्थान के इतिहास का जनक प्रथम आधुनिक लेखक था । उसने प्रथम अलग राजपूत राज्यों के इतिहास के सम्बन्ध में जो पद्धति प्रदर्शित की वह प्रायः के इतिहासकारों के लिए आधार और माग दशक बनी । उसने इस भू-भाग में प्रचलित भारतीय धर्म मानव विज्ञान और समाजशास्त्र का प्रथम मौलिक अध्ययन प्रस्तुत किया तथा साथ ही उनमें लोक-कलाओं लोक-धर्म सामाजिक रीति-रिवाजों और व्यवहार-नियमों का वर्णन दिया । कृषक और धार्मिकताओं के धार्मिक विश्वासों का वह प्रथम अध्ययन और मौलिक प्रस्तुतकर्ता था । ऐतिहासिक तथ्यान्वयण की दृष्टि से उसने न केवल सर्वप्रथम प्राचीन साहित्य गिनत-बना पुरालेख भवना, मन्दिर स्मारक स्थलों धार्मिक उपयोग किया अपितु उनमें महत्त्व को प्रकट करके नए प्रकार की तथ्यान्वयण सामग्री को विनियोजित करने में बचान तथा सप्रतिष्ठित करने की प्रवृत्ति को उत्पन्न किया । 1832 ई. में पन्ना के वडाटरमी रियू में ग्रंथ की सम्पादन करते हुए लिखा गया था इतिहास की सामग्री के सर्वांगिक मनोरंजनपूर्ण एवं परिश्रमी समाह्वय के लिये पर टाड का वाय प्रशंसनीय है । उसकी स्वयं की वर्णन शली कई स्थलों पर मुक्तता आश्रमिता एवं आश्रमिता से परिपूर्ण है । मन्त्र सही नगरी होने तथा कटी वहीं कठिन आर आडबरपूर्ण होने पर भी उसकी शक्ति अधिकतम मजबूत और सरल है । उसकी कृति के दाप कृति के स्वरूप के कारण है । भिन्न-भिन्न राजपूत जातियों के विभिन्न एवं अलग-अलग इतिहासों को एक गुंथे हुए निरंतर इतिहास के रूप में गतना असंभव ही था । किन्तु इन प्रकार के स्वरूप के ग्रंथ उनमें के लिये सम्पूर्णतः सामग्री एकत्र करने का वाय कथन बनस टाड ही कर सकता था । इस प्रकार के काम लागू हाँगा जो उनको इतना उत्तम ढंग से उपयोग कर सकेंगे । ग्रंथ को पन्ना के बाह्य निष्पन्न पाठक ग्रंथकार के परिश्रम के सम्बन्ध में उच्च भावना प्रकट किया बिना नहीं रहेंगे बिना लागू निष्पन्न है उसकी कृतित्व के प्रति सम्मान प्रकृत करेंगे और साहित्य की एक शाखा को जो सदा उनमें का है उसकी लिये अपनी कृतित्वता पाण्डित्य करेंगे ।

टॉड की दृष्टि में राजपूत जाति

—डॉ० गीला गोड

टॉड निम्न 'एनाल्स एण्ड एथिक्विटीज ऑफ राजस्थान तथा डेवल्प इन वेस्टर्न इण्डिया राजस्थान व इतिहास के लिए एक अभूतपूर्व देन है। राजस्थान के इतिहास का जानने के लिए उसकी पुस्तक एक काय व समान है। जेम्स टॉड राजपूतों का प्रबन्ध पढ़ापाती था। वह राजपूतों के चरित्रगत विशेषताओं से काफी प्रभावित था। इस जाति के प्रबन्ध माहम दाहिन की इच्छा राजभक्ति गम्मान आचरण प्रातिपक्ष और सरल व्यवहार न उने विमुक्त कर दिया था।¹ टॉड को राजस्थान के निवासियों से काफी प्रसन्न हो गया था। प्रथम प्रबन्ध अधिकारियों की शपथ वह यहाँ का शुभचिन्तक बन गया और अपने अधिकारों का प्रयोग सबके कल्याण के लिये करने लगा। प्रबन्ध सरकार का एक अधिकारी होकर भी वह यहाँ के राजाओं और जागीरदारों को जनहितकारी तथा न्यायप्रिय कार्य करने के लिए प्रोत्साहन देता रहा। उसकी राजपूत विषयगत तथा राजपूतों के प्रति अनन्य भक्तिपूर्ण भावना के फलस्वरूप कम्पनी के प्रथम अधिकारियों ने उस पर सन्देश तथा प्रोत्साहन के आरोप लगाये जिसे टॉड ने महसूस नहीं किया और अपना त्यागपत्र कम्पनी का भेज दिया।²

टॉड ने एनाल्स में राजपूत जाति का उत्पत्ति के सम्बन्ध में काफी विस्तार के साथ बखाना किया है। उसने हमें दान की स्थापना का भरमभ्रम प्रकट किया है कि राजपूत मुख्य रूप से मिथिला, घर्षान् शका व वज्ज हैं।³ प्रबन्ध इस कथन के समर्थन में टॉड ने उताया है कि राजपूतों में प्रचलित

1 जेम्स टॉड, एनाल्स एण्ड एथिक्विटीज ऑफ राजस्थान भाग 1 पृ 8, 21

2 नरसिंह शर्मा इण्डियन इतिहासीकल रिवायटस कमागन, उन्मुक्त

3 टॉड एन पृ 21

अनेक रीति रिवाज जस सूर्यपूजा सताप्रथा अश्वमेधयज्ञ वीर व्यवहार युद्ध कृतियों के प्रति व्यवहार जुभा खेसना मद्यपान शस्त्रों तथा घोड़ों की पूजा आदि शक जाति के रीतिरिवाजों से बहुत मिलत जुलत हैं। टाड के मतानुसार तातारी तथा शक लोग की पुरानी कथाओं तथा पुराणों की कथाओं में भी समानता पाई जाती है। इसके अनिश्चित शकों की बीरता उनके आदर्शों तथा उनके विश्वास राजपूतों में पूर्णरूप से देखने को मिलती है किन्तु वस्तु से किन्तु उनका भावनात्मक महत्त्व नहीं है। आधुनिक शोध की दृष्टि से भी टाड की सिद्धिगत उत्पत्ति सिद्धांत को नकार दिया गया है तथापि उत्पत्ति विषयक प्राथमिक ध्यान आकर्षित करने के लक्ष्य में इन उपकल्पना का महत्त्व है।

टाड ने राजपूतों के सामाजिक परम्पराओं की रीतियों रिवाजों कृतियों आचरणों प्रतिमानों आदर्शों आदि के सम्बन्ध में काफी लिखा है। टाड के ग्रन्थ राजपूत जाति और राजस्थान का ज्ञान काप है। उसने अपने वर्णनों द्वारा ब्रिटिश भारत सरकार का ध्यान उन अमानवीय कृतियों के प्रति भी आकर्षित किया जो राजपूतों में प्रचलित थीं। इन कुरीतियों को मिटाने के लिए प्रशासनिक प्रयत्न आरम्भ किये गये थे। राजपूतों की परम्पराओं की प्रियता पर प्रकाश डालते हुए टाड ने लिखा है सहस्रों वर्षों के बीत जाने पर भी राजपूतों के निरन्तर व्यवहार के द्वारा जय्यता की रीति सब प्रकार से अचलभाव से स्थिर रही है।⁴

टाड राजपूतों की चरित्रगत विषयताओं से काफी प्रभावित था। एतादृश में उसने लिखा है कृतमता आत्मसम्मान की रक्षा विश्वास पान राजपूतों का मूलमंत्र रहा है तथा कृतमता उनके लिए सबसे बड़ा अस्त्र है। राजपूत स्वभाव तो भल ही उग्र हो पर उनके हृदय में राजभक्ति तथा देशभक्ति की कामना सबल विराजमान रहती है। अन्तर जहाँगीर तथा औरंगजेब ने जिन युद्धों में विजय तथा गौरव पाया था उनके मूल में उसके राजपूत मिश्रण था।⁵

टाड ने महता में औरंगजेब कालीन एक मस्जिद का देखा था जो बिल्कुल सदा हाजल में थी जब कि राठी और राजवंश-युद्ध 30 वर्षों तक चला था। उसने अनुभव किया राजस्थान के लोग धर्म के प्रति दृढ़ तथा विश्वासी

4 टाड एन पृ 510

5 टाड एन पृ 97

हात हुए भी धन्य धन व प्रति सहिष्णु हान है । उमर विपरीत मुगलमानों द्वारा पंजारा का मगहर मन्दिर उस धात्रमण के धारान ताड दिया गया था ।⁶ टॉड राजपूतों के इस चरित्रगत विशेषता से काफी प्रभावित हुआ था ।

राजपूतों में व्याप्त क्रूरतायाँ भी टॉड की दृष्टि में प्रशंसनीय नहीं रहीं । टॉड ने राजपूतों को महज एक पाशा व रूप में नहीं देखा बल्कि उनमें समूचे राजपूत समाज एवं उनकी संस्कृति का भी गहन अध्ययन किया । उनमें न केवल राजपूतों शीघ्र के समक्ष महत्त्व ऋष्याया बल्कि राजपूतों व मध्य प्रचलित धर्मों जैसी बुराईयाँ की तरफ भी लागू का ध्यान घ्राह्युष्ट किया । राजपूतों में प्रचलित धर्मों व प्रचलन को उमने उनकी दुर्लभा कूला तथा धनानता के लिए उत्तरदायी ठहराया । राजपूत एक साथ धर्मों का सेवन करने थे । राजपूत जाति संगठन ने इस प्रकार परम्पर एवं साथ बढकर जो प्रतिष्ठा कर ली वह प्रतिष्ठा शपथ की शपथा अधिक श्रष्ट होती थी।⁷

तत्कालीन राजपूत समाज में प्रचलित ब्राह्मण-विवाह प्रथा व सम्बन्ध में टॉड ने लिखा है कि मन्त्रियों व मध्य धारणा भगडा का कारण बढते हैं तब राजपूतों व मध्य प्रचलित बहू विवाह प्रथा है । इसमें फलस्वरूप पारिवारिक मरुट उत्पन्न हान थे और उन मरुट में दोन छाने बालक मार दिए जाते थे ।

पितृसत्तात्मक से उत्पन्न हान वाता बुराईयाँ की तरफ टॉड का रचनात्मक काम प्राय नहीं बढ़ा । साथ ही मानवीय पीडा तथा धारणा जा राजपूत समाज में प्रचलित था उनकी तरफ में भी टॉड विमुक्त हुए रहीं । राजपूत समाज प्रचलित सताप्रथा तथा और प्रथा में राजपूत स्त्रियाँ व त्याग तथा वनिदान से वह काफी प्रभावित था । उमने लिखा है धन्य देना का स्त्रियाँ व सम्पूर्ण राजपूत स्त्रियाँ का नाम्य प्रथम ही शास्त्रीय प्रतिष्ठा होता है । जवन व एक-एक पय पर माना उमके लिए मरुट मुह पताय खडी रहता था । राजपूतों व युद्ध में पगजय होता पर या नर पर शत्रुता का अधिकार हा जान की शक्यता में राजपूत स्त्रियाँ धन्य सनाते

6 टॉड पश्चिम भारत की यात्रा से डा गाना नारायण बहुरा, पृ 43

7 टॉड एन पृ 11

की रक्षा के लिए मृत्यु का वरदान करती थी ।⁸

टाड राजपूता में प्रचलित घोर धर्मावधीय प्रथा का क्या बंध के लिए जिम्मेदार उनके मध्य प्रचलित विवाह रीति को मानता है । अपनी पुस्तक एनाल्स में वह लिखता है राजपूत अपनी अपनी बन्ध्याओं को बराबर दान पान के साथ में समर्पित करने में अग्रगण्य हैं । वध में कतक लगान की अपेक्षा उस सुकुमारी काया की अफीम देखकर मार डारते थे । राजपूता में धननी शान्ता और अपने पौत्र में विवाह नहीं होने मरना था । विवाह में धन भी काफी खर्च होना था । शान्ती के अवसर पर बाह्यमण कवि शान्ति दत्त वापकर मानते थे । और काया के पिता की उच्च प्रशंसा कर उनका शान्ति से ज्यादा दान देने की अपेक्षा करते थे । यदि काया का पिता उनका इस श्रायना को पूरा नहीं करता तो कविगण उनके अपमान की कविता बनाकर उसका धार निरन्कार करते थे । अतः काया का पिता अधिक धन खर्च करने में सामर्थ्य नहीं होने पर भी भयवश किसी न किसी प्रकार अधिक धन खर्च करता था ।⁹

राजपूता के समीप रहकर टॉड ने यह अनुभव किया कि राजपूत जाति में दिनोंदिन राष्ट्रीय भावना में ह्याम आता जा रहा है । उसका विचार था कि इसका मूल कारण उस पर मुसलमानों का अत्याचार तथा मराठों की लूटमार था । वह राजपूत राज्यों के पुनर्गठन के मत में था ताकि राजपूत जाति पुनः अपनी गौरवशाली पुर्वावस्था को प्राप्त कर सके ।

राजपूत जाति की सामूहिक दुरावस्था के सम्बन्ध में उमन विद्या है कि राजपूता में सगठन के अभाव में उनका राष्ट्रीय शक्ति के निर्माण में बाधाएँ पड़ी थीं तथा इसी के अभाव के कारण वह कभी भी मराठों की भक्ति अपना काय शक्ति को स्थापना नहीं कर पाय । प्रथम राष्ट्रपति राजा स्वयं या अपनी सेना की महारत में अपने राज्य का रक्षा करना था किन्तु किसी अर्थ वाह्य शक्ति के निर्माण की तरफ शान्ति ने कोई ध्यान नहीं दिया । राजपूत शासक द्वारा ब्रिटिश सरकार को किसी प्रकार के अनिष्ट की आशंका से वह मुक्त था । उसका विचार था कि राजपूत राजा सरकार का किसी प्रकार अनिष्ट

नहा कर सकते हैं। यदि राजपूत पूव के नमान बल पराक्रम गौरव धन मया का प्राप्त भा कर लेता भी एकता व प्रभाव के कारण व प्रयत्न का किसी प्रकार की क्षति नहीं पट्टा सकते क्याकि राजपूतों में एकता का प्रभाव शुरु म रहा है। अपनी अमभूमि की रक्षा के लिए विभिन्न राजपूत सभी एक नहीं हुए।

टाड ने राजपूतों का एक सम्मेलन बाल में होकर गुजरते देखा था। यद्यपि टाड को मराठावाला प्रवृत्तिया तथा स्त्रियों का पता था वह रूप भी तत्कालीन घटनाओं का प्रवृत्तियाँ था किन्तु उसने मराठा राजपूत सम्बन्ध पर मनुनित प्रकाश नही डाला है अपितु मराठों को चुनेरा रूप में बताना हुए राजपूतों का अधिक विद्या। राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा और राजनीतिक संस्थाओं के पतन में भी उन मराठों का वायव्याहिया अधिक स्थिति दी। उनमें अपनी पुस्तक में निजा है बाह्य दृष्टि में उनके पर यह पता चलता है कि दापरान तक विजातीय आक्रमण से राजपूत जाति में प्रतिभा तथा वीरत्व का प्रभाव हा गया है, किन्तु यह कल्पना धातिपूर्ण है विजातीय उत्पीड़न और आक्रान्त से राजपूत चरित्र में इन समय जितने पोषणीय प्रभाव दिखाई देते हैं भाति विस्तार के साथ साथ वह सब दूर हा जायगे।¹⁰

टाड एक ऐसा इतिहासकार था जिसने न केवल राजस्थान की राजनीति एवं देशी राज्यों के युद्ध अभियानों को महत्व दिया वरन् यहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति का भी अपने लेखन में बहद स्थान दिया। यह धारणा है कि जिन तथ्यों को उनमें अपने लेखन में स्थान दिया उनमें हान बाल कारणों का गही विश्लेषण नही कर सका। वह हमें बताना भी तथ्यात्मक परीक्षण नही कर सका कि शौर्य एवं वीरता का विपुल भण्डार हान के बावजूद राजपूतों ने अपनी धात्री क्यों खोयी? सम्भवतः राजपूत वीरों के धातम्यायन तथा उनकी वीरता ने टाड को अपने लेखन में पुण्य पाय न देन के लिए बाध्य कर दिया। टाड के राजस्थान के राजपूत शासकों मराठों के साथ मत्रीपूर्ण सम्बन्धों में टाड का एक इतिहासकार एवं राजनीतिज्ञ की चाचित दृष्टि प्रस्तुत करने में धातम्योग प्रदान किया। टाड ने अपने लेखन में राजपूत वीरों एवं विराट्प्रथा का जो धातम्योक्तिपूर्ण मार्मिक दृश्यपूर्ण चित्रण प्रस्तुत किया, उसका राजपूत जाति पर गहरा प्रभाव पडा। यद्यपि पारश्चात्य सम्पन्न म धान तथा प्रयत्नीयता द्वारा

सुल्ता की गारण्टी लिये जाने के बाद यहाँ के नरज एम्बय एवं बिनामिता में डब गये । टाटा के इतिहास से आगे चम्पूर राजपूतों का अनिष्ठावर्षक प्रेरणा मिला । वे अपने पूर्वजों के आदर्शों को समझने लगे । ममान में चली आ रही कुतियों को जड़ में उखाड़ने के लिये वे कटिबद्ध हो गये । राजा महाराजाओं ने टाटा के इतिहास में प्रेरित होकर अपने अपने राज्यों का इतिहास लिखवाया था या टाटा के इतिहास लेखन ने राजपूत जाति में सचचा जातिवारी परिवर्तन ला दिया ।

—

टांड की दृष्टि में पश्चिमी भारत के मन्दिर और उनका स्थापत्य

डॉ० सोहन कल्लण पुरोहित

कनन जेम्स टांड की इतिहास में विशेष रुचि थी। इसलिये उन्होंने अपने भारत प्रवास के दौरान राजस्थान का इतिहास और पश्चिमी भारत की यात्रा शीपक ग्रन्थों की रचना की।¹ टांड की पश्चिमी भारत की यात्रा में सम्बन्धित ग्रन्थ तो उनकी मृत्युपरांत ही प्रकाशित हो पायी। इस ग्रन्थ को लंदन की बिलियम एच एन एण्ड कंपनी ने प्रकाशित किया। टांड ने यह ग्रन्थ अपनी पत्नी श्रीमती कनल विनियम हार्टर बन्यर को समर्पित किया।

जेम्स टांड ने पश्चिमी भारत की यात्रा शीपक ग्रन्थ में उदयपुर से स्वदेश रवाना होने तक की यात्रा का बतमबद्ध किया। इस ग्रन्थ में पश्चिमी भारत के ग्रामों, नगरों तथा बस्तियों के अलावा वहाँ के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन का सजीव चित्रण किया गया है।²

प्रस्तुत निबंध में हमारा उद्देश्य कनल टांड द्वारा अपने ग्रन्थ पश्चिमी भारत की यात्रा में उदयपुर मन्दिरों और उनके स्थापत्य पर प्रकाश डालना है। टांड ने विषय ग्रन्थ में मुख्य रूप से राजस्थान और गुजरात के उन मन्दिरों का उल्लेख किया है जो उसने अपनी पश्चिमी यात्रा के दौरान स्वयं देखे। उन मन्दिरों में से कुछ तो आज केवल इतिहास ग्रन्थों की ही विषयवस्तु रह गये हैं।

1. हय डवनपोर्ट द ट्रॉल्स एण्ड ट्रम्पस ऑफ द मवाड विंगडम पृ. 79-84

2. टांड जेम्स पश्चिमी भारत की यात्रा (द ट्रॉल्स इन वेस्टन इण्डिया का हिंदी अनुबां) से मायागनारायण बंसल

कनक टॉड द्वारा उन्पत बंग्णव शव शावत और जन मन्दिरों के विवरण को हम अध्ययन की बुधिया की दृष्टि से दो भागों में बाट सकते हैं प्रथम राजस्थान के मन्दिर और द्वितीय गुजरात के मन्दिर।

कनक टाड स्थापत्य कला का विशेष जानकार न था लेकिन फिर भी अपनी बुद्धि चातुर्य से वह मन्दिरों का जितना विवरण संकलित कर सका उतना उसने किया। अब हम उन मन्दिरों का विवरण प्रस्तुत करते हैं जिनका उल्लेख टाड ने अपनी ग्रंथ में किया।

राजस्थान का मन्दिर और उनका स्थापत्य

कनक टाड ने उज्जयपुर से जब यात्रा प्रारम्भ की तो भाग में कई छोटे और बड़े मन्दिरों को उसने देखा और उनका विवरण उसने अपनी ग्रंथ में प्रस्तुत किया। उसने योगुद्धा होकर पस्यार का भाग अपनाया। उसने पस्यार का श्रानाथी की प्रतिमा और मन्दिर का वर्णन करते हुए लिखा कि मराठा और पठानों ने भागान विष्णु का सम्मान नहीं किया। औरगजेब ने भी यमुना तट पर बने मन्दिरों से संतुष्ट किया तो नाथगारा के श्रानाथनी ने महा शरण ली इसलिये इस स्थान को प्रसिद्धि मिली। इन स्थान के चारों ओर एक सुन्दर परकोटे से किलवन्नी की गई थी।³

प्रकरण तीन में उसने अरावली के पश्चिमी ढाल की यात्रा के दौरान नायनमाता की प्रतिमा के दर्शन किये थे। यही पर बच्चों को चर्चर रोग से बचाने वाली शीतला माता का भी मन्दिर था।⁴

बालपुर या बालनगर के शिवलिंग और उसके सम्मुख बने पीतल के बल ने उसे रोमांचित किया।

टाड ने सिरौही के सारणेश्वर महादेव के मन्दिर⁵ का विस्तृत

3 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 9 10

4 वही पृ 27

5 वही पृ 60, पटना साहनलाल प्रबुद्ध मण्डल का सांस्कृतिक बन्ध, पृ 35 39
श्रीमती गौरीशंकर हीराचन्द सिरौही का इतिहास, पृ 200 में।

विवरण प्रस्तुत किया है। वह निम्नता है कि यह मन्दिर छतरियों से घिरा हुआ है। मन्दिर की गोल छोर महराबदार छत सम्भा पर टिकी हुई है⁶। गुम्बज की शीर्षक इम प्रदेश के रिवाज के अनुसार मण्डपानार है। जिसका छोटा भाग एक लम्बे प्राकार पर सीसा रखा हुआ है। मन्दिर के अंदर शिवलिंग विराजमान है और बाहर एक भारी शिखर जिसका 12 फीट लम्बा है और वह सप्त घातु का बना बनाया जाता है। पंजर के ऊपर दो हाथी दरवाजे पर रखा के लिए गड़ हैं। पूरा मन्दिर एक पत्थर परकाट से घिरा हुआ है। जिस भाग के मुस्लिम मुत्तल ने बनवाया था। महा पर स्थित कुण्ड का जल रोधोस मुक्ति दिलवाता है।

कनक टाड न मरिया के पंच जन मन्दिरों का उल्लेख मान लिया है। जिन्हें उसने स्वयं देखा था।⁷

टाड ने झाबु की भा यात्रा की थी।⁸ इस प्रसंग में उसने गणेश मन्दिर का वर्णन किया है। वह निम्नता है कि इस मन्दिर पर चटना कठिन कार्य है। औरिया और अचलेश्वर मन्दिर के मध्य टाड न मन्दिरों का एक समूह देखा था। जिनमें सबसे प्रमुख नागेश्वर का मन्दिर था। यह मन्दिर चम्बल के प्रपाता पर बन हुए गंगाम्या और उज्जपुर के पास वावस्थियों पर बने हुए मन्दिरों की अनुकूलि था। वह निम्नता है कि मन्दिरों की सरल टोस बनावट, बाहरी चौकोर गम्भे जिनका ऊपरी भाग टट देहाती ढग का बना हुआ है। बिलकुल उमी ढाचे में टटा हुए हैं और उन्हें देखकर यही कल्पना होती है कि यह उसी काल में और उमा वारीधर द्वारा बनाया हुआ है।

झाबु प्रवान के दौरान टाड न प्रवान के मन्दिरों का निरीक्षण किया। वह निम्नता है कि अचलगढ़ में हनुमान मन्दिर का दरवाजा बनावट के परंपरा का बना है।

6 टाड पूर्वी पृ 74

7 वही पृ 77-118 झाबु के दणनाव स्थलों के सम्बन्ध में उल्लेख झाबु दणन (जन गम्पर्व निम्नानव राजस्थान, उज्जपुर द्वारा प्रकाशित), पटनी पूर्वी पृ 171-178

अथलपड का पाशवनाथ मंदिर दशनीय है। इस मंदिर का निर्माण माण्डू के श्रेष्ठी ने करवाया था। मंदिर के स्थापत्य के सम्बन्ध में टांड ने लिखा है कि इसके सम्भे अजमेर के अगई दिन के भोपड (जो मूलतः जन मंदिर था) जस्त थ। वही पर ऋषभदेव के मंदिर का भी उसने देखा था। इस मंदिर में चौबीस में भे प्रथम 12 तायङ्कुरा की मूर्तियां विराजमान थीं। इनका वजन कई हजार मन था तथा ये सबधातुनिर्मित थीं। दुर्ग के पास स्थित एक अन्य मंदिर में पाशवनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित थी। इस मंदिर का निर्माण कुमारपाल ने करवाया था।

टांड के अनुसार—अचनेश्वर झाडू के रसक माने जाते हैं। मंदिर में आकार के निहाज से कोई खास बात नहीं है और सज्जध बहुत कम है। यह एक प्राचीन मंदिर था और एक चतुष्कोण के बीच बना हुआ था। सम्पूर्ण मंदिर नीचे स्लट के पत्थरों में निर्मित छाटी छाटी गुम्बतियों से घिरा हुआ था। वहां रामनाराज पातालेश्वर का प्रसिद्ध अगूटा मुख्य पूजा पात्र था। वहां पवत की देवी की प्रतिमा की भी पूजा की जाती थी। इस मंदिर में टांड ने शिव के उज्ज्वल नख के भी दर्शन किये। मंदिर के चारों ओर पन मंदिरों में से एक के बाहर प्रलयकारीन जल में हजार फनवाले शेषनाग पर भगवान नारायण की मूर्ति उतर रही थी। बाहर खड स्तम्भों पर गज की मूर्तियां उत्कीर्ण थीं। झाडू में देलवाडा का ⁸ पुष दवानया का स्थान है। इसलिये यहां के मंदिरों के समूह को यह नाम दिया गया है। टांड इन मंदिरों के स्थापत्य को देखकर मुग्ध हो गया। इसलिये उनमें यहां के जन मंदिरों का बान विस्तृत रूप से किया। उसने लिखा कि जना के इन मंदिरों की सुन्दरता का वर्णन लेखनी से करना कठिन है। देलवाडा के इन मंदिरों का विस्तृत विवेचन मुनि जयतविजय ने भी किया है। तकिन एक विशेषी हान पर नी टांड का विवरण कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।

टांड ने ऋषभदेव (देनवाडा) के मंदिर का वर्णन करते हुए लिखा कि भारत के सभी मंदिरों से उत्कृष्ट इस मंदिर की समानता ताजमहल के अलावा कोई अमारत नहीं कर सकती। इसका निर्माण विमान शाह ने करवाया जो अणुहिनवाड का व्यापारी था। मंदिर के दरवाजे पर लक्ष्मी

की मूर्ति प्रतिष्ठित है। यह मन्दिर एक चौकोर चौक में स्थित है। चौक की सम्बाई पूव से पश्चिम 180 फीट और चौड़ाई 100 फीट है। मन्दिर की तरफ किनारे किनारे कोठरियां बनी हुई हैं। सम्बाई की दूर 19 फीट चौड़ाई की तरफ 10 कोठरियां बनी हैं। कोठरियां के सामने चारों तरफ चबूतरे पर दोहरे स्तम्भों वाली रक्षित बनी हुई है जो चबूतरे की मसूह में चार सौड़ी जितनी ऊंची है। इनके बीच स्तम्भों की चौड़ाई भी इतनी ही है। इन चार स्तम्भों के प्रतिरिक्त इनके व कोठरियों के बीच की दीवार व अनुरूप ही दोनों स्तम्भों और बने हुए हैं जिनकी छतें चपटी हैं। प्रत्येक कोठरी के सामने एक ऊंची बेन्ची बनी है जिस पर चौबीस जिनेश्वरों में से किसी एक की प्रतिमा प्रतिष्ठापित है। सम्पूर्ण मन्दिर श्वेत संगमरमर का बना हुआ है। इस मन्दिर के प्रत्येक स्तम्भों छतरा घोर वेदी की बनावट एवं मनावट भव्य भव्य है। पत्थरों पर की गई पंचोक्तारी दशनीय है। मन्दिर के प्रवेश द्वार का अध्ययन करने हेतु कई दिनों का समय चाहिए।

मन्दिर के स्तम्भों का वर्णन करते हुए टॉड ने लिखा कि स्तम्भों के निर्माण में इन वास्तुकारों ने स्तम्भ सम्बंधी नियमों का उदाहरण मोजू है। मन्दिर के प्रत्येक कोष्ठ में उस व्यक्ति के इष्टदेव की मूर्ति विराजमान है जिसका ध्येय उसका निर्माण हुआ। निर्माणकाल सम्बंधी शिलालेख प्रत्येक दरवाजे की देहली पर उत्कीर्ण है। चौड़े पत्थरों का चौर के बाह्य सभा मण्डप है जो स्तम्भों पर टिका है। उस पर 24 फीट व्यास की मण्डपकार छतरी है। स्तम्भों के बीच की जगह पर गुम्बदाकार और चपटी छतों पर रामायण महाभारत भागवतपुराण, व अन्य उत्कीर्ण हैं। रात मण्डप में गोपीया घिरा हुआ कहैया भी यहाँ उत्कीर्ण किया गया है।

निम्न मन्दिरों में ऊंची की शूषभदेव की मन्त्रधानुनिर्मित प्रतिमा विराजमान है। इस विशाल प्रवेश के नक्षत्र समकीलध और सनाट पर हीर का टीका सुशोभित था। ऊपर एक मुनहरा जरी का पनाबा लगा हुआ था। इसी मन्दिर के दाहिनी घोर भवानी की प्रतिष्ठापित किया गया था। पास के वन में टॉड ने नेमिनाथ के दर्शन किये। उनकी प्रतिमा प्रस्तर निर्मित थी। टॉड ने चौक से चलकर चौकोर मण्डप में जान पर वहाँ मन्दिर के निर्माता का मण्डपारोही प्रतिमा देखी। उसके पीछे उत्तम भवनाज का बड़ा मण्डप था। निर्माता की प्रतिमा के पीछे एक स्तम्भ था जिस पर अक्षयिनन का ग्राटे ताडा भ त्रिनखर प्रतिमा था।

देवनाग में ही पाशवनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है। टॉड ने इस मन्दिर का

विवरण भी अपने ग्रन्थ में प्रस्तुत किया। यह मन्दिर मानों रूपभेद के मन्दिर से प्रतिस्पर्धा कर रहा था। तेजपाल वस्तुपाल नामक क्षत्रिय-कुल मन्दिर के निर्माता थे। वे चन्द्रावती के निवासी थे। टांड के अनुमान से मन्दिर के सम्भव में सादगी अधिक है। मन्दिर के कामदार सम्भे अधिक ऊँचे हैं। छत की कारीगरी उत्कृष्ट बन पड़ी है। गुम्बद का आयाम 26 फीट है। मन्दिर के विशाल लटकन देखने योग्य हैं। बीच के गुम्बद तथा आसपास की छतरियाँ पर कुर्सी का काम हैं। मन्दिर में छेती का काम इतनी सफाई में किया गया है कि वह सब मोम में ढला हुआ लगता है। मन्दिर में वेदी पर पाशवनाथ विराजमान है जिसका चिह्न सपट है। यहाँ उनदरा देवताओं के मन्दिरों और व्यापारियों का भी सगमरमर पर उत्साह किया गया है।

टांड में भीमनाथ के मन्दिर का भी वर्णन किया। वह विस्तृत है कि यह मन्दिर प्राकृति और शलाभ अथवा मन्दिरों से भिन्न है। यह मन्दिर चार खण्ड ऊँचा और सात्वी के घाटी वाले मन्दिर से मिलता-जुलता था। यहाँ उसमें जिह्व वर की 4 मन भारी पीतल की प्रतिमा की देखा। उनकी पृष्ठभूमि में तीर्थङ्करो मनुष्या और पशुओं की मूर्तियाँ बनी हुई थीं।

इन मन्दिरों की खम्भों वाली छतों निर्माता की अनुभव सम्पत्ति का प्रदान ता कर रहा थी लेकिन वे उनकी कला के प्रति समाज का उच्च स्तरीय सूचन भी कर रही थीं।

आठ में स्थित अमुदा देवी का मन्दिर उचाई पर प्राकृतिक वातावरण के मध्य स्थित था।⁹

वज्रिष्ठ के मन्दिर के सम्बन्ध में टांड में लिखा है कि यह मन्दिर की प्यारत छोटी थी और उसका जीर्णोद्धार कई बार किया चुका था। मन्दिर में मुनि प्रतिमा के शिराभाग के दशन हात थे। यह प्रतिमा काल परवर में निर्मित थी। मन्दिर के एक हिस्से में अतिम परमार की छत्री था। जिस पर अष्टाकार गुम्बद था और नीचे बगल पर परमार की पातल की मूर्ति रखी थी। जिस मुस्लिम धारमणकारी ने खण्डित कर दिया था। चाक के दाहिनी तरफ पातलेश्वर का मन्दिर था।¹⁰

वनन टाड ने चन्द्रायती की भी यात्रा की जो परमारों की ब्रीडास्पली थी। गिरवर और चन्द्रायती के मध्य स्थित मानव ग्राम में उसने शम्बा भयानी और तारिणा के मंदिरों की चर्चा की है। यह स्थल शब्द और जनों का तीर्थ स्थान बताया गया है।¹¹

चन्द्रायती की यात्रा के समय टाड ने एक ब्राह्मण ' मंदिर को जीर्णोद्धार प्रवर्ध्या में देखा। जिसकी प्राकृतियाँ और आध्यात्मिक वस्तुओं की सजावट बहुत बारीकी से एवं उमड़ी हुई रीति से की गई थी। मानव प्राकृतियाँ जो मूर्तियों के समान थी आध्यात्म के लिये भवन में लगी गई थी। वहाँ एसी 130 मूर्तियाँ थी जिन में से छोटी से छोटी 2 फीट की थी। जिन्हें थपठ बारीगरी से बनाये गये लकड़ों में रखा गया था। वहाँ की महाकान की प्रतिमा ने उसे प्रभावित किया। यह सम्पूर्ण मन्दिर स्वतः मगधमर से निर्मित था। मंदिर के भीतरी और मध्य की गुम्बद में राम बहुत बारीकी से किया हुआ था और वह उच्च स्तरीय भी था। मण्डप के भाग की भूमि पर लड्डू हुए लम्बे रविश क ही भगवत्पिचर हा रहे थे, जो सभी मंदिर के चारों ओर घूम गई थी।¹²

टाड ने कोनियों की कुलदेवी आया माता के मंदिर को भी देखा, जो मिमरों वाला और ऊँचे डूंगर (पहाड़) पर स्थित था। यह मंदिर गिरवर से चार मील दूर था।¹³

गुजरात के दर्शनीय मन्दिर और उनका स्थापत्य

वनन टाड ने धातू से गुजरात में प्रवेश किया और वहाँ के दुर्लभ, प्राचीन और स्थापत्य कला में परिपूर्ण मंदिरों का देखा। जिसका विवरण उनके ग्रन्थ पश्चिमी भारत की यात्रा में प्रकाशित हुआ है।

11 वही पृ 130

12 वही, पृ 134 जन के ता एश्वेष्ट निटीत्र एण्ड टाडन ऑन रात्रस्थान, पृ 341-347

13 वही पृ 136

टांड ने गुजरात के सिद्धपुर के शिव मंदिर को देखा। यह मंदिर कर्महालय (मुंड के देवता की माला) के नाम से प्रसिद्ध था। यह मन्दिर आयताकार और पंच स्तंभ था। उसकी ऊंचाई 100 फीट थी। टांड की यात्रा के समय तक यह मन्दिर दो स्तंभों का स्तंभद्वार मात्र रह गया था। इसका निज मन्दिर तो मस्जिद में बदला जा चुका था।

इस मन्दिर के सम्बंध में टांड का साखला भाट ने बताया कि रद्र के षष्ठ मन्दिर में 1600 स्तंभ 121 स्तंभ की प्रतिष्ठा विभिन्न कर्मों में विराजमान थी। इसमें 121 स्वयं कलश 1800 शय्य दधी देवताओं की मूर्तियां 7213 विधाम कला 1,25,000 कुराईदार जालिया पदों निशान और ध्वज निचे हुए चौदहदारी योद्धागणो यक्षो मानवों तथा पशुपतियों की हजारों लाखों पुतलियाँ बनी हुई थी। इस मंदिर के निर्माण पर मिदराज ने चालीस लाख स्वण मुण्ण शय्य की थी। यह मन्दिर अनाउहीन के द्वारा विध्वंस किया गया था।¹⁴

प्रकरण आठ में टांड ने इतिवत प्रकीर्ण मयह के आधार पर निम्ना ३ कि अणहिनपुर में अनेक मंदिर और पाठशालाएँ थी। यहाँ बल्लभ जन मन्दिर है और भील के विचारे सहस्रलिंग महादेव का मन्दिर भी बना हुआ है। वजराज ने वहाँ पर पाशवनाथ का जन मन्दिर बनवाया।¹⁵

टांड ने गुजरात की तारंगी पहाड़ी पर नकडा से बन एक मन्दिर का संकेत किया है।¹⁶ अणहिनवाडा के काली के मन्दिर का भी उल्लेख किया है जो कालीकोट प्रपवा अतरंग नगर का प्रवेश्य मात्र था। जिसमें दो मजबूत बुजें बनी हुई थी जो काली की छतरियाँ कहलानी थी।¹⁷ शिवायस को स्वगत मानकर टांड ने निम्ना कि पुणहिनवाडा में मकन 802 में देवीचंद्र सूरि आचार्य ने अल्लश्वर महादेव की प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाई।¹⁸

14 वही पृ 142 143 उपाध्याय वामुन्द आचार्य भारतीय स्तूत गुण एवं मन्दिर पृ 253

15 वही पृ 164 165

16 वही पृ 202 (प्रकरण 9)

17 वही पृ 237

18 वही पृ 244 245

जम्मात में टॉड ने एक स्तम्भ देखा जो पाशवनाथ के जन मन्दिर का अस्तित्व सिद्ध करता था। टॉड के समय भी वहाँ पाशवनाथ मन्दिर और महादेव के मन्दिर के अवशेष थे।

टॉड ने बनभी के निकट स्थित भीमनाथ के दर्शन किये। यहाँ शिवलिंग बड़ के बम के नीचे खुले में ही स्थित था और वहाँ के जनश्रोत का जल चमत्कारी बताया जाता था।

प्रकरण चौदह में टॉड ने जन धर्मावतम्बियों के प्रमुख तीर्थ पलीताना का विवरण प्रस्तुत किया है।¹⁹ यहाँ के शत्रुञ्जय पर्वत की भी गड न यात्रा की थी। इस तीर्थ की महत्ता का वर्णन शत्रुञ्जय महात्म्य (धनेश्वर मूर्ति रचित्र) शीपक ग्रन्थ में मिलता है।

शत्रुञ्जय पर्वत 2 हजार फीट ऊँचा है। यहाँ के पवित्र आदिनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार मुख्यश्री शिवलिंग ने 421 ई. में करवाया था। शत्रुञ्जय जनो के पंचतीर्थों में से गिना जाता है। शत्रुञ्जय पर्वत तीन भागों में बटा हुआ है जो टूक कहलाते हैं। पहले का नाम मूलनाथ दूसरा शिवर सोमती का चौक तथा तीसरा मानी टूक कहलाता है। इस पर्वत पर स्थित बाहुबली का मूर्ति 46 ई. की है।

टॉड के अनुसार शत्रुञ्जय पर्वत पर पहली इमारत भरत ने, दूसरी घुध शीय ने तीसरी ईशानद्वार ने, चौथी महेन्द्र ने पाचवी ब्रह्मद्वार ने, छठी भवनपति ने सातवी सगर चक्रवर्ती ने आठवा कर्ण ने नवा चन्द्रगान्धर्व ने दशवी चक्रायुध ने ग्यारहवी राजा रामवर्ण ने बारहवी पाण्डव बधुप्रा ने त्तरहवा कश्मीर के व्यापारी जावड शाह ने चौदहवा अणहिनवाण के राजा मिद्वाराज के मंत्री बहिनव ने पन्द्रहवी लिस्सीपति के बाबा मृमरा मारद्वार ने और सोनहवी चित्तौड़ के मन्त्री कर्मानाह डामी ने बनवायी।

पलीताना में पर्वत की तमहटा में शिवनाथनाथ का मन्दिर स्थित था।

19 क्वी पृ 290-306 द्र भारत के मन्दिर पृ 17

उपाध्याय भगवतशरण मारनाथ केरा का इतिहास पृ 149

उपाध्याय बामदेव प्राचात भारतीय स्तूप गुप्त एवं मन्दिर पृ 252 भट्टाचार्य, स न भारतीय इतिहास काज पृ 444

बाभनपोल के पास सिंह बेसरी माता की लघु मूर्ति स्थित थी। हाथीपाल पर जितेश्वर पाशवनाथ मन्दिर था। पाशवनाथ पर सहस्रफरसों का सप्त दृष्टिगोचर होता था। यही पर जगत सेठ का सहस्र स्तम्भ मन्दिर था लेकिन उमम 64 खम्भे ही थे। पास ही कुमारपाल क मन्दिर में टाड ने 52 प्रतिमाएँ देखीं। पहली से पाचवीं पोल के मध्य मूयकुण्ड के पास शिवालय और धनपूर्णा का मन्दिर था।

इसके बाद टाड ने ध्यादिनाथ मन्दिर का विस्तृत विवरण किया है। यह लिखता है कि यह एक प्राकृतिक इमारत है। निम्न मन्दिर एक चौकोर कक्ष के रूप में निर्मित है। जिस पर गोल छत है। इसी प्रकार सभामण्डप भी ऐसी ही छत से ढका है। देव प्रतिमा विशाल श्वेत सगमरमर की है। ऋषभभेद सुपरिचित विचारशुभ में पद्यासन लगाये बठे हैं। जिनका चिह्न वृषभ है। उनका मुक्ताहृतिगम्भीर है और नख तराश हुए हीरे के हैं। यह मन्दिर डच बनावट की धारणियों के सुन्दर चित्रों से सजाया गया है। डयोनी पर सगमरमर की बनी हुई एक बल की मूर्ति तथा एक छाटी हाथी की मूर्ति भी है। जिस पर ध्यादिनाथ की माता महेश्वी अपने पौत्र भरत और बाहुवनि को गोद में लिये विराजमान हैं।

शत्रुञ्जय पवन पर ही टाड ने बाहुवनि का छाटा मन्दिर प्रम दृक् पर स्थित ध्यादिनाथ मन्दिर जिवा मोमजी दूक पर चौमुखी ध्यादिनाथ मन्दिर भरदवी के मन्दिर का अवलोकन किया।

ध्यादिनाथ मन्दिर से उतरते समय टाड पश्चिमी ढाल पर स्थित वृष्ण की माता देवती के 6 पुत्रों के धान पर प्राय चिन्हे कस ने मार डाला था। यह मन्दिर पट्टोशीय था। इसमें बबल चबूतरा और स्तम्भ विद्यमान था। वध किये हुए शिशुमा की प्रतिमाएँ काल पत्थर से निर्मित थीं।

शत्रुञ्जय तीर्थ की यात्रा पूरा कर आगे उतरे हुए टाड ने तुनसाशाम में श्याम मन्दिर जाभुनदाड और भीमनाथ क मध्य स्थित विजयनाथ महादेव कारवार में रणछोत्र मन्दिर और शूद्रपाडा में मूय मन्दिर भी देखा।^०

शूद्रपाडा के पाम नवदुर्गा का मन्दिर था। वहाँ से उत्तर में सातमीन

दूर मधुराय का मंदिर और सूरेश्वर (सूरपाट के देवता) का मंदिर विश्रमान थे। सूरेश्वर शिव का ही स्वरूप माना जाता है।²¹

पट्टण सोमनाथ में टांड को सूर्य मंदिर ने बहुत प्रभावित किया। उस समय तक इस मंदिर के मण्डप ही मात्र रह गये थे। मंदिर का शिखर और गम गह टूट रहे थे। यद्यपि मंदिर की बनावट ठास थी। यह शिल्पशास्त्र बहिन पवित्र शिवरवाय भवनो के विधाना से परिपूर्ण था। भित्तियां पर बनी आकृतियों व ढांचे स्थूल और स्पष्ट थे। इसका प्रवेश द्वार तीन पत्थर से निर्मित था। मण्डप का व्यास 16 फीट था जो सजावट वाले सम्भो पर आधागिन और चारा और दरमदे से घिरा था। मण्डप व प्रांगण एक मंडिद था जिसकी छतरियां चौकोर एवं सीधे स्तम्भा पर टिकी हुई थी। वहां से निज मंदिर में प्रवेश करत थे।²²

सूर्य मंदिर से टांड सिद्धेश्वर महादेव के मंदिर में गया। यह मंदिर पट्टण शान्कर बनाया गया था। यहां शिवारों पर चारणों का दबी शिलाज और पानालेश्वर की मूर्तियां क दशन किय। छोटे स मण्डप की दावारी पर कुछ अन्य मूर्तियां भी थी। जो नवग्रह की बतलायी जाती थी।

टांड न उस स्थल की भा यात्रा की जहां से भगवान् श्री कृष्ण परम धाम पधारे थे। वहां पास ही पीपलेश्वर महादेव का मंदिर स्थित था। जिसका उत्तम अखुल फल न भी किया है। वहां से टांड न हिरण्य नदी के प्रागे भीमनाथ व मंदिर का देखा। इस शिव मंदिर का शिखर ढरे की भाति था। उसकी छत पिरामिड व ठास प्राकार जमी थी। टांड इन मंदिर के सम्बंध में प्रतिश्रिया व्यक्त करत हुए लिखता है कि यह मंदिर सम्भवत महाकाल के मंदिर का प्राचीनतम प्रकार था। टांड के अनुसार इस मंदिर व समीप ही महादेव का एक बहुविग्रह शिव है। जो काश्वर व नाम से प्रसिद्ध रहा है। टांड न श्रिया है कि यह शिवार्तिग लाल पत्थर से निर्मित है और उस पर बहुत से छोटे छोटे शिव बने हैं। इस पश्चात् इस विदेशी इतिहासकार न पापेश्वर व मंदिर का भा देखा जिसकी इमारत नष्ट हो चुकी थी। कहा जाता है कि इसका निर्माण स्वमंश्री न करवाया था।²³

21 वही पृ 335-337

22 वही प्रकरण 16 पृ 339-340

23 वही प 341-344

इतिहासकार टाइ ने भगवान् सोमनाथ के मन्दिर का विस्तृत विवेचन किया है। उसने देखा कि इस मन्दिर के निम्न जमीन पर विश्वरे पड़े थे। मन्दिर के प्रवेश द्वार पर कलशदार मिनारें थी जो मुस्लिम शिल्प का प्रतीक थी। यद्यपि मन्दिर का अधिकांश भाग महमूद ने नष्ट कर दिया था। इस मन्दिर की बनावट की तुलना टाइ ने चित्तौड़ के लाला के मन्दिर से की है। यह मन्दिर चार भागों में विभक्त था यथा बाहरी पाल निम्न मन्दिर का प्रवेश द्वार है जो स्तम्भ पत्ति युक्त विशिष्ट मार्गों (बराहदों) से घिरा हुआ है। बाहरी परिधि 336 फीट लम्बाई 117 फीट और पूरी चौड़ाई 74 फीट है।

मन्दिर के बाहरी भाग का वर्णन करते हुए टाइ ने लिखा है कि स्तम्भाधार भूमि चार भागों में विभक्त है और प्रत्येक का नामकरण उन भाग में हुए सगतराणी के नाम पर हुआ है। पहले भाग में साधारण हजारों के मानाकार दानों पर ग्रहा के बहुत से मस्तक बने हैं। एक हस्ती सी मखला इसका दूसरा शोष पत्ति से विभक्त करती है जो गजतूड है इसमें अष्ट भविष्यो में भय बने हुए हैं और इसमें भी ऊपर की पट्टी में जो कुछ अधिकांश चौड़ी है मत्तवाल मद्यपि नतकी की टालियां उलकीए हैं। जो विविध प्रकार के वाद्य लिये हुए हैं और नाना प्रकार के हाव भाव प्रदर्शित कर रहे हैं। पीठिका के ऊपर उलकीए प्राकृतियों में से अधिकांश नष्ट हो चुकी हैं। एक बने हुए स्थान के कुछ भस्म से पता होता है कि यहाँ राममण्डल की स्वर्गीय अप्सराओं का प्रकट हुआ है।

मण्डप का गुम्बज पूरा है। मेहराब की चौड़ाई 32 फीट है और तिरा पर चपटे अर्द्धवृत्त का भाग होने के कारण उसकी ऊंचाई घास में अधिकांश अर्धवृत्त घरातल से मेहराब की उगम तक लगभग तीस फीट है। छतरी 8 खम्भों पर टिकी हुई है। जिनके शीप बने मतिभारी पट्टों द्वारा सम्बद्ध हैं। गुम्बज की प्राकृति एक जहाजी विण्ड के समान है। इस पर कितनी ही परतें चढ़ी हुई हैं। उने टक्करने पर इसमें से धानु के समान ध्वनि निकलती है। इन खम्भों और शीप पट्टों की स्थिति से जो एक अर्द्धवृत्ताकार गुम्बज के लिये अष्टकोण आधार बना हुई है, यह प्रमाण मिलता है कि प्राचीन डाट के सिद्धान्त के अनुसार इस छतरी की मूल आयोजना हिन्दू प्रकार की रही होगी।

मुख्य भाग के अनिर्दिष्ट जिससे दानान में होकर हम निम्न मन्दिर में जाने हैं इसकी अतः स्तम्भ-संघटना सुघट और मेहराबदार है और ये

महाराजों एक का छोड़कर एक नुकीली भयवा दीध बत्ताकार है। छतरी व मुख्य भाग और निज मन्दिर के बीच में एक विस्तीर्ण प्राच्छान्ति और स्तम्भ पत्ति युक्त अति है। जहाँ शिव लिंग था वह स्थान अब ध्वस्त पड़ा है। पश्चिमी दीवार पर इस्नाम का धर्मसिन्धु खुदा हुआ है। मुख्य कमर और बाहरी दीवार के बीच भारी भारी स्तम्भों की पत्ति है जिन पर बन हुए चपटे भयवा अडवत्ताकार बाहर निकलत स्तम्भ शीशों पर छत की पट्टीया टिकी हुई हैं। सामनाथ मन्दिर अपने ऊँचे परकोटे से घिरे हुए विशाल चतवार चौक के बीच खड़ा है। इसके आसपास के मन्दिर उपर्युक्त की भाँति सामनाथ के मन्दिर की शोभा बनाते रहे होंगे। ये मन्दिर अब नास्तिकत्वित हो गये थे। टाड ने उन मन्दिरों के मलबे को देखा था। उनमें सोमनाथ के मन्दिर के सम्बन्ध में निम्ना कि भारत में तो इसकी समानता करने वाला कोई स्थान नहीं है।⁴

पट्टण से लगभग 40 मील की दूरी पर स्थित अहीरा के गाँव हात में टाड ने दो मन्दिरों के खण्ड देस। उनमें में एक मूल्य का दवालय था।

जुनागढ़²⁵ गुजरात का इतिहासिक स्थान है। टाड ने यहाँ के दुर्ग की यात्रा के दौरान कुमारपाल का मन्दिर तथा नमीनाथ मन्दिरों के अवशेष देस। दुर्ग के बाहर पूर्वीय द्वार से प्राग चलन पर सोनार कुण्ड के पास पहाड़ी पर उसने बाधेश्वरी माता का मन्दिर देखा। इस मन्दिर में माना काटों का मुकुट धारण विय हुआ था और उसका वास्तु सिद्ध था।

गिरनार जाते समय माग में दामादर महादेव का मन्दिर है। पास ही छोटे मन्दिर में बसुदेव की मूर्ति विराजमान है। टाड के ग्रन्थ पश्चिमी भारत की यात्रा के सम्बन्ध में गोपाल नारायण बहुरा के अनुसार यह प्रतिमा बनराम की नहीं अपितु विष्णु का है जो गंगा चक्र तथा शम्भु

24 वहीं पृ 345-355 भट्टाचार्य सच्चिदानन्द भारतीय इतिहास बोग पृ 485 उपर्याय वासुदेव, पूर्वो पृ 253

25 टाड पूर्वो, पृ 378-387

घारण क्रिय हुए हैं।²⁶ तामादर महादेव के मंदिर से आगे बढ़ते हुए टाड न भवनाथ महादेव के मंदिर को देखा। यह एक रमणीय स्थल था। गिरनार की तलहटी के समीप पाण्डवों का मंदिर था। वही दो अन्य मंदिर कहैया तथा द्रापदी के थे। इन मंदिरों की छतें प्रताप के सम्भों पर आधारित थीं।

गिरनार²⁷ पहुँचकर टाड ने शम्भा गोरखनाथ और कालिका के मंदिरों को देखा। जिन गोरखनाथ मन्दिर में सिद्धा की पादुकाओं के भी दर्शन क्रिय।

गिरनार जन घमावलम्बिया हनु श्रद्धा का प्रमुख केन्द्र है। यहाँ पर टाड न भमिनाथ मन्दिर के दर्शन क्रिये। उसने तीन मंदिरों की त्रिकुटी को भी देखा जिनका शिर्षोद्धार अथवा निर्माण तजपाल वस्तुपाल ने करवाया था। ये तीनों एक चतुर्दरे पर हैं और आरू के मन्दिरों से आधी शताब्दी पुराने हैं। बीच के मंदिर में जन्मीमर्वे जन तीर्थङ्कर मल्लिनाथ की मूर्ति है। इनके दक्षिणी द्वार का मन्दिर मुमरु और बायीं ओर का समेत शिखर कहलाता है। जो जन घमावलम्बिया का पंच तीर्थों के पवित्र दो शिखरों के रूप में प्रसिद्ध है। मंदिरों पर पत्थर की कारीगरी की सुन्दर है। भमिनाथ की मूर्ति श्यामल है। उनका मन्दिर चार मञ्जिलों का है जो एक एक बाएँ एक छोटी होती चली गई है। सबसे ऊपर आठवें तीर्थङ्कर चंद्रप्रभ विराजमान है प्रत्येक शिखा के काने पर भी एक एक मूर्ति स्थित है। एक कान पर पील रत्न की बनी भेद शिखर की लघु आकृति है जो छत के पार चली गई है।

आगे वाला मन्दिर जो गोरखनाथ को अर्पित है, उसे सामग्रीति ने बनवाया था। मंदिर से प्रवेश द्वार से एक सीपान सारणि सम्भों पर लिकी ड्योगी तक जाती है। जिसमें हाकर मन्दिर के मुख्य भाग में प्रवेश करते हैं। तिहरी स्तम्भ पक्ति पर छत से आच्छादित विशाल कक्ष में होकर मण्डप में पहुँचते हैं। जो प्रायः 30 फीट लम्बा और इननाही चौड़ा है। यह स्तम्भों पर खड़ा है। स्तम्भ पक्ति युक्त दीर्घाण जिसमें चौकोर सम्भे सीवार के सहारे खड़े हैं इसे दालान से और अंतरंग मण्डप से जोड़ देती है जो बुम्बजदार

26 वही पृ 385

27 वही, प 390-402

एक से प्राच्छान्ति है। इनके आगे बेनी पर पाशवनाथ की मूर्ति निच मन्दिर म विराजमान है।

इस मन्दिर से टाड भीम कुण्ड गया जिसके निकट एक मन्दिर का टूटी फूटी अवस्था में देखा। इस मन्दिर को अणुहिलवाडा व कुमारपाल ने बनवाया था। मन्दिर का नक्शा पाशवनाथ मन्दिर जमा हा था।

इसके पश्चात ऊंची दीवारों से घिरे हुए सहस्रतफली पाशवनाथ का देवा जो अत्यन्त सुन्दर ढंग में निर्मित था। यह मन्दिर सोनी पाशवनाथ कहताता था। क्योंकि इस मन्दिर का जीर्णोत्थार दिल्ली व सोनी साम्राज्य न करवाया था। मन्दिर व भीतर हक हरे और चमकीले चट्टानी पत्थरों व सभ्भा व बारण यह वाका अर्द्धा दिखलाई पन्ता था। इस म दर की बनावट भी पूर्व वर्णित मन्दिरों के समान ही थी। आगन म कोठरियो म मटता तथा भक्तो की प्रतिमाए स्थापित थी।

गड की टुक पर ऋषभदेव का मन्दिर था। जिसके चार ओर स्तम्भ अत्यन्त सुन्दर थे। यहां मन्दिर और पीले सूखवात व बन हुए मरु और समत आदि पवित्र जन शिखरों की उधु आकृतिया विद्यमान थी तथा चौक की चार दीवारों व सहारे सहारे छोटी कोठरियो का पक्ति चली गई है जिनमें चौबीस तीर्थद्वार विराजमान थे।

टाड के अनुसार समूह का अंतिम मन्दिर खगार व मट्टों से सटा हुआ गिरनार व दक्षता नमिनाथ का है। यह मन्दिर बहुत पुराना है। इनका भीतरी भाग भी भित्ति चित्रों तथा चमकीले जगद से सजा है।

गिरनार की घाटा व बाद बनत टाड आग दक्षत हुए गुमता चरहा पृष्ठा। वहां का जठवा का मन्दिर बड़ा प्रसिद्ध था। टॉड लिखता है कि यह प्मारत नाम की आकृति की है। मन्दिर एक चबूतरेकी पीठिका पर खड़ा है। जिसका माप 163X120 फीट है। यह मन्दिर तरागे हुए पाथरों में बना है। इसकी भित्ति सजा सुन्दर है। मन्दिर में 23 फीट व्यास वाला एक अणुवाण मण्डप है जिसकी उचाई दो सण्ड है और इसके ऊपर गुम्बज है जो घरातन में 35 फीट ऊंचा है। इसके आघार में लगभग 12 फीट उचाई व स्तम्भों की एक सारिकी है अष्टकालाकृति में आघाजित की गई है और ये स्तम्भ कोरली का काम लिये हुए हैं और पट्टों से सम्बद्ध कर लिये गये हैं। पत्थरों के ऊपर दुनरी स्तम्भ पक्ति है जिस पर कारली द्वारा उन्नीस राम मन्त्र व दक्षका स्वर्गोप नग्य सम्बन्धा पूर्वियों से मुम्बित्त मुम्बद टिका है। पूर्व और

पश्चिम का और भाग तिक्ता हुई दो ड्यागिया ह जो गिरिजापरा के मध्य भाग के समान है। इनकी ऊचाई तथा चौड़ाई 14 फीट व 18 फीट ह। इनमें अनेक स्तम्भों व बीच में छत हैं जिसके मध्य में बारिकी और सजावट से एक कमल बनाया गया ह। बड़ी गुम्बज के चारों ओर छोटी गुम्बजों भी ह जो भी स्त्री की तरह स्तम्भों पर टिकी हुई है। पश्चिम में निज मन्दिर मूर्ति विहीन है। इसके ऊपर का शिखर तोड़कर गिरा लिया गया है। यह मन्दिर सम्भवतः शिव या हनुमान का रहा होगा।²⁸

यह मन्दिर सघाटा दूरी पर ही गणपति के मन्दिर का भी टाड न भवनाकन किया। मन्दिर में कोठरियों के चारों ओर स्तम्भों के स्थान पर दीवारें और चौखटदार खिडकियाँ थी और इनकी छत मण्डपार थी। गणपति मन्दिर के उत्तर में बौद्ध का एक मन्दिर था। जिसमें एक हमरे में सट हुए चार मण्डप थे। स्तम्भों पर टिके हुए थे। इस मन्दिर के भीतर पार्श्वनाथ की मूर्ति थी और एक पर्यटन पर चौबीस तीर्थहार की मूर्तियाँ उकीली थी।²⁹

शरका प्राचीन काल में भारतीय व्यापार एवं वाणिज्य का प्रमुख केन्द्र रहा है। पश्चिमिक ग्रन्थों में द्वारावा सम्बन्धी कई कथानक लिखे गये हैं। टाड के अनुसार यहां का दृष्टा मन्दिर समुद्र तट से कुछ ऊचाई पर बना हुआ है। यह मन्दिर परकोठे में घिरा हुआ है। इनकी शिल्प कला वहीं है जिसे हम (गिचरबध) देवालय की मजा लिया करत हैं। अध्ययन हेतु यह मन्दिर को तीन भागों में बाटा जा सकता है यथा मण्डप या मभा भवन देवप्रण या निज मन्दिर (गणगण) और शिखर। इस मन्दिर का मभा भवन चौकार ह तथा इसकी ऊचाई पांच स्पष्ट गणिया (मत्रिलो) में विभक्त ह। प्रत्येक सण्ड में स्तम्भ समूह ह। सबसे नीचे सण्ड की ऊचाई दस फीट ह और धन्य तक वही सम चौखोण भाङ्गति रहती चला गई ह जिनमें आठ छोटी पट्ट लगाय गये हैं जो उत्तरोत्तर गुम्बज के लिये आधार बन जात हैं सबसे ऊपर की चाटी घरानल से पचहत्तर फीट ऊची ह। प्राङ्क वगैरे चतुष्कारण के मुख भाग पर चार-चार भागों सम्म भङ्ग किये गये हैं जो यह महान भार का नीचे का बाण करत हैं। परन्तु इन्हें भार वहन करने के लिये अर्थात् समझ कर प्रत्येक स्तम्भयुग्म के बीच-बीच में कुछ अतिरिक्त

28 पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 413-414

29 वही पृ 414-416

सम्भे लगा दिये गये हैं जिससे समरूपता का बनिदान हो गया है। लगभग दस फीट चौड़ाई की एक सम्भेदार 'भमती' या फिरनी मध्य नीच की मजिल में घूम गई है। जिससे उत्तर दक्षिण और पश्चिम की धार के भाग सम्भों के सहारे और भी घाने बग गये हैं। प्रत्येक खण्ड में एक भमती रविण भी है जिसके गिरे पर तीन-तीन फीट ऊंची दीवार बनी हुई है कि जिससे कोई अनावधान मनुष्य नीचे न गिर जाय। इन छोटी-छाती बावारा पर पृथक्-पृथक् विभक्त भागों में कुराई का बड़िया काम हो रहा था। परन्तु विदेशी भाङ्गमणकारिका न उहें नष्ट भ्रष्ट कर लिया। फिर भी इसमें मूल इमारत की कोई क्षति नहीं पड़ती।

टाड के विवरण के अनुसार निज मन्दिर वर्गानार है। इस मन्दिर में वृष्ण भक्तिाल में पूज्य बुद्ध विप्रियम की पूजा होती थी। जिसका एक ग्दु मन्दिर अब भी देवालय में विद्यमान है और वृष्ण की मूर्ति इसमें बाहर बध में स्थापित है। अत्यन्त प्राचीन शनी में निर्मित इस शिखर में एक के बाद एक पिरामिड बन हुए हैं जो जमीन से 140 फीट का उचाई पर जाकर समाप्त होता है। जहाँ इस पिरामिड की छाटनी दावे शिखर का व्यास बहुत छोटा हो जाता है उसमें पहल इसका सात मजिलें स्पष्ट है। प्रत्येक मजिल का मुख भाग एक खुल आसारे से मजा हुआ है जिस पर छोटे छोटे सम्भों पर टिक हुए छज्जे भी बन हुए हैं। प्रत्येक मजिल में भीतर की धार सम्भों पर सम्भे टिके हुए हैं और इन पर टिक हुए मध्य पट्टे उन पर धर हुए भार की घटती हुई मात्रा की प्रपक्षा अनुमान प्रधिक भारी होते बन गये हैं। इन सम्भों के शीष दन विलकुल गादा है और चारों तरफ बुद्ध-बुद्ध प्राग निकल हुए हैं कि उन पर मध्य पट्टे आमानी में टिक सकें। इस इमारत की पूरी बनावट जिसकी भीतर से उम्दाई चौड़ाई अष्टतर फीट और टिपालित फीट है चट्टानी पत्थर या बनुषा पत्थर की है।³⁰

यहाँ वृष्ण पूजन रणछोड के रूप में होता है। एक सम्भोधारित इकी हुई सुरग वृष्ण के मन्दिर का उनकी माता देवकी के मन्दिर में जाती है। विशाल चौक में बुद्ध और भी छोटे-छोटे मन्दिर हैं। इनके सामने ही मुख्य मन्दिर के दक्षिणी-पश्चिमी कोने में वृष्ण के दूसरे रूप मधुराय (मधुरापुरी के स्वामी) का छाना मन्दिर है।

द्वारका में ही टाउ न गौमती के तिनारे पर सगम नारायण के मन्दिर का उल्लेख किया है। यहाँ पर भायरे में मण्डप के दक्षिण पश्चिमी कोने में यन्त्र के प्रतिमा विद्यमान हैं। इसी प्रकार वहाँ चार्गे और एकता के देवता के मन्दिर का विवरण दत्त हुए टाउ लिखता है कि यह मन्दिर त्रिविक्रम बुद्ध के प्राचीन मन्दिर पर घोखामण्डल के राजा बज्रामन बनवाया जो कृष्ण का पाता था।

द्वारका के मन्दिर के शिखर का तान का काय घोरगजेव ने किया। परन्तु सामान्य मानिक बाधेर रणछोड की प्रतिमा को गहल ही बेट (यात्री) में ले गया जहाँ वह अब तक मौजूद है।

टाउ न द्वारका के कृष्ण मन्दिर के अनावा बुद्ध और मन्त्रों का भी विवेचन किया है। प्रकरण बीस में मारमरा के निकट भी इन नाम के मन्दिर शलाकार में मल्ल नारायण मन्दिर वहीं मीरा बाई द्वारा निर्मित गापाव मन्दिर सगद के सगम नारायण मन्दिर (दस्युमा के देवता और रणक) का स्तोत्र में वर्णन किया गया है।³¹ जेम्स टाउन माण्डवी (रायपुर बन्दरगाह) के तदुणनाथ मन्दिर के प्राचीन ध्वरणा का भी निरीक्षण किया। यह एक समाधि स्मारक था।³²

उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कनन जम्म टाउ का भारतीय सभ्यता के प्रति विशेष अनुग्रह था। इन भारतीय प्रवास के प्रत्येक क्षण का वह संप्रयोग करना चाहता था। उसने अपनी स्वदेश वापसी की यात्रा में भारत के सांस्कृतिक स्थानों को देखने का निश्चय इसी समय में किया। टाउ न जो भी स्थान दया उमरा विवरण लिखे हैं, उनमें अपने यात्रा वर्णन में पश्चिमी भारत के मन्दिरों का विस्तार से विवेचन किया। मन्दिरों का उल्लेख करत हुए उनका स्थापत्य तथा पर भी पूर्ण प्रकाश डाला। टाउ का यह विवरण भारतीय कला में रचि रखने वाले किशाना हेतु पान का महत्वपूर्ण स्त्रोत है। उनके विवरण में पूर्णता है और कला सम्बन्धी तकनीक की भावना भी। कनन टाउ न पश्चिमी भारत की यात्रा की एक ग्रन्थ में हम एक कई मन्त्रों में अलग-अलग कथाएँ हैं जो हमारे स्मृति पटल में नुप्त हो चुके हैं। अथवा जिनका स्वरूप अब खल गया है। इसका प्रमुख उदाहरण गुजरात के सामनाथ के मन्दिर के जो अब इस रूप में विद्यमान नहीं हैं जिस रूप में उस टाउ ने लिखा था। इस प्रकार कनन टाउ प्राचीन भारतीय स्थानों पर अन्वेषण की निरन्तरता को बनाये रखने वाला प्रमुख व्यक्ति सन्त है और उनका ग्रन्थ पश्चिमी भारत की यात्रा भी किसी कला को न केवल उपाय नहीं है।

31 वही पृ 434-449

32 वही पृ 461

कर्नल जेम्स टॉड : समाज सुधारक

—डॉ गोपाल व्यास

भारत के उत्तर प्रांत (वर्तमान में उत्तर प्रदेश) के मिर्जापुर नामक स्थान पर जन्म टॉड अपने पिता के साथ 8 10 वर्ष की अवस्था में भारत आया था।¹ यद्यपि वह यहाँ एक वर्ष भी नहीं रहा किन्तु जन्म के मन में इस भूमि के प्रति जिज्ञासा तथा संवेदनता रहने लगी। इसीनिष्ठ वह एस्ट इंडिया कम्पनी की सेवा में भर्ती होकर 1800 ई के आरम्भ में पुनः भारत आया।² कलकत्ता में कम्पनी का मजिस्ट्रेट बनें करते हुए उसने बंगाल के जन-जीवन को समीप से देखा। यहाँ से टॉड का स्थानांतरण दिल्ली कर लिया गया जहाँ में दोतीन वर्ष उपरांत 1805 06 ई में उसका पदस्थापन पौलतराव मिर्जापुरा के दरबार में किया गया।³ मिर्जापुरा के साथ रहते हुए केप्टन टॉड ने मालवा एवं राजपूताना के जन-जीवन का दखन और समझने का प्रयत्न शुरू किया। इसके फलस्वरूप उसकी रुचि भौगोलिक ऐतिहासिक तथा कागज़ी करने की ओर झुकाव हुई। 1818 ई के आरम्भ में उसने मराठे मारवाड़ तथा हाडासी का पारिटीकरण एक्ट नियुक्त कर राजस्थान भेजा गया तब से 1 जून 1822 ई तक टॉड ने उज्जैन जायपुर जसलमेर काठियावाड़ सिंधी आदि राज्यों का प्रशासनिक यात्रा⁴ हा नहीं बल्कि इस क्षेत्र

- 1 गुप्ता एवं व्यास राजस्थान के इतिहास के अंश, पृ 107
- 2 1798 ई में टॉड इंग्लैंड में इस्ट इंडिया कम्पनी की सेवा में एक क्लर्क के रूप में भर्ती हुआ था, उपरान्त पृष्ठ-वर्ण
- 3 उज्जैन
- 4 पञ्चमी 1818 ई में टॉड का उज्जैन जाना का आदेश हुआ तथा 8 मार्च 1818 ई का वह अपनी वापस प्रस्थान करने उज्जैन पहुँचा था।
- 5 टॉड टुवेंगे एन यन्त्र इण्डिया (द्वितीय अनुवाक), मजिस्ट्रेट के वक्तव्य में

पारिवारिक-बन्ध एव द्वय की उत्पत्ति ही नहीं बरन दहेज की उंची दरों मिश्रितन कयामा को हया बन्ध का वातावरण भा उपवन कर दिया था।⁹ दहेज प्रथा क विन्त स्वरूप न राजस्थान म त्याग प्रथा के स्तर पर राजपूत का आर्थिक शक्ति की परम्परा का स्थापित किया जिससे पत्रस्वरूप अन्ध्र म प्रच्छा समझ राजपूत भी पुची विवाह स कतगन गया। इसका फल यह हुआ कि विवाह का उन्नत हान का भी राजपूत परिवार में कु भारी महत्त्व दे दिया परिवार की शक्ति द्वय तथा बन्ध बनाने का मापन बनन गया।

सामंती - वातावरण न धरमानवीय व्यवहारा का इतना काहरा समाज म छा गया था कि जहा दामा को पुत्रवत् सम्मान प्राप्त होता आया था वहा आचाररूपा शताब्दी क उत्तरार्द्ध म यह शक्ति - शक्ति जसी स्थिति म पहुचा गया।¹⁰ इनका अस्तित्व इनके स्वामियों की कृपा पर निर्भर रहता था। टाड कालीन राजस्थान के समाज म मप्रभु शक्ति शक्ति पापी गई वंठ बगार¹¹ प्रथा भी सामाजिक शासन का प्रतिमान बन गई थी। शासक प्रशासक एव समझ जन का जीवन इतना विनाशपूर्ण हो गया था कि बज, धमल शाराव तथा रक्षल स्त्रियाँ उनके सामाजिक सम्मान की श्रेणी म आकी जान रही थी।¹²

राजस्थान म मराठा अतिशयों म प्रभावित नई जातियों ने अपना जीवना - साधन चोरी डकेनी का बना दिया था।¹³ इनके बजर मानी धारी बावरी मर भीणा भीन मुख्य थे।¹⁴ किन्तु अपने क्षत्र शौर प्रभाव अन्तार हेतु छोटे छोटे जागरदार (राजपूत) भी उकती क काय बरन म

9 बनर्जी एमो - राजपूत स्टेट्स एण्ड ट्रिटींग पेरामाउटसी, पृ 45-46

10 मिहू तवार २ इस्ट इंडिया कम्पनी एण्ड मारवाड, पृ 211

11 प्राचीनकाल म यह कृतव्याभिमुख नामाजिक - आर्थिक सेवा रही थी (ध्यान नामाजिक आर्थिक जीवन पृ 88-89) किन्तु इन शक्त मर यह धम-शारावकी शौर उमुख हान गती टाड एनाल्स भा 1, पृ 237, 1088 टूबल्स (हिन्दी) पृ 100 वीर विनायक पृ 136

12 गैड एनाल्स भा 1 पृ 350 (46 एच 1092 टूबल्स (हिन्दी) प 3, 13 496 आन्ना, उइ भाग 2 प 701

13 ध्यान सामाजिक - आर्थिक जीवन प 130

14 उपराक्त प 127-133

हिचकिचात नहीं थे।¹⁵ इसी प्रकार राज्य में सामाजिक कल्याण के प्रति लोगों में उदासिनता का भाव¹⁶ कई प्रकार के राजनीतिक सामाजिक गड़बड़ पाने हुए प्रशासनिक व्यवस्थाओं को प्रभावित कर रहा था इनमें रखवाली बोलार्थ जमी राजनीतिक-आर्थिक स्वैच्छाचारिता और किसान व बणिक वर्गों का मानवभूमि से पलायन की समस्या प्रमुख थी।¹⁷ इन परिस्थितियों में समाज का आह्वान माफीदार-वर्ग कृषि कार्य के प्रति निष्क्रिय था कि कई बाधा राजस्थान की उपजाऊ भूमि बजर पड़ी हुई थी। कलस्वरूप समाज पीछे ही नहीं रहा था बल्कि आर्थिक दृष्टि से सामाजिक विपन्नता का नया राजस्थान में जड़ जमा चुका था।

जनल जेम्स टॉड ने उन्नेसिवे यातावरण का अनुभूत ही की किया वरन इसके लिए उसने सुधार हेतु प्रयत्न भा आरम्भ किया। उनके सुधारामक उपायों का अध्ययन दो प्रकार से किया जा सकता है (1) विद्यमान समस्याओं के प्रति टॉड के विचार एवं (2) सामाजिक दृष्टता के निष्ठाता टॉड के चिकित्सक प्रयास। इन हम टॉड के सामाजिक सुधारक स्वरूप का अवलोकन करने के लिए दोनों ही प्रकारों के उपायों की एकिकृत रूप में व्याख्या करेंगे।

समाज सुधारक कलल टॉड

राजस्थान ही नहीं अपितु मगध भारत अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सामाजिक कुरीतियों के अभिशाप में अस्त रहा था। फिर

15 टॉड के अनुसार स्वयं ठाकुर लोग अपने अमीन सबका धयवा अपराधकर्मों जातियों का संरक्षण प्रदान कर चारी-लूटपाट बलात्कार आदि का बन्धा देते थे इसीलिए टॉड द्वारा किया गए सविधान 1818 ई में हमका रोकने हेतु निर्देश है एनाल्स भा 1 प 564

16 एनाल्स भा 1 प 621

17 राष्ट्रीय अभिनवागार नई दिल्ली मरलि - फारेन पाची लेखन कलल टेंशन पत्रस 19 20 1821 ई 6 दिसम्बर बीर विनाद प 1743 14

राजस्थान के राजपूत राजा का समाज तो प्रतिष्ठा के दृष्टिकोण से बहुत परम्परावादी तथा रीतियों के दृष्टिकोण से बहुत पुराना हुआ था। जेम्स टाड ने पोलिटीकल एजेंट का पदभार ग्रहण करने के साथ ही सबसे प्रथम सामाजिक राजनीतिक मुद्दों की ओर ध्यान दिया। मेवाड़ राज्य में सामान्य की स्वच्छतावादी प्रवृत्ति पर अकुशल खगाने के लिए उसने उच्च श्रेणी के जागीरदारों में व्यक्तिगत सम्पर्क किया और समझौता-पत्र पर उनके हस्ताक्षर कराये।¹⁸ यद्यपि सरकार ने इस समझौते का पूरा पालन नहीं किया किन्तु इसके परिणामस्वरूप राजपूत समाज में राजा की पद प्रतिष्ठा पुनः प्रतिष्ठित होने से राज्य का सामाजिक राजनीतिक जन-जीवन शान्तिपूर्ण व्यवस्थित होने लगा। इस समझौते से खेवाली बुगी जैसे अधिकार सामंतों को छोड़ने पर साथ ही चार डाकू ठग तथा हथारों को उनकी जागीर में सरसण प्रथात् सरसण दान का कानूनी अंगगण घोषित किया गया।¹⁹ अन्धराधकर्मों काटिया के पुनर्वास हेतु टाड ने स्ट इण्डिया कम्पनी के भारतीय शासन का अपनी योजना प्रस्तुत की थी।²⁰ पर कम्पनी की सरकार ने इस प्रकार ध्यान नहीं दिया क्योंकि कंपनी सरकार ने राजपूताना (राजस्थान) के प्रति कोई विश्वस्त नीति टाड के समय तक निश्चित नहीं की थी।²¹ इसीलिए टाड ने अपने प्रयत्न शासकों तथा सामान्य के मध्य निरन्तर रम। उसने भरोसे का बनिविधियों को रोकने के लिये मेवाड़ के पूर्वोत्तरी पर्वत क्षेत्र में यान, स्थापित कराये तथा जोरदुर के शासक मानसिंह का भी इस हेतु परामर्श

- 18 टाड द्वारा चारम मद्रास को प्रेषित रिपोर्ट फारिन-पोलिटिकल कमिशनेशन 1819 ई 6 जून परा-13 एवं 18 राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली टाड एनाल्स भा 1 प 565-72
- 19 एनाल्स भा 1 प 564, घोषणा उ ई भा 2, प 707 यद्यपि सरकार के अधिकार का मनुस्क्रिप्ट तथा काठारिया के जागीरदार ने 1827 ई तक नया छाडा था फलतः टाड के उत्तरदायित्वारी कप्तान काव को अप्रैल 1827 ई में इस हेतु पुनः प्रयत्न करना परा या (उ ई भा 2 पृ 719 एवं 734) इ.क. ज.सी. - हिस्ट्री पॉल मेवाड़ पृ 72
- 20 टाड द्वारा एडम का भेजा गया पत्र, फारिन-पोलिटिकल कमिशनेशन 1819 ई अप्रैल 17 न 38 तथा टाड का मद्रास का पत्र, उक्त, 1821 ई, जनवरी 6, रा घ नि
- 21 ब्रिटिश की के राजपूताना एनेसी पृ 231

न्याय मूर्खों को छावनिया में इतनी भर्ती की जान लगी वहा मर और मीणा जाति का लोगो का कृषि काय हेतु प्रेरित करने उनम भूमि का विवरण किया गया।²³ यद्यपि यह पुनर्वासन प्रयोजन का भाषिक-नाम को दृष्टिगत रखते हुए याचित किया गया था।²⁴ किन्तु अग्र यत्न ईशका प्रभाव सामाजिक शानि और सुरक्षा पर भी पडा। जब भी ऐसी संरक्षणमी जाति के लोगो से टाड का सामाजिक हानि होना तो उनम एक उपनिष्ठा भी शानि उहे घणित काय का छोडन हेतु समझोया और उनमे प्रतिष्ठा कराई कि भविष्य मे वह अपराधकम न विमुख रहेंगे। टाड न सोई हु प्राप्ता का अज्ञान का प्रयत्न समाज के हर वग के लिए किया फलस्वरूप जग राजा और भामन्त म अतिस्व का बीज प्रकुरित हान लता वग सामक और प्रजा के मध्य पिता एवं सन्तान का प्रम आशिक मे अग की आर उमुग हुआ। उदयपुर (मेवाड) का शासक राणा ने टाड के प्रभावे म अग्रन को हिन्दू मस्ति का पोषणकर्ता के रूप म स्थापन करना आरम्भ कर लिया।²⁵ इस तरह टाड न राजस्थान मे सामाजिक - विधि तथा सामाजिक मयाग की पुनर्स्थापना के प्रति अग्रन प्रयत्नो द्वारा सामाजिक सुधार का हा माग प्रकलन किया था।

मराठा - अतिमरण एव सामन्तों तथा अधिकाधिक अधिका, दबाव म पीडित किसान तथा व्यापारी राजस्थान के कुछ राजा म पनायत कर गुजगन मालवा तथा उत्तरप्रान्त जन्म गये थे। वनल टाड न इस हेतु पोषण पत्रों तथा शासकों को प्रेरित कर मुविधाया के माण द्वारा व्यापारियो और कृषका का स्वच्छ बुनबाया तथा उहे वणिन व्यापार और भूमि सम्पत्त सुरक्षा

- 22 टाड-एनाल्स भा 2, प 285 तथा उनम अथ प 471
- 23 ब्रुक-हिस्ट्री आफ मवा प 26 27 72-73 उ इ भा 2 प 711
- 24 राजपूताने पराक्रम्यना का प्रभाव स्थापित हा जान मे गुजरात एव मुम्बई के केन्द्रगाहा पर अग्रज व्यापारियो का भाव राजस्थान के अग्र मर चिनीड़ टाडगण उदयपुर भरवाण नामक शानि स्थानों से गुज रता था जहा मर, मीणा और भील के आवान माण म पडत थे।
- 25 ट्रेवल्स इन वेस्टन इण्डिया (हिंी घनु) प 56 एव 59
- 26 शमा कालूराम राजस्थान का सामाजिक आधिक जावन प 70
- 27 टाड-एनाल्स भा 1 प 555 56 559 एव 1962 घोभा उ इ भा 2 प 706 शर्मा भयुरालान भोग राज्य का इतिहास भा 2- प 548-49

एव रियायतें मिलवाई।²⁸ एक प्रतिरिक्त राज्य की प्राथिक - दशा को सुधारन के लिए विदेशी व्यापारियों को राजकीय बैंक के अधिकार प्रदान करवाये गये।²⁹ व्यापारिक क्राफ्टों के लिए भाग और उनकी सुरक्षा की व्यवस्था द्वारा राज्या में व्यवस्थित प्राथिक - जीवन का सवार करने के प्रयत्न टाड ने किये थे।³⁰ सामाजिक - प्राथिक सुधार की दृष्टि से ही उनमें तन्वालीन समाज में विशेषतः राजपूतों की अलक्ष्य रहने की भावना प्रति मनन ही नहीं किया बल्कि इसके लिए जागीरदारों तथा छोटे छोटे जमींदारों को इसके दुष्परिणामों के प्रति सचेत भी किया।³¹ यद्यपि टाड को इसमें कोई सफलता नहीं मिली फिर भी इससे यह तथ्य तो स्पष्ट होता ही है कि उनके मन में सामाजिक उत्थान के लिए निश्चित दृष्टिकोण अवश्य था। - इससे राजस्थान की जनता का जीवन स्तर ही समृद्ध होता। कृषि के लिए भूमि और थम ही नहीं, अपितु उससे सम्बन्धित पानी की व्यवस्था के लिए टाड ने शासक और अशासकों का नये तानाब मुन्वान और कुमा को गहरा कराने के लिए प्रोत्साहित किया था।³² ऐसी समाज कल्याण प्रेरणा से कृषकों की दशा में सुधार हान लक्ष्य - प्रायोग-समाज के शापणकर्ता स्वच्छाचारी पटेलो के लिए नियुक्ति - प्रथा को

28 एनाल्स भा 1 प 382 एव उपरोक्त प्रथम प वही

29 उन्मयपुर राजद का इतिहास भा 2 प 709

30 भाबुनिक राजस्थान का इतिहास प 117 पर डॉ एम एम जन न टाड का राजस्थान का प्राथिक व्यवस्था के सिद्धांत का जनक' बतलाया है जो कि सचथा सत्य नही है। टाड को कम्पनी के राजनीतिक अधिकारी के रूप में कम्पनी का हित अवश्य रखना था किन्तु वह राजस्थान से प्रेम करने वाला पहला अग्रज अधिकारी था जिसे राजपूतान की व्यवस्था का व्यवस्थित करने हेतु अपने ऊपर ज़ायारोपण भी सहन पड़े थे इसी के फलस्वरूप उसने अपना त्यागपत्र देकर इंग्लैण्ड प्रस्थान किया था। जसा कि डॉ जन निश्चित है कि टाड का समझौता नील तथा मर्रा से व्यापारिक आवागमन की मुराया आवश्यक था (वही पृ 101) पर डॉ जन इसके दूमरे पक्ष का अविस्मरण कर देते हैं कि इस समझौते से भागों और गांधी की मूल पाठ में मुक्ति पाने की ओर समाज अग्रसर हुए वहीं इन उल्लिखित जातियों का अग्रप्राथिक जीवन सम्मानित जीविका-यापन हेतु परिवर्तन की प्रारम्भ उमुक्त हुए।

31 एनाल्स भा 1 प 646

32 इन्ड इण्डिया कम्पनी इ मास्टाड प 211

समाप्त कर निर्वाचन-परम्परा को पुनर्जीवित करने की पहल भी टाड ने ही की थी।³³ बेट-वेगार राजस्थान के जनजीवन का एक आर्थिक अभिशाप बन गया था। सभी राज्यो में प्रशासकों की इच्छानुसार इसमें वृद्धि हानी रहनी थी। टाड की मायता थी कि जनता पर आर्थिक भार राज्य की मुख्यवस्था के लिए घातक रहता है अतः उमन बेट-वेगार प्रथा के उन्मूलन हेतु जो भी प्रयत्न किये होंगे उसका एक उदाहरण ही यहा समीचीन होगा।³⁴

' -- शत्रु और सिरोही का स्वामी राज श्योसिंह मुझ (टाड) मिला मैंने उ। ममभया कि प्रजा का उत्थान कस हो सकता है, बगार प्रथा को ब. कर देना कयो जरूरी है व्यापारियों को मुविधाए देना राज्य की तरफ से क्या आवश्यक हैं। इस तरह की बहुत-सी बातों के साथ-साथ मैंने राज को ममभया कि जगती जातियों को अच्छा भावनी बनाने के लिए क्या किया जा सकता है।

कोटा राज्य में हाली *तोगों पर अधिक अत्याचार हुते थे। जनस टाड ने इस हेतु उनका दशा सुधारने का प्रयत्न किया किन्तु मेवाड में रहते हुए वह इस भार अधिक ध्यान नहा दे सका। वह दासों के प्रति शासक और सामंतों में मद्ध्यवहार की अपेक्षा रखता था। उसके हृदय में इन उपेक्षित मानव मानविया के प्रति कृपा थी जोलिए उसने अपनी एजेन्सीस सम्बन्धित जामनों का गोला नामक दाना के प्रति उनके बबर व्यवहार के प्रति सचेत किया था।³⁵

स्वेच्छाचारी - प्रवर्तन के उक्त सुधारों की दिशा में टॉड की कुछ स्तर पर सफलता मिली थी उस हम उसके प्रति प्रजा और राज के द्वारा प्रदत्त सम्म और स्नह द्वारा आक सक्त हैं। वह जब राजस्थान छोड़ कर स्वदेश ट रहा था तब उमम मिनन सामन्त ही नहीं अपितु साधारण जन भी ए और वह ऐसे समय में भी सामाजिक - राजनीतिक एवं आर्थिक

*कृपि सम्बन्धी काय करने वाला चाकर भयवा नीकर।

33 एनाल्स भा 1 प 664 666 बनर्जी- द राजपूत स्टेट्स एण्ड ब्रिटिश पेरामाउन्टनी प 33

34 टूबल्स प 100

35 एनाल्स भा 1 प 1085 88 = इस्ट इण्डिया कम्पनी एण्ड भारत-वाड प 211

घातों के सुभाव लागे की यथास्थान समझता रहा था।³⁶ मेवाड़ का राजा भीमसिंह उससे कितना प्रभावित था इसका उदाहरण इसी मिनट है—³⁷

“म (भीमसिंह) भाप (टाड) को तीन वर्ष की छुट्टी दे रहा है इस बात को भूख नहीं जाना अगर तीन वर्षों से अधिक ठहरा का भापा बहा (इंग्लैंड) पर इरादा किया तो मैं स्वयं भापका सान क लिए घाउगा और जहाँ कहीं मिलेगा पकड़ कर ले आऊंगा।

टाड एक तरह से अग्रज राजपूत हो गया था जो राजस्थान के हितार्थ विचार सजोया करता था। वह इंग्लैंड से जब भारत में आया तब उसका दशम भी कई सामाजिक कृतियाँ विद्यमान थीं उनमें डाकिन प्रया जैसे अधविश्वाम की परम्परा एक थी। राजस्थान में कौटा तथा मेवाड़ इसमें प्रमुख थे।³⁸ जेम्स टॉड ने इस सम्बन्ध में विचार का तत्कालिन काठेरिया राजवंत के परिवार में पनप अधविश्वाम के प्रति उत्कृष्टित उमने विचार से सम्झा जा सकता है।

29721

“यह साधन की बात है कि जिन परिवारों में कृतियाँ अधविश्वामों में रहा करती है उस परिवार और वंश का कल्याण कस हो सकता है।”

अधविश्वामों के प्रति जनमाह का कारण टॉड ने समाज में अज्ञान के बानाकरण को माना था। वह लिखता है कि ‘अज्ञान के अर्थकार में पड़े हुए लोग दयालु हो कर, श्रुति अधारी का भी सान के लिए भावन दन हैं और एसा करने में वे कभी सकोच नहीं करते। मेवाड़ का भाप हम से उदाहरण द्वारा पहण कर मकन है जिनमें टाड ने

36 ट्रेवल्स (हिन्दी अनुवाद में, केशव कुमार), प 21।

37 उक्त पृष्ठ वही

38 एनाल्स, भा 3 प 1615 ट्रेवल्स प 15, बी जे प 2039।

39 ट्रेवल्स (अनु केशवकुमार) प 34—काठेरिया राजवंत की एक पत्नी के पुत्र की बीमारी से मृत्यु का सब मृत, पुत्र की माता ने, अपनी तीन-एक कर यह कह कर मनाया कि उमने उमके पुत्र का पिताशानो द्वारा हत्या करा ली है।

लिखा है— देवडा राजपूत सरदार न बतलाया कि कुछ दिन पूर्व जब वह अपने भाई का दोहरे सेवार कर रहा था तो एक घोरी न धाकर मृत शरीर को यह कह कर भागा कि शव की बहुत बंटिया बटनी बननी है, उसी (राजपूत सरदार) ने बताया कि ऐसे लोगों (घोरी) पर घादमी के मारने का अपराध नहीं लगाया जाता है। टाड ने इस हतु क्या प्रयत्न किये यह हमें विदित नही होता है किन्तु सब लिए उसने लोगों को समझाया अवश्य होगा कि यह घमोसनीय हृत्य मूलत सामाजिक अपराध है।⁴⁰

बहु विवाह और विवाह के प्रति टाडन काई सुधारत्मक चरण नहीं उठाये किन्तु इनमें उल्लेख दुष्परिणामों का उल्लेख अपने ग्रन्थ में ही नहीं धरन् कम्पनी - सरदारों को प्रेषित अपनी रिपोर्ट में भी किया है।⁴¹ सम्भवत उसने अपने क्षेत्र से सम्बन्धित शासक और जमींदारों में पारिवारिक क्लेश के दावा को निपटाने के सन्दर्भ में इस पिछड़ी परम्परा की चर्चा की होगी। पर उसका परिणाम कुछ भी नहीं हुआ। राजपूत लोग बहु-विवाह को सम्मान एवं प्रतिष्ठा का माधन मानते रहे थे। मति प्रथा बाल-हत्या एवं कन्या-बध जैसी कलकित् प्रथाएँ टाड के द्वारा प्रयत्न करने पर भी रूठी नहीं इसका मुख्य कारण कम्पनी प्रशासन का राजस्थान के सामाजिक जीवन के प्रति उदासीन व्यवहार रहा जा सकता है। किन्तु टाड विलियम बेटिङ द्वारा अपनाई गई सुधारत्मक - नीति का प्रभाव राजस्थान में कारगरन आत्म प्रविकारिया पर भी पडा और उहने इस हेतु कानूनी - अधिकार मागन आरम्भ कर दिये। उस मन्त्र में राजस्थान के शक्तिशाली पर 1840 ई के पश्चात सुधारत्मक उपाय लागू करने, अत्यधिक दबाव डाला गया तब भी राजस्थान, में, इन कुप्रथाओं, का सवथा विनाश नहीं हो पाया। पर टाड के द्वारा राजस्थान में व्याप्त कुरीतियों का धकलन उसके परवर्ती राजनीतिक - अधिकारियों को समस्या के समझने में सहायक सिद्ध हुए। जराब और अपनी क मवन से होने वाली हानिया क प्रति भी टाड न लोगों को सचेत किया था।⁴² इसीके फलस्वरूप नश की पीनक म बन्ला अथवा वेरसन की भावना से उत्पन्न सामाजिक विघटन की ओर टाड

40 ट्रेवल्स पृ 83 85 एवं 393

41 उक्त पृ 15-16 टाड द्वारा मटकाफ को प्रेषित 207 अनुच्छेद की रिपोर्ट का पाक 1819 ई जून 12, रा घ ि

42 एनाल भा 2 पृ 350 ट्रेवल्स पृ 3 एवं 13, बतर्जी परामाउटमी प 47

ने लोगों का ध्यान, प्राकृतिक किया था।⁴³ इन सभी प्रयत्नों का तत्कालीन प्रभाव शून्य ही सिद्धनाई देता है पर टॉड के पश्चात् आने वाले अग्रज राजनीतिक-अधिकारियों ने सामाजिक सुधार के लिए टॉड द्वारा इंगित अनुशासनात्मक का ही अनुसरण किया। इससे स्पष्ट होता है कि टॉड चाह अपने समय में राजस्थानी समाज को जाग्रत करने में सफल नहीं रहा हो⁴⁴ परन्तु कुछ समय बाद उनके प्रयत्न परिणाम भी उत्पन्न करने लगे थे।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कनल जेम्स टॉड का एक सुधारक के रूप में अवनोक्तन उनके द्वारा किया गया (1) सामाजिक राजनीतिक (2) सामाजिक आर्थिक तथा (3) सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रक्रियात्मक प्रयोग एवं उसके उल्लेखित विचारों से किया जा सकता है। और इन रूप में वह प्रथमिक मापदण्ड धारण किए हुए राजस्थान के समाज में व्याप्त बुराईया का प्रथम कल्पनाशील सुधारक था।

43 उक्त-ग्रन्थ प 1090

44 इसका कारण 1867-68 ई की एडमीनीस्ट्रटिव रिपोर्ट से पता चलता है कि राज्य के कमचारी और मामूली अल्प धन स्वार्थी व फलस्वरूप सुधारों के विरोधी थे, रिपोर्ट आफ राजपूताना स्टेटस, प 19

कर्नल टॉड का समाज शारत्रीय योगदान

—डॉ० सी एल शर्मा

कर्नल जम्म टॉड एक ऐम प्रप्रेज विग्न एव इतिहासकार कह जा सुवत है जिनक लेखन का स्वत इतिहास विषय की सीमाया तक ही परिसीमित नही रखा जा सकता । व समाजशास्त्रिया क निय मा उनक ही उपयोगी सिद्ध हाने है जिनने कि इतिहासकारा के लिय । इस लेख म उनक समाजशास्त्रीय योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला जा रहा है ।

कर्नल टॉड की दाना प्रमुख रचनाया का हिन्दी अनुवाक किया जा चुका है और इस लेख के सन्दर्भ के लिये इन्ही अनुवाकित पुस्तकी¹ का आधार माना गया है ।

टॉड का समाज शारत्रीय योगदान

हम दो भाषारा पर किसी भी विग्न के योगदान का मूल्याकन समाजशास्त्रीय दष्टि स कर सकने हैं-पहला पद्धतिशास्त्रीय एव दूसरा सदा तिक । टॉड की रचनायो का मूल्याकन भी इन दानो भाषारो पर किया जाना समीचीन होगा ।

1 (i) टॉड लिखित राजस्थान का इतिहास एनाल्स एण्ड एन्टिक्विटीज आफ राजस्थान का हिन्दी अनुवाक-अनुवाक केशव कुमार ठाकुर तथा भूमिका लेखक ईश्वरीप्रसाद, इलाहाबाद भादन हिन्दी पुस्तकालय 1965

(ii) पश्चिमी भारत की यात्रा ले कर्नल जम्म टॉड रचिन ट्रवल्स इन वेस्टन इण्डिया का हिन्दी अनुवाक अनुवाक एव सम्पाक गोपाल नारा यण बहुरा (राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर 1965) प्रस्तावना लेखक रघुवीरसिंह

पद्धतिस्थारत्रीय योजना

वनानिक विधि पर आधारित अनुसंधान में सर्वाधिक महत्व पद्धति का है। अनुसंधान पद्धति से तथ्या का आकलन एवं मूल्यांकन किया जाता है तथा उसी पर आधारित विश्लेषण। फिर विश्लेषण के आधार पर सिद्धांत निर्माण किया जाता है। अतः दोनों आधार एक दूसरे के पूरक हैं। यद्यपि टाड के द्वारा जिस पद्धति को प्रयुक्त किया गया वह केवल एक ही प्रकार की नहीं है। फिर भी तुलनात्मक पद्धति को उन्होंने अधिकांश रूप में अपनाया है। उनका द्वारा संचित तथ्यों के स्रोत द्वैतात्मक एवं प्राथमिक दोनों हैं। प्राथमिक स्रोतों में उन्होंने स्वयं पुराने निबन्धों, गिलालेल ताम्रपत्र एवं अन्य प्रामाणिक ऐतिहासिक सामग्री का एक चित्र किया तथा उसको धीरे-धीरे करके अपनी ओर से विश्लेषण दिया है। इस कार्य में उन्हें एक ऐसे भारतीय मनीषी की आवश्यकता थी जो संस्कृत एवं प्राकृत तथा स्थानीय प्राचीन विधियों का ज्ञान हो। उन्होंने एक जन मुनि का गुरु मानकर उनसे सभी प्रामाणिक ज्ञानान्तरों एवं अन्य ग्रन्थों से आत्म-भाषा में आवश्यक जानकारी प्राप्त की। वह थे यति ज्ञानचन्द्र। मुनि ज्ञानचन्द्र के अलावा एक ब्राह्मण पंडित से भी इसी प्रकार की सहायता ली थी किंतु ब्राह्मण पंडित अधिक पढ़ा हुआ नहीं था। सामग्री संचयन की यह विधि वस्तुनिष्ठता को बनाती है तथा लेखक एवं अनुसंधानकर्ता के विषय उपयोगी सिद्ध होती है। समाजशास्त्र में उन नवीन अध्ययनों के नियम यह पद्धति अनुकरणीय साबित होती जिनमें ऐतिहासिक तथ्या का सहारा लिया जाता है। विशेष रूप से भारतीय सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन की विशेषताओं को अन्वेषण एवं जमींदारी जागीरदारी व्यवस्था के अंतर्गत भारत में कानून में होने वाले परिवर्तन को समझने के लिए इसी विधि का सहारा लिया जाना चाहिये। जो भी तथ्य संचयन इस प्रकार से कर लिये जायें उनका सफल वर्णन करने के अलावा विविध सामाजिक व्यवस्थाओं के लक्षणात्मक तथ्या में तुलना करके विश्लेषण प्रस्तुत किया जाय तो उसकी शक्ति महत्ता अधिक प्रमाणित होती है।²

टाड ने अनेक एताद में सर्वप्रथम राजस्थान का जागीरदारी प्रथा का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। युरोपीय देशों और विश्वेश्वर में ईंग्लैंड में पाई जाने वाली जागीरदारी व्यवस्था से राजस्थान की जागीरदारी

2. 'सत्य नारायणचन्द्र' द्वारा टाड का व्यक्तित्व एवं इतिहासिक महत्त्व का आलोचनात्मक विश्लेषण 'इतिहासकार जेम्स टाड' द्वारा किया गया है। 'इतिहासकार जेम्स टाड' द्वारा प्रकाशित 'इतिहासकार जेम्स टाड' का प्रकाशन पृ. 34

व्यवस्था की तुलना की और घाड़ बहुत घनत्व प्रताप दोनों व्यवस्थाओं में समानताएँ अधिक बनाई गई हैं। इसी तरह से राजपूत जाति की उत्पत्ति—तथा इसकी विविध उप शाखाएँ वंश-धाराएँ गोत्र-समूहों आदि का विवरण बख्त टाइ ने प्रस्तुत किया है। राजस्थान की जागीरदारी व्यवस्था का विश्लेषण इस प्रकार किया गया है कि उसमें उन सभी परिवर्तनों एवं गतिशीलताओं की जानकारी मिलती है जो जागीरदारी व्यवस्था की निरंतरता एवं गत्यात्मकता का प्रकट करती है। जिन तथ्यों को वे वस्तुनिष्ठ तथा मूल आधारों पर प्राप्त नहीं कर सके किन्तु जिन्हें वे उचित समझ रहे थे उन्हें भाट चारणा की भाषाओं महाभारत एवं प्रायः पौराणिक ग्रंथों तथा लोक कथाओं व जनश्रुतियों का सहारा लेकर प्रकट किया।³ यह पाठक पर छोड़ दिया है कि यदि इन आधारों की वस्तुनिष्ठ वधता का नहीं मानने है तो वे जा चाहें सो अपने निष्कर्ष निकालें। टाइ ने बम्बई से राजपूत जाति की उत्पत्ति उसकी निरंतरता एवं इसकी विभिन्न उप जातियों का वही आधारों पर विस्तार से स्पष्ट किया है समाजशास्त्र में अब तक हुए जाति व्यवस्था के अध्ययनों टाइ का उद्धरण नहीं किया है। किन्तु मेरी मान्यता है कि यदि जाति विभाग की (राजपूत जाति का साम्या में प्रमुखा सम्पन्न रही है) स्थिति एवं उसकी उत्पत्ति तथा व्यवस्था सम्बन्धी विश्लेषण दखना है तो टाइ की पुस्तक के प्रथम भाग परिकल्पना⁴ अधिक महत्वपूर्ण होगी। उस भाग का सामग्री का आधार अधिकांश रूप में पौराणिक ग्रंथों एवं चारणा की कथावतियाँ का बनाया गया है। इसे इंग्लो-लैटिन पद्धति के रूप में समाजशास्त्र में स्वीकाराति प्राप्त है। राजस्थान में जागीर प्रथा की तुलनात्मक व्याख्या करते हुए टाइ रिक्त है राजस्थान की शासन व्यवस्था का आधार हुआरा वषों में उसकी जमींदारी प्रथा की और वह प्राधान्यता से याद की जागीरदारी प्रथा के समान थी। उसकी श्रद्धा वस्तु समय तक कायम रही और बाहरी गति जातियाँ के लगाने प्रथा चारा तक छिन्न भिन्न नहीं हो सकी। भारत का प्राचीन धीरे-धीरे शासन व्यवस्था का ऐसा प्रमाण है जिससे कोई निष्कर्ष और बुद्धिमान इनकार नहीं कर सकता। टाइ ने न केवल याद की जागीरदारी प्रथा में राजस्थान की जागीरदारी प्रथा की तुलना की बल्कि भारत के अन्य क्षेत्रों में भी जो

3 टाइ लिखित राजस्थान का विभाग एनास एंड गतिविद्योत्तर भाग राजस्थान का विभाग अनुवाक पूर्ण उद्धरण पृष्ठ 79-127

4 देखिये वही पृष्ठ 37-78

जापोरगारी प्रथा प्रारम्भ से छद्म तक रही है उससे भी राजस्थान की जागीरदारी प्रथा से तुलना की है। राजस्थान के राजपूत वंश का धारण के राजवंशों से भी श्रेष्ठ बताया गया है।

टाड की तुलनात्मक पद्धति मात्र एकल रूप में प्रयुक्त नहीं की गई है। इसका सही उपयोग ऐतिहासिक पद्धति के साथ किया गया है। राजस्थान के विविध क्षत्रों की सत्ता एवं शासन व्यवस्था का अलग अलग बणन प्रामाणिक तथ्यों के साथ किया है। मवाड मारवाड़ जसलमेर बीकानेर जयपुर काठान बूंगी तथा मरुभूमि के ऐतिहासिक बणन में हम उन सभी घटनाक्रम की जानकारी मिलती है जो सन्धि से इन भूतपूर्व राज्यों में सामाजिक निरन्तरता तथा परिवर्तना (कभी तीव्र तो कभी धीमे) को स्पष्ट करत हैं। ऐतिहासिक बणन नीरस न हो जाय इसके लिये टाड ने स्थान-स्थान पर राजवंशों की उन वास्तविक घटनाओं का विस्तार से विवचन भी किया जिनमें राजपरिवार के लोग अपने ही सदस्यों के प्रति विश्वासघात के पद ग्रहण करत हैं और उनका मुकाबला भी किया जाता है। इस ऐतिहासिक विवचन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हर राज्य के बारे में उसकी स्थापना एवं प्रारम्भिक व्यवस्थाओं से लेकर 1818 ई की तत्कालीन राजनतिक व्यवस्था तक राजघराना एवं शासन व्यवस्था के बारे में सूचना दी गई है। अतः विश्लेषण का काल विस्तार अधिक है तथा नवन निधियों एवं घटनाओं को ही न देखकर उनमें सम्बन्धित परिस्थितियों का भी विश्लेषण है। अतः टाड की ऐतिहासिक पद्धति समाजशास्त्रियों के लिये राजस्थान की प्राचीन एवं आधुनिक (मन् 1818 के पूर्व तक) संस्कृति एवं सभ्यता के शासनिक ढंग में विद्यमान सभी तथ्यों के अध्ययन हेतु बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। विविध जातियाँ एवं धार्मिक व्यवस्था, धार्मिक व्यवस्था धार्मिक के बारे में भी वास्तविक जानकारी इस पद्धति से राजस्थान के समाज के बारे में मिलती है।

यात्रा विवरण के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न पक्षों पर विवेचन भी टाड ने अपना पुरतक पश्चिमी भारत की यात्रा में किया है। यह विधि समाजशास्त्र में अधिक प्रचलन में नहीं है किन्तु टाड ने आनुभविक आधार पर जो तथ्य सामने लिये उन्हें तीव्रता से प्रकट प्रस्तुत किया कि सम्पूर्ण प्रस्तुतीकरण में उन्होंने के सामाजिक तथ्यों का प्रशिक्षण एवं समूहों के गतिशील पहलुओं पर एक समाजशास्त्रिक की दृष्टि से प्रकाश डाला है। विज्ञाप रूप में धार्मिक सम्प्रदायों, सामाजिक संस्थाओं पर प्रकाश डाला है। अतः टाड ने अपना धार्मिक में दृष्टा अथवा प्राचीन सत्तागारा

तथा जनश्रुतियों से जैसा भी टाड को मानुष हुआ उसका वर्णन सजीव ढंग से किया गया है। कई प्रसंगों में टाड ने बशावतिया एण मनुस्मृति जन प्रामाणिक श्रुतियों का सहारा लेकर सामाजिक परम्पराओं एण जाति स्वतन्त्रों क महत्व को स्पष्ट किया है। कनक टाड की यात्रा करीब सान माह में उदयपुर से प्रारम्भ होकर बम्बई में समाप्त हुई जा चुकती है। 1822 का प्रारम्भ हुई थी और जनवरी 1823 में सम्पूरण हुई तथा उमर बाबू हमेशा क लिय वे इंग्लैण्ड चने शय। यात्रा का विवरण व अपने जीवन काल में प्रकाशित नहीं करा सके। वर्तमान में लगभग एक-सौ साठ वर्ष पहले के राजस्थान में किस प्रकार की सामाजिक परम्पराएँ रीतिरिवाज एक विशिष्ट प्रशासन की निगाह में किस प्रकार विघ्न स्थान बना उते हैं उनी का वस्तुनिष्ठ वर्णन टाड ने किया है।

टाड का सौधदात्मिक योगदान मुख्य रूप से निम्न विषयों में सम्बन्धित सामग्री टाड की दोनो पुस्तकों में मिलती है जिनका समाजशास्त्रीय महत्व अधिक है -

- 1 जागीरदारी व्यवस्था
- 2 राजपूत जाति की उत्पत्ति तथा उनकी विविध शाखाएँ तथा श्रम जातियों का वर्णन
- 3 श्रम की प्रक्रिया के तन्त्र-कारणों एण परिणामों क आधार पर युद्धों का वर्णन
- 4 शासन एण सत्ता की स्थिरता एण अस्थिरता क आयाम-काल की गहराई के अन्तर्गत वास्तविक घटनाओं का वर्णन
- 5 ब्रह्म-मूहों क कारण एण परिणाम
- 6 विवाह संस्था-अनुलोम तथा अन्तर्धामिक
- 7 राजस्थान की जनजातियों का सामन्तों क साथ परम्परागत सम्बन्ध
- 8 नगरीय एण धार्मिक तन्त्रों का वर्णन

उपयुक्त सभी विषयों का समाजशास्त्रीय महत्व है अतः टाड श्रम केवल इतिहासकार ही नहीं बल्कि ऐसा समाजशास्त्री माना जा सकता है जिसने विषय की स्थापना तथा उसके अग्रमूल सिद्धांतों का तो निर्माण नहीं किया किन्तु समाज विषयक वह तन्त्र मूलक सामग्री अथवा प्रश्नों की जो समाजशास्त्रीय सिद्धांत निर्माण में अतिआवश्यक समझी जा सकती है पट्टि नहीं तन्त्रों क आधार पर कनक टाड द्वारा श्रम शय सामाजिक वर्णन या सद्धान्त व्याख्याएँ निरम्न हो जाती है किन्तु विज्ञान के अन्तर्गत उन निरम्न

मिटाना का मन्त्र कभी भी कम नहा हाना जिनकी बनीतन नय तथ्य मक
 नित करव उह निरस्त किया गया । विशय रूप मे टॉड द्वारा जागीरदारी
 व्यवस्था म राजस्थान तथा पारप की सामन्ती व्यवस्था की ममरूपताओं का
 अधिक उदारा गया जबकि दाना म भिन्ननाए प्रव अधिक दिखाई देती हैं ।
 यहां हम उक्त लिखित मभी बिन्दुओं को ता नही ल मवन किन्तु कतिपय पर
 प्रकाश डालना उचित हागा ।

जागीरदारी व्यवस्था

यद्यपि टॉड के विश्लेषण का सदम राजस्थान की भूमि पर सन्धियों
 म विद्यमान जागीरदारी व्यवस्था क विविध प्रतिमानों स है फिर भी उहेनि
 सामन्ती मत्ता के कुछ सामान्य आधार स्पष्ट किय हैं । उनके अनुसार राजस्थान
 की जागीरदारी व्यवस्था का मूल स्रोत भारत भूखण्ड के उत्तरी भागा म
 विद्यमान सामन्ती व्यवस्था है । यहां राजस्थान में सातवीं शताब्दी मे
 ही सामन्तशाही व्यवस्था के उभरने क स्पष्ट तथ्य मिलत हैं । विशुद्ध राज
 पूत शग व लोगों म स ही मत्ता का प्रमुख भा उसका सामन्त बनता प्राया
 है । राज्य मत्ता को राजपूत श की श्रष्टता स जोड कर देला गया है ।
 पशुवता के सतन अधिकार ने भूमि पर राजपूत वश के लोगो को ही अपना
 एकाधिकार बतान का चिरस्याइ नियम प्रान्त किया है । इसके अन्तर्गत परि-
 वार मे पिता की मृत्यु क बाद उनके सबसे बड़े लडके का ही संपूर्ण भूमि पर
 अधिकार मिल जाता है । राजपूत जाति व लोगो ने अपने वशों परिवारों
 की श्रष्टता व इस अधिकार व लिये बाहरी आक्रमणकारियों स युद्ध करके
 स्थानीय निवासियों का रक्षा की है तथा उह अपने धन को बचाने के लिये
 प्राणी मवाए ली हैं । इसका बन्ने म उन्हें भूमि पर संपूर्ण एकाधिकार
 मिला । कई सामन्तों का एक धन या उनकी सांस्कृतिक पहचान हाती है तथा
 उनका एक मुखिया हाता है जो उनम समायोजन स्थापित करव एक राज
 मत्ता का निशानि करता है । राजस्थान म महाराणा/राणा/राजा/महाराजा
 राव/महाराव/रावन गणि नाम म सामन्तों के प्रमुख पहचान जात थ ।
 मवाह राज्य म राणा या महाराणा का पन् प्रमुख के लिय था तथा शासन
 का सांस्कृतिक प्रमुख गिड या एकत्रियनाथ देवता को माना गया है । मवाह
 का सामन्तकी व्यवस्था मभी जागीरदारी परम्पराओं म संचालित थी जिनम
 श्रष्टता व आधार उची श्रेणी चिर उनस नीची श्रेणी तथा उनसे भी नीची
 श्रेणी व जागीरदार हात थ । इन मन्तों के अन्तर्गत—अन्तर्गत अधिकार निशानि
 गित थ । निम्नलिखित चार श्रेणी व सामन्त मवाह में सन्धियों म विद्यमान
 रह है —

- (घ) प्रथम थैली— सीकह उमराव (सामन्त) इन्हीं में से महाराणा के पत्रा मण्डन में सम्मिलित हात थे । उनकी वार्षिक आमना पंचम हजार से एक लाख रुपये तक की होती थी । ये सबसे बड़ा प्रमुख हिस्सा थे ।
- (ब) द्वितीय थैली— बस्तीमा सामन्त जिन जागीरदारों की आमना पांच हजार से पचास हजार रुपये वार्षिक । उनकी नियमित उपस्थिति महाराणा की सेवा में रहनी इनके पास एक नधु सविक टुकरी भी रहता थी ।
- (स) तृतीय थैली— गाल के सरदार ये महाराणा पर निर्भर रहते थे । राज्य की विविध सेवाओं में इनका लगाया जाता था । राणा की निजी सुरक्षा में इन्हीं सरदारों में से होते । सामन्ती विद्रोह के समय राणा द्वारा इनका सामन्तों के विद्रोह का स्थान में उपयोग किया जाता ।
- (द) चौथी थैली— राणा के परिवार के अग्र राजकुमारों की जा राणा नहीं बनकर छुट भया रह जान में मात्र एक जागीर के हकदार ही रहते हैं ।

उपरोक्त चारों स्तरों पर सत्ता के अधिकार सर्वाधिक से कम की धरस्था में प्राप्त होते हैं जो राजपूतों का ही प्रायः मिलते रहते हैं । टाड ने यह देखा है कि राजपूतों के इस विशेषाधिकार का स्थान परम्परागत है जिसमें प्रमुख समाजशास्त्री मकमल वदर ने परम्परागत प्राधिकारी व्यवस्था के लिये एक मात्र आधार बताया है । टाड के अनुसार राजपूतों की तीन ही विशेषताएँ प्रमुख बताई गई हैं—

- (1) हथियार— तलवार डाल भाले आदि
- (2) धाडा — गुडसवारी के लिये
- (3) शिकार — अपने आप की शारीरिक शक्ति में मगर्भ रखने के लिये

मारवाड़ में सामन्तों के स्तराकरण की दो स्तरीय व्यवस्था थी । प्रथम थैली के उच्च स्तरीय सामन्त तथा द्वितीय थैली के सामन्त । इस स्तरीय रूप में अग्र रियासतों की सामन्ती व्यवस्था भी राजस्थान में विद्यमान रही । राजपूत सामन्तवादी व्यवस्था का सुरापाय सामन्ती शासन व्यवस्था के साथ सम्बन्धता का यह विधान न अस्वीकार किया है । * डा. चूडावन ने इस मद्दम में लिखा है -

राजपूत सामन्तवाण्ड मूल रूप में एक विशिष्ट प्रकार की सघीय राष्ट्रीय एवं प्रजातांत्रिक संस्था है— राजस्थान में भूमि और उनकी मिट्टी पर उपज के आधार पर राजस्व के प्रतिरिक्त राजा का कोई अधिकार नहीं था। युरोपीय सामन्त प्रणाली में मुख्य मिथ्यात यह है कि राजा ही राज्य का नाबन्धी स्वामी और मूल स्वतन्त्राधिकारी होता है और सम्मत अधिकार उन्हीं में निहित हात में तथा उसी से प्राप्त किया जा सकता था। फिर युरोपीय सामन्त प्रणाली में कृषक अथवा दास कोई सम्पत्ति प्राप्त नहीं कर सकता था और यदि वह कोई सम्पत्ति या भूमि खरीद भी लेता था तो वह स्वामी उसमें घुसकर स्वच्छा से उसका उपयोग कर सकता था। जबकि राजस्थान में रयत अथवा किसान ही भूमि का असली मानिक हाता था।¹⁹

वास्तव में दखा जाय तो टाड व द्वारा किया गया सामन्ती शासन व्यवस्था का राजस्थान के मद्रम में तुलनात्मक विश्लेषण एक नीब का पत्थर है और उसके बाद अन्वै विद्वानों ने अपने-अपने मन प्रस्तुत करने के विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला है। एक विशेषज्ञ राजनयिक की दृष्टि समाज वगानिक की तरह से ऐसी सामाजिक व्यवस्था पर केन्द्रित हुई थी जिस पर उसके पहले वगानिक विधि से विश्लेषण उपलब्ध नहीं था। यही उनका सबसे बड़ा योगदान है।

टाड ने मद्रासिक तौर पर सामन्तशाही व्यवस्था में निम्न लिखित प्रथाओं का बयान दिया है जो इस व्यवस्था का बनाये रखने में अपना योगदान देती हैं— नजराना जागीर का पानी दर पीवी हस्तारित होना पुत्रहीन सामन्त व मरने पर जागीर का राज्य में विलय अथवा विधि सम्मत तरीके से गान्धिव पुत्र का जागीर मिलना घन की महयाना नाबालिग सामन्त की रक्षा, तथा विवाह की विधि रस्म। जागीरदारी में भूमि पर जागीरदार का सब सम्मत अधिकार होता था। मवाद में यह अधिकार दो प्रकार बताया गया है—(1) ग्राम्य टाकुर—अर्थात् अधिकार तथा (2) भूमिवा अर्थात् अधिकार सम्पूर्ण सामन्तशाही व्यवस्था में सभी अर्थात् व सामन्तों का टाड ने तीन वर्गों में विभाजित किया है।

- (1) भियागी सामन्त—निश्चित अवधि तक भूमि पर अधिकार
- (2) चिर अर्थात् सामन्त
- (3) बगवत सामन्त

सामन्ती व्यवस्था व अन्वय जागीरदारी अधिकारों व आधार पर

समाज में राजपूत वंश के कतिपय प्रमुख परिवारों को जो सर्वाधिक अधिकार प्राप्त थे और जिन्हें पतकता व अधिकार पर सजा के सभी अधिकार वशियत में मिल जाते थे उनमें भी वे भी गिरावट आई। टाड की मान्यता एक सद्धान्तिक सामान्य कथन के रूप में भी इस प्रकार से उभर कर आई कि जिस पतकता व अधिकार से सत्ता का निर्धारण हुआ उसी कारण कालांतर में अधिकारों की गिरावट भी आने लगी। एक प्रमुख सामन्ती मुन्शिया के पीढ़ी के समयान्तर के साथ-साथ भूमि एवं सम्पत्ति का लुप्त होना लगातार बढ़ते-बढ़ते सत्ता का स्तर में गिरावट आती रही और इसी कारण राजपूत रियासतों की सर्वाधिक कमजोर पड़ती गई और बाहरी शक्ति को आज्ञाकारण करके उन्हें दबा देने का अवसर मिला। टाड लिखते हैं —

अपनी आज में हम इस निष्कर्ष पर पन्च है कि जागीरा के विभाजन एवं लड़कियों के विवाह में दहज की प्रथा के कारण राजपूतों में शिशु हत्या की सृष्टि हुई है।⁶

राजपूत जाति को वनल टाड ने अपनी आत्म भाषा में द्राइव कहा है। किन्तु वे इस एक जनजाति के अर्थ में नहीं मानते थे। वे राजपूतों का एक ऐसी वीर-यादगादा वाला जाति समुदाय मानते थे जिसकी उत्पत्ति उन्होंने विधिमना अर्थात् शका से मानी है। राजपूत जाति की उत्पत्ति के बारे में महाभारत तथा अथ पौराणिक आधारा मनुस्मृति आदि का भी महत्त्व दिया गया। प्राचीन काल से मध्ययुगीन काल तक राजपूत जाति के नामों का क्षत्रिय के नाम से सम्बोधित किया जाना था जिनका नाम मुख्य रूप से मूरज, चण्डाण तथा ब्रह्मण के नाम आते हैं। टाड ने तुलनात्मक पद्धति का सहारा लेते हुए लिखा है —

मैंने यह मिश्र करने का प्रयत्न किया है कि राजस्थान एवं प्राचीन युरोप की वीर जातियाँ एक ही जाति के वंश की गणना हैं भारतवर्ष में जो नामन्ती पक्ष्या प्रचलित है ठीक उसी प्रकार की नामन्ती व्यवस्था प्राचीन काल में युरोप में फली हुई थी जिसके अवशेष आज हमारे देश के शासन नियमों में विद्यमान हैं। हम पूर्वी और पश्चिम के नामों की उत्पत्ति एक ही जाति से जान के सम्बन्ध में अत्यन्त सशयवादी हो गये हैं। फिर भी

अपन प्रमाण विश्व के निष्पन्न निरूपण के लिये प्रस्तुत करता, । समानताएँ
जा यद्यपि इन प्रश्नों का निणय नहीं कर सकती इतना महत्वपूर्ण है कि
उनका अध्ययन और शोध आवश्यक है । इस प्रकार का परिष्कृत निष्कर्ष
नहीं जायगा । ⁷

परिच्छिन्न प्रथम से लेकर परिच्छिन्न सात तक राजपूत जातियों का
विस्तार से विवेचन किया गया है । यह भाग यद्यपि जिन तथ्यों पर आधारित
रिक्त है व एतिहासिक दृष्टि से प्रामाणिक नहीं मान जाना फिर भी जो मान्य
ताएँ समाज में प्रचलित हैं तथा जिन वस्तुओं का पुराणों, श्रुतियों
स्मृतियों का भारत की जनता में आज भी वर्धमान एवं श्रद्धा की दृष्टि से
दखा जाता है उन्हीं आधार मानकर एक बौद्धिक विश्लेषण करना अप्रामाणिक
नहीं है । एक विशिष्ट विज्ञान जगत् इतना भ्रम तथा तुलनात्मक विवेचन
राजस्थान के राजवंशों या राजपूतों के बारे में और नहीं उपलब्ध नहीं
है । महाभारत में भी एक वंश का महत्वपूर्ण सामाजिक दृष्टान्त माना
जाता है । महाभारत एक रामायण की चिर प्रतिष्ठित कथाओं के आधार
से राजस्थान के राजवंशों का जाह्नव उनसे प्रारम्भ के मूलवश तथा षट्त्रय
तथा बाद में विकसित छ राजवंशों का विवेचन है । फिर हर वंश की
विविध शाखाओं का भी वर्णन किया गया है । राजपूतों में प्रमुख गहलोत
राठौर परमार सातवाँ घाटि की विविध शाखाओं की प्रस्तुति भी टॉल
न का है । कुछ अन्य एमी जातियों का वर्णन भी टॉल न किया है जो
राजवंशों का राजपूत जातियों के साथ साथ समय के अंतराल में उत्पन्न हुई
जिनमें प्रमुख है—श्याम शाला की जेठवा बट्टा गार्हित गरिमरूप मितार
गोश्र डान्ग बडगुजर गार्हिया दाहिमा जयला में रहने वाला जातियों तथा
व्यवसायिक जातियों शामिल हैं । इनके मात्र नाम अथवा कुछ पहचान ही
बतायी गई है ।

महाभारत में सामाजिक प्रक्रियाओं का भी सैद्धांतिक विश्लेषण किया
जाता है मुख्य रूप से हर समाज में दो प्रकार का प्रक्रिया जाता है—
विघटनात्मक एवं सगठनात्मक । विघटनात्मक प्रक्रियाओं में सभी प्रकार के
संघर्ष विराधतनाएँ घाटि सम्मिलित हैं जबकि सगठनात्मक प्रक्रियाओं में
सहयोग समायोजन व्यवस्थापन एकीकरण घाटि है । टॉल की दानों पुस्तिका
में ऐतिहासिक संक्रमण के उन सभी घटनाओं तथा परिस्थितियों का वर्णन मिलता

है जो साम्प्रदायिक रूप में राजस्थान की घरेलू पर मन्थि पुराने समाज ए। महत्त्व की निरन्तरता में चरित्राथ हुई है। टाउड के विवरण में घटनाएँ मीठ रूप में समाज के शासक वर्ग ए। सामन्ती व्यवस्था के घन्तगत राज मना तथा उनके प्रमुख दावतारा में हान वाली लड़ाईयों उनके कारण तथा परिणाम पर ही तथ्य न्यि गय है। राजस्थान के सभी प्रमुख राजघरानों में मवाड मारवाड़, जयपुर बीकानेर कोंग आदि मन्थि म बाहरी आक्रमणों के तिकार रहे हैं। विभय रूप में मुगल शासकों द्वारा समय समय पर राजस्थान के राजपूत राजाओं पर न बँवत आक्रमण हुए हैं बल्कि उनके कर्तव्यधर्म का शिकार हाना पडा। राजपूत राजाओं के साथ म आन्तरिक मधय जा विविध सामन्तों या राजपूतों की प्रभुता का सक्कर हुए उनको भी टाउड ने लक्ष्यपूण भला म प्रभुत किया। सभी घटनाओं का जानन के बाद एक निष्कष निकाला जा सकता है कि जितने भी युद्ध और लड़ाईयें हुई हैं उनमें पीढ़ मत्ता ए। शासन की रीधना ए। प्रोचत्य का प्रश्न रहा है। सामन्ती शासन में परम्परा तथा परिपाटिका का सत्ता-अधिकारों की रीधता का आधार माना जाता है किन्तु इस आन्तरिक ए। बाह्य दाना मन्थ से चुनाती मिलन पर युद्ध ए। लड़ाईयें हुई तथा जितने युद्ध म जीत हासिल की और अपना रीध अधिकार स्थापित किया उह किर चुनौतियाँ मिली और इस प्रकार म यह क्रम निरन्तर चलना रहा। टाउड ने अपने उपमहार में अग्रजों की विविध भूमिकाओं का जिक्र किया। अग्रज कम्पनी सरकार अधिकार रूप से विविध प्रकार के मधयों का निपटान में अपनी प्रभावी भूमिका कमजोर पण का अपना समबन्ध देकर उने जीताकर निभाता रहा है। जहा जहा कम्पनी सरकार अपना मीध शासन सम्भाल हुए थी वहा वहा की कानूनी व्यवस्था भारतीय जनता के हितों की रक्षण मन्थे मायन में नहं कर रही थी। यह तथ्य कन्नड टाउड ने तब उजागर किया जब वे अपनी नौकरी से एस्तीफा देकर स्वदेश लौट रहे थे और जिन उनकी पुस्तक पश्चिम भारत की यात्रा में उनका मन्थु के बाद लागा न दसा। उनके शब्दों में—

ब्रिटन के सरकारण में जो विभिन्न जातियाँ आ गई उनको सजा देने समय दया का व्यवहार बन्त कम किया जाता है याप का डडा किसी न किसी का अग्रज्य म्पर निरन्तर है जिसमें हमारा शासन लक्ष्यार का शासन कहा जाता है। हमारे सरकार द्वारा राज्यकर तथा घय सम्बन्धी जो कानून बनाये जाते हैं वे प्रजासत्ता की दशा सुधारने के दृष्टिकोण से नही बरन् हमारे (कंपनी सरकार) राज्य का भरण के लिय बनाये जाते हैं।

भारतीय प्रजाजनों की रानी कमाई, मलाओ स्वण मुनाए प्राप्त करके उनका कौनसा भाग उनकी मलाई के नियम सब किया जाता है ।

इन उक्त लिखित परिस्थितियाँ से टाड का विश्वास था कि राजस्थान व राजपूता को एक दिन अपना खोया हुआ गौरव पुनः प्राप्त होगा । ऐतिहासिक घटनाओं का ऐसा सजीव वर्णन जिसमें स्थान-स्थान पर अपने सद्भावपूर्ण निष्कर्ष राजस्थान के शासक वगैरह और उसमें जुड़े समाज के बारे में वही और उपलब्ध नहीं है ।

राजस्थान के विविध राज्यों का ऐतिहासिक लक्ष्य-जोता प्रस्तुत करने में टाड ने जो विद्वत्ता दिखाई है वह सरासरी है । किस प्रकार से किसी राज्य में-चाहे वह जयपुर हो या मवाड अथवा बूली-राजा की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी के रूप में नाबालिग या नो-नियम पुत्र का सत्ता प्राप्त हो किन प्रकार प्राप्त होती है तथा बचाने के सामने एक किन्हीं सामता में किस प्रकार सपप होता है इसका मही-सही विवरण टाड ने प्रस्तुत किया है । राजपूता के आंतरिक बहस का भी घटनावार प्रस्तुत किया है । मवाड में शतावता एवं चूडावतों के बीच अपने-अपने परिवारों का लक्ष्य तनाव एवं सपप चलता रहा ।

समूह सामतगो व्यवस्था की कमीयों पर भी टाड ने प्रकाश डाला है । यह भी उनकी सद्भावपूर्ण दृष्टि ही थी । टाड के अनुसार मुख्य कमियाँ सामतगोही की निम्न लिखित थी -

- (1) एक व्यक्ति - सामत या प्रमुख सामत (सामता का मुखिया)- की स्वच्छता चारिता एवं उसमें शक्ति एवं प्राधिकार के कड़ीकरण से समूह समाज प्रभावित शक्ति का दुरुपयोग अधिक होने की सम्भावना तथा समाज के सभी लोगों को उनके परिणामों को मुगनता हाता है ।
- (11) सामता में परस्पर होड एवं शक्ति प्रदर्शन में प्रमुख सामत का कभी-कभी कमजोर हानी है तथा सामत प्रणाली द्वारा नियंत्रण-कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने में कमजोरी घाती है । अथवा एवं प्रस्थित रता बढ़ती है ।

जागीरदारों या सामंतों की आंतरिक समझौतात्मक व्यवस्था में भी धन-धन्य निजा स्वार्थों से गुप्त-नी विकसित होता रही। कभी-कभी विनाश वश या घोर के सामने न अपना एक अलग गुट बना कर उसी का सारी शक्ति जुटाई तथा उस गुट को स्वतंत्र विराय दूसरे समूहों से हटा कर इस प्रकार राजपूतों को द्वन्द्व-समूहों में मूल्य रियासत या राज्य का धारण करना कमजोर बनाया कि किसी बाहरी आक्रमण का दबाव वह नहीं सहन कर सकते थे। फलतः युद्ध में पराजय मिली। कभी-कभी तो कभी पराजय जहाँ-कहाँ आंतरिक द्वन्द्व-समूह अधिक नष्ट पाए और धन साधन अधिक रहे ता वह रियासत उस व्यवस्था में जीवित बची।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही राजस्थान का रियासतों पर धन-धन की जोरदार नज़र थी। 1806 में कंपनी सरकार का दूत भवाड भेजा गया था तथा मरवाड़ा द्वारा भवाड की मृत-पत्नी के प्रति महानुभूति दर्शाई गई। सन् 1817 में धन-धन एक भवाड के बीच मरि हुई। कभी-कभी म जयपुर राजा तथा धन-धन की कंपनी सरकार के बीच मरि 1803 में हुई थी। फिर 1818 में दुवाड मरि हुई। 1817 में मारवाड़ एक रीट एडिडिया कंपनी के बीच मरि हुई। 1818 में राजस्थान धन-धन का साथ भी कंपनी सरकार की मरि तय हुई थी। सभी मरियों में धन-धन कंपनी सरकार की बिना इजाजत के काई रियासत किसी भी धन-धन के साथ युद्ध की घोषणा नहीं कर सकती था। एक नियमित रकम रीट एडिडिया कंपनी को देना तय हुआ था। राजनियम एजेंट का विद्यमान में नकर रियासत के प्रमुख महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होने तक। इस व्यवस्था में राजस्थान में जागीरदारी एवं सम्पत्तेशाही शक्ति में कमजोरी बड़ी।

टॉड ने हिन्दुओं एवं मुसलमानों के दाना समुदायों का धन-धन सामाजिक-आर्थिकता बनाए हुए एक शक्तिशाली मुसलमान आगमन व्यवस्था के द्वारा राजपूतों के धन-धन राज्य एवं सामन्तों का युद्ध या मरण में हरा कर उनसे मरि करके तथा उनमें एक तरफा आर्थिक सम्बंध स्थापित करके (जिसमें राजपूतों के साथ में मुसलमानों ने विवाह किए मुसलमानों के साथ में राजपूतों के साथ में विवाह नहीं किए) उन्हें धन-धन प्रेषित किया। उनका समय-समय मरि शक्ति का अभाव भी बनाया। राजपूतों का धन-धन में युद्ध करके न मरि प्रेषित किया। इस मूल्य वश में हिन्दु-मुसलमानों के मरि मरि में मुसलमान हुए। धन-धन न मरि नीति का धन-धन करके और भी लाभ उठाया तथा हिन्दुओं और मुसलमानों का आरनाय परिदेश में बहुरीत्या एवं धन-धन की धन-धन में विभिन्न किया तथा धन-धन

अधिकारों के प्रति उह मरत किया। कई मुगल शासकों का टाड ने पठ्यपत्रकारी चानक एक बन्धन का नाति रखन बाता कहा है। दूसरी धार कई राजपूत राजाधा का चीर नीडर एव कुजल जायक बताया है।

विवाह मस्या के बाट म टाड ने बन्धनकार तथ्य प्रस्तुत किये हैं। कुछ तथ्य उनके धनम शेष म स्थि शय ह जिनम राजपूत कथाधा का विवाह मुगलमान शासकों के साथ सम्पन हुआ है। विवाह का प्रकार मन्पत्नी भी रखा है विधाय रूप से उन लोग म जा मामन्ती वग के प। बन्धन विवाह के नियमों का पालन विशेष रूप म किया जाता रहे जिनम कई राजपूत घराने अपनी कथाधा का गौरव या वश के बाहर हा विवाह कराने है। किन्तु एक मामन्त के एक से अधिक पत्निया रखन की प्रथा विद्यमान थी तथा उनम ने मामन्त की इच्छानुसार विमा पत्नी का महारानी या पत्नरानी बना देता था। इमके साथ हा प्रवध यौन सम्बन्धों का सामाजिक मान्यता प्रदान करन के निये राजपूतों म रखन रखन का प्रथा भी विद्यमान बताया गई है। रखन वह स्त्री कर्ताता है जिस विधिवत विवाह करके नहीं गया जाता है किन्तु जो मामन्त या राजा के साथ यौन सम्बन्धों का बनाय रखती है।

प्राचीन राजपूत वंशों म शत्रुवन्धनविवाह पर बन्धन अधिक प्रतिबन्ध नहीं बताया गया है। तथा रिबरण टाड ने अपनी पश्चिमी भारत का यात्रा पुस्तक म किया है। फिर भी टाड यह स्वीकार करत है कि वनमान म राजपूतों म धान हा कुन या गौरव तथा वश म विवाह करना पुणत बजित है।⁹ विवाह सम्पन करत समय यह अवश्य दखा जाता है कि राजा परिवार उच्च कुलीन धन के हैं। किन्तु विवाह के समय कथाधा की धार म अधिक धन पडता था। सामन्त या राजा की नियत म अधिक धन के कारण कई घटनाएँ कथाधा वध का मामन्त धरि हैं। सामन्त के पर उडका का जन्म हुना एक अभिशाप बन गया था। एन एक अपराध की सजा भी टाड ने भी तथा लिखा है कि बद्ध राजा या का कारण ता नक्षत्री का विवाह बना है। युद्ध समाप्ति की एक शन यह भा हुना म कि जीवन बाता राजा या सामन्त का हारन बात की कथाधा का विवाह धनधाती प्रवस्था म भी कराना जाता था। विवाह के उपरान्त पर धन का धार्य्य हुना था।

टांड नारा निमित्त पश्चिमी भारत की यात्रा में उन्होंने स्वीकार किया कि जनजातियाँ विशेष रूप से भीला के साथ सामना के सम्बन्ध में गहरे थे। भीलों की सैनिक शक्ति के रूप में सामंता में अपने साथ जाते थे ॥ -

नीचे अध्याय में भीला के एक संस्कारा द्विधामों धार्मिक क्रियाएँ शक्ति का बलून भीला की सम्पत्ता के पथ पर एक काम भाग बनाया है। अथ विच्छेदो हूँ ॥ धार्मिक जनजातियाँ तथा एक पुराणिक धार्मिक लोगों में भी एक पृष्ठ थे।¹⁰ टांड ने ध्यान लिखा है कि— भारत की विच्छेदी जातियाँ भात कानी गोंड भीला और मर धार्मिक विषय में गहरी छानबीन करने से मानव के भौतिक इतिहास का बहुत ही महत्वपूर्ण किया भिन्न जाता है परिगणित जातियाँ में भा चैत्र मानर और अनुकरण का स्थान भक्त के कारण उत्पन्न हुए स्वभाव विश्वास का शक्ति रिवाजों की बना की भिन्नताएँ देखने में आती है। नाते चपरा नाक बाल तपस्यारी मुवाकृति युक्त एम्कोमा तथा प्राचीन एका महान धार्मिकता में और मजरा के भात तथा मिरपूजर के वाली में बाई बना अंतर नया है धार ध्वनीय समुद्र के किनारे रहने बात लोगों तथा ममूरा की घुमन्तु जातियों में उननी ही भिन्नता है जितनी कि हमारे बना के धार्मिकताओं और पूर घुमन्तु राजपूता में¹¹।

राजस्थान की प्राचीन नगरीय संस्कृति का धार्मिक रीति रिवाजों की स्पष्ट व्याख्या टांड ने अपनी यात्रा पुस्तक में की है। यद्यपि इन तथ्यों से टांड ने स्वयं कोई मंडातिक निष्कर्ष नहीं प्रस्तुत किया बल्कि विविध स्थानों पर जा मन्दिर एका अथ दशनीय स्थान टांड ने दस उनका एतिहासिक आधार खोजने का प्रयास किया है। जो समाजशास्त्रा राजस्थान की नगरीय संस्कृति या पश्चिमी भारत की धार्मिक एका सामाजिक अवस्था का ऐतिहासिक गहरा में देखना चाह उनका निय विन्दन तथ्य उनका है। अनहिलवाडा और मोगस्ट का इतना अधिक विस्तार में बरतन टांड ने प्रस्तुत किया है कि किसी भी समाजशास्त्री के लिए वह उपयोगी सिद्ध हो सकता है यदि वह समाज का यात्रा ऐतिहासिक तथ्यों का गहरा में साथ करना चाहता है।

10 पश्चिमी भारत की यात्रा 36

11 वही पृ 38

उपसंहार एवं सैद्धांतिक निष्कर्ष

टाड न जा कुछ भी तथ्य प्रस्तुत किये थे सभी एक विशेषी विद्वान का हस्तियत से सम्बन्धित किये गये थे। उनमें कई कमियाँ भी जाना स्वाभाविक था। उनका जो भी प्रामाणिक रूप में जानने व इच्छुक हैं वे जान सकते हैं तथा जिन खातों की प्रामाणिकता सन्देहास्पद है उनको अस्वीकार किया जा सकता है। किन्तु यह स्वीकारना पड़गा कि टाड के अधिकांश खान पुराने प्रामाणिक एवं मत्वापित किये जा चुके हैं। उन्नीसवीं सदी के प्रथम चरण तक राजस्थान एवं इसके साम-पन्नीस के क्षेत्रों में राजनतिक उदय पृथक् तथा उनका सामाजिक परिणामों का विस्तृत विवरण कर टाड ने समाज-शास्त्रियों के समक्ष एक मूल तथ्य प्रस्तुत किये हैं जो न केवल दुर्लभ थे बल्कि उनका बिना सामाजिक राजनतिक परिवर्तनों की शिक्षा एवं प्रक्रिया के बारे में मिथ्यात निणय करना सम्भव नहीं था। टाड की पुस्तक से न केवल राजस्थान के इतिहासकारों का नई प्रेरणा मिली बल्कि भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वाले कई बुद्धिजीवियों का महाराणा प्रताप तथा अन्य राजपूत वीरों की स्वतन्त्रता की रक्षा की लड़ाईयाँ के वर्णन में मार्मिक दर्शन एवं आस्था प्राप्त हुए।¹²

अभिजन बग तथा उनका हाथ वाले परिवर्तनों के विषय पर कई समाजशास्त्रियों के सैद्धांतिक निरूपण उपलब्ध हैं जिनमें विलफ्रेड परेटा का अभिजन चक्र का सिद्धांत¹³ अधिक माय्य है। टाड के राजस्थान के इतिहास में जितने भी इतिहासिक तथ्य प्रस्तुत हैं उनमें इस सिद्धांत की पुष्टि करने की पूरी क्षमता है। परेटा का यह कथन कि इतिहास कुना नतन्त्रा का कविरस्तान है टाड की रचनाओं में पूरा तरह सत्य साबित होता है। सामन्ती सामन व्यवस्था में राजस्थान की राजनतिक - सामाजिक संरचना किस प्रकार विभिन्न राजाघा एवं सामन्तों का निजी तथा सांख्यनिक नीतियों में प्रभावित हुई तथा किन किन परिस्थितियों में सामन्तों का ज्ञान संप्रदाय शर-रू इनका विस्तृत एवं तथ्यपूर्ण विवेचन में परेटा के अभिजन चक्र के सिद्धांत की पुष्टि होती है तथा यह साबित होता है कि सतत रूप में चले आ रहे सामन्तों का व्यवस्था में सुदूरों के द्वारा नाशियाँ एवं

12 राजस्थान के इतिहासकार पृ 60-61 प्रताप माध प्रतिक्रान्त

13 अन्वय विषय शा पन्नी ट्रिटान्ज धर्त जनरल माशियारॉजी धप्रगी धनशा उपसंहार इतिहास प्रकाशन 1963

घादशों में सम्पन्न हुए हैं। यहा तक कि सत्ता की बागडोर भी विदेशी शक्ति के हाथ में चली गई। पटल यह विदेशी शक्ति मुगला की थी और बाद में अंग्रेजों की। समय-समय राजस्थान के राजाशा न राजनतिक शक्ति को पुन प्राप्त करने के प्रयत्न या सफल प्रयास भी किये किंतु फिर यह शक्ति उनके प्रभाव से निकलती हुई दखी गई। टाड का विश्लेषण मात्र म लगभग दो शताब्दी पूर्ण की सामाजिक राजस्थान व्यवस्था के बारे में है किन्तु उसकी साक्ष्यता किसी भी प्रकार से कम नहीं हुई है क्योंकि हर समाज में सत्ता एव परिवर्तन के दोना पक्ष विद्यमान हैं। कतिपय सामाजिक मूल्य व्यवस्था तथा जाति एव धर्म व्यवस्था के केन्द्रीय आधार नहीं बनते हैं। उनकी निरंतरता से प्राचीनता के शौरव का सम्म साक्ष्य एव प्राथमिक हो जाता है। शायद टाड ने तो यह कल्पना भी अपने जीवन में नहीं की होगी कि उन्नीसवीं सदी के प्रथम चरण का ईस्ट इण्डिया कंपनी सरकार का उपनिवेशक भारत अठारसौ मत्तावन की क्रांतिक वा" पूण रूप से अंग्रेज सरकार के अधीन हो जायेगा और फिर करीब एक शताब्दी की तन्वी अजादी की लडाई के बाद 1947 में पुन अजादी की मात लगे। किन्तु उन्हीन राजस्थान के राजपूतों के सोप हुए स्वाभिमान का लौटान और उनको स्वतंत्र अपनी सत्ता चलाने की सभावना अवश्य व्यक्त की थी।

अजादी के बाद भी चार दशकों में भारतीय सामाजिक राजनतिक व्यवस्था के अतर्गत परिवर्तन आये हैं। किसी एक व्यक्ति या परिवार का सामन्ती शासन की तरह अधिकार नहीं मिले क्योंकि यह पक्षपात जनताविक प्रणाली पर आधारित है। राजस्थान के वर्तमान राजनतिक स्थिति पर भूतपूर्व जमींदारों जागीरदारों एव राजा महाराजाओं का राजनीति में पुन सश्रीय होना उन्ही अमीजन चक्र के सिद्धांत की पुष्टि करता है जिस टा" के द्वारा प्रस्तुत तन्वी से समवन मिल चुका है।



टॉड के इतिहास लेखन में सांस्कृतिक आकलन

—डॉ. विक्रमसिंह राठी

राजस्थान के इतिहास लेखन की परम्परा पर दृष्टिपात करें तो यह बात स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि यहाँ के इतिहासकारों की रुचि सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन के प्रति इतनी अधिक नहीं रही जितनी राजनतिक अध्ययन के प्रति। राजनतिक क्रियाकलापों तक सीमित रहने वाला विवरण इतिहास का एकांगी पक्ष ही कहनायेगा। इतिहास के समग्र स्वरूप का समझने के लिए जन समाज में प्रचलित आचार विचार, मान्यताओं, रीति रिवाजों रहन-सहन खानपान, आमोद प्रमोद उद्योग, व्यापार भाँति का वर्णन भी आवश्यक है जिससे किसी समाज की सामाजिक सांस्कृतिक और धार्मिक स्थिति का पता चलता है। आज इतिहास के इन घट्टे या अल्पज्ञात पक्षों पर अधिक बल दिया जा रहा है तथा सामाजिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक इतिहास लिखने की दिशा में अपेक्षित सुधार हुआ है।

इतिहास लेखन में सांस्कृतिक आकलन के आधार पर देखा जाय तो राजनतिक घटनाक्रम को लिपिबद्ध करने की रूढ़ परिधि का सापेक्ष रूप समाज की भाँति प्रस्तुत करने का प्रारम्भिक प्रयास टॉड के इतिहास लेखन में मिलता है। टॉड ने अलग से राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास नहीं लिखा। यहाँ के राजनतिक इतिहास के माध्यम से यहाँ की धार्मिक व्यवस्था धार्मिक पक्ष सामाजिक उत्पत्ति राजपूत चारण भाँति विभिन्न जातियों के रीति रिवाजों, राजपूत समाज में नारी की स्थिति धारणनामों के अदभुत उत्सवों के प्रसंग आदि के माध्यम से यहाँ की सांस्कृतिक विरासतों का उल्लेख करने का प्रयास किया। यही टॉड के इतिहास लेखन की सबसे प्रमुख विशेषता है। इतिहासवस्तुओं और इतिहास के जिज्ञासु पाठकों का मनो प्राय यह कहने मुना है कि टॉड ने यहाँ के इतिहास का रोचक रूप से लिखा

है। टाड के इतिहास लेखन में इस राष्ट्र-तत्व का प्रादुर्भाव वास्तव में यहाँ की सांस्कृतिक विशेषताओं को उन्पाटित करने से ही हुआ।

टाड के इतिहास में पूर्व के ऐतिहासिक शक्तियों से हम प्रायः किसी प्रदेश-जाति या समाज की बाह्य-व्यवस्था का पता चलता था भीतर की व्यवस्था की जानकारी नहीं के बराबर होती थी। टाड ने राजनैतिक घटनाक्रम व राजनैतिक क्रियाकलापों के प्रतिरक्त यहाँ की समाजगत घातक व्यवस्थाओं को उन्पाटित करने में रुचि ली और यहाँ की सांस्कृतिक विशेषताओं को अपने इतिहास लेखन में स्थान दिया। इस प्रकार राजस्थान के इतिहास लेखन में यहाँ के सांस्कृतिक तत्वों को समाविष्ट करने का भी प्रयत्न किया।

टाड का यह मानना था कि - सामाजिक आचार-व्यवहार ही किसी जाति का इतिहास का अग्रिम प्रयोजनीय अंग है। उसकी इस भावना में ही उसने यहाँ के सांस्कृतिक तत्वों को अपने इतिहास लेखन में समाविष्ट करने हेतु विशिष्ट रूप में प्रयत्न किया होगा। इसके साथ ही यहाँ के सांस्कृतिक तत्वों की अनुपमता और विशिष्टता के कारण टाड का उनकी और बरवम आकृष्ट होना भी स्वाभाविक जगता है। कारण कुछ भी रहा हो टाड ने सप्रयास या सहज-रूप से इन सांस्कृतिक तत्वों का निविद्य कर दिया तब हम भी उसकी गरिमा व महत्ता को भलीभाँति जान सके।

टाड के इतिहास लेखन में सांस्कृतिक आकलन को आकलने की यत्न-कोशिश की जाय तो यह बात स्वतः ही स्पष्ट हो जायगी कि उसने यहाँ के सांस्कृतिक पक्ष को भी महज किन्तु रोचक व प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। प्रत्यक्ष रियामत के इतिहास में सांस्कृतिक विवरणों का समावेश कर टाड ने अपने इतिहास लेखन में जहाँ तक संभव हो सका उस स्थान दिया। जो प्रसंग उस प्रिय एवं अप्रतिम लगने वाला उसने विस्तार से बणन किया है। इन सांस्कृतिक पक्षों एवं तथ्यों के चयन में उसका निजी दृष्टिकोण ही प्रमुख रहा है अथवा जसा उसने देखा व सुना वसा ही उल्लेख किया।

मुगल परिस्थितियों के अंतर्गत टाड जसा एक विदेशी अग्रज इतिहासकार ही वस्तुस्थिति तथा यथाय विवरण को लिखित कर सकता था क्योंकि वह निष्पक्ष भाव से इन तत्वों के प्रति अपनी राय दे सकता था।

उम पर किसी प्रकार का दबाव या झुकाव नहीं था । यही कारण है कि उसके विवरण में जहाँ-जहाँ की सांस्कृतिक विशेषताओं की सराहना मिलती है वही कुछ ऐसे पारम्परिक रूढ़ीगत रीतियों व विचारों की मजबूती भी । टाड के इतिहास लेखन में सांस्कृतिक पक्षों के विवेचन में जो निष्पक्षता व नटस्थता दखन को मिलती ही है राजनतिक घटनाक्रमों में मिले या न मिले यह दूसरी बात है । यहाँ एक बात यह भी द्रष्टव्य है कि सांस्कृतिक पक्ष की परम्पराओं के वृत्तों में अपने व अन्य दूसरे देशों की ऐसी ही मिलती जुलती परम्पराओं या मिलते जुलते घटना प्रसंगों का तुलनात्मक उल्लेख भी मिलता है ।

राजपूतों के नारी विषयक गिफ्टाचार का उल्लेख करते हुए टाड ने लिखा है कि - आजकल बहुत से लोग यह कहते हैं कि जो लोग स्त्री जाति के विशेष अनुरागी हैं वह सबसे अधिक सम्पन्न हैं । यदि हम विद्वान का अनुमान किया जाय यदि स्त्री जाति के अनुराग और गिफ्ट परिणाम के अनुसार जातीय सम्पत्ता की बराबरी की तुलना करना हो तो अवश्य ही राजपूत लोगों का सम्पत्ता का अनुमान स्विकार करना चाहिए । राजपूत लोग अपने हृदय से धाराध्य देवता की भाँति स्त्री की पूजा किया करते हैं यदि इन देवता का किञ्चित् भी अपमान हुआ जाय यदि उसका सम्मान या गिफ्टाचार में जरा भी अंतर पड़ जाय तो तबस्वी राजपूतों के हृदय में घाव भी जल उठती है और जब तक अपमानकारी के हृत्पत्र के हृत्पत्र में अपनी घाव नहीं बुझा लेते तब तक किसी प्रकार से उनकी शांति नहीं हाती ।¹

इसके अतिरिक्त बारह वष की कथा का पचास वष के महाराणा नावा में धनमल विवाह माकल के समय मवाड में बड़े पुत्र के उत्तराधिकार की परम्परागत रीति में परिवर्तन आने वाली सामाजिक गतिविधियों का उन्मूलन भी टाड ने किया है जिनमें मवाड की सामाजिक व्यवस्था में ही व्यवधान नहीं हुआ बल्कि इसके राजनतिक दुष्परिणाम का पक्ष भी मवाड का भविष्य में भागना पड़ा । इन दो घटनाओं में मवाड और मारवाड के सीमांतियों और राजाओं के बीच समन्वय का जन्म लिया जिसमें दादा ही

1. जेम्स जेम्स टाड द्वारा राजस्थान का इतिहास (अनुवाक एवं सम्पादन बलदेवप्रसाद मिश्र एवं ज्वालाप्रसाद मिश्र) भाग 1 पृ 190
(प्रकाशक यूनिवर्सल बुक्स प्राइवेट लिमिटेड रास्ता जयपुर प्रकाशन वर्ष-1987)

रियासतों को घापनी सघष में भारी मात्रा में धन और जन हानि सहनी पड़ी ।

महाराणा भीमसिंह की पुत्री वृष्णाकुमारी के शात्मबलिदान की भांगिक गाथा का बणन करना भी कनल टाड नही भूला जिसकी व्याख्या का स्मरण कर आज भी पाठकों का हृदय द्रवीभूत हो उठता है । वृष्णाकुमारी की कथा से मल साती रोम की अभागिनी बजिनिया तथा ग्रीस की सुन्दरी इफीजिनिया क प्राण न्यौछावर करने की ममानधर्मी घटनाओं का उल्लेख भा टाड ने किया है-²

श्रीमती बजिनिया राम के महारथी वियूनियस बजिनियस की बेटी थी । कहत हैं कि एपियस क्लीडियस नामक एक दुष्ट न बजिनिया को माता पिता के निकट से बलपूर्वक हरण करने की चेष्टा की थी । अपनी प्यारी बेटी के सतीत्व और उसके सम्मन के बचने का कोई उपाय न देख कर वियूनियस न सबके सामने फोरम क्षेत्र में उसको अपने हाथ में मार डाला ।

इफीजिनिया ग्रीस के महावीर एगमेमन की बेटी थी । जब अलिम नामक द्वीप में ग्रीसवालों का जमी जहाज हक गया तब डियाना देवी की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए एगमेमन ने अपनी बेटी के सामने बलि दिया था ।

महाराणा राजसिंह की अन्य चारित्रिक विशेषताओं के अतिरिक्त उनकी शिल्पप्रियता का उल्लेख करत हुए कनल जेम्स टाड ने राजसमद सरोवर का विस्तार से बणन किया है । राजसमद का यह विवरण राजस्थान की स्थापत्यकला का उगाहरण प्रस्तुत करता है जा इस प्रकार है—

राजसमद सरोवर - जातीय महती प्रतिष्ठा और राजपूतों की कीर्ति का विशाल प्रमाण क्षेत्र यह राजसमद सरोवर राजधानी से साठे वारह कोस उत्तर और भरवनी की तलटी से एक कास पर स्थित है । गोमती नाम की टेड़ी चलने वाली पहाड़ी नदी की धार को एक बड़ भारी बघ स बाधकर इस सरोवर को बनाया गया था । महाराणा ने अपने

नाम के अनुसार ही उसका नाम राजसमर रखा या। ईशान और वायु काण के अतिरिक्त और तथा धार तथा वशा हुआ है। यह सरावर वशा गहरा है चमका घेरा प्रायः छ कान 12 मील तक होगा। यह सगमर का बना हुआ है इसके किनारे से नीचे तक सगमर की समशीय सीढ़ियाँ बनी हुई हैं जिन्हान चारों ओर से चम सरावर को घेरे रखा है। इस सरावर के किनारे भी इसी पत्थर के हैं इसका बना मिट्टी के परकोटे से घिरा हुआ। यदि राजसिंह और कुछ दिन जीने तो चारा और सुंदर मुरर बनों का लगाकर इसका शोभा बड़ा जाती। सरावर के दक्षिण ओर राणा ने एक नगरी और किला बनवाया या उस नगर को अपने नाम के अनुसार ही राजनगर नाम से विख्यात किया। पूर्वोक्त बंध के ऊपरी भाग में श्री कृष्णजी का एक अत्यंत शोभायमान मन्दिर बनवाया या जिगम समस्त वायु सगमर से हुआ। इस मन्दिर के भीतर नाता प्रकार के मनाहर चित्र उगे हुए हैं, बीच में एक स्थान पर बड़ मोटे और साफ अक्षरों में लिखा हुआ उसकी प्रतिष्ठा कराने वाला का बताया पाया जाता है। इसका बनवाने में और इसकी प्रतिष्ठा करने में महाराणा ने 98 साल रूपय खर्च किये थे।³

कनक जेम्स टाड ने पौराणिक इतिहास की उपयोगिता के सम्बन्ध में लिखा है— अनुर्वेत् आयुर्वेद स्मृतिशास्त्र राजनीति या विज्ञान चाहे जो कोई शास्त्र हो जिसके मूल में पौराणिक इतिहास नहीं है वह निश्चय ही अपूर्ण है। पौराणिक कथामाला के भीतर जो लोग केवल तेजस्विनी कल्पना की अथिक्ताई देख पाते हैं उन्होंने विज्ञान मूल सूत्रों को छोड़ा ही पड़ा है। पुराण ही गति की पहली अवस्था के विषय में साक्षी दत्त हैं और सत्य दत्तों के इतिहास की जड़ केवल पुराणों पर ही नहीं हुई है। मसार के और दूसरे देशों को पौराणिक इतिहास का फल चाहे जसा मिलता हो परन्तु सम्यता के प्राप्ति स्थान इस भारतवर्ष के लिए वह अत्यंत उपकारी है। सनातन हिन्दूधर्म विज्ञान मूलक है विज्ञान स्वभाव से ही नीरव और कठोर हाता है परन्तु पुराणों में इस सम्यक और कठोरशास्त्र को ऐसे सुंदर ढंग से स ढक रखा है कि करोड़ों वर्षों के हरे फल स भी वह पूर्ण दूर नहीं हुआ। हिन्दूतोग इन पुराणों को बल के समान पवित्र माना करते हैं। इन पुराणों में जिन महापुरुषों का वैश्राव स पूजा गया है वह लोग

भाज तक भी देवभाव से पूजित हुआ करते हैं। भगवान शिव और विष्णु भाज तक भी हम विशाल भारत भूमि के करोड़ों मनुष्यों से पूज जाते हैं।⁴

मेवाड़ की धार्मिक स्थिति का बरण करते हुए कनल टाड ने मेवाड़ की शिवपूजा भगवान एकलिंगजी का मंदिर शब गोस्वामी जन नायगारे में श्री कृष्णजी का मंदिर और पूजा की रीति का उल्लेख करते हुए अंत में राजपूतों में ब्रह्मण्य धर्म में उपकार की संभावना व्यक्त की है—
राजपूत लोग यदि महादेवजी के निकट धर्म का छोड़ कर केवल शक्ति में ब्रह्मण्य धर्म का आचरण करें तो राजपूत जाति का विशेष उपकार हो सकता है।⁵

कनल टाड ने मेवाड़ प्रदेश के धार्मिक जीवन का वनांत लिखत समय जहाँ एक ओर मेवाड़ के राजवंश के प्रधान उपास्य देव एकलिंगजी का उल्लेख किया है वहीं मेवाड़ में प्रचलित शिवपूजा जन धर्मावलम्बी नायगारे के श्री कृष्ण एवं ब्रह्मण्यधर्म का भी विवरण दिया है। इस प्रकार मेवाड़ में हम हिंदू धर्म का एक आदर्श स्वरूप देखने को मिलता है जो यहाँ की संस्कृति की एक सनातन विशेषता है। समय समय पर मेवाड़ में विभिन्न धर्मों का उत्कर्ष हुआ। यह उस प्रदेश की धर्मपरायणता की विशेषता ही थी कि जब द्रव्यधर्म से ब्रह्मण्य लोग श्री कृष्ण की मूर्ति लेकर औरगजब के भय से इधर उधर भागते फिर रहे थे उस समय मेवाड़ में श्री कृष्ण जी की पवित्र मूर्ति को अपने राजवंश में आश्रय दिया। एकलिंगजी तो उनका उपास्य देव थे उनके साथ ही श्री कृष्ण की देवमूर्ति की विधिमयों से रसा करणा भी उनका धर्मपरायणता का एक आवश्यक अंग था। धार्मिक उत्तरता एवं धार्मिक सहिष्णुता दोनों ही विशेषताओं में युक्त इस प्रदेश का धार्मिक जीवन गौरवशाली था।

धार्मिक जीवन के साथ साथ कनल टाड ने मेवाड़ के विभिन्न पर्वोत्सवों का उल्लेख किया है जिनमें—बसन्त पंचमी भानुमत्पती शिवरात्री छत्रिया पारोत्सव, शीतलापट्टी राणा का जन्म दिन फूलदान अन्नपूर्णा अशोकाष्टमी रामनवमी मदनचणोदशी नवगौरी पूजा सावित्री व्रत रभातीज

4 जेम्स टॉड द्वारा राजस्थान का इतिहास द्वितीय खंड पृ 711

5 वही पृ 719

अरुप्य पट्टी रथयात्रा, पावती तीज नाग पंचमी राग्री पूर्णिमा जन्माष्टमी खड्गपूजा लक्ष्मीपूजा दीवाली अन्नकूट भूतनयात्रा मकर सत्राति मित्रसप्तमी आदि प्रमुख हैं। इन सब पर्वोत्सव को मनाने की निधि व विधि का पूरा बखान टाड ने किया है। इन पर्वों एवं उत्सवों के माध्यम से मेवाड की संस्कृति का स्वरूप मुद्रित होता है जो राजस्थान की संस्कृति का ही एक अंग है। राजस्थान की लोक संस्कृति का ये पर्व एवं उत्सव समस्त ढंग से अभिव्यक्त करते हैं तथा यहाँ की संस्कृति के सवाहक व जीवन्त माध्यम हैं।

टाड को राजस्थान की जाति व्यवस्था न भी आकृष्ट किया इसलिए उन्होंने यहाँ की अनेक जातियों में आचार विचार की जो भिन्नता पायी जाती है उस भी अपने इतिहास लेखन में समाविष्ट किया है। किसी जाति के आचार विचार से हम उसकी उन्नति का अनुमान लगा सकते हैं। विख्यात विद्वान् माग्रेट का बयान है कि— जो जाति शिल्प और विज्ञान की जितनी उन्नति करे उस जाति के सामाजिक आचार विचार भी उन्नति पाकर उतने ही प्रकाशमान हात हैं।

राजस्थान की विभिन्न जातियों के आचार विचार का बखान करते हुए स्त्रियाँ पर राजपूतों की भक्ति और सम्मान का उल्लेख करते हुए लिखा है— प्राचीन जमान और स्कन्देवियों के समान राजपूत जाति प्रत्येक वय में स्त्रियों के साथ परामर्श करती थीं, और स्त्रियों के आचरण के ऊपर अपने शुभारम्भ का निश्चय करती थीं यह भी उनका विश्वास था और वह स्त्रियों को जितना सम्मान करते थे कि उनसे स्त्रियों का गौरव की दृष्टि वाली दृष्टि नाम की उपाधि मिली। जो मनुष्य इस बात का नहीं जानते हैं वह हिन्दू स्त्रियों को पराधीन बताकर शाक प्रकाशकर उनके अस्तपुर निवास को कारणार का वास बताते हैं।⁶

इसी प्रकार रनिवास की रीति और उसकी उपयोगिता राजपूतों का राजकुमारियों के गौरव को रखना, राजपूतानियों की असीम पतिभक्ति इतिहास तथा काव्या के सख राजपूत स्त्रियों की उदारता साहस प्रयुक्तपतिव्रत के अन्वहरण सतीसाह निशु काया की हत्या जुहार की रीति आदि का उल्लेख किया है। राजपूत स्त्रियों का सन्निपन्न विवरण करने समय शिकार व्यायाम

कीडा मुडशाला गाना बजाना गिशा धर की सजावट और वशभूपा धरि सभी कुछ लेखन का वष्य विषय बने ।

हालाकि टॉड के इतिहास लेखन में राजपूत जाति के धाचार विचार तथा धन्य प्रकार क विवरण प्रमुखत इस जाति से सम्बधित रह है । फिर भी केवल राजपूत जाति के सम्बध में ही उल्लेख नहीं किया धन्य जातियों के सम्बध में भी जो नवीन एव राचक जानकारी मिली उसका वणन करने में भा वह नहीं पूवा । माहीर जाति के धाचार ध्यवहार का वत्तात यहाँ द्रष्टव्य है ।

माहीर लोगों में विवाह बधन जमे सहज उपायो से सम्पादित होता है बसे ही सहज उपायो से उस बधन का विच्छेद भी हो जाता है । यदि स्त्री पुरुषा में परस्पर एक दूसरे का मन पट जाय धधवा और किसी विशेष कारण से परस्पर चिर विच्छेद धावश्यक हो तो स्वामी धपन दुपण्टे वा कुछ हिस्सा पान्कर स्त्री के हाथ में रकर धपना स्त्री में सबध छुडा लगा । त्यागी हुई स्त्री वह वस्त्र का टुकडा हाथ में ल शिर पर जन से भरे दा कनक तलक पर रखकर त्रिम भाग में इच्छा होगी उसी से चली जायगी और जो पुरुष पहिल उम त्याग हुई स्त्री के शिर में जल कनक उतारना स्वीकार करेगा स्त्री उसको ही धपना भाधी पति सम भगी । यह स्त्री त्याग प्रथा कवल सीना लोगों में ही प्रचलित नहीं है किंतु जाट गूजर धहीर भागी और धयाय बनली जातियों में भलीभाति प्रचलित है । जेहर लमा उर निकला । धर्पात् कलश लेकर चली जायो यह दान माहीरवारा की पहाडियों में साधारण रीत से ध्यवहार की जाता है ।²

कनल जेम्स टॉड न मटभूमि के निवासियों क वृत्तान्त के धतर्गत इतिहास क साथ धयान्य जानव्य तर्ष्यों की भी जानकारी दी है जमे भिन तानाय अधिवासी जाट राजपूत द्राहाण वश्य और दास जाति । मारवाड राज्य के विस्तार क साथ साथ जनमख्या तथा यहाँ के शिल्पकौशल का भी उल्लेख किया है त्रिमस यहाँ क साम्यृतिक जीवन का समभन में मन्द प्रिश्यनी है ।

बीकानेर की उत्पत्ति भटनेर की उत्पत्ति, जाट जाति का ऐतिहासिक विवरण प्राचीन नगरों की सूची जमलमेर का नामकरण, जमलमेर का भौगोलिक विवरण जमलमेर के ग्रामों नगरों की संख्या उस क्षण व भविष्य, भट्टि जाति उसकी सृष्टि और वेशभूषा, प्रकीर्ण और साधुओं के भट्टिगणों का धनुराग पत्नीवाल जाति उसका धन परिमाण काय, विचित्र पूजा पद्धति तथा पोकरण शाहण जाति इत्यादि प्रसंगों के विवरण में यहाँ व सांस्कृतिक जीवन की भाँकी मिलती है ।

मेवाड़ मारवाड़, बीकानेर जमलमेर ही नहीं जयपुर, कोटा वूरी भालरापाटण इत्यादि विभिन्न स्थानों व भ्रमण व समय प्रमाण विशेष व भविष्यसिद्धा की जीवन शैली तथा उनका सांस्कृतिक आचारा का भी समावेश उल्लेख टाड ने अपने इतिहास लेखन में किया है । बादा के पराग के जन मंदिर हो चाहे पठार देश का शुद्ध का मन्दिर भवानी मन्दिर वूरी व राजमहल हा चाहे चम्बल का प्राकृतिक रमणीय दृश्य इन सब के विवरण सांस्कृतिक पक्ष से जुड़े हैं ।

टाड जहाँ एक ओर मन्दिरों के स्थापत्य से बहुत अधिक प्रभावित हुए वहीं दूसरी ओर विभिन्न जातियों व आचार विचार तथा उनके पर्वों तथा आदि सांस्कृतिक परंपरा का भी वर्णन करने में गहरी निरवरोधी ली । इन सांस्कृतिक विवरणों में बनेन टाड ने कोई संभाव्य गढ़ा देना चाहे वह कोटा की हीरी का आराधन हा चाहे बजारा व जागिया का विवरण जो भी उसकी जानकारी में आया व उस अधिकतर तथा उचित साक्ष्यन अपने इतिहास लेखन में कर रहा की सांस्कृतिक विवरणों का प्रकाश में लाया । टाड का यह प्रयास स्वच्छ व सहज था । ज्ञानार्थ ही इन सांस्कृतिक तत्वों को उल्लेख अपने लेखन में ला गया मुख्य उद्देश्य तो उसका यहाँ व राजवाड़ा का राजनतिक इतिहास लिखना ही था ।

अतः टाड के इतिहास लेखन में सांस्कृतिक वास्तव का प्रतिबिम्ब बनने समय इस तथ्य को ध्यान में रखना आवश्यक है कि लेखन टाड का उद्देश्य यहाँ का सांस्कृतिक इतिहास लिखना नहीं रहा फिर भी यहाँ की सांस्कृतिक रचनाओं का प्रभावित होकर यहाँ के कुछ सांस्कृतिक विवरणों को उल्लेख गुणा जो एक प्रामाणिक कार्य माना जायगा । या लेखन अपनी

पश्चिमी भारत की यात्रा म सांस्कृतिक उपागतो की विस्तार स चर्चा की ह परन्तु उमका मूपाकन प्रलय म कर्म की भावश्यकता ह । यहा तो उपयुक्त विवरण व धाधार पर यह कहा जा सकता है कि इस सांस्कृतिक याकनन मे टां क इतिहास से नवीनता एव प्रभावात्पन्कता का मूत्रपात हुआ । इसके साथ ही टाइ का इतिहास मात्र राजनतिक घटनाक्रम का रूपा एव तीरम लेखा जोखा न बनकर यहां के निवानिया की सांस्कृतिक जीवन्तता से स्पन्त भी हुआ ।

—

टॉड के आर्थिक आकड़े

एक सांख्यिकीय अध्ययन

—डॉ. वी. एल. भाटानी

जम्मू टॉड राजस्थान के इतिहासकारों के लिए एक सुपरिचित नाम है। वे इस्ट इण्डिया क प्रतिनिधि क रूप में राजस्थान की रियासत में आए। वे एक नितांत ही भिन्न भौगोलिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण से आए थे एवं उन्हें यहाँ विपरीत भौगोलिक परिस्थितियाँ एवं सामाजिक व्यवस्थाओं का सामना करना पड़ा। एक तरफ तो दूर तक पत्थरी रेगिस्तान की गम हवाएँ थीं तो दूसरी तरफ दूर तक पर्वत श्रमण जा उनका स्वागत करने का तपस्वी थी। टॉड को यहाँ की सांस्कृतिक परम्पराओं की रीति रिवाजों एवं बीर गाथाओं ने गहराई से प्रभावित एवं प्रेरित किया। इनके प्रतिफल क रूप में उनके द्वारा लिखित राजस्थान का इतिहास हमारे सम्मुख आया।

भारत के बारे में उनका विचार यूरॉप के ग्राम विद्वानों के विचारों से नितांत भिन्न थे। यूरॉपियन इतिहासकारों का ग्राम धारणा थी कि भारत का ग्राम कोई राष्ट्रीय इतिहास नहीं है जब कि टॉड की मान्यता थी कि जिस देश के लोग सम्यक्-मुसहृन्त हो जिन्होंने विज्ञान का परिपक्वता प्रदान की है जिन्होंने न केवल नवतन्त्र ज्ञान वास्तुकला मूर्तिकला काव्य एवं संगीत का स्रजन किया है बल्कि गुरु का धारण ग्रहण कर लोगों का सिखाया है एवं सुव्यवस्थित नियमों के तहत इन कलाओं को परिभाषित किया है। उन्होंने धारण है काव्यात्मक शक्ति में निम्न कि जिन्होंने हस्तिनापुर एवं इन्द्रप्रस्थ के शहर दिल्ली एवं बिलौली के विजयस्तम्भ धार एवं गिरनार के पवित्र स्थान एलारा एवं प्रकृता के गुफा मंदिरों का स्रजन किया है। क्या हम लोग ग्राम इतिहास की घटनाओं का निम्न जमीन साधारण कला में ग्रामभित्त रह सकत है ?¹ क्यापि नहीं। भारतीय

1 जम्मू टॉड एनान एण्ड एन्गीकरीगीज प्रॉन् राजस्थान इन्ट्रोडक्शन (मन्च 1960) पृष्ठ 14

इतिहास एव सस्कृति के बारे म य विचार ही टाड का ध्येय इतिहासकारा की पक्ति से घटा स्तम्भ की तरह खडा करत हैं । इन विचार क वृष्ट भाग म भारत क विगपन राजस्थान क प्रति उनक प्रथम भाव की भूमक के दशन किए जा सकन हैं ।

उनीमवी सग का िनाय दशक क समय था जबकि अभी पूर तौर पर राष्ट्रीय भावना स धान-प्रांत इतिहास लेखन की परम्परा पूणत विकसित नहा हा पाई थी । ध्येय इतिहासकार निरंतर प्रयास कर रह थ कि भारतीयों का ध्येय का इतिहास नयी रग है । एस समय म भारतीय सस्कृति एव इतिहास क प्रथमक एव ध्येय प्रथमक न सम्पूण राजस्थान का इतिहास लिखकर राजस्थान म इतिहास लेखन की शुरुआत की । इसक लिए राजस्थान इतिहास क जाधारी मन्व उनक श्रेया रहग ।

टाड ने ध्येय इतिहास लेखन क लिए तत्कालीन समय म उपलब्ध सम्पूण सामग्री का भरपूर उपयोग किया । उगन पारम्परिक धाता क अनिरिक्त चारणो साहित्य का उपयोग किया जिसकी मात्रा का जस धामीमी इतिहासकार ने ध्येयत प्रथमा की है । टाड का मानना है कि चारणो की मानव जाति का धार्मिक इतिहासकार कहा जा सकता है । वे बिना किसी भय के ध्येय चरित्र नायक की प्रशंसा एव उसक ध्येयगुणो का बखान करत थ । इस साहित्य क अनिरिक्त रामो साहित्य जिलातथा सिक्का ताभ्रपत्रो ऐतिहासिक काष्ठा सरकारी दस्तावेजा एव शासकों द्वारा निमित्त सस्मरणा आदि का ध्येय इतिहास लेखन म उचित स्थान िया है । आता की खान उह जन मण्डारा एव जन मुनियो क ळरवाना तब ल गई कहन का तात्पर्य यह है कि मूल सामग्री क उपयोग क प्रति टाड का दृष्टिकोण धार्मिक वैज्ञानिक दृष्टि का परिचायक है । उनकी दृष्टि म मौलिक साध्य भी काफी महत्वपूर्ण थे । यहां कारण है कि उहान ध्येय इतिहास म स्थान स्थान पर इसका उपयोग भा किया ह । यह भी कहा जा सकता है कि साक्ष्यों के प्रति उहोंने कुछ सीमा तक ध्यानेचनामक दृष्टिकोण भा ध्येयनाया है ।

वम टाड क राजस्थान की विषय वस्तु ध्येय विगान एव विस्तृत है । उहोंने इतिहास के ध्येयम हर पक्ष पर प्रकाश ाने का प्रयास किया है । राजस्थान की विभिन्न रियासतों क उभय म लेकर उन्नासवी सदी के प्रथम तीन दशका तक के इतिहास का ग्थाकित किया है । राज स्थान की विभिन्न सामग्री मस्थाओं सामाजिक एव मास्कृतिक धार्मिक मान्य

नामों के वार में उनकी स्थापनाएं अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उनकी ये भाषाएँ राष्ट्रवाद का प्रवृत्ति का उत्साह बढ़ाती हैं। राज्या की अर्थव्यवस्था का अध्ययन टाड की भाषाएँ राष्ट्रीय विषय प्रतीत होना हैं। उन्होंने कृषि उत्पादन, व्यापार एवं निर्यात के विभिन्न साधनों, जनसंख्या एवं वाणिज्य व्यापार से सम्बंधित अनेक अंकगणित किए हैं जो आर्थिक इतिहास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन भाषाओं की महत्ता हमें लिए भाषाओं के अर्थों से जाना है क्योंकि इनमें से अतिथि अनेक ऐसे समय में सम्बन्धित है जो आमतौर पर उपलब्ध नहीं होते हैं। मैं अनेक भाषाओं में टाड के भाषाओं का पूर्ववर्ती एवं पश्चातवर्ती भाषाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने का एक प्रयत्न किया है। इसके साथ ही भाषाओं का विश्लेषणात्मक परचम एवं इनका संकलित करने के पाठ्य टाड के ऐतिहासिक उद्देश्यों का पहिचान का प्रयत्न भी किया है। अन्त में उनका भाषाओं के परिश्रम में आर्थिक परिस्थितियों में आने वाले परिवर्तनों का भी स्वरूपित करने का किंचित सा प्रयत्न किया है।

जनसंख्या का अनुमान

विज्ञान की क्षेत्र की आर्थिक स्थिति के अध्ययन के लिए जनसंख्या की जनसंख्या की जानकारी अत्यंत आवश्यक है। टाड ने उत्तरीयों में के अनेक अनेक में सम्बन्धित जनसंख्या के आंकड़े संकलित किए हैं जो अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। राजस्थान की प्रथम जनगणना सन् 1881 ई. में की गई थी कि अधूरी थी। दस वर्ष पश्चात् 1891 ई. में हुई जनगणना काफी मान्यता के औचित्यपूर्ण नहीं थी। उनका द्वारा प्रस्तुत आर्थिकी विज्ञान जनगणना से लक्ष्य गाठ से सतर वर्ष पूर्व की है। उन्होंने दो तरीके से ये आंकड़े दर्शाए हैं प्रथम पृथक् पृथक् राज्यों का कुलजनसंख्या के आंकड़े एवं द्वितीय, मुख्य मुख्य नगरों की अनुमानित जनसंख्या। सर्वा प्रथम विभिन्न विभागों की जनसंख्या आर्थिकी संकलित करके निम्न सारिका में प्रस्तुत की जा रहा है -

सारिका-1

वर्ष	क्षेत्र का नाम	1820 के दशक में अनुमानित जनसंख्या	1891 ई. में कुल जनसंख्या
1	मारवाड़	20,00,000	25,28,178

2	बीकानेर	5 39 250	8 32 065
3	जसलमेर	74 400	1 15 701
4	धाम्बर	18 47 600	28 23 966

टाउ ने मारवाड का जनसंख्या का अनुमान लगाने में पूर्ण भूमि के उपजाऊपन के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों के लिए प्रति वर्ग मील जनसंख्या का अनुमान लगाया है। उन्होंने अग्रिम पूर्वोक्त क्षेत्रों के लिए प्रति वर्ग मील घटती जनसंख्या का अनुमान लगाया है जो कि सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्र है। इसी तरह उत्तर-पूर्वी एवं उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों के लिए क्रमशः प्रति वर्ग मील तीस एवं दस जनसंख्या का अनुमान लगाया है। सभी के आधार पर उन्होंने मारवाड राज्य का बीस लाख जनसंख्या अनुमानित की है।

सैने प्रथम शोध निबंध में 1654-65 ई के मध्य मारवाड² की कुल जनसंख्या 19 91 995 एवं 20 86 380 का अनुमानित का है जो कि टाउ के भाकडों के समतुल्य है। तब यहाँ यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि क्या हमें दार में जनसंख्या वृद्धि में ठहराव भा गया था या फिर क्या टाउ के भाकडों की मरतवा पर प्रश्न बिहू उठाया जा सकता है ?

बीकानेर राज्य की जनसंख्या निर्धारित करने के लिए अलग पद्धति लागू की है। सर्वप्रथम उहाँने स्थानीय मौखिक साक्ष्य के आधार पर बाराह शहरों की जनसंख्या के भाकडों से निर्धारित किए हैं। ये भाकडों शहरों की संख्या के रूप में हैं। अतः पश्चिम उहाँने मध्यम शहरों की चार समूह में विभाजित करके प्रत्येक समूह के लिए प्रति गाँव घरा का अनुमान लगाकर कुल घरा के भाकडों प्राप्त कर लिए हैं उदाहरणार्थ

100 गाँव	प्रति गाँव 200 घर	=	20 000 घर
100 गाँव	प्रति गाँव 150 घर	=	15 000
200 गाँव	प्रति गाँव 100 घर	=	20 000
800 टाण्डिया	प्रति गाँव 30 घर	=	24 000

इस तरीक़ से अनुमानित घरों की संख्या को उन्होंने शहरों के घरों की संख्या में जोड़कर सम्पूर्ण राज्य के कुल घरों का अनुमान लगाया है। मन पारम्परिक दर से (प्रति घर 45 पत्तिका) गुणा करके जनसंख्या निकाली है जो कि 539250 होती है। इसकी जांच टाड द्वारा दिए गए घुघ्मा नामक घर के माल से होना वाली ग्रामस्थानी व आकड़ों से की जा सकती है। इस दर से एक गाँव की घाब होती थी। कम दर की दर प्रति घर एक रूपया थी। इस दर का पाच से गुणा करने पर पाच लाख जनसंख्या होनी है जो मात्र तौर पर ऊपर के आँकड़ा से मेल खाती है। दूसरे टाड के आँकड़ा की विश्वसनीयता बत जाती है। 1891 ई में यह जनसंख्या बढ़कर 892065 हो जाती है।

जमलमर की जनसंख्या का अनुमान लगाने के लिए भी यही पद्धति लागू की है। कम क्षत्र के लिए उन्होंने कुल जनसंख्या के आँकड़ा दिए हैं जिसका योग 74400 माना है। यहाँ उन्होंने कुल घरों की संख्या का प्रति घर 40 पत्तियों की दर से गुणा करके जनसंख्या पाते हैं। जबकि वास्तव जमलमर शहर में घरों का 5 की दर से गुणा की है। यह एक अचूक अनुमान देते हैं नहीं प्रतीत होती।

आम्बेर राज्य की जनसंख्या के आँकड़ा के लिए उन्होंने एक नवान नगीका प्रस्तावित है। उन्होंने सम्पूर्ण राज्य का कुल क्षेत्र वगैरे बताया है जो 14900 वर्ग मील माना है। दूमरी तरफ़ प्रति वर्ग मील जनसंख्या भी प्रस्तुत है। अत्र आँकड़ा की गुणा करके कुल जनसंख्या हासिल की जा सकती है।

शहरी जनसंख्या

जैसे तरह टाड ने बीकानेर मारवाड़ जमलमर एवं मेवाड़ के शहरों की जनसंख्या के आँकड़ा गणित के लिए है जो वास्तव में मूल्यवान हैं। उन्होंने ये मान्यता की है कि घरों की गिनती के रूप में नए नए घरों की गणना एवं कुल जनसंख्या आना के रूप में एक ही है। मैंने पश्चानवर्ती आँकड़ों में तुलना करने की प्रक्रिया में घरों की संख्या को पारम्परिक दर से कुल जनसंख्या में परिवर्तित कर लिया है। गवर्नर टाड द्वारा प्रस्तुत मान्यता, जमलमर पश्चात् 1891 ई में एक नए नए माना में जनसंख्या में घटाव की वजह से शहरी के आँकड़ा निम्न मारिगी में प्रस्तुत है।

सारणी-2

बीकानेर जसलमेर का गहरी आबादी म परिवर्तन

क्रम संख्या	शहर का नाम	टांड द्वारा प्राप्त आकड (संगभय 1826ई)	1891 ई की जनसंख्या ³	कुल घटोतरी/ बढोतरी
1	बीकानेर	54 000	50 513	-3 487
2	नाहर	11 250	5 655	-5,595
3	भान्सा	11 250	5 719	-5 531
4	रिणी	6 750	6 553	-197
5	राजगड	13 500	4 679	-8 821
6	भूरु	13 500	14 019	+ 519
7	बाणसर	4 500	4 392	-108
8	रतनगड	4 500	10 536	- - 6 036
9	जसलमेर	35 000	10 343	-24,657

उपरोक्त सारणी स यह दिलचस्प निष्कप निष्कर्षता है कि नौ म स सात शहरा की जनसंख्या म जबरदस्त गिरावट आती है। सर्वाधिक कमी जसलमेर म हाती है। यहां क व्यापार म जबरदस्त पतन ही इसका कारण हो सकता है। इसके पश्चात राजगड नाहर एव भान्सा जस दूर दराज के क्षय भी अप्रजों की आर्थिक नीति क परिणाम से नहीं बच सक। रेलों के निर्माण न पुरान सारे व्यापारिक मार्गों को महत्वहीन बना निया परिणामस्वरूप शहरी जनसंख्या मे पतन स्वाभाविक था। भूरु एव रतनगड की जनसंख्या म बढोतरी अपवाद प्रतीत होती है।

मारवाड के कुछ शहरा का घर-गणना टांड मे दख कौ है। नएसा ने भी इनम स कुछ शहरों क घरा की संख्या अंकित की है जिसका समय 1655 60 ई क मध्य का है।⁴ टांड क आकडा की तुलना पूर्ववर्ती एव पश्चातवर्ती आकडा स भी की जा सकती है। निम्न सारणी म 1659 64 टांड एव 1891 के आकडे लिखे गए हैं —

- 3 ससस आब इगिडया बालूम XXIV राजपुताना एण्ड अजमेर - मर बाडा भाग - 2 टेबुलस बलकता, 1922
- 4 मुणोत नएमी मारवा रा परपना री विषय, स मारवाणसिंह भाटी दा भाग।

सारणी-3

मारवाड़ की शहरी जनसंख्या

क्रम संख्या	शहर का नाम	1659-64 की घर गणना	1820 का घाबट	1891 की सांख्यिकी
1	जालार ⁶	3 049	2 891	2 341
2	भीनमाल ⁶	692	1 500	1 277
3	मिवाना	188	500	775
4	साचौर ⁷	1 205	750	448
5	भाटाजन	—	500	392
6	पोकरण	557	2 000	1 633
7	जोधपुर	—	20 00	13 513

उपरोक्त सारणी का घाबट अत्यंत महत्वपूर्ण है। जालार एवं साचौर शहरों के घरा की संख्या 1659-64 का समय 1820 ई. में अधिक थी। दिनचर्या वान यह है कि उन्नीसवीं सदी के दूसरे दशक एवं 1891 ई. के मध्य सिर्फ मिवाना का छोड़कर सभी कस्बों के घरों की संख्या मतलबी से गिरावट होती है। जगजा तात्पर्य यह था कि जम लीज में कुछ शहरी जनसंख्या में जबरजस्त गिरावट आई। स्पष्टतः अठारहवीं सदी में हुई इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति के कारण उत्पन्न इण्डिया कम्पनी एवं भारत के व्यापारिक सम्बन्धों में पूर्ण परिवर्तन आया था। भारत में तयार मान की जगह कच्चा मान निर्यात होने लगा एवं अंग्रेजों की पसिन्दा में बना मान यहां आयात होने लगा था। इसमें हिन्दुस्तान के समुदायिकी

5 जोधपुर कविराजा सभ्य प्रथम 59 पत्र 99 (ख)-(घ) नटनागर नगर संस्थान मीनामाऊ।

6 भीनमाल के घाबडे मठारिया रो पाथी में दिए हैं कविराजा सभ्य प्रथम 78 नटनागर लोध संस्थान मीनामाऊ।

7 नगमी संस्थान में अन्तर्गत मठारिया प्रथम भाग पृ 228-29

उद्योग घटा व उजड़ने की शुरूआत हुई⁸। इसी के साथ भारत में गर औद्योगिकरण की प्रक्रिया के मकेत स्पष्टत उजागर होने लग थे। इसी के परिणामस्वरूप शहरी जनसंख्या में जबरदस्त गिरावट आई। इस दुष्परिणाम से राजस्थान भी अछूता नहीं रहा। चूंकि टां स्वयं इंग्लैंड के प्रतिनिधि थे इसलिए उन्होंने राजस्थान पर पड़ने वाले दुष्परिणाम को पूरे तौर पर छुपाने का प्रयास किया। इस बात की पुष्टि उनके द्वारा दिए गए मवाद⁹ से सम्बंधित आकडों से और अधिक हो जाती है जिसमें उन्होंने यह बताने का प्रयास किया है कि 1818 ई. के संधि के पश्चात यहां के राजस्व में वृद्धि हुई। यद्यपि टांड द्वारा मकनिन सभी आकड अत्यंत महत्वपूर्ण हैं लेकिन उनकी इस परिप्रक्ष्य में जांच पन्नाल अत्यंत आवश्यक है।

जालोर जातिवार घर गणना

टांड द्वारा सङ्कलित आकडों में कम्बा जालोर की जातिवार घर गणना अज्ञ है जो अत्यंत महत्वपूर्ण है। 1658 ई. में इसी प्रकार की अवसाधिक जातियों के घरा की गणना¹⁰ की गई थी। तत्कालीन समय का गणना अधिक प्रापक है। उसमें सभी व्यावसायिक जातियों के अलग अलग घरा की संख्या दर्ज की गई है। टांड ने कई व्यावसायिक जातियों के घरा की संख्या को एक में के अन्तर्गत दर्ज कर लिया है जैसे बक्स-गपारी एवं दुबानदार धयवा मुस्लिम-ववसाईया एवं दम्तकारों का मुगल समान रणी में रख कर दर्ज किया है। इससे दाना समय के आकड का पुनगत तुलनात्मक अन्वयन करना पाना मुश्किल हो गया है। फिर भी सन 1658 ई. के आकड का टांड के अनुसार सपाजित करके तुलना-

8 उनीमवा मने में गर औद्योगिकरण एवं गर शहरीकरण की प्रक्रिया पर दृष्टिपूर्ण आरिण डी मोरिस टुवन्स ए रिक्टरप्रिणेशन आव नाइ टिथ मन्पुरी इण्डियन इकनामिक टिस्टा आइ ई एम एच आर वाल्पूम। नम्बर माच 1968 एवं विपिन चड्ड, रिक्टर प्रिणेशन आव नाइटिथ मन्पुरी इण्डियन इकनामिक टिस्टी आइ ई एम एच आर वाल्पूम V नम्बर I 1968

9 टांड प्रथम भाग पृ 399

10 जोधपुर कविराजा उपग्रह पृ न 59 नटनागर शाघ संस्थान सीतामऊ।

त्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है। निम्न सारिणी में 1658 ई एच टाड के झण्डों को दर्शाया गया है

सारिणी-4

1658 ई एच 1813 ई में जालोर की घर-घरना साक्ष्यकी

क्रम संख्या	जाति का नाम	1658 ई की घर घरना	1813 में घरों की संख्या
1	बाह्यण एण श्रीमाली	24	100
2	राजपूत एण टाण राजपूत	105	5
3	छीपा	20	20
4	पचोती	1	—
5	भोजग	20	20
6	जोषी सयामी	10	—
7	जुलारु	30	100
8	जाट	4	—
9	कु भार	30	60
10	गुजर	40	40
11	देड़	80	—
12	माट	10	—
13	घोनी	100	—
14	मान्नी	30	140
15	बगड़ी	5	—
16	नाई	15	16

17	डाकोत	5	—
18	सोहार एा सुपार	9	14
19	कलाम	—	20
20	मटीक	13	20
21	मुमनमान	—	936
22	ठठरा	—	30
23	तली	—	100
24	भील	30	15
25	भोला	200	60
26	घोरी	2	—
27	घूडीवाना	—	4
28	क-दाई	—	8
29	यति	—	2
30	मिपाई	1000	—
31	बन्धम, व्यापारी एा दुकानदार ¹¹	1 279	1156
	(i) महाजन	900	

11 तुलनात्मक अध्ययन के लिए मैंने ऐसा किया है कि जो जातियां दोना समय में विद्यमान थीं उनको तो वैसे ही रहने दिया है। टांड व बन्धम, व्यापारी एा दुकानदारों का सिर्फ एक मूला दिया है। उसमें उन्होंने इस बात का ध्यान नहीं किया है कि उन्होंने किस मद में कितने कितने व्यवसाय के लोगों का सम्मिलित किया है। मैंने तुलनात्मक अध्ययन के लिए तर्कसंगत व्यावसायिक जानियों के घरों का टांड क मूला के मातहत कर दिया है।

(ii) सोनार	40
(iii) पिजारा	30
(iv) बंधारा	30
(v) कसारा	12
(vi) भरावा	1
(vii) देनादर	5
(viii) मिनावट	15
(ix) बारिया	50
(x) गुरडा	5
(xi) घोडी	10
(xii) माची	50 >
(xiii) नाल गंधारा	2
(xiv) मावणगर	30
(xv) दरजी	40
(xvi) लुहार	5
(xvii) मरगाटा	6
(xviii) तेरवा	3
(xix) डडगरा	1
(xx) हानामार	25
(xxi) तम्बोरी	2
(xxii) गराभी	4
याग	1266

उपरोक्त सारिणी से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वक्म व्यापारी एवं दुकानदारों की जनसंख्या में 1658 ई की तुलना में 1813 ई में गिरावट आती है। जुलाहा मानिया (अर्थात् फल-पूज मजिया उगाहन वाला वर्ग एवं रोजम बुनकरों की जनसंख्या में वृद्धि होती है। यह निष्कर्ष है। जुलाहा एवं रोजम बुनकरों की जनसंख्या में वृद्धि से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कपड़ा उद्योग अभी भी सहायक स्तिथि में था। दूसरा कारण यह हो सकता है कि टांड के आरंभ 1813 ई वर्ष के हैं इसलिए अभी 1813 ई के आरंभ का प्रभाव पूरात राजस्वान तक नहीं पहुंच पाया था। इन कारणों से यह बात उजागर होती है कि आरंभ उस समय भी व्यापार का एक महत्वपूर्ण केंद्र था यद्यपि कुल धरो की संख्या में गिरावट आती प्रारंभ हो गई थी।

सिंचाई का विकास

अधिकांश राजस्थान में खेती मानसून की बरसात पर निर्भर करती है लेकिन कुछ एम भी क्षेत्र हैं जहां कुआं से सिंचाई होती है। टांड में अपने वृक्षों में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के उपलब्ध सिंचाई के साधनों का आविष्कार रूप से देखा गया है। जहां सिंचाई करना संभव था। मारवाड़ की भौगोलिक स्थिति का कारण करते हुए उन्होंने लिखा है कि नदी नगी मारवाड़ के रजिस्तानी ए। उपजाऊ क्षेत्र की सीमा रेखा है। स्वभावतः उन क्षेत्रों में अच्छी किस्म की फसल होती है जहां पानी कम गहरा है एवं कुआं से सिंचाई होती है। मंडता एवं नागौर में उच्च श्रेणी के भूतल उगाए जाते हैं क्योंकि यहां कुआं में सिंचाई होती है। मने अपने एक शोध निबंध में यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि सत्रहवीं सदी में मंडता में मुख्यतः खेती कुआं की सिंचाई के आकार पर की जाती थी।¹² इसी तरह मारवाड़ के दक्षिणी हिस्से के लिए उनकी मान्यता है कि यद्यपि इस क्षेत्र में पानी सतत स काफी नजदीक है लेकिन कुआं की संख्या उस अनुपात में नहीं है जितना कि मवाड़ में है। टांड के एम कथन में यह संत्यता तो हो सकती है कि मवाड़ एवं मारवाड़ के दक्षिण क्षेत्रों में कुआं का अनुपात समान नहीं है लेकिन यह कि इस क्षेत्र में कुएं कम थे नहीं प्रतीत होता। आरंभ परगना एम क्षेत्र का हिस्सा था। इस क्षेत्र के लिए मरा यह निष्कर्ष है कि सत्रहवीं

12 दृष्टव्य मरा निबंध 'कृषि विकास एवं परगना मंडता 1659-63 प्रागिनिक विकास इण्डियन सिस्टी काग्रेस 1975 पृ 216-17

सदी में जालोर में खेती कुम्भो की सिंचाई पर अधिक निर्भर करती थी। सम्पूर्ण परगने में 693 कुएँ थे जिनका प्रति बग मील छह कुएँ से ऊपर आता है। यह स्थिति तो तब है जबकि जालोर में विगत में कुम्भो की गंगा सम्पूर्ण है।¹³

जबकि हमारी तरफ बीकानेर एवं जसलमेर के बारे में टॉड का बगल स्वभावतः निताड भिन्न है। इस क्षेत्र में पानी सतह से काफी दूर है। पानी का अत्यधिक गहरा हान के कारण सिंचाई के साधनों का काम करना अत्यन्त मुश्किल है। बीकानेर के समीप देशनोक में कुम्भो की गहराई लगभग तीन मी फुट है।¹⁴ जसलमेर के बारे में उनका बगल काफी निराशास्पद है। राज्य के बारे में यह ग्राम धारणा है कि यहाँ कुछ भी पदा नहीं हाता। पीने तक का पानी उपलब्ध नहीं होता। लेकिन टाड का बगल इस चित्र का दूसरा पहलू दिखाता है। राज्य की राजधानी के ग्रामपास के क्षेत्र में पानी का रोक कर बांध बनाकर अच्छी किस्म की पदावार की जाता है। यहाँ बड़ी मत्स्या में गहूँ खता जो एक बाग में कई प्रकार के फल पदा किए जाते रहे हैं। टॉड के इस बगल की सत्यता की गवाही सत्रहवीं सदी के मास्किवीवेता मुहम्मद मैणसी देते हैं। वे लिखते हैं कि इस क्षेत्र में पानी का एकत्रित करके यहाँ गहूँ कपास एवं सभी प्रकार के फल एवं पत्र-सजियाँ पदा की जाती हैं।¹⁵ हम गवाही से टॉड के सर्वेक्षण में हमारा विश्वास और अधिक गहरा हो जाता है। काटा भी ऐसा क्षेत्र था जहाँ सिंचाई द्वारा खेती होता रही है। यहाँ निचित भूमि का 'पीवन' कहा जाता रहा है। कुल मिलाकर टाड का सर्वेक्षण यद्यपि इस सम्बन्ध में पूर्ण नहीं है फिर भी अत्यन्त शोध पत्र है।

रुपि उदाहरण

टाड सबसे प्रथम लगभग सभी राज्या का भौगोलिक स्थिति का बगल करने के उपरान्त उस क्षेत्र में होने वाली मुख्य पदावार का बगल करते

13 देखिए मेरा लघु एंग्लिश-हिन्दी शब्दकोश जालोर इन द प्रोविन्सियल आर्कैडिया कायम 1979, पृ 73-74

14 टॉड II पृ 157

15 मुहम्मद नज्दवी, स्यात, द्वितीय भाग, पृ 8

है। बीकानेर क्षेत्र के बारे में लिखा है कि कुछ हरे भरे स्थला को छाड़-कर अधिकांश क्षेत्र रेतीला है। उत्तर पूर्वी क्षेत्र में राजगढ़ में मोहर एवं रावतसर की मिट्टी उपजाऊ है। इसके-साथ ही साथ भूतल का पानी भी सतह के समीप है इसलिए यहां मिर्चाई के साथ-साथ सक्किय हैं। इसी तरह भटनेर एवं मोहिलावाटी का क्षेत्र भी अत्यन्त उपजाऊ है। यहां होन वाली बरसाती बाढ़ से भूमि के उपजाऊपन में और अधिक बढ़ोत्तरी हो जाती है।

बीकानेर क्षेत्र के बारे में यह ग्राम धारणा रही है कि रेगिस्तान में सिर्फ एक ही फसल होती है। जबकि मध्यकालीन बहिष्कार एवं दस्ता बजो से यह बात उजागर होती है कि यहां कुछ क्षेत्रों में दो फसलें उगायी जाती रही थी।¹⁶ टांड के सर्वेक्षण से यह बात प्रमाणित होती है कि उन्नीसवीं सदी के दूसरे दशक तक खेती में पूरवत स्थिति कायम रही। टांड न न केवल खेती की पदाधार के नाम गिनाए हैं बल्कि उनकी विशेषताओं का भी वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है कि रेगिस्तान में पदा होने वाला बाजरा मालवा की उपजाऊ भूमि से अधिक अच्छा होता है। इसी तरह कपास की भी विशेषता का वर्णन किया है।

टांड ने इसी प्रकार से सभी क्षेत्रों में पदा होने वाले फसलों का वर्णन किया है। उनके द्वारा दी गई सूची यह तथ्य बिलंबी हुई है। सुविधा के लिए उत्तर-पश्चिमी राजस्थान के राज्यों (बीकानेर, जोधपुर एवं जसलमेर) में पदा होने वाले फसलों को निम्न तालिका में दिया जा रहा है। इसमें मुख्यतः दो कालम बनाए गए हैं। एक में सिर्फ वह फसल दी गई है जो सभी राज्यों में उपजती है एवं दूसरे में प्रत्येक परगने के नाम के अंतर्गत सिर्फ वह फसल दी गई है जो उसमें पदा होती है अथवा नहीं।

16 श्रीणी हासल भाऊ रे वही, न 12 वि स 1752 राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर जी एस एल देवडा राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था 1, अध्याय 6 तथा 71

उत्तर - पश्चिमी राज्या म कृषि - उत्पादन

सभी राज्या म उपजन वारी फसल	जोधपुर	जसलमेर	बीकानेर
गेहूँ जी चना बाजरा माठ मूँग तिल कपास जवार	चावन	गवार	गवार चावल

सत्रहवा मदी म नगसी भी जोधपुर राज्य की पन्नावार म इही घनाजा की सूची देता ह । जसलमेर क चासपाम गेहूँ व मय चीजे पदा हानी था । जोधपुर सभत एव जनारण म मय उत्पादना क प्रतिरिक्त चावन बाया जाता था ।

भाम्बेर के बारे म टॉड का कथन अत्यन्त महत्वपूर्ण ह- । व लिखते हैं यहा खरीफ एव रबी दोना फसलें हानी ह जा महत्व की दृष्टि से सम तुल्य ह । यहाँ सभी प्रकार के घनाज पदा किए जात है लेकिन रीत कपास एव नील बडी तादात म उभाई जाता है । ये सब नक्त फसलें थी जिनकी कि बाजार म माय थी । इसका तात्पर्य यह हुवा कि किसानों का भुनाव नगानार नक्त-फसला की तरफ बन्ना जा रहा था । इस प्रवृत्ति की गुरुपात सत्रहवा सगी स होती है जिसकी धार सत्यप्रकाश गुप्ता न ध्यान दिलाया है । डा गुप्ता ने विभिन्न नक्त-दरों की प्रति बीघा दर का तुलनात्मक अध्ययन अपनी पुस्तक म प्रस्तुत किया है ।¹⁷ ईल की प्रति बीघा दर रु 148 म 473 रु क मध्य थी । टाड ने यह दर रु 4 स 6/ रु क मध्य दर की है ।¹⁸ इसस यह पता चलता है कि ईल की प्रति बीघा दर म काफी वृद्धि हा गई थी । स्वभावत यह वृद्धि कीमता म वृद्धि का ही परिणाम रही हागी । नील की मती म वृद्धि यह बताती है कि घनी तब इंग्लण्ड से रगाई की आधुनिक पद्धति न अपने कर्म मही नहा रहा थ । लेकिन यह बात नितात सत्य प्रतीत होता है

17 सत्यप्रकाश गुप्ता, एगरियन सिस्टम अँव इस्टन राजस्थान (दिल्ला 1986)
पृ 55-73

18 टाड ॥ पृ 348

कि किसान खाद्यान्न उत्पादन की कीमत पर नकद फसलों अधिक उगा रहे थे। मेवाड़ के किसानों के इस प्रकार झुकाव से यह बात धीरे धीरे अर्थिक पुस्तक होती है। इससे यह बात प्रमाणित होती है कि उनीमवा सगे म पदावार के पटन म परिवर्तन होना प्रारम्भ हो गया था।

वाणिज्य एवं व्यापार

टाइ न राज्य म होन वाल वाणिज्य एवं व्यापार के आर्थिक आकड़ सङ्कलित किए हैं जो अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। सबसे प्रथम उद्घाटन मुख्य व्यापारिक क्षेत्रों का वर्णन किया है जहाँ पर सर्वाधिक व्यापारिक गतिविधियाँ होती थीं। व्यापारी अपना माल खरीदने एवं बेचने के लिए दूर-दराज के क्षेत्रों में जाते थे। इन सब गतिविधियों से राज्य की आर्थिक स्थिति होती थी इसलिए शासक वर्ग व्यापारियों को अपने राज्य की ओर आकर्षित करने के लिए विभिन्न प्रकार की रियायतें देते थे। टाइ ने राज्य की समस्त दायें एवं मापों से होने वाली आय के आकड़ दर्ज किए हैं।

टाइ लिखते हैं कि हर राज्य में कुछ व्यापारिक क्षेत्र होते थे जहाँ से व्यापारिक वस्तुएँ एक स्थान में दूसरे पर जाती थीं। मेवाड़ में भीलवाड़ा बीकानेर में बुरू आम्बर में मालपुरा एवं जोधपुर में पाली का वह स्तर हाँसित था। उनीमवा सदी में पाली व्यापार के एक महत्वपूर्ण व्यापारिक क्षेत्र के रूप में विकसित हो चुका था जहाँ पर सम्पूर्ण भारत, कश्मीर एवं चीन से माल आता था और उस माल की यूरोप, अफ्रीका, एशिया एवं अरब देशों के माल के साथ अन्तर्देशीय बिक्री होती थी। इसी तरह बीकानेर में राजस्थान एक ऐसा बाजार था जहाँ पर देश के विभिन्न कोनों से आकर आते थे। पंजाब एवं कश्मीर का माल हाथी एवं चमार होकर आता था। पूर्वी क्षेत्र के व्यापारी सिन्धी एवं रेवाड़ी से आकर आते थे। इन क्षेत्रों से रेशम, नील, चीनी एवं उडुवाड़ आदि सामान आता था हाडौनी एवं मानवा से अफीम आता था। मिष एवं मुल्तान के व्यापारी अपना माल बड़ी मात्रा में लाते थे। साथ ही मेवाड़ की ऊन का यह एक बड़ा उत्पादन का केंद्र रहा है जो व्यापार की एक बड़ी लाभकारी वस्तु था। टाइ ने भी मेवाड़ के ऊन उत्पादन की काफी प्रशंसा की है।

टाइ इस व्यापार में निरंतर हो रही अर्थिक स्थिति की ओर भी संकेत करते हैं लेकिन इस पत्र के लिए जिन कारणों का उल्लेख किया है

के पर्याप्त नहीं है। वास्तव में जो कारण सम्भवतः मुख्य रहा होगा उसे वे अनदेखा करना चाहते थे। इन वतन का मुख्य कारण अंग्रेजी माल से भारतीय बाजारों का भर जाना है। अंग्रेजी माल की यह बाढ़ 1813 ई. के चार्टर एक्ट के पश्चात् और अधिक भयानक हो गई। सम्पूर्ण भारत एक बाजार में परिवर्तित हो गया जो पहले एक निर्यातक देश था। परिणामस्वरूप यहां का पारस्परिक व्यापार अस्त-व्यस्त एवं बर्बाद होता चला गया।

राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में वार्षिक मेलों को आयोजित किया जाता था जहां दूर-दराज से व्यापारी माल खरीदने एवं बेचने आते थे। राज्य की इन मेलों से काफी आय होती थी। कुछ नये तो किसी विषय वस्तु के लिए प्रसिद्ध हो जाते थे उदाहरणार्थ मारवाड़ में मूडवा एवं बाजोतर के मेले पशुओं के क्रय-विक्रय के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। बीकानेर में कालायत एवं गजनेर के मेलों में आसपास एवं शहर के लोग एकत्रित होते थे एवं बड़े स्तर पर क्रय-विक्रय होता था। पहले का कारण यह है कि मेला राज्य के लिए एक आय स्रोत था।

निम्न सारिणी में टाड द्वारा सञ्चित 'सायर' के आंकड़ों को संयोजित किया गया है। साथ में कुल राजस्व के आंकड़ें एवं सायर की आयदनों का प्रतिशत भी दिया जा रहा है -

सारिणी-6

कुल राजस्व में 'सायर' का प्रतिशत

क्रम संख्या	राज्य का नाम	कुल राजस्व आय	सायर की आय	'सायर' का प्रतिशत
1	मारवाड़	29 45,000	4,30 000	14.60
2	बीकानेर	6 50 000	75 000	11.54
3	जैसलमेर ¹⁹	3,00 000	3,00 000	60.00
4	घान्सेर	20 35 000	1,90,000	9.25

19 टाड द्वारा सञ्चित जसलमेर में आंकड़ें अपूर्ण प्रतीत होते हैं। हो सकता है इसीलिए सायर का प्रतिशत अधिक था रहा हो।

उपरोक्त मारिणों से यह निष्पन्न निकाला जा सकता है कि उसन मेर में सायर से हान बानी घाय बानी घायिक थी । इनमे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि राय म लेकर बही तागन में घाल का आशाममन होता था इसलिए सम्भवत सायर से होने वाली घाय घायिक हो । नितीम पूरि यह एक शुष्क क्षेत्र रहा है इसलिए समान से घाय घायिक हो कम होती रही होगी । इनके परचात मारवाड बीकानेर एक घाम्बर²⁰ का स्थान आता है । क्योंकि पूरि एक परचातवर्ती समय क घाकड उपलब्ध नहीं है इसलिए इनका तुलनात्मक अध्ययन नहीं किया जा सकता ।

उपरोक्त विषयों के अतिरिक्त भी टाँड के महत्वपूर्ण सामग्री एकत्रित की है जो प्रायिक इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है । उपाहरणार्थ नमक एवं खनिज उत्पादन उद्योग तथा एक विभिन्न बरा क घाकडे आदि । इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनके द्वारा सक्रिय सप्रत्यकी अत्यन्त महत्वपूर्ण है । आवश्यकता मात्र इस बात की है कि उनका घाकडे का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तभी हम कुछ ठोस निष्पन्न निकाल सकते हैं । यही बेम्स टाँड जने इतिहासकार को सही शोधपरक श्रद्धात्रि होगी ।

- 20 घाम्बर के घाकडों से भी यह पता लगाना मुश्किल है कि राय में 'खालसा' में होने वाली घाय कितनी थी । इसलिए मैं राय द्वारा प्रबन्धित शोध के घाकडों से सायर निकाला है ।

एंगल्ज के आलोक में राजस्थान राज्यों के आय-स्रोत

—डॉ. कृष्णसिंह भार्गी

डा. जेम्स टाड प्रथम इतिहासकार थे जिन्होंने राजस्थान के राज-नतिक इतिहास के साथ सामाजिक, धार्मिक व प्राकृतिक पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया। उन्होंने अपने ग्रंथ एंगल्ज एण्ड इन्डियन राजस्थान में जहाँ भूमि की उर्वरता कृषि के तीव्र तरीके और व्यापक उत्पादन और व्यापारिक मार्गों का वणन किया है वहाँ राज्य व प्रमुख आय-स्रोतों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी है। भू-राजस्व आय का प्रमुख स्रोत रहा है। राज्य का खर्चा वहन करने के लिए भूमि का एक बराबर भाग खालसा में रखा जाता था और शेष भाग राज्य की सुरक्षा हेतु जागीरदारों को उनकी सैनिक सहायता के बदले आवंटित किया जाता था। इसके अलावा वाणिज्यिक कृषि कर भंग कर, घुघ्रा कर और अन्य प्रकार की लागत व परम्परागत व्यवहारों से राजा को काफी आय प्राप्त होती थी। टाड ने इस प्रकार के आय-स्रोतों को राजकीय दस्तावेजों व व्यापार पर बनी सजगता से सजोने का यत्न किया है।

भेदाड

राज्य व आय स्रोतों के बारे में टाड ने काफी अध्ययन किया परन्तु उन्हें विभिन्न प्रकार के फुटकर करों से प्राप्त आय व भेदाड उपलब्ध नहीं हुए। टाड ने निम्नलिखित आय-स्रोतों का विवरण दिया है।

(1) कृषि-कर—टाड व अनुसार राज की निज अधिकार वाली भूमि (खालसा) ही राजशक्ति की धमनी और भागपेशी स्वरूप है उनकी आय से राज्य काय संपादन किया जाना है। दूसरी तरफ भूमि का स्वामी किसान माना गया। भेदाड में ही नहीं परन्तु राजस्थान के सभी प्राचीन काल में वहन आय है कि भाग रा घली राजा है, भाग रा घली मा छो प्रथां

भूमि का कर अधिकारी राजा है भूमि का मालिक हम है । मवाड में भग्नाज के ऊपर दो तरह से कर लिया जाता था । एक एककृत व दूसरा भुट्टई (बगान) । गन्ना पास्त मरसो सग तम्बाकू रुई नान और फल पूना की मती पर प्रति बीघा दा रूपय से 6 रूपय तक कर लने का प्रावधान था । बगई प्रणाली के अनुसार गी गेहू तथा रबी की प्राय फसला की पन्नावार का एक तिहाई या 2/5 भाग वसूल किया जाता था ।¹

2 व्यापिज्य व्यवस्था—पन्ने मवाड राज्य का व्यापारियों व साथ उदार तापूण व्यवहार रहा । व्यापारी निर्धारित कर राज्य को देकर अपना बत व निभाते थे जिससे परस्पर व सदाशरण से उनमें विश्वास बढ़ता था । परन्तु बाजार में आतंक बढ़ जाने से राजनतिक परिस्थितिया बदल गई और अधिक धन की मांग से करा का बालू बन गया जिससे व्यापारी वर्ग विरक्त हो गया । यद्यपि टाड में वाणिज्य सम्बन्धी दाए² तथा दुमाना³ आदि करों का उल्लेख नहीं किया है परन्तु स्थानीय खातों में इनकी जान कारी मिलती है ।

3 खान—प्राय के स्रोत में मवाड की खानें प्रमुख स्थान रखती हैं । परन्तु इसके बारे में टाड का कम जानकारी थी क्योंकि टाड के समय जाबर इत्यादि खानें सम्भवत बढ़ पड़ी थी । जाबर की खान महाराणा लाखा के समय प्रारम्भ हुई । महाराणा जगतसिंह व महाराणा राजसिंह के समय इसकी प्राय प्रमश 2 50 000 रु व 1 74 994 रु थी ।⁴

1 एनलज पृष्ठ एटीविबटीज प्राय राजस्थान २ वाद्यूम इन वन भाग 1, पृष्ठ 398

2 एनलज भा 1, पृ 117

3 महाराणा राजसिंह की पट्टा बही (स डा हुकमसिंह भाटी) टंकित पृ 6 7 प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर

4 महाराणा अमरसिंह का पत्र कुशलसिंह शक्तावत विजयपुर के नाम (साम-वार 6 अक्टूबर 1707^५) अत्र साहूरा पट्टा रा इतरा भाव रो दुमाला हजुर बुकीयो है । इवे इण गामा रा महाजन वसवा थी दुमाला की खानण नहीं करे । प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर

५ वहा महाराणा राजसिंह की पट्टा बही टंकित पृ 20 पाद टिप्पणी एवं परिशिष्ट 7

4 खराट—कतिपय कर बरार नाम से जाने गये । टॉड ने ऐसे निम्नलिखित करों का उल्लेख किया है—

- (i) गनीम बरार—युद्ध सम्बन्धी कर जो युद्ध-विग्रह के समय जनता से लिया जाता था ।
- (ii) घरगुती बरार—प्रति घर से लिया जाने वाला कर ।
- (iii) हस बरार—कृषि सम्बन्धी कर । कृषक को पशुवार के अनुसार कृषि-कर चुकाना पड़ता था । युद्ध कर की वसूली खेती की पदावार के हिसाब से की जाती थी ।
- (iv) योता बरार—विवाह के समय लिया जाने वाला कर ।

5 लजशाला—किसी सामन्त अथवा सरदार के नवीन अभिषेक अथवा किसी जागीरदार के पदके परिवर्तन के समय सामन्त निर्धारित रकम महाराजा को नजर करते थे उसे नजराना कहा जाता था । इसके अलावा भूमिया सरदार निर्धारित नियमानुसार राजघन देते थे ।

6 टण्डकण्ड—नियम भंग करने वाले और अपराधियों से धार्मिक जुर्मना लिया जाता था ।

7 खड्गलाकड—टॉड के अनुसार काष्ठ और खड का यह कर मेवाड़ राज्य में बहुत पहले से लागू था । जिस समय महाराजा युद्ध अभियान के लिये प्रस्थान करते उस समय प्रत्येक व्यक्ति सेना के व्यवहार के लिये काष्ठ व खड दिया करता था । धर्म में शांति के समय भी यह कर लिये जाने लगा । बाग के लिये है—खड-लाकड का अभिप्राय रक्त से है । युद्ध काल में प्रत्येक नगर व गांव से सेना के लिये रसद एकत्र की जाती थी जिसमें खाद्य पदार्थों के अलावा अन्य बहुत सी वस्तुएं बटोरी जाती थी ।⁵ टॉड ने खडलाकड कर का अर्थ देने में भूल की है । अभिलेखागार उदयपुर में सप्रहीत अभिलेखीय बहियों के अध्ययन से पता चलता है कि यह कर सफ़ाई व चारे पर लगने वाला था । ग्रामीण अरब पशुओं को पड़त भूमि में चराते थे और ईंधन की पूर्ति भी वनों से की जाती थी इसलिये गांव का जागीरदार अथवा खालसा गांव का मुखिया ग्रामीण जनता से खडलाकड कर वसूल कर राज्य कोष में जमा करता था ।⁶

5 एनएन, भा 1, पृ 118

6 वही महाराजा राजासिंह की पदटा वही सम्पत्तीय भूमिका टंकित पृ 9

8 आबक्यारी-मन्त्रिा धनीम भादि भाय मादक पदार्थों पर कर लिया जाता था जिसस राज्य का विाप भाय होता थी । 7

रखवाली कर का उल्लस करत हुए टाड न लिखा है— पचासती व्यवस्था क शिधिन हानि तथा चारा और अशाति फन जाने राजाओं का शासन शक्ति कमजोर पड जान और प्रजा के घन और प्राण की रक्षा म असमय होने के कारण राजपूत राजा म जिस नये कर का जम हुआ उसे रखवाली के नाम से प्रसिद्धि मिला । इसका भाय है रक्षा करना आशय देना । घन प्राण और भूमि सम्पति की रक्षा के लिय ही प्रजा सबल सामंता क आशय का ग्रहण करके रक्षा के बदले में मह रखवाली कर देने का विवश हुई । रत्ता करन वाले लोगों को अदायगी नगण रूपसे अथवा सेती का पदावार स करन का प्रावधान था । रखवाला क नाम पर नामत (भामिया) जिस भूमि पर अधिकार पा जाते उनका वे सग के लिय स्वामी बन जाते थे । 8

इसके अलावा अवाद के महाराणा अनी पुत्रियों के विवाह खप के लिये प्रजा से उसकी भाय का छठा हिस्सा बसूल करते थे । मराठों क आनक क कारण मेवाड राज्य की भाय काफी घट गई थी । 1818 ई म अग्रजों क साथ सवि होने पर काफी सुधार हुआ । 1822 ई मे रबी की फसन स 9 35 640 रु और वाणिज्य कर स 2 17 000 रु की आमदनी हुई 9 ।

मारवाड

टाड द्वारा महाराजा मानसिंह के समय राज्य की भाय दस लाख रूपये आकी गई । पचास वष पूव महाराजा विजयसिंह क कान म राज्य की भाय सालह लाख रूपये बाबिक थी । समप्रत खुशाली के समय 29 45,000 रु भाय होने का उल्लेख हुआ है ।

1 खालसा भूमि का भूमिकर — पहले अनाज कर बटार् क आधार पर कुल उत्पादन का चौथा या छग हिस्सा लेन का प्रावधान था । परन्तु महाराजा मानसिंह क काल म उत्पादन का आधा भाग लिया जान लगा । एक अतिरिक्त किसानों को प्रति टम मन अनाज पर दा रूपे रखवाला कर चुकाना पडता था । महाराजा के पशुओं के लिये पहल प्रत्येक किसान स एक भूमा गाडा

7 एनलज भा 1 पृ 119

8 एनलज भा 1 प 141

9 एनलज भा 1 प 399

बमूल करन के स्थान पर अब एक रूपया लिये जान का प्रावधान रखा गया, मकान के मध्य रूपय के बदल करवी तन की व्यवस्था था ¹⁰।

टाड ने इस तथ्य की झार पाठका का ध्यान घाकट कराया है कि खानसा मत्र के किसानों से जागीर क्षेत्र के विमानों की स्थिति अच्छी थी उन्हें कुल उत्पादन के पांच भाग में से दो भाग जागीरदार को देने पड़ते थे और अन्य पुटकर कर के बच्चे में मिलित क्षेत्र के प्रति सौ बीघा पर वारह रूपय चुकान पड़ते थे ।

2 **जामखर की झीलें**—कुल प्राय का पाया भाग नमक को भीलो में प्राप्त होता था । मुगहाली के समय राजकीय दस्तावेजों के अनुसार विभिन्न भीला से इस प्रकार सामदानी होती थी । ¹¹

पचपदरा	—	2 00 000 रु
पनीदी	—	1 00 000 रु
डीडवाना	—	1 15,000 रु
साभर	—	2 00,000 रु
नादा	—	1,00 000 रु
कुल		<u>7 15,000 रु</u>

साभर नवरा नाम में प्रसिद्ध नमक मिथु से गंगा तक बिकता था । सबसे अच्छी किसम का लवण पचपदरा भील का माना गया ।

3 **खायर अथवा साणिज्य कर**—राजकीय प्रयत्नों के अनुसार प्रत्येक प्रान्त परगना से इस प्रकार सामदानी होती थी । ¹²

1	जाधपुर	76 000 रु	7	जावार	25 000 रु
2	नागार	75 000 रु	8	पाली	75 000 रु
3	डीडवाना	10 000 रु	9	जमान व बाला	
				तरा के मल	41 000 रु
4	परवतमर	44 000 रु	10	भीनमात	21,000 रु
5	महता	11 000 रु	11	साचार	6 000 रु
6	कोविदा	5 000 रु	12	पनीनी	41 000 रु
					<u>4,30,000 रु</u>

10 एनल्स, भा 2 पृ 131

11 एनल्स, भाग 2 पृ 133

12 एनल्स भाग 2 पृ 132

4 **अ साकट**—राज्य मे रहन वान निवासिया (स्त्री-पुरुष) स प्रति व्यक्ति एक रुपया सन का प्रावधान था ।

5 **घासजाड़ीकट**—घास चरने वाने पालतु पशुमा पर घासमारी कर लागू था । करीब पाने दो वष के अन्तराल म घासमारी कर दर म दुपनी वडि हुई । निम्नलिखित तालिका स इस सध्य का पुष्टि हानी है ।

क्रम संख्या	पशु	महाराजा गजसिंह के समय घासमारी कर रु ¹³	महाराजा मानसिंह के समय घासमारी कर रु ¹⁴
1	गाय	0 12	—
2	भैंस	0 25	0 50
3	ऊट	1 50	3 00
4	बकरी	0 02	0 06

6 **कियाड़ी कट**—यह कर प्रत्येक घर से वसूल किया जाता था । इसे सवप्रथम महाराजा विजयसिंह ने लागू कर प्रति घर तीन रु लिये जाने का प्रावधान रखा । महाराजा मानसिंह न मकट बाल क दौरान इसे बढाकर 10 रु कर दिया । यह कर समान दर म वसूल नहीं कर गरीबा स दो रुपया और सम्पन्न परिवारा से बीस रु लिया जाता था । ¹⁵ इस प्रकार मातगुजारी के विभिन्न स्रोतों स राज्य को 29 45 000 रु की भाय होती थी । टांड ने इसका खुलासा इस प्रकार किया है—¹⁶

1- खालसा क्षेत्र के 1484 गावों व नगरों की भाय	15 00 000 रु
2 वाणिज्यकर या सायर	4 30 000 रु
3- नमक की भीतें	7 15 000 रु
4 हासल धर्या विभिन्न मदा से भाय (धायकर)	3 00 000 रु
	<u>29 45 000 रु</u>

टांड ने इन झाकड़ों पर सन्देह प्रकट किया है क्याकि उस समय म इसका भाधा भी वसूल नहीं हो पाना था । टांड ने सामतो और मत्रियों

13 मारवाड रा परगना री विगत स डॉ नारायणसिंह भाटी भाग 1

पृ 88, राजस्थान के मेडनिया राडोड डा इकमसिंह भाटा पृ 201

14 एनलज भाग 2, पृ 131

15. एनलज पृ 132

16 एनलज प 133

की जागीर धाय 50 लाख रु दर्शायी है। ये धाकड़े वास्तविक धाय के नहीं होकर जागीरो की धाकी गई अनुमानित धाय (रेय) के हो सकते हैं। नमस उपज धयवा धाय करीब धायो हाता थी।

टीकानेर

टीकानेर में निम्नलिखित 6 प्रकार के करों से राज्य की धाय होती थी।

1 **खालसा अमीकट**—पहले राज्य की खालसा-भूमि में करीब 2 लाख रु की धाय होती थी। परंतु धनेक गांव उजड़ जाने से कुनि पर उमका बुटा भयूर पडा और धाय घटकर एक लाख के करीब रह गई।

2 **धु आकट**—यह एक प्रकार का मकान (हाउस टैक्स) है जो राजा सूरतसिंह ने प्रत्येक घर में निवलन बाल धुए पर जारी किया था। प्रति घर में एक रुपया धमूलने का प्रावधान था। इस कर से 1,00,000 रु की धाय होता इस तथ्य की धीर मकत करता है, कि उस समय घरों की संख्या 1,00,000 के करीब थी। टाड न बीकानेर राज्य के घरों की संख्या 1,07,850 दो है।

3 **अ ठाकट**—भयूर धयवा शरीर कर राजा अनुपसिंह ने लागू किया। प्रत्येक स्त्री पुरुष में चार धाना वापिक कर लिया जाता था। नम बकनियो धयवा भेडा का एक भग मानकर धीर एक उट का चारु भग के बराबर मानकर प्रति भग चार धान कर लिय जाने का प्रावधान था। राजा गजसिंह ने इसे दुगना कर लिया। इस कर से 2,00,000 रु की धाम-नी का उल्लेख हुआ है। धुभा कर धीर भग कर के धाकड़ों से हम प्रति घर परिवार के सदस्या की धीसत संख्या का अनुमान लगा सकते हैं।

4 **सायट**—पहले यानायात धयवा वाणिज्य कर में राज्य का धन्धी धाय नान के प्रमाण मिलत है परंतु लुटेरा के धानक न पजाव के धाय मयक दूनन के कारण इसकी धाय में काफी गिरावट आई। न साय की जगह बदन 75 हजार की धाय होने लगी। नौ मन धनात्र के विधय पर चार रुपय धमून किये जाने का प्रावधान था।

5 **धुरेती (हलकट)**—पहले धांटा प्रणाली (हामन) के अनुसार धनात्र की धयवार का एक-धीधाय धनात्र लिया जाता था। परंतु धण्टाचार यड जाने के कारण राजा रायसिंह ने इसकी जगह प्रति हन पाच रुपये कर

राय किया। इससे किसानों को भी राहत मिली और राय को अच्छी धामदनी होने लगी।

6 मलबा—राय बीका के समय जाट-कृषक ने जब आत्मसमर्पण किया उस समय उन्होंने राय बीका को अपना स्वामी मानते हुए भूमि कर देना स्वीकार किया जो मलबा के नाम से जाना गया। कृषि योग्य सारी बीका भूमि पर दाँ रुपये मलबा कर लेने का प्रावधान था।

इसके अलावा तीन वय में वेधन एकबार प्रतिहज़ार पाँच रुपये के हिसाब से धातुई कर लिया जाता था। बेनीवाल इत्यादि जाति के 120 गाँव इस कर से मुक्त थे। इसका बन्त रखवाची जैसी दूसरी सेवाएँ उनसे ली जाती थी। प्रमुख मामलों का भी यह कर नहीं चुकाना पड़ता था।¹⁷

टाडन राय की कुल धामदनी का पौरा इस प्रकार दिया है।¹⁸

1	मालसा	1,00,000 रु
2	धुआकर	1,00,000 रु
3	अगकर	2,00,000 रु
4	वाणियकर	75,000 रु
5	पुसती कर	1,25,000 रु
6	मलबा	50,000 रु
	कुल	<u>6,50,000 रु</u>

इसका अतिरिक्त अपराधियों से दण्ड स्वरूप रुपये वसूले किये जाते थे। और युद्ध अभियानों के समय विजय व पराजय दोनों स्थितियों में विजय का उत्सव मनाने व पराजय के समय क्षतिपूर्ति करने हेतु धाय शकतानुसार जनता से कर वसूल किया जाता था। टाडन ने इस कर प्रणाली का वृष बताने हुए धालोचना की है।

जसलमेर

जसलमेर राय में वर्षा कम होने और भूमि कम उपजाऊ होने के कारण यहाँ की धाय सन्तोषजनक नहीं थी। तथापि वाणियकर से राय को अच्छी धाय होने के संकेत मिलते हैं।

17 एनलज़ भाग 2, प 159-161

18 एनलज़ भाग 2, प 140-61

1 कृषिकर—सती की उपज का पाँचवा भाग से सातवा भाग लिये जाने का प्रावधान था । राज्य का हिस्सा 'लौटाते' समय पालीवान ब्राह्मण साथ म रहत थे उनके द्वारा वह हिस्सा खरीद लिया जाता था और ये धनराशि राजकाय में जमा करा दी जाती थी । इस प्रकार कृषि कर से रोकड़ राशि प्राप्त हो जाती थी । कृषि कर के रूप में प्राप्त होने वाली धाय के प्राकड़े टाड को बही मित ।

2 वाणिज्यकर—हैदराबाद, रोडी भक्कर, गिकारपुर और कुछ दूसरे स्थानों से वाणिज्य की वस्तुएँ जमलमर की ओर आती थी । इसका प्रस्ताव कोटा व मालवा का प्रथम बीकानेर की सिर्ची जयपुर की बनी इस्पात की वस्तुएँ जमलमर के रास्ते से गिकारपुर व सिंध के नगरों में आती थी । पहले वाणिज्य शुल्क से राज्य को करीब तीन लाख रुपये की आय होती थी, पर बाद में इसमें भारी कमी आ गई ।

3 धुआँ अथवा चालीकर—यह एक प्रकार का मजाल कर था जो प्रत्येक परिवार से वसूल किया जाता था इससे राज्य को बीस हजार रुपये वार्षिक आय हाती थी ।

4 दण्ड कर—पहन अपराधियों से दण्ड वसूल किये जाने का मापदण्ड था । परन्तु बाद में इसका कोई निश्चित मापदण्ड नहीं रहा । बजट घाट की पूर्ति हेतु जब भी आवश्यकता होती कर वसूल कर लिया जाता । बि स 1857 और 1863 में क्रमशः 60 000 रु व 80 000 रु दण्डकर का रूप में वसूल किये गये ¹⁹ ।

इस प्रकार टॉड ने विभिन्न करों में प्राप्त धाय व प्राकड़ इस प्रकार

दिये हैं 20 ।

दृष्टिकर	भगत
वाणिज्यकर	3 00 000
दण्डकर	80 000
धुभाकर	20 000
	<u>4 00 000</u>

महारावल जवाहरसिंह(1914-49 ई)के समय राज्य की भाय 3 71,000 रु होने का प्रमाण मिलत है ।

20 टाड ने जमानमेर राजा का वारिक पारिवारिक व्यय का हिसाब इस प्रकार किया है-

1	वार(राजा के निजी अनुचर भग रभक गुनाम भाति एक हजार व्यक्ति)	20 000 रु
2	रोजगार सरदार	40,000 रु
3	वतनिक सना	75 000 रु
4	हाथी घोडे ऊर	35 000 रु
5	घुडमवार 500	60 000 रु
6	रनिवास	15,000 रु
7	तोशासना	5,000 रु
8	दान धुष्य	5,000 रु
9	पाकशाला	5,000 रु
10	भतिषि	5 000 रु
11	उत्सव	5,000 रु
12	ऊट घोडों की खरीद	2 000 रु
		<u>2 91 000 रु</u>

जयपुर—टाड ने जयपुर राज्य में प्रचलित विविध करा का विवरण नहीं दिया है केवल विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आय का भाकड़ा दिया है जो इस प्रकार है ²¹—

खालसा भूमि से आय	39,19 000
वाणिज्य कर	1,90 000
राजधानी की कचहरी नगर चूगी आदि से आय	2 15 000
सामन्ती से वार्षिक कर	4 00 000
आय कर	1,59,00
	48 83 000

इसके अलावा सामन्तों की जागीर आय, ब्राह्मणों को दी गई भूमि की आय क्रमशः 17 00 000 व 16 00 000 रु थी। ब्रिटिश सरकार के साथ राज्य की संधि हुई तब वार्षिक कर निर्धारण करते समय 40,00 000 रु की आय मानी गई जो राजस्थान के दूसरे राजवाड़े से कहीं अधिक थी ²²

राज्य में जागीर भूमि की आय सम्मिलित नहीं की गई है। जागीरदार व पट्टायतों का रोकड़ बतन नहीं देकर भूमि (गांव) आवंटित की जाती थी। अतः राज्य की कुल आय जात करते समय शाया पियों को जागीर आय के भाकड़े पर दृष्टि डालना पड़गी।

आय स्रोतों के पस्तुनीकरण की एक मह बड़ी विशेषता रही है कि टाड ने प्रत्येक राज्य के आय भाकड़ा का आकलन करने समय पूर्व वर्तनी स्थिति के बारे में भी जानकारी दी है। पहले राजस्थान राज्यों का आय सत्तापजनक थी परन्तु बाद में मुठेरा के शासक और कृषक व व्यापारी वर्ग के साथ राज्य-प्रशासन के व्यवहार में परिवर्तन आने से आय में गिरावट आई। समग्रतः आयमानों पर दृष्टि डालते तो ज्ञान होता है कि उम्र समय राज्यों को सर्वाधिक आय सानना भूमि स होती थी। इसकी तुलना में दूसरे करो से प्राप्त भाकड़े 'पूत' हैं। परिशिष्ट में मन राजस्थान राज्यों के आय-सूचना की तालिका प्रकृत कर दी है इससे आय विषयक पहचानों का अध्ययन करने में शक्यता रहेगी ²³।

21 एनल्य, भाग 2, पृष्ठ 350-351

22 एनल्य भाग 2 पृष्ठ 351

23 दृष्ट-व परिशिष्ट (तालिका)

परिशिष्ट

राजस्थान राज्या के आय के धारके

राज्य	लाभमा भूमि कर	वाणिज्य कर	दाने/नगर की भीले	पुआनर	भाकर	आय	कुल
मेवाड	9,36,640	2,17,000	0	-	-	*	11,53,640
मारवाड	15,00,000	4,30,000	7,15,000	-	-	3,00,000	29,45,000
बीकानेर	1,00,000	75,000	-	1,00,000	2,00,000	1,75,000	6,50,000
जयपुर	□	3,00,000	-	20,000	*	80,000	4,00,000
जयपुर	39,19,000	1,90,000	-	-	-	7,74,000	48,83,000

0 गवार म, जावर धादि साइस बर नही थी ।

* मय बरु ह्ये प्रांत आमदनी के साकडे टांड को उपनय नही हुग ।

• बाकडे उपलब्ध नही हुए ।

□ जमनेटम प्रगकर वसुल किया जाता था परन्तु उगडे धारके उपलब्ध नही हुग ।

—

कर्नल जेम्स टॉड का कार्यालय लेखा विवरण

—डॉ राजमोहन जायलिया

पश्चिमी राजपूताना में राजनीतिक प्रतिनिधि के रूप में वापस रह कर कर्नल टॉड द्वारा तैयार कराये गये प्रथम वायानम के लेखा विवरण जुलाई 1919 से 1 जून 1922 तक की रूपरेखा जो मुक्त प्राप्त हुई है उसमें आधार पर किंचित जानकारी यहाँ प्रस्तुत की जा रही है।

कर्नल जेम्स टॉड के अधिकार क्षेत्र में कम्पनी की घोर में जो (पारिटीकल) एजेंट स्वयं तथा अधिकारी कर्मचारी विहित हस्तान्तरण या अन्य योग्य नियुक्त थे - प्राप्त लेखा विवरण के अनुसार उनके नाम, (यत्र तत्र), पर घोर भाषिक कर्नल निम्नानुसार था -

पारिटीकल एजेंट—	सनद रूपया	उदयपुरी रूपया
	3500/-	4443/11/7
पारिटीकल एजेंट के महायक (Assistant) प्रत्येक	400/-	507/13/8
सबसे-	680/-	863/5/7
सदर का जमला		
चलवाह-1		45/-
जमादार-1		20/-
हस्ताक्षर 8 प्रत्येक को		8/-
डाक कर्मचारी		
उदयपुर से वगू को लिये		
गुगनी - 1		25/-
हस्ताक्षर 40 पाँच पदाई (Stazes) के लिये प्रत्येक		5/-
संयोजक		10/-

उदयपुर स कोटा क लिय-

मुत्सद्दी - 1	20/-
हरकारे 27 पडावों (Stazes) के लिये प्रत्येक	5/-
सरबराही - 1	10/-

कोटा स बू दी क लिये-

हरकारे - 4 गो पडावा के लिये - प्रत्येक-	5/-
---	-----

उदयपुर स भीलवाड़ा क लिय

हरकारे 33 ग्यारट पडावा (Stazes) के लिये प्रत्येक	5/-
--	-----

शिरोही राव के साथ

मुत्सद्दी-1	40/-
-------------	------

हरकारे 4 प्रत्येक	6/-
-------------------	-----

जवाइ क सीमान्त से नीमघ की छावणी में भवन निर्माण

सामन्वी और मजदूर आदि (Work man) भजन क लिय

हरकार 2	प्रत्येक को	7/-
---------	-------------	-----

घिन्तोड भीलवाड़ा और जजमर की सीमा पर होन वाले झगड़ों

क अवसर पर प्रथित शैनिक टुकड़ियों क मांग दखन और

सूचना हेतु

हरकारे 4	प्रत्येक	6/-
----------	----------	-----

वनल टाड के स्वयं क नियंत्रण में प्रदेश के विभिन्न भागों में विभिन्न उद्देश्यों से नियुक्त

हरकारे 16	प्रत्येक	8/-
-----------	----------	-----

समाचार लेखक (News writes) प्रतिमास रु (उजपुरी)

उदयपुर में एक हरकारे सहित - हरबन्तनिह	60/-
---------------------------------------	------

बाटा में एक हरकारे सहित - हेमराज	60/-
----------------------------------	------

बू दी में एक हरकारे सहित - चुन्नीलाल	60/-
--------------------------------------	------

बू दी में एक हरकारे सहित - लालजीमल्ल	60/-
--------------------------------------	------

जोधपुर में एक हरकारे सहित - कुरु म कुरु म ¹	60/-
--	------

राइट कार्यालय के जमल में कार्यालय व्ययित और

उन्नक पद-

महम रहमान	मुशी	225/-
-----------	------	-------

महेश्वर द बनर्जी	इन्विश राइटर	150/-
------------------	--------------	-------

उद्धवचंदर बोम	इन्विश राइटर	112/-
---------------	--------------	-------

1 यह व्यक्ति श्रवण का निवासी था। घर जात समय उनको रु 60 प्रतिरिक्त दिया गया।

हिम्मतराम मेवाडी	राष्टर	80/-
नारायणदास टुंजरार		45/-
बिनरावनदास	फारसी मुल्तनी	45/-
नाथूराम	हिन्दवी राष्टर	25/-
रादाविशम	हिन्दवी राष्टर	25/-
खाणबा	स्पतरी	17/-

खरीद करियत-

जनरल जेम्स टॉड ने अपने कार्यालय के लिये जुलाई 1819 और सितम्बर 1820 में कर्कता स्थित फर्म टी डोरमिका एण्ड कम्पनी ओक्टोगन शैप एण्ड ज्वलरस कर्कता से 6720 रु. और 1 पाइ मूल्य की वस्तुएँ खरीदीं। ये सभी वस्तुएँ प्रायः रजत निमित्त थीं। उन शीत वस्तुओं के बिल की प्रतिलिपि यथावत् उद्धृत है—

1819 July To 1	Calcutta 30 th September 1820 bought of Dormica & Co Gold smith & jewellers	
	Octogon shape silver Hircarrah plate with silver guilt Company s coat of arms crest & Political Agent W R S embossed on ditto	30/ /
To 1	Silver office seal with horn handle and company s coat of arms engraved for the political Agent office	25/ /
17 To 1	Octogon shape silver Hircarrah plates with silver guilt compny s coat of arms crest and polical Agent W R S embossed on ditto at 30/	330/ /
To 4	Silver circular vegetable dishes with covers & receptacles for Hot watered solid Gradoon edged pawfeet & ca with workmanship and horn handle sent 897 2	1241/8/9
To 2	Silver oblong shape Bufstatic dishes with covers and livers to match wg 578 with workmanship and horn handles	730/ /
To 2	silver oval curry dishes to match wg 542 b with workmanship and horn handles	749/12/3
To 1	Handsome silver sauce or silver pan with shipline handles egg frame and stand w g 16 with workmanship and horn handles and tops	235/6/

To	1	Silver and jant dish with gradoon edges to ma tch wg 60 with workmanship	83/2/6
To	1	Silver circular pye dish wg 47 with do	64/10/
To	2	Silver sauce coals with covers and liners wg 192 with do & horn handles	267/ /
To	2	Silver sance ladles wg 7 with workmanship	9/10/
To	4	Silver muffineers gilt inside w g 39 8 with do	67/4/
To	4	Silver salt collars w g 56 with do and gilding	87/ /
To	4	Silver salt ladles mg 4 with do do	7/8
To	12	Silver egg cups mg 70 with do do	114/4/
To	1	Silver potent shape toast racks w g 58 13 do	80 10/
To	1	Pair silver Battle stands w g 39 12 with work manship mahogany bottoms and cloth for do	58/10 6
To	1	Pair of silver gilt do w g 25 12 with workman ship gilding mahogany bottom & cloth	61/2/6
So	3	Silver mounted cork	12/ /
To	3	Silver gilt do	18' /
To	2	Pierced silver gilt oliverspoons	20/ /
To	1	Fashionble silver butterurn wg 190 with workm anship gilding lead snroy and horn handles	270/4/
To	2	Silver gravy spoons w g 24 12 with workma nship	34/ ,6
To	1	Silver salted Torch w g 6 with do	18/10/3
To	1	Silver tumbler s cover mg 90 with do	128/4/
To	12	Silver claret glass do 61 12 with do—	84/2/
To	12	Silver m diversa do 48 6 with do	66/8/3
1819 To		Engraving coat of arms brests and	
17 th		mottos	186/ /
August			
To		Silvering for keys	90/ /
To	2	Pounds of fine polishing alk 2 Boxes at super fine pate power	6/ /-
		2 strong iron bound teek wood pl e che ts w th lifting Trays partitions lined with green barg s spring patent Padlock and keys brass name pla tes with company s coat of arms brest and math engraved W R S	196/ /
1820 To	4	Silver Ice forms with covers	
Jun 30 Sep 30		Wg 37 6 with workmanship	57/6,

2 Silver of oblong shape dishes with Gradoon edges do	419/8/
Making ditto	157/5/
Horn handle wg	4/ /
2 Silver smale do wg	287/ /
Making do	85/2/
Horn handles	21/ /
1 Silver milk ladle wg	12/4/
Making do -	4/9/7
1 Silver sugar urn - wg	100/8/
Making do	87/11/
Horn handle	2/ /
1 Silver Piereed sugar ladle	12/ /
1 Silver Nutring grates	32/ /-
1 Silver butter knife	6/ /
Engraving coat of arms on ditto	31/8/
1 Silver gilt octagon shape Hircarrah plate with company's coat of arms	30/ /
Packing case	1/ /-
	g Total 6720/2/9
	sd
	E E & content received
	T dormica & co

True copy

सितम्बर 1820 में सरकार से प्राप्त स्वीकृति के आधार पर दिसम्बर 1820 में निम्नांकित खरीद की गयी।

23 ऊट — जिनमें से 2 मर गये— ₹ 2308/—

दबल पोलिड पपेट ट ट— 1158/—

अतिथि अथ वस्तुएं भेंट आदि देने के लिये लखौद कर टाड के ठोसालान में जमा की गयी। जिनका विवरण सितम्बर 1819 के टॉड के ठोसालान के लेख में प्रकृत किया गया।

शान का एक जाड़ा 110/—

दो दुपट्टे 110/—

एक पगड़ी 15/—

शाल के जोड़ 3 दर प्रति जाड़ा 120/-र 360/—

बिनसाब के टुकड़ 3	326/11/-
गुजराती भाषा 4 टुकड़	47/80/
पगडियाँ 6	99/12/-
साड़ी 1	108/80/-
मलमल (Muslins) 2	40/11/-
खिलमता पर ट्वन नु रेजम के खानपाज 20 बनवाय जिहू	
टाइ के लोगवाने म जमा करवाया	140/---/-

कोटा और बूदा म राजाभा नया अन्य व्यक्तियों क भेंट हतु युरोप म निर्मित वस्तुए सरकारी स्वाकृति स मयवाई गई । 1475/-

पोलिटिकल एजेंट क कार्यालय में देश के भागारा मयुरा फरूखा-बाग आदि कोषागारो पर विभिन्न यक्तियों के पत्र म बिल प्रेषित करके सभी राशि प्राप्त की जाती थी । उनका तथा अन्य माध्यमों से प्राप्त भाय का भी उल्लेख मिलता है । November 1920 के भाय खात म पब्लिक बटल (Public Cattle) के विक्रय स प्राप्त राशि के घातफल—

हापी	₹ 800/-
एव धाडा	₹ 500/-

म बचने का भी उल्लेख है ।

इन्ही बिला के प्रसंग म प्रभृति अनेक व्यक्तियों और मस्थाओं क नाम प्राप्त है जिनके पत्र म देश क विभिन्न स्थानों के कोषागारों म बिल प्रस्तुत किये गये थ । ये कोषागार वहाँ क कलक्टरा द्वारा संचालित थ ।

व्ययतालिकाभा म कार्यालय में स्थानरी भाषि पर सब दानपुण्य इनाम अक्षवधिर आदि अण्यव्यक्तियों को सहयोग राजामहाराजा राणा राजराणा भाषि स जीनत खिलमन आदि लेकर खान बाल कमचा-रियों को इनाम आदि क विवरण भी लिखे गये हैं ।

यत्र - तत्र सननी रूपसे को उन्वपुरी जाधपुरी भाषि मुठामा में परिवर्तन अथवा इन देशी सिक्कों के सननी सिक्कों म परिवर्तन पर लगन बात बगटे की राशि का भी उल्लेख प्राप्त है जा 21 ₹ 8 प्रतिघन स लगा कर 30 ₹ प्रतिघन तक मिलती है ।

उक्त सला तालिकाओं की पूर्ति म Contingent charges का विवरण तथा खर्चों को Abstracts भा प्रस्तुत किये गये हैं । यहा नवम्बर 1820 से अगस्त 1821 तक के खर्चों के एस Abstracts प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

Abstract charges general for the month of
Nov 1820

SALARIES

Political Agent - western Rajpoot States		
sa	Rs 3500/	4443/11/7
Assistant to ditto as per enclosure		
no 1	400/	507/13/8
Surgeon to ditto as per do no 2	680/	863/5/7
writers moonshee and lallaahs as ec no 3		724/ /
News writers as end do	4	- 232/12/1
contingent charges		6771/10/10
As per enclosures no 5		1122/8/3

EXTRA CHARGES

- To Amount purchase of 23 camels in december
1820 sanctioned by government as per letter
sept 1820 and with exception of 2 since di
ed transferred to the commissariate as enclosed
receipt Sonat Rs 2300 or 2794 8 0
- To Amount purchase of a double polid purpet te
nt sanctioned by Government letter dates sept
ember 1820 as enclosed accompanying voucher
sonat ruphees 1158 or 1406 15 6

4201 7 6

Total Oodipoor Rupees 12095 10 7

oodipoor december 1st 1820 errors excep
tes(signed)James Tod west Raj States Pol Agent
Abstract of charges general for the
month of December 1820

Abstract Dec 1820

Dawk chayas	812/8
Hircarreh etc	248/2/0
Atra bettle etc for visitor	10/ /
Enaum & other chasitz	52/13/
Stationery for the persian and hindveedufter	18/11/6

1142/2/6

Sent on 1st July 1921

JUNE 1921	
Salaries	6771/10/10
Stationery for the Persson & Hindvee dufters	25 /
Atr bottle etc for visitors	10 /
Contingent charges	1728/7/
as per enclosure no 5	
Total out-door	8535/1/10

JULY 1921	
Salaries	6910/15/4
Stationery for Per & Hindvee dufter	25 /
Atr bottle for visitor	10 /-
Contingent charges	1537/7/6
Total	8383/6/10

AUG 1921	
Salaries	6910/15/4
Stationery for the P & H dufter	25 /
Atr bottle etc for visitors	10 /
Contingent charges	6436 5/6
Total	13382/4/10

उक्त लखा नानिकामो की पूति के क्रम म Contingent charges का विवरण तथा सबक घात म इन सबको क Abstracts भी प्रस्तुत किय गय है । नवम्बर 1820 से मई 1822 तक क एम सबको क Abstracts जा ग्या विवरण म प्राप्त है का वृतात भी मिलता है ।

प्रस्तुत लेखा विवरण न यह स्पष्ट हुना के कि उनल जेम्स टा- की प्रवृति प्रथक काय का सम्पादन सुचारु रूप न करने की थी । उसन त्रिम प्रकार घपन तारा घपनाय गय भू-मवैक्षण और मानचित्रोहरण क काय को मुसफादिन किया निश्चित यात्रता और दूर दष्टि स मार्ग क और मयि समभोता त्रिपयक कायों का निपटारा अपर द्वारा सप्रहान तन्निमित्त को- पुरातात्विक सामग्री का सम्पादन कर विज्ञयत के सम्मुख प्रस्तुत किया गयी प्रकार घपन कायावय क घायठाय लखा विवरण का भी यत्नियत रूप दन दृण उम निजा रूप स भी सुरक्षित किया ।

मैं घपन मित्र को इन्तुसतर के प्रति आभार व्यक्त करना घपना कन-ज समभता है जिनम मुक्त दर सामग्री प्राप्त हुई ।

टॉड द्वारा वर्णित राजस्थान के दुर्भिक्ष

—डॉ० कमला मालू

जनरल टॉड के एनाम का मुख्य उद्देश्य राजपूताना का राजनीतिक एतिसम उजागर करना रहा * । राजस्थान के इतिहास में राजपूत नायकों की शीघ्र वीरता की विस्तृत चर्चा हुई है । किंतु साथ ही कुछ गंभीर एवं कटु मूल्य प्रसंगों का वर्णन करना भी था जिसके बिना राजपूताना का इतिहास पूरा नहीं हो सकता । वह विषय है राजपूताना में दुर्भिक्षों का वर्णन ।

टॉड ने प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ एनाम में उन कुछ घटनाओं का वर्णन किया है जिन्होंने 17 वां शताब्दी के बाद विनाशकारी मजहरी की भूमि का विध्वंस किया । इन दुर्भिक्षों का वर्णन करते हुए टॉड ने अत्यधिक संभावना में रहने वाले व्यक्तियों का वर्णन किया है और उनका दयनीय स्थिति का जायज चित्रण किया है ।

टॉड ने अक्सर का राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्रों की एक महान प्राकृतिक वीरता का वर्णन किया है । (ए ग्रेट नचुरल डिजीज ऑफ़ द ग्रेट रीजन ऑफ़ राजपूताना) उनमें रजिस्ट्रार में गंभीर समस्या के विषय में भी विस्तृत जानकारी दी है । उनमें से इन क्षेत्रों में अक्सर या मुख्य कारण पानी का अभाव है । मरुस्थल में कुआँ की गहराई का भी उल्लेख वर्णन किया है ।

टॉड ने अक्सर का जलवायु का वर्णन करते हुए लिखा है कि यहाँ

-
- 1 टॉड एनाम पृष्ठ एण्टीक्वीरीज़ ऑफ़ राजस्थान भाग तिसरे पृष्ठ 264
 - 2 उपरोक्त पृष्ठ 264 मरुस्थल में कुआँ की गहराई 65 से 135 फीट या कुछ कुछ 700 फीट गहराई की बात है ।

पर विभिन्न प्रकार की मिट्टी है तथा इस क्षेत्र में पानी का अभाव नहीं है। हम जानते हैं कि मवाड़ की भूमि राजस्थान का मरुस्थान बनना है। फिर भी मवाड़ का अनेक बार अकाल का सामना करना पड़ा है।

सबसे पहले अकाल जिसका उल्लेख टॉड ने एनाल्स में किया है वह 11 वा अकाल का भयंकर दुर्भिक्ष था। यह अकाल राजस्थान के पश्चिमी मरुप्रदेश में पड़ा था और वहाँ की जनता शरण लेने तक इस अकाल के कष्टों में पीड़ित रही। चूंकि यह अकाल बारह वर्ष तक चला था और बहुत ही प्रचण्ड दुर्भिक्ष था तो अत्यंत महान मरुस्थल राजस्थान का प्रभावित किया जाना है।³

दूसरे बार टॉड ने मवाड़ के जिस सबसे पहले भयंकर दुर्भिक्ष का वर्णन किया है वह 1661-62 ई. में पड़ा था। टॉड ने वर्णन से पूर्व भी इस महाकाल का वर्णन हमें राजप्रशामि द्वारा प्राप्त होता है। महाकाल ने बाकराता में राजसमन्त भील का निर्माण करवाया था। उस पर उन्नीस लाख राजप्रशामि से हम जानते हैं कि 1661-62 ई. में महाकाल ने अकाल राहत कायदे रूप में एक विंगल भील का निर्माण कराया था।

अनेक टॉड ने मेवाड़ के इस अकाल की परिस्थितियों का तीव्र चित्रण किया है।⁴ टॉड के अनुसार महाराजा चामुन्दा की कृपा प्राप्त करने के लिए मन्दिर में गए क्योंकि अकाल का महीना समाप्त हो गया था और सामान में एक भी बूद पानी नहीं बरसा। इस प्रकार जीवन और भाग्य के मन्दिर भी खली हो गया। पानी का अभाव में खेत निराला छा गई और लोग भूख से पागल हो गए थे। ऐसी सामान्य जा खाल के रूप में नहीं जाना जाती थी लोगो द्वारा खाए जाने लगे। पति ने पत्नी का त्याग दिया और माता-पिता ने अपना माता-पिता का धर्म दिया और धारे और भाँख से भरे हुए थे और यह अकाल चार-दूरे तक फैल गया। यहाँ तक कि कीच-मवाड़ भी मरने लगे क्योंकि उनके खेतों के लिए भाँख नहीं बरसा था। हजारों व्यक्ति भूख के शिकार हो गए।

3 अ टॉड एनाल्स भाग 2 पृ 264

व अन्टीरियल गवर्नियर द्वारा इण्डिया प्रोविंसियल रिपोर्ट राजपूताना पृ 62

4 टॉड एनाल्स - भाग एक पृ 310 11

जिनको साथ पनाप उपलब्ध होने व प्रब वे दो बार सात थ । पश्चिमी हवाएं चतन लगी जा घातक थी । आकाश एतना स्वच्छ था कि तारा-मण्डल रात्रि का स्पष्ट निलाह दता था तथा दिन म भी वास्तु दृष्टिगत नया नान व । यहाँ व लाग जालों की गडगडाहट व बिजली की चमक अन चुब थ । एम अशुभ लक्षणों न लोगों को भयभीत कर लिया था । ननिया भीरों और व बार सूख चुके थे । पुजारी मयन वतध्या का भूत मय । प्रब का जातिगत भेद निस्वाह नहा जाता था । तथा शून्य और ब्राह्मण म अंतर करना कठिन था । शक्तिशाली बुद्धिमान उच्च जाति जन जाति व मय भेद समाप्त हो चुके थे । प्रत्येक का ध्यय नवव भाजन प्राप्त करना था । चारा वलों का पृथक पहचान समाप्त हो गई भूख म मय कुछ लो गया । फल-फल तथा प्रय वनस्पति यहाँ तक कि वृष की छान का भी फल की तीव्रता मिटान व लिए उपयोग किया गया । मनुष्य-मनुष्य का लान नगा । जाग नगरा य भागन नग । परिवारा का समूह विनाश हो गया मधुनिदा समाप्त हो गई थी ।⁵

टॉड घाग वणन करता है कि इस भयानक एवं घनिष्टकारा मय मारी व मवाद मुक्ति का मान भी नहीं ले पाया था कि हम क्षत्र म मुगल मयान औरगजेव व विनाशकारी घम-गुद्ध आरम्भ हो गया । प्रवाल स पाहित किन्तु इस पवित्र मवाद भूमि को औरगजेव क विध्वंसक युद्ध न और प्रथिध विनाश की घार घकल लिया ।

टॉड राजममल भील का प्रवान महायना कायक्रम व रूप म विस्तार म वणन करता है । टॉड न हम भील व निर्माण का एक गहाळ राष्ट्रीय काय्य की मया नी है ना सच भी है । टॉड इस विगत भील की सुन्दरता का विस्तृत वणन करत हुए प्रतमा करता है । व कहता है कि हम माल नी मुख्य सुन्दरता हमके परापकारी उदश्य म निहित है । जिसके लिए हमका निर्माण हुआ है । प्रवान जब राज व देव प्रकाय दुग्ध प्रथवा मयमारी प्रभावित हो ता राज्य द्वारा भूमि प्रजा का वला

5 घ टॉड एना म भाग 1 पृ 310 11

से बचाना तथा उनके अथ व रोजगार का राष्ट्रीय हित में लगाना इस नीति के निर्माण का मन्तव्य उद्देश्य था ।⁶

इस भीम के निर्माण में सान वर्षों लगे तथा महाराणा नरम पर छत्रबन्धु (96 लाख) रूप में खर्च किया । इसमें अकालप्रस्त लोगों का कुछ राहत मिली ।

टॉड द्वारा वर्णित उपरोक्त 1661-62 ई के दुर्भिक्ष का विवरण मन्तराणा राजमिह के शासन काल में रचित राज खिल्लास पर आधारित है । वनस जे सी ब्रुक ने अपनी सन 1870 की राजपूताना की फील्ड रिपोर्ट में तथा बहिराजा श्यामल टांडर ने भी अपने ऐतिहासिक ग्रंथ बीर दिनेश में उपरोक्त दुर्भिक्ष की विभिन्न घटनाओं का वर्णन किया है जो टॉड द्वारा वर्णित विवरण में बहुत मिलता जुलता है । उदाहरण के लिए जे सी ब्रुक ने महाराणा के एक परोपकारी कदम का कराला के मरण मन्तर के बाध की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि उज्जपुर के महाराणा राजमिह ने अपनी प्रजा का भयंकर विषाघ्न से बचाने के लिए दस लाख स्टार्निंग व्यय किया था । इस बहुमूल्य तथा चलकृत मन्तरमन्तर के मनमो के बाध का निर्धारण पहानों में बहने वाले पानी द्वारा करना का रोकने के लिए किया गया था । तान मान उम्ह इस बाध के निषाग में दुर्भिक्ष से पीड़ित पत्तियों का रोजगार प्रदान किया गया ।⁷

सन् 1764 का दुर्भिक्ष --

सन 1764 ई का वर्ष मन्तराणा के लिए एक अत्यन्त कष्टमय अकाल का वर्ष रहा था किन्तु टॉड इस समय का वर्णन करते हुए लिखता है कि अकाल अतः हमारी का एक ही भाव था और वह एक ही जगह से उड़ पाई बची जा रहा थी ।⁸

सन् 1803-04 का दुर्भिक्ष --

1803-04 का वर्ष भी राजपूताने में सामान्यतः अभाव व अकाल का

6 टॉड—एनाल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ राजस्थान भाग 1 पृ 310-11

7 ब्रुक जे सी रिपोर्ट ऑफ दी फील्ड इन राजपूताना एण्ड मन्तरमेर मेरवाणा 18-10 प 17 फील्ड रिपोर्ट ए माच 1811 न 84-36

8 राजपूताना राजस्थान भाग 1 ए पृ 60

दोनो हाथो स धन बटोर कर अपन राज्य का खजाना भरा हाथा क्याकि कोटा राज्य उस समय अकाल स प्रभावित नहा था ।¹²

1812-13 का दुर्गिण -

सन् 1812-13 म बम्बई गुजरात राजपूताना तथा यमुना पार क नोथ बन्ट प्राचि नज म अकाल का मकट व्याप्त था । राजपूताना म ता 1812 13 का अकाल उतना ही भयानक था जिनना सन् 1661 का अकाल था ।¹ मवाड म फसल बि कुल नष्ट हो गई थी अत यहा की स्थिति अचिब सखटमय हा म । श्यामलदाम क अनुसार मवाड क महाराणा भीमसिंह न अपन सबका क जीवन की रक्षा क लिए राज परिवार के ध्यक्तियों के निजी आभूषण का बच दिया ।¹⁴ विन्तु उसम एसा कोई उल्लस नही है कि सामान्य प्रजा क लिए महाराणा न कोई उल्लसनीय काम किया हो । उस समय मेवाड राज्य वित्तीय दष्टि काण म निदानियापन की स्थिति म था तथा राज्य क पास लोगो का राहन पहचान क वास्त बाई सुपवस्थित नीति भी न थी ।

यह एक अत्यंत आश्चर्य की बात है कि टांड न 1812-13 क इस महान शुभिक्ष का कही बखन नही किया है जो कि राजपूतान म 19 वा अनादी क पूर्वाड का सबसे शम्भीर अकाल था ।¹⁵ जब बनल शुक न 1868 69 क शुभिक्ष पर रिपाट लिखी ता वृद्ध ध्यक्तिया क मखितक म 1812 13 के अकाल की विभायिका की या न तरोताज थी ।¹⁶ हम सभी जानत है कि 1812 म 1817 तक बनल टांड राजपूताना एव मध्य भारत क भौगोलिक एव स्थान - वरण सम्बधी आकड एकत्र करन म व्यस्त था । उसक पश्चात वह 1818 स 1822 तक अपनी एनग्लिस क लिए सूचनाए एव आकड एकत्रित करन म व्यस्त रहा था । इह अवधि म अपन भमण

12 टांड एनाल्स एण एंग्लोवीटीज घाप राजस्थान भाग 2 पृ 438

13 एडमस ए बस्टन राजपूताना स्टेटेज प 143

14 (अ) राजपूताना गजेटियर भाग 2, प 60

(ब) श्यामलदाम बीरबिनाद भाग 4 प 1740

15 दिनिपम दिगत्री डिटिज इण्डिया प 125 126

16 फॉरेन डिपाटमट इन्टरनेल ए माज 1871 नम्बरस 34 36 शुक ज मी रिपाट आन दा फमीन वन राजपूताना एण्ड अजमर मेरवाणा 1870 पृ 7

के दौरान राजपूतान के अनेक भाग में अकाल की स्थिति का नाम टाड को प्रवर्षण रहा होगा। क्योंकि उसने रेगिस्थानी एरा में उत्पन्न अभाव का वर्णन कुछ शब्दों में किया है।¹⁷ टाड के अनुसार अनाज के अभाव में यहाँ के लोगो को पट की पत्तियाँ छाने जड़ व भाड़िया खानी पड़ी थी। सिंगेही मारवा में कई लोग भूख के कारण मर गये थे। इसकी प्रतिरिक्त टाड ने भवाड़ में दुर्भिक्ष या अल्प स्थानों में अकाल के अभाव का बड़ी वर्णन नहीं किया है।

जबकि एडम्स ने एक स्थान पर लिखा है कि सन 1812-13 के अकाल में मारवा में अनाज की कीमत स्टनी ऊर्चार्ड पर पहुँच गई थी कि एक रु का केवल आठ सेंटर अनाज मिलता था।¹⁸

टाड द्वारा राजपूतान के अतिथय दुर्भिक्ष के विवरण का यदि हम एक नजर में लें तो पायेंगे कि सम्पूर्ण वृत्तांत बचन वर्णनात्मक है।

दूसरी मुख्य बात उसकी वर्णन में यह देखने का मिलती है कि उसकी द्वारा अकाल की परिस्थितियाँ का वर्णन पूर्व वर्णित वृत्तांत पर आधारित है। क्योंकि जिन दुर्भिक्षों का टाड ने वर्णन किया है उन अकालों को टाड ने स्वयं न नहीं दर्शाया।

इसी प्रकार अकाल के कारणों पर भी टाड ने विवेक प्रकाश नहीं डाला है। अधिकतर उसने वर्षा के अभाव का ही अकाल का कारण बताया है। टाड ने यह भी बहुत कम दर्शाया है कि इन भयंकर दुर्भिक्षों के राजपूताना के राजवाड़ों पर क्या दुष्प्रभाव पड़े ?

राज्य द्वारा अपनी प्रजा को जिन गण अकाल राहत कार्य के विषय में भी टाड ने कार्य विवेक वर्णन नहीं किया है। हाँ अकाल राहत कार्य के रूप में बाकरोली पर राजसम्राज्य भी न के विनाश कार्य का विस्तृत वर्णन एक अवकाश है।

17 टाड एनास एण्ड स्ट्राइवींग्स फॉर राजस्थान भाग 2 पृ 264

18 एडम्स - दी वेस्टन राजपूताना स्ट्रिंग्स, पृ 143

यद्यपि टाड न सन 1661 व मेवाड व अकाल का अर्पण विस्तृत वणन किया है । किन्तु उसका पचास बाण म प न वाग अकाला का वणन नहीं किया है । उदाहरणार्थ सन 1747 1755 1 64 1783 85 एव 1789 व अकाला¹⁹ का वणन उसकी पुस्तक म नहीं मिलता है । सम्भवत इत दुभिणो का विस्तृत वणन टाड का उपलब्ध नहीं हुआ होगा । बाण म जे मी अक की फमीन रिपाण म तथा राजपूताना गजटियर म इन अकाला का कुछ वणन हम मिलता है ।

लकिन टाड व एनाल्स स हम राजपूताना व कुछ शायो म अकाल सम्बन्धी जो वखान प्राप्त होता ह उसकी कमिया का हम नजरअन्त करना पडा । क्योंकि इस वान स हम भवि भाति परिचित है कि टाड का एनाल्स लिखन का मुख्य उद्देश्य राजपूतान व विभिन्न शायो व राजना निक इतिहास का वणन करना तथा गजपूथ जाति व शान एव वीरता व कामो का विशिष्टता प्रगान करना था । फिर भा जा वणन टाड न राज पूताना व अकाला के विषय म किया ह उसका ऐतिहासिक महत्व कम न है । इसीलिए टाड के इन वषना का उल्लेख हम ब्रु- का फमान गिण्ट श्याम्पनास व वीर बिनाइ ग्रन्थ तथा इम्पारियल गजटियर म मिलता है ।

19 अ इम्पीरियल गजटियर आफ इण्डिया प्रोविन्सियल मिनीज राजपूताना प 62

ब सरकार, जे एन फाउन्डाक दी मुगल एम्पायर भा 1 प 284 स फोरेन डिपार्टमट जन ए, नाच 1871 न 34 36 वक जमी गिपोट आफ दी फेमीन इन राजपूताना एण्ड अजर मरवाण 1870 प 7

द राजपूताना गजटियर भाग 2 प 60

टांड क नाम महाराणा भीमसिंह के पत्र

—डॉ० गिरीधलाय माथुर

जनवरी 13 1818 ई का स्ट्रैट इण्डिया कम्पनी के प्रतिनिधि चार्ल्स वियापिलम मटवाड के मवाड के प्रतिनिधि ठाकुर पञ्जीतसिंह के सम्बन्ध में कम्पनी के महाराणा भीमसिंह के मध्य मुरदात्मक संधि हुई।

संधि की छठी प्रावधान के अनुसार यह तय किया गया कि पाँच वर्ष तक वर्तमान उज्जयपुर राज्य की आय का अनुपात (एक चौथाई) प्रति वर्ष अंग्रेज सरकार का विराट में दिया जायगा और इस अर्थ में कम्पनी हमेशा रूपय पौछे छ घाना। विराट के विषय में महाराणा किसी और राज्य में कोई सम्बन्ध न बनायेंगे और यदि कोई उन प्रकार का दावा करेगा तो अंग्रेजी सरकार उसका जवाब देने का इस्तरार करती है।¹

टांड के अनुसार मवाड की राजस्व में हानि वाली आय 1818 ई से 1821 ई तक घटती जाती बढ़ती रही।² किन्तु संधि के अनुसार विराट की राजस्व नहीं चुकाई जा सकी और वह बढ़कर आठ लाख रूपये हो गई। तब महाराणा भीमसिंह ने टांड को पत्र लिखकर बताया कि विराट चुवाने का वायदा करने हुए उन गावा के राजस्व को सीधे कम्पनी का हस्त में भी तय किया जिनकी आय बकाया विराट के बराबर थी।³

राजस्थान राज्य अभिलेखागार, उज्जयपुर में उपलब्ध महाराणा भीमसिंह

- 1 श्रीमान गोपीनाथ हीराचन्द उज्जयपुर राज्य का इतिहास दूसरी खिंद पृष्ठ 704
- 2 दक्खिने परिशिष्ट 1 टांड जेम्स, एनल्स एण्ड एग्जिक्टिव गेज ऑफ़ राजस्थान भाग 1, पृष्ठ 309
- 3 दक्खिने परिशिष्ट दा - गावा की मुक्ति क्लेन नाब का आक्टर् राजा का का निर्माण पत्र 27 जून 1823 न 20 23, रा प्रति नई दिल्ली

द्वारा टाँड को लिख पत्रा से ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बकाया निराकर व मुफ्तान के प्रति महाराणा की कटिबद्धता का पत्रा खतना है ।

प्रस्तुत प्रथम पत्र में महाराणा ने ईड के लिखा पत्र राजस्व के अधिकारियों का धार वध के बकाया रूपय देने है -सब निम्न तीन वध के (घाए)रूपये लख नहीं करग । सुम्नार माधवम से मान वरस (वध) तक कम्पनी के रूपय देने हैं । मरा वचन है कि वा रूपय माध ह्य जमा करवा न्यि जावेगे ।

महाराणा ने इस पत्र में यह भी लिखा कि वे तीन वध के बाँ ही जमा (राजस्व)लख करग । बजाकि तीन वध के बाँ अधिकारियों(कम्पनी अधिकारी)का उम पर कोई छपिकार नहीं हागा । घाए ताव रूपय बाका निवन है उमम से छे साग रूपय पट्टेचग । उमके बाँ हम लख करग । इसमें दाता पद्या की धार में किसी प्रकार की बाधा नहीं पट्टेचगी ।⁴

दूसरे पत्र में महाराणा ने टाँड के लिखा कि 1879 के मासग वनि 1 में बकानी (रूपय के गख चौपाइ) बकाया वड रहा है । उमके वल्ल में जहाजपुर, भीनबाडा मान्डी से प्राप्त घाय जमा हागी । ग 1879 के पूर के दन घे सो तीन वध की घाय घलग निली । 1879 के वध से ये गाँव लिख । इन गाँवों के रूपया में से एक पत्रा भी लख नहीं करेगे । मरा वचन है कि वह साग रूपया साहब सागों (अधिकारियों) के पास पट्टेचा न्यि जावगा । अधिकारियों को तो रूपया से काम है । इसमें गाँव के अधिकारियों पर दावा नहीं है ।⁵

तीसरे पत्र में महाराणा ने लिखा कि सरकार कम्पनी की सवन 1874 महामुं 2 से 1878 के समान्द मुं 15 तक की तीन वरस की बडा हूइ राशि को चुकान के लिए राजस्व घाय लिख दी है । वह बकाया राशि के वल्ल पट्टेचगी । उममें किसी प्रकार की बमी नहीं होगी । तीन वध तक हम एक भी पत्रा लख नहीं करेगे ।⁶

4 टाँड के नाम महाराणा भीमसिंह का पत्र, जं वनि 9, बुधवार सवन 1878 रात्र रा घनि उम्पपुर, न्ये परिशिष्ट म 3

5 टाँड के नाम महाराणा भीमसिंह का पत्र, जं वनि 9, बुधवार, स 1878, राज राज्य घभि उम्पपुर दल्ल परिशिष्ट म 4

6 टाँड के नाम महाराणा भीमसिंह के घान्त में लिखा गया पत्र, जेड वनि 9, बुधवार सवन 1878 रा रा घनि उम्पपुर दल्ल परिशिष्ट म 5

परिशिष्ट सं 1

1818 म 1821 र तक मवाड राज्य की बरों ने हान धारी धाय	
रबी का धमन म	मन 1818 म 40 000 रु
	1819 म 4 51 251 रु
	1820 म 6 59 100 रु
	1821 म 10 18 475 रु
वाणिज्य म जिन धारा धाय	
	1818 म नाम धाय की
	1819 म 96,683 रु
	1820 म 1,65 108 रु
	1821 म 2,20,000 रु

परिशिष्ट सं 2

गांवों की सूचि जिनकी धाय महागणा ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को देनाया विराज व कर्त नेना तय किया—

गावा के नाम	मयह	धव	धाय
1 जन्गपुर	90 000	30 000	60,000
2 सादही बनरा	44 000	8 000	36,000
3 मूज भरक एव कपानन	35 000	10 000	25 000
4 पुन साडंग	21 000	03 000	18,000
5 इरका धामुधा	41 000	06 000	35,000
6 सागानर ऊचा	10 000	02 000	08 000
7 भालसाडा म प्राप्न माध	23 000	5 000	18000
8 कुम्भतमर	84 000	24 000	60000
9 धित्तीडगड	42000	12 000	30,000
10 माण्लगड	42 000	12,000	30 000
11 गयपुर	5,000	1 000	4,000
12 कल्याणा	5 300	1 300	4 000
13 मरोण उणाला	10 000	2,000	8 000
14 पावमोट मीमरी	75000	500	7 000
15 मवाड का धुगी	2,50 000	—	2 50 000
16 रानिया व धुधरा का	2 00 000	—	2,00,000
जागीर			
रु	9 59 800	1 16 800	9,43,000

परिशिष्ट सं 3

स गणना भीमसिंह ५ टांड ५ नाम पर

पन् न 1

सुंय थी टांड माह्व जाग अग्रख 1 देम दाए की देसरा गण की
 "नग ५ माह्व पाग रा बरम 4 का कपाय्या गणा जो पटे बरम 3 मुनी
 गणी लो पा परचागा मरा बरम 3 मुनी कपनी रा कपाय्या तथा थारी मार
 पन मो परदाग ज्या बला म्हारा वपन ह गारा मुफानी तथा कपारी पाजन
 मा दपरा भाग जो कर 1ग बरम तीन पाइ उमो म परचागा माह्व लोग
 "1 नीग बरम पर माह्व पाग रा लबा "ही रु 800000 ताप नीक"या पटे
 "रा की तनपा य रु 600000 पुगदा तान बरम मुनी पाइ माग म पर
 चला मने ह 1 म दा तरना तथाव" हो पटना जट बने 9 जु" स 1878 का

परिशिष्ट सं 4

पन् न 2

11 म्हादि थी टांड माह्व जाग अग्रख 1 स 1879 रा मावए की" 1
 थी सोझानी खड जा पर जाउपुर भावडा कगवी रा गान्हा बाय खड 79
 रा बरम थी जो पटे उमा बनी 79 रा बरम पहनी गणा हा जो ता बरम
 3 दाए माडा तान बरम मु 1 79 रा बरम थी ही गाम माह्व जग गामा म
 रुय मो 1 क परचागा "हा म्हारा वपन ह बामनी म्हारा साह्व लोग रे पुगाया
 जामो माह्व माग र ता लीय्या था काम हे गाम गडा था दाको "ही लप्य म
 हो 1 म्हाद तथाव" म्हा पडगा उ" द" 9 क" म 1878 रा का

परिशिष्ट सं 5

पन् न 3

भाप था दीवानबी धाम्मानु मारवार कपनीरी चोप न 1874 रा म्हा
 मु" 2 थी मा ह 1878 रा ना समाड मु" 15 गुग री बरम 3 री खडी चोप
 पर देम दाग रा तनपा ब माड गीधी सा रुया तनपाव पर पाचसा इम ल्पा-
 बत्र पड हा पदीम 1 म कने परचा मी तीन बरम पाइ उमा म परचागा मारा
 वपन ह गण की तथा बरारा का पात्ररी कर दागा मनी मचतुर

जेम्स टॉड का मेवाड़ सामन्तो के साथ कौलनामा

— डॉ. ए. ए. कालाजाल गायर

जेम्स टॉड का राजस्थान के इतिहास लेखन परम्परा में सन्तान अग्रज के रूप में जाना जाता रहेगा। यह उसके 24-25 वर्षों के निरन्तर परिश्रम और सतत अन्वेषण का परिणाम है कि इतिहास जगत का एतन्म एण्ड एण्टीक्विटीज आफ राजस्थान नामक ग्रन्थ उपरग्रह है जिसे आधार बनाकर आधुनिक इतिहासकार प्रायः के क्षेत्र में प्रागः बदन में मगाम हुए हैं। टॉड जब स्वातंत्र्य सिधिया के महा पातिटिकल एजेंट नियुक्त था तब से ही उसका राजपूताना के सभी महत्वपूर्ण राज्या यथा जायपुर बीकानेर, जयपुर कोटा बूंदी और मेवाड़ से सम्पर्क बनाया हुआ था। 13 जनवरी 1818 ई. का मेवाड़ और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के मध्य मुद्राशामक सिध हान पर ब्रिटिश सरकार ने उमे वहा का पातिटिकल एजेंट नियुक्त किया।¹

मेवाड़ दरबार में उपस्थित होने पर वहा के सभा भवन का दर्शन करत हुए टॉड ने गवर्नर जनरल के सचिव जे एडमल का लिखा कि राज सभा में अन्का सामन्त उपस्थित थे, उनमें से कई एक एत भी थे जिहोंने प्रथम बार महाराणा के दरबार में उपस्थिति दी।² उनका उपस्थिति का कारण बतलात हुए टॉड ने लिखा कि उनमें से अधिकांश जागी रगार एत थे, जिहोंने मेवाड़ की अस्थिरता के समय में या ता सातमा भूमि (राजकीय भूमि) पर अनाधिकृत अधिकार कर रखा था अथवा अन् प्रमुन

- 1 फोरिन सिक्ट 6 फरवरी 1818 न 104-107 राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली
- 2 फोरिन - सिक्ट, 15 मई 1818 न 23 राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली

घाटों पर अधिकार कर दिया था जहाँ से व्यापारी अपना सामान लेकर निवसत थे और वे जागीरदार उनमें भारी रकम चूगी के रूप में एकत्रित करते थे। स्पष्ट था कि वे जागीरदार न तो खालसा भूभाग से अपना अधिकार छीनना चाहते थे और न ही घाटी में प्राप्त आय। अन्त उन्होंने अपने सभी पारस्परिक मतभेदों को कुछ समय के लिये भूना दिया और सभी महाराणा के विरुद्ध गठित हो गये। कुछ इसी प्रकार के उदाहरण देते हुए टाड ने लिखा कि भांडर के मन्तारज जारावरसिंह ने 43 खालसा कस्बा और गावों पर अधिकार कर रक्खा था। अन्तर के रावन हमरसिंह के पास इस प्रकार के 20 गाव थे। घानेद के रावन मालिमसिंह और लावा के रावत सामन्त सिह के पास भी महाराणा के अनेकों गाव थे। देवगढ़ के रावत गोखन्दास ने मारवाड का ज्ञान वाल घाटे पर अधिकार कर रक्खा था, जहाँ से वह प्रति वर्ष व्यापारी कान्फिली से 60 हजार रूपय चूगी के रूप में एकत्रित करता था।³ मलूम्वर के रावत पदमसिंह के अधिकार में खालसा के अनेकों गाव थे। इसके अतिरिक्त वह निरन्तर अपने परम्परागत भाजगढ़ के अधिकार की पुनस्थापना की मांग कर रहा था।⁴

उपरोक्त जटिल प्रश्नों के सदन में टाड के नियम महाराणा और जागीरदारों के मध्य परस्पर मधुर सम्बन्धों की स्थापना और उन दोनों के बीच समझौता करवाना अत्यंत कठिन कार्य था। इसके उपरांत भी टाड ने अपने प्रयास जारी रखे। उसने कूटनीति का अनुसरण करते हुए एक और महाराणा को प्राशस्त रक्खा कि वह उमय समस्त प्रदेश और राजस्व के अर्ध साधन सामन्तता से लिलवा देगा हमारी आर उमय अस्तुष्ट जागीरदारों का भी विश्वास जिन्या कि उनके हितों की पूर्णतः रक्षा करने का प्रयास करेगा। हमने पश्चात् उसने मवाड की तत्कालीन परिस्थितियों का अध्ययन करते हुए एक समझौता प्रपत्र अथवा कौननामे का प्रारूप तैयार किया और उस पर हस्ताक्षर करने के नियम समस्त जागीरदारों का मवाड दरवार में धार्माव्रत किया। टाड के प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि 27 अप्रैल 1818 का तीनों श्रेणियों के लगभग 145 जागीरदार अन्यत्र दरवार हाल में इकठ्ठा हो गये। उपरोक्त समझौते की शारयें निम्न लिखित थी—

3 फोरिन सिविल 15 जून 1818 न 67 राप्पीय अभिनवागार जिल्ली

4 उपरोक्त

(1) जागीरदारों द्वारा पूव में हस्तगत की गई सम्पन्न राजकीय भूमि महाराणा का लौटा ली जावे। इनके प्रतिरिक्त जागीरदारों में एक दूसरे के भू भागा पर भी जो अधिकार कर रखवा जा ता वह भी वास्तविक जागीरदार का लौटा दा जावे।

(2) जागीरदारों का खजाने नामक कर और भोग जात के अधिकार को त्यागना होगा।

(3) दाण्ड, बिम्बा और चूगी एकत्रित करना, महाराणा का अधिकार है। इन जागीरदारों का इस त्यागना होगा।

(4) कहीं भी जागीरदार अपने जागीरों में चारा नहीं होत देंगे। बाजरी और धारी जाति के लोग जिनका प्रमुख काम चारी डकती करना था, जागीरदार शरण नहीं देंगे। उनका द्वारा लूटी गई सम्पत्ति उन्के वास्तविक अधिकारी को लौटा ली जावगी।

(5) अपना जागीर सीमा में प्रत्येक जागीरदार 'याधारियों' और बन-जारा के कालिदा का पूरा सुरा प्रदान करेंगे तथा उन्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचावेंगे।

(6) प्रत्येक जागीरदार का वष में 3 माह के लिये मवाड दरबार में चाकरी करना होगा। वष में एक बार दशहरा उत्सव पर सभी जागीरदार उज्जपुर में एकत्रित होंगे।

(7) सभी पण्यत महाराणा के गम्ब धी और कामदार जिन्हें महा-राणा का मनन प्राप्त है अथवा अथवा मवाजे करेंगे। वे न ता महाराणा के विरुद्ध पण्यत्र में सम्मिलित होंगे और न अन्य राज्या में सेवा करेंगे। जागीरदारों के उप-जागीरदार अपने स्वामी जागीरदारों की पयावत सेवा करते रहेंगे।

(8) सभी जागीरदार मवाज - रिटिग सचिव का अनुमान करेंगे। मन्त्रि की अतिम धारा में सभी जागीरदारों का दरवाज के ईस्ट देक एकलिंगरी की प्राण नितवाह गन् था।⁵

यदि हम उपरोक्त समझौते का विश्लेषण करें तो स्पष्ट है कि इन सभी धाराओं के माध्यम से टाड महाराणा और सामना व मदन साहान पुणे सम्बन्ध स्थापित करना चाहता था ।

परन्तु यह स्वाकार करना होगा कि यह कौलनामा एक पक्षीय या असम जागीरदारों के हितों की उपेक्षा कर महाराणा के हाथ मजबूत करने का प्रयास किया गया । एक द्वार जहाँ रखवाला और मोम लागत जम कर वसूल करने का अधिकार जागीरदारों का था समाप्त कर दिया गया वहीं दूसरी ओर उनपर दायित्व का बोझ बढ़ा दिया गया । परिणामतः यह कौलनामा पुणे-पेणु क्षमता से नहीं आया और 1827 अप्रैल के महिन में कप्तान काव की अध्यक्षता में जागीरदारों के साथ नया कौलनामा हुआ । टाड के कौलनामे से एक तथ्य यह भी हमारे सामने आया है कि टाड की सहानुभूति मवाद के सामन्तों से महाराणा के प्रति अधिक थी । यद्यपि टाड का प्रभाव सामन्तों पर था जागीरदारों का उपस्थिति इस तथ्य का चार मकत करती है परन्तु आगे चलकर इसमें कोई आश्चर्यजनक सफलता नहीं मिली । टाड एक सन्तुलित कौलनामा तयार करता तो महाराणा और जागीरदारों के हितों का अधिक रक्षा होता और सम्मत्या का काम स्थायी हन निकलता ।

कर्नल टॉड एव पुरोहित रामनाथ

—डॉ राजवर्द्धनाथ पुरोहित

19 वा जनराली व पहले शक म मेवाड की राजनतिक, सामाजिक तथा आर्थिक क्षम्यरता अपन चरमात्मक पर पञ्च चुकी थी । हीमांत राणा म मेवाड की भूमि सुरक्षित न थी मराठा तथा पिडारिया के निरंतर आक्रमण और लूट स्वसाठ न न केवल महाराणा अपितु प्रजा की भी दुःखी का स्थिति म पञ्चा लिया ।¹ मेवाड की अधिकांश प्रजा सीमान्त राणों मालवा तथा हाडीता म जाकर निवास करने लगी ।² महाराणा का खजाना बिलकुल खाली था स्वयं का खर्च खजाने के लिये कोटा व भाया जानमसिंह से रूपये उपहार लेन पड़ ।³ मरों तथा भीता की लूटपाट म था । तथा व्यापारा मार्ग भी सुरक्षित न रहे ।⁴ मेवाड के बनिपय सरगरा न खालसा की भूमि पर अपना अधिकार जमा लिया ।⁵ ऐसी विकट परिस्थिति म महाराणा भीमसिंह व पाम ब्रिटिश-सरकार व मरहण व अति-शक्ति प्राप्त बोर्ड विकल्प पाप न रहा ।

1818 ई म राजपूताना व गामका तथा ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनी व मध्य मध्य मध्य न ईई,⁶ कप्तान जम्म टॉड उदयपुर जाधपुर कोटा, भूटा तथा जमनमर राणा व पारितंत्रिक एजेंट नियुक्त हाकर उदयपुर आय । कप्तान टॉड न मेवाड राण का प्रणय अपन हाथ म लेकर महा-

1 ती नी घाभा उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग 2 प 702

2 वही पृ 702

3 वही पृ 703

4 वही पृ 710 714

5 वही पृ 708

6 वही पृ 704

राणा और सरदारों के मध्य कौलनामा सम्पत्ति - वास्ते सरदारों ने खालसा का भूमि को अधिग्रहण किया भूतिया भूमि - स खालसा का क्षेत्र छुड़वाया मरवाड़ा में मवाण को बना भद्रकर्म मवाण का परागत किया भीमराव के नामिया सरदारों के विरुद्ध मध्य अधिग्रहण कर उन्हें मवाण के अधिग्रहण किया तथा मवाण में स्थायी शांति व्यवस्था स्थापित की ।

उक्त कायदाही के दौरान मवाण राज्य के दरबारों में प्रदत्त (मास्टर आफ मरना) पुरोहित रामनाथ ने मवाणगा भासिंह तथा कप्तान टांड के मध्य एक विश्वासपात्र मध्यस्थ एवं मददगार के रूप में राज्य का अपना सवाएँ अधिग्रहण की ।⁷ तन्नुसार पुरोहित रामनाथ कप्तान टांड का राज्य की समस्याओं के बारे में महाराणा के दृष्टिकोण से अवगत कराने तथा विमर्श के पश्चात् पुन टांड के मददगार महाराणा तक पहुंचाने का कार्य किया करते थे ।⁸ इस समय पुरोहित रामनाथ का गणना मवाण के प्रमुख व्यक्तियों में था । मरवाड़ा तथा पिडारीया के आक्रमण में मवाण में प्रशांति फना हुई थी तब चित्तौड़ की रक्षा हेतु राजकुंवर के साथ पुरोहित रामनाथ को भेजा गया ।⁹ परवरा 1918 ई में टांड के उदयपुर आगमन के अवसर पर अधिग्रहण की पेशवाई हेतु एक प्रतिनिधि मण्डल टांड के नियाम - स्थल पर भेजा गया जिसका नेतृत्व रामनाथ ने किया ।¹⁰ इस दिन राजमहन में महाराणा भासिंह ने टांड के स्वामनाथ एवं दरबार आयाजित किया जिसका सचानत दरबारी के कप्तान टांड के कार्यकाल 1618 ई में अर्द्धी सेवा के पुरस्कार स्वरूप महाराणा भीमसिंह ने रामनाथ का निकोड गाव (कुदवा का गुणा) का उमक पुवर्ग के अधिग्रहण था एवं मवाण राणा भरिसिंह (तृतीय)के काल में हथियार निकल गया था पर पुन उमका कब्जा करवा दिया ।¹¹ (परिच्छेद स 1) इस सम्बन्ध में महाराणा ने

7 वही पृ 706 स 716

8 पुरोहित दवनाथ का हस्तलिखित ग्रन्थ पृ 16-17

9 वही, पृ 88

10 गौ - ही मोभा उदयपुर राज्य का इतिहास भाग - 2 पृ 1027

11 डा राजनाथ पुरोहित राजस्थान के इतिहास का विना वनन टांड और उदयपुर भाग - पत्रिका खप 34 अंक 34 पृ 55

12 पुरोहित दवनाथ का हस्तलिखित ग्रन्थ पृ 249

13 गौ ही मोभा उदयपुर राज्य का इतिहास भाग 2 प 1027

कप्तान टाड की मर्यादा अनु एक पत्र¹⁴ विना था, तन्नुमार टॉड ने उत्त जागीर पर कब्जा करवाने में महाराज प्रदान किया (परिशिष्ट सं 2) कुंवर जवानसिंह गीवा की राजकुमारी में विवाह करना चाहते थे इस प्रकार में ब्रिटिश सरकार का अनुमति प्राप्त करना थी तन्नुमार पुराहित रामनाथ ने टाड का नियंत्रण कर कुंवर जवानसिंह का गीवा विवाह की स्वीकृति उपलब्ध करवाई इस सेवा में प्रदान करने कुंवर जवानसिंह ने रामनाथ को एक प्रथमा - पत्र¹⁵ प्रदान किया (परिशिष्ट सं 3)।

1821 ई में मध्यभारत तथा मानवा के पारितोषिक एडवर्ट जनरल माहकम उज्जपुर प्रायः एक अवसर पर पुराहित रामनाथ ने कप्तान टाड एवं जनरल मालूम के मातृभूमि में रहकर उन्हें पिडोला - भील स्थित जय मन्दिर एवं जयनिधाम मन्दा का अवलोकन करवाया।¹⁶ कप्तान टाड ने मवाड की शासन व्यवस्था के अत्यन्त ब्राह्मण की रचना के सदृश में पुरोहित रामनाथ के बारे में लिख है कि इन ब्राह्मणों में वीरता एवं माहकम की कमी नहीं थी नववार इनके लिये उतनी परिचित ह जितनी माला। कप्तान महाराणा के एक साथ कर्मचारी रामनाथ का पितामह जहाङ्गपुर जिन का मवनर था।¹⁷ महाराणा भामसिंह ने उत्कृष्ट सेवा के पुरस्कार स्वरूप 1821 ई (वि सं 1878) में पुराहित रामनाथ की उमड़ गांव, हाथी तथा गान के लक्ष्मण न करत ए महाराणा में निवदन किया कि श्रीमान की मुझ गीवा में मोता प्रदान करने की ही इच्छा है ता इन गाना पुरस्कारों के लिये में एक मन्दाप्रति स्थापित करने की शाना प्रदान कराये, तन्नुमार महाराणा ने उज्जपुर के राजमन्त्र की बडापान बाहर 'लक्ष्मण का कोण' रायम किया तथा मे प्रतिष्ठित निधन तथा अमहाय व्यक्तियों की

14 पुराहित रामनाथ का अनिर्दिष्ट पत्र प 377

15 पुराहित रामनाथ का अनिर्दिष्ट पत्र प 258

16 पत्र प 364

17 जन्म गॉड "निहासकार जन्म गॉड" द्वारा प्रकाशित, भाग प्रथम प.440
(परिशिष्ट 1-80 =)

मन्नाथन मिनन गया।¹⁸ कप्तान टाट ने प्रस्तुत पत्र¹⁹ (परिशिष्ट 4) के माध्यम से पुरोहित रामनाथ को महाराणा द्वारा प्राप्त उपरोक्त जगहों तथा मन्नाथ की गारंटी (सुरक्षा) प्रदान की। कप्तान टाट की ओर से रामनाथ का पत्र मिले पत्र का आशय इस प्रकार है

पुरोहित रामनाथ (मास्टर ऑफ सरमनी) तथा शांति विद्यालय गलुडिया (प्रान्त) की सलाहों से प्रमत्त होकर कप्तान टाट ने निम्नलिखित विचारों के माध्यम से महाराणा को हमारे माध्यम से निम्नलिखित पत्र माध्यम से प्रस्तुत किया है। इन सलाहों के अन्तर्गत महाराणा की ओर से जारी 3-4 खण्डों में जो मुझे जागीर तथा सम्मान प्रदान किया है उसकी हमें बड़ी ही चिन्ता है। यदि भविष्य में कभी इस मामले में कन्झर पड़ तो यह हमारे लिए अत्यन्त ही दुःखदायक प्रमाण होगा। यद्यपि किसी प्रकार से महाराणा की सन्तुष्टि रहना ही हमारा ही उत्तम उद्देश्य है। किन्तु जगहों से कृपया कोई भी बात बहूत बड़ी है। यद्यपि गारंटी (हब्सी) प्रदान करने के विषय में बाध्य नहीं हैं। फिर भी यह गारंटी (हब्सी) भिन्न ही है। कामकाज का पत्र निम्नलिखित है।
 1878 का पत्र बंदी का पत्रमालिका ता 25 अक्टूबर 1821 ईस्वी।

इस पत्र से पुरोहित रामनाथ तथा कप्तान टाट के मध्य घनिष्ठ सम्बन्धों पर प्रकाश पड़ता है कि तुलसीदास हाट्रिण्ड ईस्ट इण्डिया कंपनी के अधिकारियों पर सन्देश व्यक्त होना है जिसकी वजह से अनुसार 'उदयपुर के महाराणा हमेशा अपने राज्य के अधिपति रहेंगे और उनके राज्य में अंग्रेजी अधिकारों का अन्तर्गत न होगा'²⁰ का स्पष्ट उल्लेख प्रकट होता है। कप्तान टाट द्वारा प्राप्त पत्र गारंटी का दूरगामी परिणाम 1861 ई. में परिलक्षित होता है जिसके अनुसार पुरोहित रामनाथ के पुत्र रामनाथ की जागीर महाराणा शम्भू सिंह द्वारा जंगल क्षेत्रों पर राजपूताना के ऐजेंट टू दी गवर्नर जनरल ने मामला में हस्तक्षेप करके महाराणा को निम्नलिखित²¹ कि इस मामले में ब्रिटिश सरकार का उद्देश्य है जिससे वह मुझ नहीं सक्ती जागीर बहाल रहेगा।

- 18 (1) पुरोहित रामनाथ का हस्तलिखित पत्र प 17
 (2) श्री ही श्रीमती उदयपुर राज्य का इतिहास भाग 2 प 1027
- 19 पुरोहित - सग्रह मूल - पत्र द्वारा कप्तान टाट पुरोहित रामनाथ का 25 अक्टूबर 1821 ई
- 20 श्री हा श्रीमती उदयपुर राज्य का इतिहास भाग 2 पृष्ठ 705
- 21 पुरोहित सग्रह मूल पत्र द्वारा ऐजेंट टू दी गवर्नर जनरल राजपूताना महाराणा शम्भू सिंह का, 31 दिस 1861 ई

अन प्रस्तुत पाप पत्र म य भी स्पष्ट हाता है कि कम काल म मवा क प्रशासनिक प्रयत्न म राज्य क अमनिक अधिकारियों (मु सद्दियों)की भूमिका महत्वपूर्ण रही जा ब्रिटिश अधिकारियों क प्रभाव स स्वयं क तथा राज्य क पत्र म निपट करवान म सफल रहत थ ।

परिशिष्ट

(1) महाराणा भीमसिंह का पत्र शाह शिवराज गुरूदिया क नाम थी रामजी

श्री एकलिंगजी

सही

लिख थी उदयपुर सु पान महा थी सीवनादनी बचनानु राम नीकाड कुदवा समसत पटल सागा जोग समाचार बाच जो प्रटारा रुमाचार भला हे धारा कहावजो अत्रय । नाम नीकोड कु दवा रा गुडा प्राहन रामनाथजी र भाषा सु ताबा पत्र ह जा अणा रो अणा र साबत हे हामल अणा रा अणमी ह दीदो जमा सानर राग कर्मा करत । 1877 का बैसाप मु 9

मुद्रिका
महाराणा
भीमसिंह

(2) महाराणा भीमसिंह का पत्र कप्तान टॉड क नाम

॥ श्री एकलिंगजी ॥

श्री बाणनाथजी

श्री नाथजी

स्वस्ति श्री टाट साहब जोग अत्रय राम कु दवा रो गुडो प्रात रामनाथ र ताबा पत्र रो ह सा मरेटा रा पत्र मीसोने पत्रो खाता हा सा श्री जी रो अमल कुम्भलगड माह अमन बा जद पाछा अणी रे साबत कर दीदो सा हासन सीयाली रो रामनाथ नीने अवार सीसाने पदमो उठ कामदारा सु मत ने हासल सीदो सो वा नाम ता खालमा भ है नही हीरो वी साबत हे सी अठा सु हना सीख दवाणा है ने उठा सु पण धाणो कानन सीसाय दागा मारी अतम मुरजी है, 1875 बर्ये सावण वी 10

(3) कुंवर जवानसिंह का पत्र पुराहित रामनाथ के नाम

॥ श्रीरामजी ॥

श्री एकलिंगजी

श्री नाथजी

स्वस्ति श्री कुंवरजी बापजी रो हुकम प्रोहन रामनाथ जा है अत्रय । थ बादुगड रा जाब मनन कर टाट माहब नीरा था हामन कराइ सा अणी बात सु म्ह अणा राजी बीया था रा चाकरी म्ह अतस सु जाणी, समत 1877

सप्त वसाय वीर 10 मूत्र। ये तो दूर इ चाकरी म हा जो मु जाणू पण
 व। दुगण रा याव करायो ई वान मु म गंगा राजी वीया।

(4) कप्तान जेम्स टॉड का पत्र पुरोहित रामनाथ के नाम

सीध थी उन्हेपुर मुभ मथान सक्षपोपमा पाहतनी श्री रामनाथजी जोन्ये
 मुकाम कारी सीध बनार गाम राणपुरा सा राजे श्री कपतान जिमम टाट सात्र
 के नि राम राम वाचसा वडा रा गमाचार भना ह तुमारा भना चाहीय अग्र-
 रच ईन दीना म पलीता थी दरवार क नाम भनी ना पुहुचगा उमसे सब समा-
 चार जानागा। तुम रस वात की बीचारी साहजी न थीर तुमन था दरवार का कहा
 माफक कइ बार इस मुकदना म हमम क्ना थीर श्री दरवार का तीन चार क्ना
 मगाई लीया जब इस वात का बाष म हम धात्र कर जुवान दी ई धार भव जो
 कस वात म नामी वात का कमर पड तो धान वाहत हलकी दीस है सो अथ
 साह जी बी उहा धाया हया ह सा इस वात की वाचार अन्दी तरह म
 करोगा धार नहीं आगा न हम बीमी वात का बीच म क्नी अजना का
 नहीं हम ना फकत जुवान दा है परन्त वात वाह्य वी धार हुडी का
 भेजना का हमार पाम काया काम ह सा ऊनटी नज भाई ह कामकाज काण
 पत्र सीपावमी 1878 कानाक सुनी 11 दीपमालका ता 25 अक्टुबर सन् 1821
 ईस्वी

(हस्ताभर जेम्स टॉड)



रॉयल एशियाटिक सोसायटी, लंदन में

कॉर्नल जेम्स टॉड का पांडुलिपि संग्रह

—शरद चन्द्र जायलिया
एम ए (इति रा)

रॉयल एशियाटिक सोसायटी, लंदन में भारतीय मसूदों और मन्थन का इतिहास पर प्रकाश डालने वाला साहित्यिक ग्रन्थक हस्तलिखित ग्रंथों और प्रस्तरकला तथा मुद्रित पुस्तकों के रूप में उपलब्ध है। इन ग्रन्थों को ऐसे साहित्यिक क्षेत्रों में समय-समय पर जिन साहित्यिक रचित सम्पन्न अंग्रेजों द्वारा की गयी थी, वे सभी प्रायः भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की सामग्री नियुक्त रहें हैं - और अपने भारत-निवास काल में ही उन्होंने इस सामग्री का मकान किया था। कॉर्नल जेम्स टॉड का नाम उनमें सर्वोपरि है। अथ महानुभाव है - मजर वान फाड कॉर्नल सर क्लाउड मार्गिन वाड (1794-1861) मजर जनरल जॉन रिम्न (परिष्ठा और तियार - उल्ल - मुठ सिरीन का अनुवाक) (1785-187९), डा जॉन म्यूर (1810-1822 ई) रिफ्लिन्ट वर (जो काना तर में जेम्स टॉड के नाम में प्रसिद्ध हुआ), रात्रा सारावाक (1803-1868 ई) सर हेनरी मायम इतिवट (1808-1853 ई), सर चार्ल्स डाल्फु विलियम्स विल का विधवा पत्नी और सर हनरी वाटन एडवाड फरे (1815-1884 ई) मिन्टर ड्यू एच वावन न भी प्रस्तर कला पर मुद्रित (Litho Printed) ग्रन्थक भारतीय ग्रन्थों में कर इस संग्रह का भी वृद्धि में योग दिया था।

L. D. Barnett द्वारा प्रस्तुत Catalogue of the Tod collection of Indian Manuscripts in the Possession of the Royal Asiatic Society का नाम साभार ।

कनल जेम्स टाड रीस्ट इण्डिया कम्पनी का भारत स्थित शाखा में सन 1799 ई से 1823 ई तक विभिन्न पत्र पर नियुक्त रहा। अपने मवाकाल के प्रतिम चार वर्ष उसने पश्चिमी राजपूताना के पालिटिकल एजेंट के रूप में व्यतीत किया। पालिटिकल एजेंट के रूप में उसने अपना कार्यालय, राजपूत संस्कृति के सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थल उदयपुर में स्थापित करके हुए ऐतिहासिक और पुरातात्विक सामग्री के संकलन और लखन में अपनी प्रसिद्धि की पूर्ति का लाभ उठाया। कम्पनी की सेवा मुक्ति के समय प्रचार सामग्री वह अपने साथ लाने में गया। रामन एशियाटिक साहाय्य में समर्पित उसके संग्रह की सामग्री में संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश राजस्थानी हिन्दी गुजराती मराठी आदि भाषाओं में निबद्ध साहित्य प्रमुख हैं जिनमें स्थान वात वाक्य प्रशस्ति काय वशावतिया आदि का सर्वाधिक महत्व है। यहाँ से सामग्री अधिगृहीत कर उसने एनाल्स एण्ड एण्टिक्विटीज ऑफ राजस्थान का प्रकाशन किया था। इस समर्पित संग्रह में प्राकृत भाषा निबद्ध जन घम ग्रंथ आदि उन पर रची गयी संस्कृत टीकाएँ प्राकृत अपभ्रंश तथा देश्य भाषाओं में प्रणीत सन काय भारतीय सभ्यता के विभिन्न कानों तथा विषयों का प्रतिनिधित्व करने वाले ज्ञान्त्र शिल्पाय याकरण लगाएल भूगोल विषयक शास्त्र भविष्यवाणियाँ साहित्य आदि से संबंधित ग्रंथ भी प्रभूत मात्रा में हैं। कतिपय महत्वपूर्ण ग्रंथ जिन्हें राजस्थान की संस्कृति और सभ्यता के अहितन की दृष्टि से उपादेय कहा जा सकता है की एक लघु सूची यहाँ प्रस्तुत की जा रहा है।

साध्य सूची

क्रम क्रमांक

- (1) 1 हयरीकल महाराजा जगतसिंह तक के (प्रावर) जयपुर के राजाओं का विवरण। (राजस्थानी)
- (2) 31 कुमारपाल राजसिंहाय या कुमारपाल राय रचनाकाल 1670 वि रचयिता रिपभदास आत्मज मगण (राज) इसमें मल्लसिंहपाल के चालुक्य सम्राट कुमारपाल की विजया का पद्यत्मक विवरण है।
- (3) 34 कालिकादाय याथाकाल-(जन प्राकृत संस्कृत) रचयिता भदन्व। इस ग्रंथ में कालिकादाय के जीवन का वर्णन है।
- (4) 42 हजोड चरित - नशचंद्र मुरि रण घम्भार के महाराजा हमार चौहान का ऐतिहासिक विवरण (संस्कृत)
- (5) 64 राठौडा री वशावली - लक्ष्मण मिश्रिन (राज) राठौडा का वंश वर्णन।

- (6) 72 सचनिका खोंची जचलदास खी- विख्या जगा गद्यपद्य मिथित (राज) ऐतिहासिक काव्य है ।
- (7) 73 भाटी तथा खी ख्यात - जमल भाटी खी (मृत लखवा का वामी था और जिन कायातर म जमलमेर बसाया) स म 1744 तक का वखन है । (राजस्थानी)
- (8) 78 राजनिष्ठ पण - रचयिता खनपतिराय महाराजा भाषवसिंह का मरक्षण म विखिन पत्र खेवन पढति - (मस्कृत)
- (9) 111 सातखोइयांटी - मुल्तान खलाखदीन का काल से लगातर राणेा का गद्यपद्य मिथित ऐतिहासिक विवरण ।
- (10) 125 गुटका - खिम (1) जयसिंह गुण (जयसिंह म सबपित प्रखसि (राजस्थानी)
(2) जयसिंह का इतिखत (राज) खण्डित
(3) राजतरसिणी - मिथ रघुनाथ द्वारा मस्कृत और हिंी गद्य म विरचित सावकर रिपमख्व का पुत्र कुरू से लगाकर मनखपान तक का राजाखा का ऐतिहासिक विवरण ।
- (11) 4 गुहिलोलाख्य - मयाई जयसिंह का भाखण से विरचित गुणियाता का वखानवी (राज गद्य)
- (12) 5 नवारीख मिगत इ इखदरी का हिंा (राज ?) अनुवाद (खयन स विद्य गद्य भगा का)
- (13) 6 गुनामानुनवागम का अशात्मक अनुवाद (राज)
- (14) 7 विखमाखिय कथा (मस्कृत)
- (15) 126 गुटका - खिम विखानिख खनाए मखनिख है ।—
(i) हिखदुरतान खी सादथाही का प्रमाण या जोष काखि-
खाना खी किलाख (हिंी खान क बाखशाहों का प्रशासनिक कार्याखया का ताखिका नियद्व विखण । एमक माथ मखत 1414 वि म नमूर का अागमन म लगातर जयसिंह का शासनखान तक का विखण (राज गद्य)
(ii) विखमखिलास - मिथ गागा द्वारा विरचित विखमाखिय की कथाएँ (राज गद्य पद्य मिथित)
- (16) 127 खिनी स प्राण दन खिनाखिखसों की मुखर प्रतिखिखिया का मखलन खय । एमम मस्कृत क नी और राजखाना के एक खिनाखल की प्रति मखनिख है ।
- (17) 129 खुमाणराखा - दखपति विखरवृत्त पद्यात्मक काव्यप्रख । एमम मखान का खवन खुमाण और उगने वगका का ऐति-
हासिक खान खन खिण खया = । (राज)

- (18) 130 विजय विलास - चाणपुर राय का पद्यबद्ध ऐतिहासिक काव्य (राज)
- (19) 132 शीशोदिया की उशावली - पद्यात्म्य में लगाकर राजसिंह तथा श्री मवाड के शासकों से सम्बन्धित सन्धिपत्र वक्तव्य वगैरह ।
- (20) 133 उशावली - जयसलनर के शासकों का ऐतिहासिक महाराजवंत जयसलनर (1702 ई.) के राज्यकाल पर्यन्त (राज)
- (21) 134 राजरत्नक (अभयसिंहजी के परमजस) रचयिता वारभाण (राज) महाराजा अभयसिंहजी के राजदरवाजी वीरभाला द्वारा विरचित जाधपुर के महाराजा प्रजोतसिंह (1678-1724) द्वारा उनके पुत्र अभयसिंह का जीवन चरित्र [चरित्र काव्य]
- (22) 141 सूरजप्रकाश - कविया करणीदान द्वारा विरचित 7500 छन्दों तक ऐतिहासिक काव्य ग्रन्थ जिसमें महाराजा अभयसिंह का ऐतिहासिक चरित्र वर्णित है ।
- (23) 142 रत्नकराज - आरगजव के विरह परमान में महाराजा जयसलनर द्वारा रचित ऐतिहासिक युद्ध तथा समय के मध्याह्न राव रत्नसिंह के धीरतापूर्वक स्वर्गारोहण का ऐतिहासिक वृत्त (चारण काव्य)
- (24) 143 राजा कृष्णाचल की वार्ता - अनन्तराम माखना में लगाकर राजसिंह तक का गद्यपद्यत्मक वर्णन [राज]
- (25) 145 द्विधासी प्रशामकीय पत्रा का मुद्रित प्रतिविधि से युक्त जिनम [राजस्थाना ग्रन्थ]
- (26) 163 गुटका - जिनम निम्नलिखित रचनाएँ सम्बन्धित हैं—
- (i) मवाड के शासकों का अन्तर्ह संगो में विरचित ऐतिहासिक काव्य ग्रन्थ जिसमें सबसे प्रथम जयसिंह गुणवर्णन में तथा द्वितीय अभयसिंह गुणवर्णन में काव्य ग्रन्थ सम्बन्धित हैं । सूर्य का जयविलास नामक रत्ना होगा—एगी कल्पना की गयी है । रचयिता रणठाण भट्ट (मसूत)
- (ii) राज रत्नाकर - रचयिता सदाशिवनागर (मसूत) महाराजा राजसिंह के समय का अन्तर्ह का वृत्त ।
- (27) 165 गुटका - जिनम निम्नलिखित रचनाएँ सम्बन्धित हैं—
- (i) कथक पुत्र महाराजा द्वारा विरचित प्रशस्ति काव्य जिनमें मवाड के महाराजा कुमा के द्वारा विरचित चरित्र का नाम वर्णन है । [यह समस्त चरित्रों के कीर्तिस्तम्भ की शिलाविन प्रशस्ति का प्रतिविधि ही है]

- (II) राजविलास - रचयिता मानकवि । 18 विलासा म विरचित
इम पिपल काव्य म मवाद के महाराणाप्रो का एतिहासिक वर्णन
है । म्ची पत्र म एम सस्कृत और हिंदी म विरचित कहा
गया है ना विचारणीय है—
- (28) 166 गुटका - एम निम्न दो ग्य मकलिन है—
(I) मयवपाननम — [मस्कृत]
(II) चंद्रवशानुननम । [मस्कृत]
इनकी प्रतिनिधि बनल टॉड के गुफ और सहायक पंडित पानच
[यति] न सन 1819 म उज्जपुर म निवास करले समय की थी ।
- (29) 167 इणगुह्व (नाग !) रचयिता मुम्म हागी (बबाली)—भारत का
इतिहास मू फारसी राजस्थाना भाषानुवाद ।
- (30) 170 गुटका - इम गुटक म मस्कृत और राजस्थानी [हिंदी]भाषा
निबद्ध वशात्रनिर्मा गाराएँ पटटे परवान गवात्मक विवरण भादि
मकलित है ।

टांड की सिरोही यात्रा

— प्रद्युम्नसिंह घू डावत

टांड प्रखीत पश्चिम भारत की यात्रा ग्रथ के लिए हम यह कह सकते हैं कि टांड ने याना के विवरण खोजने और दिग्गम में अपनी उस विशाल ऐतिहासिक विज्ञान का पश्चिम गिया जिसका अनुमान राजस्थान का इतिहास करने में नहीं होता। यात्रा के सम्पूर्ण कथानक मनोरंजन के लिए बंधक होने के साथ मौखिकता विद्ये का है। विज्ञान सिरोही का यात्रा के बतान से टांड के प्रागाथ इतिहास के गान का परिचय मिलता है।

पता चलता है कि टांड राज्या के बीच प्रापसी भगडा को उत्तम कराने के लिए कितना प्रयत्नशील था। प्रजा के हित के लिए उसके मन में कितने उदार विचार थे। टांड की संवनी में उनकी मनोवृत्ति और मानव हृदय का बोध होता है।

कनक टांड ने अपनी सिरोही यात्रा में अपनी ही सरकार की आज्ञा पना की है एवं अनेक स्थानों पर उसने इस बात को बतनाया है कि प्रजा को भारत के म रहकर यहां की संस्कृति को समझना चाहिए और उसी प्रकार शासन करना चाहिए। टांड राजपूतों का बहुत अधिक प्रसन्न था और राजपूतों की श्रुति का दूर करना चाहता था। अपने यात्रा बतान में उनमें सिरोही के महाराज में इन श्रुतियों को दूर करने के लिए कहा था। वह सिरोही राज्य का सच्चा मित्र था। एवं इस बात को सिरोही के महाराज ने स्वीकार किया था। हम प्रकार कनक टांड की सिरोही यात्रा सिरोही के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण यात्रा थी, जिससे कि सिरोही की रक्षा हो सकी एवं सिरोही में एक नये युग का शुरुवात हुआ जो आज जाकर सिरोही और प्रजा के मय संधि में बल गया। कनक टांड सिरोही यात्रा वृत्त में इस प्रकार करता है—

यह रियासत बहुत छोटी है जिनमें उसको प्रसिद्धि राजपूताना का किसी भी रियासत से कम नहीं है। इस रियासत को कुछ विनाय मरि कार मिल चुके हैं। टाड ने अपनी पूरा शक्ति लगाकर मारवाड से उसका राजनतिक स्वतंत्रता की रक्षा का थी। मारवाड के नरणा ने इसका अर्थ अर्थान बनाए रखने के लिए यह साबित करने का पूरी वाशिंग की था कि सिराही मारवाड रियासत का एक अंग है। मारवाड ने अपने पुष्प प्रमाणों के द्वारा गवर्नर जनरल रियासत की मान्यता प्राप्त कर ली।

सिराही के मामलों में मार अधिकारियों का मत एक तरफ व टों का विनाय दूसरी तरफ था। वह सिराही की समस्या में राय के साथ सुनना चाहता था अन्त में उस सफलता मिली।¹

सिराही की समस्या बनी उत्पन्न से भरी हुई थी। जाधपुर के महाराजा अभयसिंह के समय से सिराही के राजा से कर और नौकरों दत्त का अधिकार साबित करते थे। टाड का उद्देश्य यह इतिहास से इनका विपरीत प्रमाण मिल जिसमें प्रमाणित होता था कि सिराही रियासत के अधिकारियों ने जोधपुर के राजाओं का नौकरों दी है परन्तु यह मारवाड के राजा के लिए नहीं था बल्कि साम्राज्य के प्रतिनिधि के लिए थी। इसका अभाव महामादा की चढ़ाई में जब दखन राजपूत उदात्त पर गए थे उस समय महाराजा अभयसिंह का नत्वा उन लोगों ने स्वीकार किया था। इस प्रकार के राजनतिक और ऐतिहासिक प्रमाण थे जो सिराही रियासत की स्वतंत्रता का समर्थन करते थे।

मारवाड के अधिकारियों का यह भी कहना था कि सिराही के प्रमुख और प्रधान मन्त्रियों ने उद्भव के टाडुर ने जाधपुर की नौकरों की थी। इस प्रमाण का कारण के लिए टाड ने स्वीकार की कि सिराही रियासतों में कुछ न कुछ दण्डाही और अन्वयवा। लगे रहें हैं। सिराही में भाग्य साध के जा सिराही की अर्थान के विच्छेद काय करते थे। और उन दिनों में सिराही राज्य की शक्ति इतना कमजोर पड़ गयी थी कि उसकी तरफ से हम लोग का दवान और राजन की व्यवस्था नहीं हो सकना था।

1 टाड पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 82 अनुवाक्य कर्कटुमार टाडुर, पार्श्व हिन्दी पुस्तकालय 492 भारतीय इलाहाबाद 1969

2 टों पश्चिमी भारत की यात्रा पृ 83

इसलिए किमी मारदार के एसा करन स उसकी जिम्मदारी मिराही रियासत पर नहा आनी थी ।

नीम्बड मारवाड की सीमा पर था इसलिए उनके लिए यह थाव शक था कि उचित और अनुचित किमी मी तरीके स वह मारवाड को अप्रसन्न मन का मौका न दे । ऊवा पन् प्राप्त करन की अपनी अभिनाया स नीम्बाज क ठाकुर क सामन एक ही रास्ता था कि वह हर तरीके स जोधपुर नरेश को प्रसन्न करन का प्रयास करें । उस हालात स जोधपुर न तो कुछ चाहा स शबमरवाणी ठाकुर न उस पूरा किया ।³

मिराही मारवाड क अधिकार स नहा था और न हा बट कर देना था । तदरस्ता जा लूट मार करव वसूल किया उसकी सूची मारवाड क प्रतिनिधि ने मामने लाकर इस बात को साबित करन का प्रयास किया कि मिराही स मार वाड कर वसूल किया करता था किन्तु कर वसूल करन स यह सूचा काफी नी थी उसका देखकर साफ जाहिर हाना था कि यह सूची कर वसूल करन की नहीं है । मारवाड क अधिकारिया क सिवा उस सूचा मे कही पर नी मिराही की तर्फ स किमी क हस्ताक्षर नहीं थ ।

प्रत्येक अवस्था स यह प्रमाणित होना था कि मारवाड क हस्तता का कारण मिराहा की कमजोरी था और जो कर वसूल किया हुआ गिनाया गया था वह मिराही स की गई लूटमार का फल था । किमी भा प्रकार यह साबित नहा हो सकता कि मिराही की रियासत मारवाड के अधिकार स रही ह ।⁴

मारवाड की मार स एक दम्नावत्र एसा अवश्य प्रपिन किया गया जिनम मिराहा के वरमान राव क बड भाई के हस्ताक्षर थे । अपनी किना परि- स्थिति और बेबसी स पन् कर बड राव न जोधपुर की प्रधानता का स्वाकार करन क लिए हस्ताक्षर किया थ । बड राव श्रमन पिना की नाम गया स प्रवाहित करन क लिए जा रहू थे उनी मौक पर व कन् कर निय गय और उनस अधीनता स्वाकार करने क लिए निन्दावट कराली याप के सामन इसका वाप महत्व नहा हा सतना वाग्भव स अपनी ईच्छा स मिराहा क अधिकारिया न एक पना भी जोधपुर का कनी अपन नहीं किया ।

3 वना पृष्ठ 83

4 टाण पश्चिमी भागत की यात्रा पृष्ठ 84

इसके बाद सिराही के प्रतिनिधि ने प्रश्न किया यदि हमारे मीलों के हमलों से - जिनका राफ सक्न की क्षमता मात्र हममें नहीं है जोधपुर की फौज हमारी सीमा के भीतर प्रवेश करती है और हमारी सीमा के अन्तर्गत अपनी चौकिया कायम करती है जसा कि किया भी गया है तो जाधपुर की पहाड़ी जातियां जो पड़ोसियों को जो नुकसान लगातार पहुंच रहा है उसका उत्तर मारवाड़ के पास क्या है ?

मारवाड़ की तरफ से सभी प्रमाण बड़ी बुद्धिमानी के साथ रम गये थे । लेकिन सचार्ज ने हान के कारण उनका ध्यान देने में देर न लगी । टॉड मारवाड़ की राजनीति का भलीभांति समझ रहा था । वह जानता था कि मारवाड़ के अधिकारी सिराही की स्वायत्तता के साथ मिल जाइ कर रहे हैं । इस धारणा समझ कर उसने सिराही का स्वतंत्रता का सुरक्षित बनाने में पूरी शक्ति के साथ काम किया ।

जाधपुर और सिराही के पुराने मामले निपटान एवं दानों राज्या के आपस में सम्बन्ध सुधारने के लिए कनल टॉड ने दानों राज्या के मध्य एक समझौता कराया । कनल टॉड के शासन में दानों राज्या के मध्य एक संधि की गई और एक निश्चित रकम जाधपुर का वायिक सिराही में लिया कर हमेशा के लिए भण्डा भान्त कर लिया गया । सिराही अब अपने सभी मामलों में स्वतंत्र है और उस समय से वह ब्रिटिश सरकार का अधीनता में है । उस संधि के बाद सिराही की हालत बल्लन लगा बहा के पुनर्वास न करने के तथ्यों का ध्यान किया । धराराध और धारमण करने से मीलों जाति को रोक दिया गया है । सम्पूर्ण रियासत में सुरक्षा के लिए चौकिया कायम की गई हैं । किसानों सहस्रों और व्यापारियों का धर्म - धर्म दखल विश्वास करा लिया गया है कि उनका धर्म किमा भी पत्तल से दखल हा जाना चाहिये । पूरी रियासत जो उजाड़ हा रहे था फिर से धारवां हुई । कुन्दे और धारमणकारिया के धर्म से जो किसान गतानहा करत थे उन्होंने निभय होकर खेत करना धारम्भ किया । रियासत में दुकानदारों का पत्ता नहा था अब बहा पर दुकान खुल गयी है धार जो माण लाग सिराह बनाकर सुदमार किया करते थे वे सब नये धारमी बनकर सबके बीच में धारते - जान और अपना काम करत थे ।⁵

कनल टाउ स्वयं अपने देश की सरकार का प्रादाचना करन लगता है और भारत के विषय में कहता है—

प्रजा पर जब करा का बोझ इतना बढ़ जाता है कि उससे उनकी गरीबी लगातार बढ़ती जाती है तो हम यह कहने का साहम किसी भी दिशा में नहीं कर सकते कि हमारे शासन का बाध अधिक और असह्य नहीं है। हमें शिशा में कोई कुछ करे हमतो स्पष्ट रूप में यह कह देना चाहते हैं कि हमारी सरकार द्वारा प्रजा से वसूल करन के लिये जो कर लगाये जाते हैं वे प्रजा के अधिक प्राप्ति के उठान के लिये नहीं बल्कि सरकारी खजाने भरने के लिये लगाये जाते हैं। आज हमें में भारत हमारी सरकार के सम्पर्क में है और इन दिनों में जो कुछ यहाँ पर सरकार की तरफ से किया गया है वह किसी से छिपा नहीं है। इमानदारी के साथ यहाँ की पहले की परिस्थितियाँ का आज के जीवन के साथ मुकाबला किया जाय ता जो अन्तर सामने आता है उस पर धूल नही डाली जा सकती।⁶

आज टाउ लिखता है— इस देश का शासन प्राप्त करने में तन्दवार का महत्व दिया जाता है। उसके सम्बन्ध में यहाँ पर एक उत्पन्न दना आवश्यक समझता हूँ। इस देश की प्रजा में जो कानून हम चाना का चप्टा करते हैं उनकी रचना इगलण्ड में हुई है। वहाँ के रहने वाले अज्ञान को यहाँ के निवासियों का अधिक अनुभवन नहीं है। जब तक हमें की प्रजा का अनुभव नही होता उसकी आवश्यकताओं का पान नही होता उस समय तक कोई भी शासक प्रजा के साथ अच्छा भावना रखन हुए भी अपने एक कर्तव्य का पालन नहीं कर सकता जिसमें राजा और प्रजा दोनों का हित है।

मिराही की भौगोलिक स्थिति के बारे में कनल टाउ लिखता है यह रियासत किसी साधारण अज्ञान प्रांत में बसा नहीं है हमकी नम्बान 70 मास और चौड़ाई 50 मील है। हमकी जमीन का एक बड़ा भाग पहाडा है और जो हिस्सा बराबर जमीन का है वह रेगिस्तान का किनारा पडता है। ना मकना है मिराही का नाम उसकी भौगोलिक स्थिति के अनुसार पडा है जिसका अर्थ है सिर अर्थात् ऊपरी भाग और राहा अर्थात्

जम्मू का प्रसार बना मिरोही । रियासत के पहाड़ी हिस्से में कितनी ही उपजाऊ घाटियां हैं । रतीव और समतल जमात में मक्का गहूँ और जौ अधिक पैदा होता है । इसमें सभी भूतल पहाड़ों और घाट पहाड़ से निकलने वाले नदियों के द्वारा रियासत के भाग में बंट जाती है । इसकी सीमा नक्का खन से साफ समझ में आता है पूर्व में पहाड़ों पहाड़ उत्तर और पश्चिम में मारवाड के पश्चिमी जिन गाडवाड और जावार है । पश्चिम एवं पश्चिम की तरफ पालपुर का रियासत है ।⁷

मिराहा की रियासत विस्तार में बड़ी है और, उमर मकान लुबसूरत है और रंग के बने हुए हैं । लेकिन आबादी में छंद में लगभग आधे मकान खाली पड़े हैं । पानी खीन ट्राय में नहर तीस हाथ तक नीचे पाया जाता है । रात का महल एक छोटी सी पहाड़ी की चोटी पर बना हुआ है । लेकिन हमारे निर्माण में किसी प्रकार की सुरक्षा का आभाव नहीं आता ।

राजस्थान के बारे में टाइप लिखता है मिराहा की मानगुजारी में दोने वाली आबादी शांति के दिनों में मान लाम्ब रूप में नगर चार लाख रूप में बर्बाद करती है । और लगभग हमस आधा आबादी रियासत को जागीरदारों से हा जाता है । इस रियासत में 6 बड़े जागीरदार हैं— नाम्बज गावान पांडीव कान्तरी और बाघािया । ये पांच जागीर राज-पानी में चौक में खीम मान की दूरी पर है । मिराहा का महमरमर में अधिक व्यापारिक आबादी है । यहाँ की तरदारों भी अल्प मात्रा में जाती है ठीक उसी प्रकार जस पारस एवं लुब नारा में दमिश्क का लक्ष्य वारे । मिराहा की तलवारों हिंदुस्तान में बड़े सम्मान के साथ लरानी जाती है ।

मिराहा के रात के बारे में टाइप लिखता है 'राजस्थानि 27 वर्ष का जवान लड़का है । हमका बच्चा छाटा है । उमका मुगाहृति में बुद्धिमत्ता का पारख्य नहीं मिलता है । हमके बच्चे का रंग पीला है और हमने सुनने में पुरा नहीं है लेकिन हमका शरीर में वह शीत है जिसका चान्चन जाति अपना बभब मानती है । हमस जामने के अनुभव की बड़ी मान्यता है । हमका का कारण या छंद तक हमने अपनी जिन्दगी में माया नामों बालिया और अपने पहीमी जाघपुर के अमानक माया के हमला

का मुकाबला किया था और उसकी छपन य तिन नामधर के टाँटुर के छन फरेडा में स्थित करन पड थे ।

टाँट मिरोही में राव में मुवाकिल का बघन करता = दवना राज पुनों की राजधानी मिगा । में मर धान पर अभिनदन किया गया । उस अभिनदन में मिरोही की अष्ट मुन्दरियों ने मर स्वागत में गान गाय । उस समय का मुन्दर दस्य हि दुग्गान का छाडकर मैन धयथ मगा में वना नहा रता था । उनक गानी में पीनल के मजारों का तान बना प्रिय और अक्षयक मानक हा रही थी । ये मुन्दरियाँ गाना गानी में राव के साथ चल रता थी । अभि नदन करन वाली का घट जुनुम मुभ छपन नगर में ल जगन के तिय धाया था । मैं उनक नगर में जाता हुआ छपन उस मम में पाव गया जा दमहा की तरफ लगभग घाघा मीन के फामल पर था ।

दुमने दिन उस रियामत में टहकर टाँट राव में मिन । इस मौक पर राव के मना मरगाए एकत्रित थे । राजा के सम्मान में म प्रकार मह वपुष समागह बनाचिन पहल बना नहा हुआ था । माणिक राव के वज्र के नागान्तान में तिम प्रकार की मापवा की बना थी उसका समन कर टाँट ने छपनी सरकाए की तरफ में नजराना पज किया । एना वगन में टाँट का छपिक मच नहा करना पना । वजाकि जवाहिरगन और कामता बीगारें ता उन मवा के रागा के घटा में भेगा में मना था । उसक सिवा कामती मात्र में मजा हुआ एक हाथा एक घाडा जवाहराए स जही हुई मातिया की माता एक कीमता सिपच और अछा मया म डालें दुगालें पारवा मनमन के थाना अछी पगदिदा माफों और कितन हा पाराप के बन हुए कपडों में भरा हुआ थाल म में रिया गया ।

घाडू पवन पर राव जवामिह और उसक मरगाए में मिनकर टाँट न म प्रकार माविगत किया जब पिना और पुत्र ननर में मिनन मैं । मवम मिनकर और उनका स्नह प्राप्त करके टाँट वगन मुँ नया । जब यह मर कृपु में चुका तो राव ने टाँट का छपन साथ चलन और मिनमन पर बठने का अनुरोध किया । परंतु टाँट ने हमकर उनक म सम्मान का नम्रता के साथ नामजूर कर दिया ।

राज क जिन म आज किसी प्रकार की घबराहट न थी और प्रायः के पवित्र शांतिविरण म स्वतंत्रता के मुझ का वह अनुभव कर रहा था । इस समय टॉड न उससे साथ कुछ दूर तक बात की । ये बातें उनके राज्य की भलाई के सम्बन्ध म थी और कुछ दूररी बातें भी थी । टॉड ने राज का समझाया कि प्रजा का उन्धान कस हो सकता है बगार की प्रथा का बाद कर नना क्या बहुत जरूरी है ? व्यापारियों को सुविधाएं राज्य की तरफ म क्या आवश्यक है ?

कम बाद राज के पुत्रों के विषय म कुछ और बातें होती रहीं । टॉड का इस बात की खुशी थी कि उनके सम्बन्ध म जितनी उम्र जानकारी है उतनी राज का उसने पुत्रों और उनके इतिहास के सम्बन्ध म नहीं है । टॉड ने राज का आग्रह करत हुए कहा कि वह अपने राज्य के प्रति और अपनी प्रजा के प्रति सदा इमानदार और उत्तर रहे ।

कनन टॉड ने कवन मिराही की रक्षा ही न की बल्कि जोधपुर एवं मिराही राज्या के मध्य सन्धि कराकर दोनों राज्या के परम्परागत मन मनमुटाव को कम करने का प्रयत्न किया । इसका परिणाम यह हुआ कि मिराही एक बार पुन आर्थिक दृष्टि से सम्पूर्ण राज्य बनने लगा और राज एवं आक्रमण कम होने लगे । सम्पूर्ण रियासत म सुरक्षा की भावना पैदा होने लगी जिसके परिणाम स्वरूप प्रजा का सुख एवं सन्तान मिलने लगी । जिससे कृषि काय करने लगे व्यापारी व्यापार करने लगे रियासत भी उजाड़ हो गई थी एक बार पुन आबाद हो गयी ।

टॉड की मिराही की यात्रा म एक लाभ यह भी हुआ कि प्रायः पर्वत जिनकी जानकारी लाना का बहुत काम थी विजय रूप से विश्व म टॉड ने उमका छत्र बना लिया । परमारा की प्राचीन राजधानी चन्द्र बतल जो विस्मय हो गई थी अब लाना का इस बात की जानकारी हुई कि मध्यकाल म नानी अथवा पूर्ण राजधानी राजस्थान म थी । अतः म टॉड के मद्द परना से ही मिराही और अजमेरा के मध्य 11 सितम्बर सन 1823 का एक सन्धि सम्पन्न हुई जिसके परिणाम स्वरूप मिराहा म एकबार पुन गान और स्मृति का युग प्रारम्भ हुआ ।

टांड की बनेडा व बेगू ठिकाने की यात्राए

मवाड क इतिहास म यण क जागीरदारो की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही इसलिये वे मवाड के स्तम्भ मान सके । टांड यह अच्युती प्रकार जानता था कि मेवाड की समस्याया का समाधान अकेले महाराणा से परामर्श करन से नही हागा इसलिये उसन यह क प्रमुख उमरावो का घबन विश्वास म लने उनस मेल मिलाए बड़ान तथा उनकी निजी समस्याया का हल ढूँढन हनु मवाड क ठिकानों की यात्राए की जिम्मा बनेडा व बेगू की यात्राए विशेष महत्व रखती है ।

बनेडा छठी यात्रा टांड मार्गशीर्ष सुति 11 1875 (1818 ई.) को बनेडा पहुँचा । बनेडा क राजा भीमसिंह (द्वितीय) न टांड का भव्य स्वागत किया और घाट-सत्कार कर उसका मान बढ़ाया । इसका विवरण स्वयं टांड न कलमबद्ध किया है -

बनेडा का जिला मवाड राज्य के समस्त प्रभावशाली दुर्गों म एक है और यहां क राजा समस्त मामला म प्रथम है । उनकी राजा की पदवी नाममात्र की नही है वरन एक राजा क समस्त सवाजमा म वह मुशोभित है । उदयपुर क महाराणा के बहु निकटतम सम्बन्धी है ।

मेर मित्र राजा भीमसिंह ने बनेडा मे दा मील घाकर मरा घग बानी की । व मुक्त महलों म ल गये । म बग नील घाटे रहा । म अर्धघंटे म मुक्त मवाड राज्य क अधीनस्थ राज्या की व्यवस्था तथा राजा का रहन महन खन का मुद्रवसर मिला । राजा राजसी ठाट बाट म रहत हैं और मुसम्म है । उहनि खुल मन स तथा किंचित मात्र मदभाव न रखने ह्वे मुझसे बातचीत की । उनको शाही मरानिब सवाजमा तथा सम्मान मिला है ।

राजा न मुझे गावडे म मत्वमली गह पर बिठाया । उसक मामने के सभा भवन में बनेडा राज्य के सामन्तवण बठ घ । वे मुझन एक

भारत के समान घरेलू तथा राजकीय विषयों पर बान्तालाप करते रहे और मराठा साम्राज्य प्रकृत रहे ।

मरे विदा हात समय उतहान मुझ उपहार दन चाह मन उह स्वीकार तो किया किन्तु हमारी राजकीय नाति के सतर्गत उह साथ न जाना स्वीकार नही किया ।

माननीय लाड बिसय जब बनेडा प्राय के तब उनका मी राजा न उत्तम स्वागत किया था । वह मुझ मर सम तक पहुचान प्राय । मन उह एक जाण विस्तोल तथा एक दुर्बिन भेंट की । जिसमे वह प्राणवास के प्रश्न का जिल पर सही देख सकें । मिलन के समय हम दोनों का जितना प्रान्त और सत्ताप मिला उतना ही बिना के समय हम दोनों ने दुःख का अनुभव किया ।¹

बम्बई की यात्रा-टांड की बंगू यात्रा के दो कारण थे । एक तो महाराजा भीमसिंह और मवाड के सरदारों का पारम्परिक सम्बन्ध स्थिर करने के लिये 1818 ई. में टांड द्वारा जो कानिनामा तयार कराया उस पर बंगू के राजत महसिंह (द्वितीय) ने सब सन्देशों में पक्ष हस्ताक्षर किया । इससे टांड की श्रद्धा बंगू टिकान के प्रति बढ गई थी । दूसरा बंगू के कई गांव सिन्धिया ने लूटा था उन पर विचार किया जाना जरूरी था । अतः टांड 1822 ई. फरवरी के माह बंगू गया । राजत महसिंह सुष्मावन ने उनका आतिथ्य कर राजवाज में उसे ठहराया । विश्राम करने के बाद टांड ने हाथी पर घाघर होकर राजत से मिलने के लिये प्रस्थान किया । बंगू गले का दरवाजा काली मध चूण्टावत ने बन्दवाया था वह इतना ऊँचा था कि नीचे मन्ति हाथी घाघर प्रवेश कर सक । अतः लिये मन्तिवत ने दरवाज के दूर ही हाथी का राक दिया और टांड का हाथी स नीचे उतरने के लिये कहा । परन्तु टांड ने उस समय एक दूसरे हाथी का द्वार में प्रवेश हात देख लिया इस लिये उसने महावत का हाथ घाघर से जान का कहा । लेकिन रात पर उन पुल पर जात ही हाथी मर गया और वह महावत के बाबू में गिरा रहा । हाथी के माथे टांड नीचे गिर पडा जिसमें वह बहका हुआ गया । तम्बू में लकड़ उम लटाया गया । घाघी रात को उसी हाथी घाघा जब तक राजत महसिंह उनका शिबिर में ही बठ रहे ।

अमरे तिन म्य उत्य होत ही रावत ने गन क दरवाजे का ध्वस्त करा दिया । दा तिन क बाग टाड जब बिल्कुल स्वस्थ हा गया तब वह विले भ गया । उस समय गन का मुख्य द्वार टूटा हुआ देख कर टाड का बग दुख हुआ क्योंकि किसी प्रसिद्ध पुरुष के स्मारक का या नष्ट करना उस अध्या नहीं लगता था । पूणरूपण आज पडतान करके टाड ने 32 गाव रावत महामिहू को तिलाये घोर इसक बन्द 24000 रु मधिया रा तिकाकर भगडा समाप्त किया । वेगू टिकान क त्रिये टाड की यात्रा नाम गयक मिहू हूइ । गावा पर अशिवार हो जाने से टिकान की आयक दा म धिरे धिरे मुघार हान लगा ।

—

राजस्थान के इतिहास के पिता कर्नल टॉड

—जयसन्तसिंह सिंघवी

भारत के समूचे ग्रन्थों में कर्नल टॉड द्वारा कृत राजस्थान का इतिहास अनुपम ग्रन्थ है। शत्रियों के परम हितधी टॉड ने पच्छीम दिशा के मूल परित्यक्त से राजपूतों की नीति से मण्डित राजस्थान का इतिहास लिखा, जो ऐतिहासिक सामग्री का एक अपूर्व भण्डार है। राजस्थान का कोई श्रद्धालु इतिहास लिखे बिना नहीं या क्याता बना वशावतिया में इतिहास के सूत्र बिलंबे हुए थे। टॉड ने अपने परित्यक्त के स्थानीय सामग्री का संकलन किया और वैज्ञानिक ढंग से राजस्थान का इतिहास लिखकर शायद जगत में एक नई नीति बनाने का अनुकरणीय कार्य किया। इसलिये कि राजस्थान के इतिहास के पिता के रूप में याद किया जात है।

टॉड की म्यानि एक महान इतिहासकार के रूप में ही सब विदित है ही कि राजस्थान और उसके आस-पास के प्रदेशों के भूगोल के भी प्रथम शोधक थे। उन्होंने दिल्ली से राजस्थान और अन्य भारत के अनेक प्रमुख स्थानों के मार्गों को उत्तम रीति से पर्यटन के कार्य सम्पादन कर अपना सूत्र-बुद्ध और पनी दृष्टि का परिचय दिया। टॉड ने राजस्थान और उसके आस-पास के प्रदेशों का एक प्रामाणिक नक्शा तैयार करने में भी महत्त्वपूर्ण परिश्रम किया। उस उपयोगी काम में अपना समय लगातार हुए उन्होंने इतिहास प्राचीन ग्रन्थ पुराने सिक्के जन श्रुति और शिवा सम्बन्धी का भी संग्रह किया। ज्ञान का जोरदार धारण कर वे बिनाट मार्गों में हाकर अपने भौगोलिक और ऐतिहासिक शोध के कार्य में अग्रसर लग रहे। अपने उस रूप के प्रमाणात्मक श्रम से उन्होंने राजस्थान का पहली बार एक प्रामाणिक नक्शा बना लिया। सन् 1715 में उन्होंने यह नक्शा हिन्दुस्तान के सबसे जनरल हाकिमों के भेंट किया जिन्होंने टॉड के इस महान कार्य की बड़ी प्रशंसा की। प्रदर्श में सचारा व्यवस्था स्थापित करने में यह नक्शा अपनी सरकार के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। टॉड ने अपने

लाजप्रिय न गय था। इतिहास से उन्हें इतना लगाव था कि अस्वस्थता की हानत में भी गांव में खान पर लेट हुए वे जनता की समस्याओं और ऐतिहासिक विषयों पर सोचा स बातें करत रहते थे। वे राजपूत रईमा और उनके सामंता के विश्वासपात्र थे। उन्होंने मध्यस्था कर राजाशाही और उनके नामता के अनेक विवाहों का निषेध कराया। निरंतर कठिन परिश्रम के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया था। डॉक्टरों ने उनके शरीर की जांच कर उनको स्वच्छ भोजन की सलाह दी।

ता 1 जून 1822 का इतिहास उज्जैन में स्वच्छ के निवे प्रस्थान किया और अम्बाला में तीन सप्ताह रह कर टॉड जहाज से स्वच्छ के लिये रवाना हुए जहां तक जहाज पर से भारत का तट दिखाता रहा वे एक टक अपनी प्रिय कमरथनी का खत रत। स्वच्छ पहुंच कर भी टॉड ने भारतीय इतिहास और प्राचीन विद्याओं में अपना शोध जारी रखा। वे सदा नगर की रायन एंग्लो सायनिक सामाजिकी नामक मस्था के सस्य हो गये। सन 1829 में उन्होंने अपनी विद्यान पुस्तक एनजल एण्ड एंटीक्वटीज ऑफ राजस्थान की पहली निष्पत्ति प्रकाशित की और सन 1832 में उसकी दूसरी जिल्द प्रकट हुई। इस पुस्तक का प्रारंभ अमेरिका और हिन्दुस्तान के इतिहास प्रमिया न बहुत प्रशंसा की। अपनी नई पुस्तक टवल्ल इन प्स्टन इतिहास को छपवाने की सदा में व्यवस्था कर ही रह थे कि अचानक उनका मिरगी की बीमारी हो गई। 17 नवम्बर 1835 को 53 वर्ष की अवस्था में भारतीय इतिहास और संस्कृति के एक प्रथम उपाधक और भारतवर्ष के सच्चे हितपी का सदा नगर में निधन हो गया। ब्रिटिश सरकार के एक उच्च अधिकारी होत हुए भी टॉड की इतिहास रचित निष्पत्ति सदा नगर और मध्य पारधी थी। यही कारण है जहां विद्वान सरकार ने हमारी इतिहास कीर्ति का नाम करने में कोई कसर नहा छोड़ी थी टॉड ने समा सरकार का अंग ज्ञान एण्ड भी भारतीय राष्ट्र की क्याति उजागर करत हनु राजस्थान का इतिहास लिखा। भारत के सभी विद्वानों ने यह स्वीकार किया है कि टॉड के इतिहास ने भारतीयों में देशप्रेम और स्वाधीनता का भावना न जागृत करत में महत्वपूर्ण योगदान दिया। राजस्थान इतिहास के पिता और इस अमर इतिहासकार की निम्न काव्याजलि श्रद्धा मुमन के रूप में सार प्रदान है-

पुरातन ग्रंथ और पुरालेख शोध शोधि
 नभ इतिहास अद्भुत कौन समझावतों ।
 चारण सुविप्र एवं अन्य सुधी सयति ते
 प्रबल पराक्रम की गाथा कान गायता ॥
 कपटी लुटेरों की अराजकता नष्ट कर
 कौन सुख्यवस्था और शान्ति सुरमावता ।
 भारतीय गरिमा कान करतो विप्रब्रह्म्यापि
 ज्ञा "राजस्थान इतिहास टाड न रचावतों ॥

—

कर्नल टॉड - व्यक्तित्व एवं कृतित्व

—डॉ गोपीनाथ शर्मा

जब मराठों की शक्ति का ह्रास हो रहा था और ब्रिटिश सत्ता का प्रभुत्व की आभा छा रही थी एवं राजस्थान का नरेश अपने पूवजा का शीय की स्त्री चुके थे तथा प्रजा सामंतों तथा नरेशों का शासन स बहुरा रही थी उस समय कुछ एक अशुभ शसन का अचिकारी एम य निह राजस्थान का भारतीय शीय आर सस्कृति स कुछ लगाव हा गया था । एत व्यक्तियों म कनल टॉड एक था ।

कनल टॉड के व्यक्तित्व पर दलित डांग ता कई महत्वपूर्ण पहलू हमारे सामने आत है । प्रथम तो उसम एक विलक्षण एवं सवतामुखा प्रतिभा थी जिममे जिम काम का वह हाथ म रता था उन वह पूरी दक्षता स पूरा करता था । उत उसका चयन बूलविच का शिक्षास्थान म किया गया ता चयन एक प्रकार म उमकी योग्यता का आधार पर था क्योंकि इनम प्रवण इन गिने शिक्षाविषय का किया जाता था जा मस्या का मापण्ड का अनुकूल उनरत थ । इन परिक्षण म टीक उतरत पर उम रेजामेंट म कमीशन दिया गया । जब वह मराइन द्वीप भेजा गया ता वहा नाशिक पर का काम म भी सरा उतरा । वहाँ मे आन पर वह रेजामेंट का सपिण्टेंट और इन्स्टी म सर्वेक्षण की नीविरी आदि पर पर काम करत म नाम गमभा गया । उसके उनीयमान गुणा स प्रमन होवर मिस्टर श्रीमसकर न उम अपने साथ मिषिया दरवार म ल जाना उपयुक्त समभा । यहा जान पर मान वष का अयक परिश्रम गारा उमन सर्वेक्षण का मानचित्र एक आनक मिषय म नभण और नमदा से समुना प्रचन का सामरिक तथा राजनतिर उपयोग का रित तगार कर अपने ऊपरीय अचिकारियों का नित म एक प्रभुव स्थान गहा कर लिया । य मानधी आग होने बाल सर्वेक्षण का दित महत्वपूर्ण मिडु श्ड ।

इन बहुमुखी प्रतिभा से सम्बन्धित शहर लाइप्टिग्न न अपना विस्तारवादी नीति का सफल बनाने के लिए उस मराठों व पिन्डारियों के समन में लगाया जहाँ वह जालिमसिंह के सहायक में शतशः सफल हुआ। मिथिला के दरबार में स्टुडी के धर जाते पर वह राजा के द्वितीय सहायक और फिर उन्धपुर में एजेंट के रूप पर पनामीन हुआ। एजेंट पर पर रत्न हुए उसने अपने अधिकार क्षेत्र में यत्र तत्र छिपे व बिल्वर उपस्थिता का सन्देहकर शान्ति स्थापित की। यही नही धार्मिक भगडा और सामाजिक जीवन के समन्वयन को निपटान में उसने प्रथम परिश्रम किया। टॉन ने नरेगा व राजस्थानीय सामंतों के पारस्परिक विवाह का निपटान राजपूत राजनीति की विषय विद्वानाया का सुलभान धार अपने रूप की गरीमा बनाये रखने में काम चला न रखा। ऐसा तभी सम्भव हो सका जब वह स्वयं पर समस्या का समझने और निष्ठा पूर्वक जटिल समस्याओं का दृष्टि से मुकाबला करने की क्षमता रखता था यथा कारण था कि उसके शासन काय में उजडा हुई बस्तिया पुनर्स्थापित हो गईं। अजमेर मात फिर यातायात के लिए उपयोगी हो गए और बाहर से आने वाले व्यापारी राते स्थान के अनेक नगरों में अपना बराबार जमान में लग गये। भाववादा जा बस्ती के लिहाज से उजड चुका था वहा पुन 3000 घरों की बस्ती हो गई। 1818 में उन्धपुर में जहाँ 3500 की आबादी था 1822 में 10 000 हो गई। 1818 ई का राजस्व जो 40 000 रु वार्षिक था बढ़कर दस लाख तक पहुँच गया। उस विकास धार वृद्धि का श्रेय कनेन टॉन को है जिसने अपने परिश्रम और अथर्ववशात् से अपने दायित्व का निभाया। इस प्रकार बुद्धि प्रशामन कूटनीति प्रयत्नवशात् परीक्ष्य, काय कुशलता व क्षमता शान्ति के क्षेत्र में वह हमारी पर हर प्रकार में टीक उतरा।¹

इसके जीवन का एक अर्थ पढ़ने भा है जिसमें कुछ उसके प्रथमका और कुछ उनके विराधिया के विचार है। एक अधिकांगी जिसका नाम कनेन विनियम निकान था जिसमें इसके साथ चौदवा शिर्षक में काम किया था उसने निम्न है कि टॉन सरने प्रवृत्ति का था और नही सरकारी अफसर उस धार करने थे तथा उसमें उस उदीयमानता के सभी सम्पूर्ण शक्ति हान थे जा बाट में उसने अपनी प्रतिभा के वन पर प्राप्त की थी।²

1 टॉन एनाल्स भा 1 पृ 561 585 प्रस्तावना प 29 30 35

2 टॉन, टूबल्स, प 18

मिस्टर श्रीमन्मर ने टाड का अपने साथ मिथिया दरवार में ल जान के लिए अपने ऊपरीय अधिकाऱिया को जा प्रगसात्मक पत्र लिखे थे उनमें उनका स मा प और स्वतंत्र चरित्र की भूरि भूरि प्रशंसा की गई थी। मिस्टर मरर ने इसकी काय कुशलता और त्यागवति के सम्बन्ध में लिखा है कि जब तक मैं इस रजिडन्सी में रहा वह इस प्रदेश के भूगोल सम्बन्धी अपने ज्ञान का बढ़ाने के लिए प्रत्येक सुलभ और शक्य अवसर का लाभ उठाना रहा और मेरा विश्वास है कि उसका वेतन का बहुत बड़ा भाग देश के विभिन्न भागों में कायकर्ताओं का भेजकर उनके द्वारा स्थानीय सूचनाएं प्राप्त करने में व्यय होता था। वह स्वयं भी इस उद्देश्य के लिए अथक परिश्रम करता रहता था और उसकी थकान को कम करके उस पुन सुस्वस्थ बनाने हेतु कभी-कभी मुझे ऐसे प्रयत्न भी करने पड़ते थे कि उसका प्रवर्तियों में रात पड़ा हुआ जाय क्योंकि गठियाबाद से प्रभावित उसका स्वास्थ्य बहुधा माघारण व्यायाम करने में भी अशक्य हो जाता था।³

मिस्टर स्ट्रुची जिनके साथ टाड ने काम किया था लिखता है 'इस पूरे समय में वह मुख्यतः सिंधु और बुद्धसखण्ड तथा जमुना और नर्मदा के बीच के प्रदेशों से सम्बद्ध भौगोलिक सामग्री एकत्रित करने में व्यस्त रहा। मेरे पद से सम्बन्धित कृतव्यों का इन प्रदेशों में निरंतर सम्बन्ध बना रहता था और हम विस्तृत क्षेत्र के विषय में उनके भागोत्तिक ज्ञान से मैं बहुत लाभ उठाया। प्राप्त जानकारी का प्रस्तुत करने के लिए वह सदैव तत्पर रहता था जो महत्व के अवसरों पर बहुत उपयोगी सिद्ध होती थी सरकार ने भी उसका इस कार्य की बहुत प्रशंसा की है।'⁴

टाड हेमिन्ग्स तथा पिन्टारिया के विरुद्ध तनभूत प्रत्येक जनरल ने टाड द्वारा प्रेषित मानचित्रों महत्ता और मोर्चों के स्थानों के अवन और साक्ष्यक प्राकट्ये घाटि के सम्बन्ध में उसकी सेवाओं के लिए अनेक बार धन्यवाद दिया। करीमखाना के चीतू के विरुद्ध टाड द्वारा की गई मार्वादि की सम्बन्ध में लॉर्ड हेमिन्ग्स ने उसकी अत्यन्त प्रशंसा की और व्यक्त किया कि अभियान का भाग बढ़ाने में मागदजन सम्बन्धी भाषकी सहाया के विषय में प्रत्येक क्षेत्रीय जनरल से प्रशंसात्मक प्रमाण पत्र प्राप्त हुए हैं।⁵ काट भाग डायरबटस ने भी सदा ही उसकी सराहना की। वह इतना स्याभिमानो था

3 टॉड ट्रवल्स, पृ 19 22

4 टॉड ट्रवल्स पृ 22 23

5 टॉड ट्रवल्स पृ 26 27 29

कि मुझ में जाने के लिए तो आगे आकर उसमें सम्मिलित होने को उद्यत रहता था परंतु सम्मान सम्बन्धी प्राप्य अधिकार के लिए याचना करने के लिए वह निम्नस्तर पर उतरना कभी पसन्द नहीं करता था ।⁶

सिरोही कोटा भवाड आदि रियासतों की जनता टाड की बनी प्रशंसा करती थी । इसका दो वर्ष बाद आने वाला विशेष अंक ने इन भावनाओं को प्रकृत करते हुए लिखा है भवाड के सम्पूर्ण उच्च एवं मध्यम वर्ग में बहुत ही सौहार्द और आदर से टाड का नाम लिया जाता था । डाबला और आगे मुकामों में वहाँ के शेरवालों आदि हम निरंतर टाड साहित्य के बारे में पूछते रहे कि इम्पण्ड लौटने पर उनका स्वास्थ्य ठीक हुआ या नहीं और अब उससे फिर मिलना हा सक्ता या नहीं इत्यादि । जब उनका कहा जाता कि ऐसी सम्भावनाएँ अब नहीं हैं तो वह बहुत अफसोस प्रकट करते और कहते कि उसका आने से पहले दश में शांति का नाम भी नहीं था और सभी मालदार व गरीब तब डाकुओं और पिडा रियों के सिवाय उससे समान रूप से प्रेम करते थे ।⁷ डाड मिथ का भी कहना था कि वह वास्तव में इस देश के लोगों से प्रेम करता था और उनकी भाषा व रीति रिवाजों को स्वाभाविक रूप से जान गया था । भीलदास में भी प्रत्येक व्यक्ति कप्तान टाड की भूरि भूरि प्रशंसा कर रहा था । लोग न उसके नाम पर भीलवाड़ा में एक बाजार का नाम टोंडगढ़ रखवाया जिस स्वयं टाड ने निरस्त कर महाराणा के नाम रखवाया क्योंकि वह चाहता था कि प्रत्येक लाभकारी कार्य का शौरभ राजा को ही प्राप्त हो ।⁸ इन उद्धरणों व घटनाओं से सिद्ध है कि वह अपने उच्चशक्तियों रियों और जनता का विश्वास भाजन बन गया था । सत्तावाणी नाति के माहान में सरकार व जनता दोनों की मन्तुष्ट रणनीति का धार्गी तत्त्वार पर चरना का जिसमें वह हर प्रकार से सफल सिद्ध हुआ ।

टाड का परान और अपरोक्ष रूप में 18 वर्षों तक पृथक पृथक पत्रों पर रहने के कारण उसका राजपुत्राना के माध्यम से बराबर सम्बन्ध बना रहा । अपने मरल स्वभाव में उसकी लोकप्रियता भी इतनी बनी गई थी

6 टाड ट्वेन्थ प 29

7 टाड, ट्वेन्थ प 36

8 टाड ट्वेन्थ प 36 37

कि उनका मन यही समझ का हा गया था।⁹ फिर प्रश्न यह उठता है कि वह भारत छोड़कर एंग्लो इण्डिया चला गया? उसका उत्तर कई रूप में दिया जाता है। उपरीय और वह यही बतनाया जाता है कि शारीरिक अवस्था व कारण उसका स्वदेश जाना आवश्यक था। डमम कोई नहीं कि अथवा परिश्रम व कारण वह गठिया व पीडित या जिसका उपचार वह ध्यायम तथा औपचरियो व गेवन द्वारा करता रहता था परन्तु 1819 से 1822 तक व सरकारी अनादिका क अथवाकन व स्पष्ट हा जाता है कि उसकी साक्षरियता से उमक माधिया व जलन की भावना उत्तरोत्तर तीव्र होती गई और कुछ स्वार्थी व उसक राजपूत नरेगा व सम्पक का विपरीत अथ लगाकर उमक विरुद्ध मिथ्या प्रचार करत थ। श्री राजाभा व साथ स्नह रसन की बात का रतगड बनाया गया और बवनर जनरल व मन व उमक जावन व नीति व मय थ व स्पष्ट उपन वर दिया गया। सरकारी दस्ता-वर्जा की भाषा जा प्रशमा मक 1818 तक थी उमक आग चलकर बडाई का प्रयोग किया जान गया। कनन श्री इस प्रकार व स्पष्ट व अग्रमन रहने ला और उमने सरकारी सेवा छोड रन का मकल्प 1821 म नी वर लिया। इतना अवश्य था कि अथ व लक्ष्य का निभान व अथवा मित्रिण सत्ता व प्रति उमने मन या कम व निष्ठा और वफादारी वसे ही बना रनी। स्वय हैवर तथा उनका पत्नी ने भी यह विश्वास है कि राजपूता का स्पष्ट भाजन बनने से सरकारी अफसर उम पर स्पष्ट करन लग थे और उम पर अष्टाचार व घूसखोरी का आरोप लगान थ। परन्तु इन बातों व स्पष्ट रूप स निम्ना है कि जब हमन इन आरोपों की जाच की तो सब मिथ्या पावित हुए। उनकी मायना है कि स्पष्ट भाजन बनना उमक उत्तर विचार स सम्पन्न था। उमक न कोई उसकी चाल थी या अष्टाचार था। नीय व प्रति निष्ठा इन व कारण तथा गतिहासिक तथ्यों की प्रोज की प्रवृत्ति इन के कारण उमन राजपूता या अथ वगैरे के साथ साक्षात्पूण व्यवहार बनाकर साक्षरियता बना ना था जा उमक कतिपय माधिया का अच्छी नहीं बन रनी थी।¹⁰

उन मिथ्या आरोपों व कुछ कारण भी थ। मारवाड भी श्री का प्रणामन रत था परन्तु वगैरे का वकील शिवा म भी रहना था। महाराजा मानसिंह वम स्वतन्त्र विचार का व्यक्ति था जा ब्रिटेन हुकमन व

9 टाड का पत्र महाराजा का न म रो

10 मन आर लक्ष्य धार श्री, भा 21, 1944, प 94-96

विरुद्ध था । वह तथा उसका मुसाहिब ^{जिसने यह कि टांड के जो मवाद} एजेन्सा पर था उसकी निगरानी मारवाड ^{के निकटतम क्षेत्र मवाद से होती} थी और वह बार बार दौरे कर ब्रिटिश सत्ता का प्रभुत्व मारवाड क ^{प्रभुत्व} स्थापित करता था । यहां तक कि मारवाड ^{के} हिमाच निहाव की जगह एव सामंतों के लेख जोख की जगह की जाती थी । महाराजा का जोधपुर किल के अधिकार से भी हंगन की माग कसकत से घन रही थी । हम धारणा को लेकर टांड के प्रशासन की मारवाड क कारिदे भवहलना करन लग के । महाराजा तथा उसका मुसाहिब अपना मीथा सम्बन्ध दिल्ली से चाहते थे ताकि मारवाड से सत्ता का दबाव मवाद की सुनना से दूर से बना रहे जिससे जांच पड़ताल एव निगरानी में अकुण म शिथिलता आजाय । अतएव मारवाड क वकील न ^{की} म रत हुए टांड क खिलाफ मिथ्या आरोपों को भी लगा दी और आउटरलाना जा टांड क मारवाड अधिकार से प्रमन्न महा था वह भी वकील का सहायक बन गया । हम प्रकार के पडगत्र से टांड की ग्यनि वरी गजुक हा गई । जब भी वह मारवाड पत्र चला तो उसके साथ ^{जब} म वहाँ का स्थानीय वष उपाग निष्ठाना हम आशय से कि वह तय आकर मारवाड क्षय से घनग हा पाय । अत म वकील एव आउटरलानी की साक्षिण क कारण टांड से मारवाड क्षेत्र हटा लिया गया और मेवा ^{से} दूरस्थ जमल मर का स्ताना क दिया गया जहा वह अपना कारगुजारी प्रभावशील न प्रदर्शित कर सके धार उसकी क्षमताओं हा 11 ।

कुछ सारियों की प्रतिष्ठित दुभविना क अतिरिक्त कुछ एक ऐसी भी घटनाएं भा जा सदेह से जुड़ी थी और धीरे धीरे उनका स्वरूप रोचनीय बन गया । हाइनी म मधि के अनुसार राजराणा जालिमसिंह को कोटा के प्रशासन में प्रभुता दी गई थी परंतु जब उम्मेदसिंह के परधान विशारसिंह गन्दी पर अंग और जालिमसिंह पक्षाघात से पीड़ित था तो विशारसिंह क राज्य में जालिमसिंह का पुत्र माधोसिंह राजराणा की हैमिमत से बाटा महाराज क प्रशासन में हस्तगप करन लगा । वास्तव में ये हस्त क्षय बंजिव नग था क्योंकि सत्रि क अनुसार जालिमसिंह क विशय अदि कार का ^{अभावा} माधोसिंह कोश के सदन में नहीं हा सकता था । कोटा मद्रास क ^अ वन हुए माधोसिंह के प्रभाव को सहन नहीं कर सकता था ।

टाड ने स्थानीय परिस्थिति को देखते हुए विशारसिंह का पक्ष लिया परंतु जब विशारसिंह ने माघसिंह के हतभय के विरुद्ध दखतर जतरन का निगा ता इसका कोई सतुपजनक उतर न दिया गया । वलिक टोड को आदेश दिया गया कि वह अपने पीली दबाव से राजाराणा के प्रभुत्व को बरकरार कायम रखावे । भय से महाराव चम्बल पार पडूच गया और राजाराणा ने बाग पर प्रभुत्व कायम कर लिया । टॉड विरुद्ध जगत तथा वधगेन माघ का प्रभुविधा के कारण समय पर कोटा न पडूचन पाया । उस वान को लेकर सरवार टोड क आदेश से महाराव चम्बल पार कर ठाकुरा का विरोध करन का पडयत्र कर रहा था और टाड ने सनिक कायवाता म जिगई कर महाराव को सहायता पडूचाई थी हालाकि ब्रिटिश मन्त्र म महाराव को पुन काटा की मदती का अधिकारी बन दिया गया, जना टाड मन्त्र के अनुमार चाहता था पर हाडीती के स्वतंत्र अधिकारी स वचित कर दिया गया । उसे आदेश दिये गये कि वह मालवा और राजपूताना क रेंजिण्ट ओवरलॉनी से आदेश प्राप्त कर कोटा एजेसी का काम कर ।¹²

अब रही मनी भवाड एजेसी जहा उमने बडे लगन से ब्रिटिश जिता का रना की और जनजाति व माम ता के उपद्रवो को शान्त कर राजस्व का आय बचाने म सफरता दिमाई और बहा की आय 30 - 40 हजार न 10 लाख के लगभग बढ़ा थी वहां भी उम पर आउटरलॉनी की शक्तिता का सकुन लगा दिया गया । जब मेवा म शक्ति स्थापित हो गये पर और नीला के उपद्रव शान्त हो गये तथा साम ता एध महाराणा क सम्बन्ध म सुधार ले गया ता गधि क प्रभुत्व उसन महाराणा को पुन स्वरार की छू ले पा । इस कायवादी का भी सदेह का दष्टि स रना जान गया । सरवार म्तावता म उम पर आराप लगाम म्म कि वह ब्रिटिश सत्तावाती नीति के प्रतिकूल आचरण कर रहा है और महाराणा म उनकी माग्नाठ बढ़ता जा रही है जो नई प्रभुसत्तावाती नीति और राजपूताना पर प्रभाव स्थापित करने म विडम्बना का माधन बरगी । अपने 16 जुना 1821 क पत्र मे जो उमन स्विटन को लिखा था, उसमे उसकी धया का ममुचित चित्रण है जिसम स्पष्ट दर्शाया गया है कि उत्तरोत्तर

12 पञ्चमेन भा ३ प 361 टाड का पत्र मटवाह का फो पो न 20 1821, पिटन का पत्र टॉड को फो प 5 1821 म्ता हेस्टिंग प 154, डॉ वमिष्ठ का लेख प 27 33, 1991 पाण्डुलिपि ।

मारवा कोटा सिराहा और फिर मवाड से टाड का प्रभुत्व हटाया जाना उसके विरुद्ध पञ्चम माघ है उसका जसा स्वामीभक्त तथा प्रजा मक्क भूमि कारी इस समयमान सूचक प्रवृत्त का सहन न कर सका । इसके पश्चात् उसने मवाड में अपनी नई यात्राओं को क्रियावित करन में दीन कर दी । अपनी आज्ञा । जून 1922 का कपटिन बाघ को सुप्त कर वह 22 जून 1822 को यूगप यात्रा के लिए चला गया । वास्तव में इस प्राणवान और निस्वार्थ व्यक्ति पर भ्रष्टाचार तथा हिंदू मुसलमान जनता के साथ सहैव्यवहार एवं राजाशाह व सामन्तों में सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध का ब्रिटिश सत्ता को मजबूत बनाने के साधन थे उनका विपरीत प्रतिक्रिया का बनावरण बनाया गया वह उम्क लिए धार प्रयास का सूचक है । जिस नगर में उसने निष्ठा के साथ ब्रिटिश सत्ता का सेवा का शुभारम्भ किया था वहाँ उनका अपमानित किया जान लगा । भला एक निष्ठावान दूर-गों और मच्चा अधिकारी ऐसे समयमान का क्या सहन कर सकता था यदि हम स्वाभिमान का उगा हरण रूढ़ना है तो वह टाड के व्यक्तित्व में मिलता है । ¹³

एनाल्स की समालोचना —

टाड के व्यक्तित्व में एक उज्वल और नेवा भाव की भावनाओं का समन्वय था जिससे स्वयं एवं राजस्थान में उनका लोकप्रियता हा गई । सम्भवत 19 वीं शताब्दी में मान बाल सत्ताधारी अधिकारियों में वह अपनी सानी का एक ही था । ऐसे स्वभाव से उन न्यायि मित्रा परन्तु शाश्वत न्यायि उसकी कृतियों प्रमुखत 'एनाल्स' पर आधारित थी । संखक हान का राज यह था कि उसको धूमन फिरत सर्वेक्षण करने सामग्री इकट्ठा करने की प्रवृत्ति नैसर्गिक थी । अपनी राजकीय सवादा में जो उसे पुरमत्त मिलती थी वह इस दिशा में लयन में जुट जाता था । इतिहास लेखन पद्धति के भाषण एक इतिहासकार और नमाङ्गनास्त्री आज जानता है या उनका उपयोग वह करता है उनका समुचित उपयोग अपने समय में टाड ने अपना लिया था । बने उसने अपना कृतित्व के लिए कभी इतिहास का मना देने का आग्रह नहीं किया परन्तु उनके एनाल्स में दुर्लभ सामग्री स्थापत्य मुग्धा (20 हजार) निवानरुह लाम्पन 98ट पर बाल ऐतिहासिक माहिय साक माहिय और भाषण एवं जन सम्पक में ज्ञानकारा प्राप्ति त्वनाक के सभी प्रयोगों का समावृत्त पान में हम उसका कृतियों का इतिहास की सत्ता दन में कोई भाषता नहा । लता है प्राचीन गम

के इतिहास ने उस पूण प्रभावित किया था क्योंकि स्थापत्य की वश परम्परा के प्रारंभों के अध्ययन और प्रस्तुतीकरण में टॉड ने गिदन के लेखन शैली का उपयोग किया है जो कई प्रसंगों में स्पष्ट है। यदि हमें प्राचीन नवन या मन्दिर को धाका ला उसका ध्यान स्वभावतः राम के बसव की ओर खिंचा और उस स्थापत्य की विशेषता में भारतीय स्थापत्य का समावेश या सम्मानना स्थापित करने के प्रयत्न में लगाया। कुम्भलगढ़ की वक्षी में भी उसका यही प्रयत्न रहा है जो विशुद्ध वेदांत किंवा स बनाई गई थी जिसमें पश्चात्य कला का कोई सम्बन्ध नहीं था।

इसी प्रकार जब उसने राजपूत जाति की उत्पत्ति की खोज करनी शुरू की तो सीधियना के कुछ रस्म-रिवाजों की जानकारी उन राजपूतों के रस्म रिवाज व मायताओं को सम्मान स्थिति में पाया। राजपूतों की अर्चना-पूजा घाटा का अर्चन बलिदान और शीघ्र को उसने इसलिए सीधियन परिपाटि से जोड़ दिया। विद्वान महान्त्य की भून यह हो गई कि उसने गहराई से यह न साचा कि भारतीय संस्कृति के विशारदकाय दायरे ने सम्पूर्ण मध्य एशियाई एवं यूरोपिय संस्कृति को प्रभावित कर दिया था। इसी कारण उपरीय तौर से उसे सम्मानना स्थिति दी थी और उनी सम्मानना का विदेशी उत्पत्ति का स्रोत बतला दिया।

उसके इतिहास में बहुरंग को सम्बद्ध करने में स्थानों व वस्तुवाचिका का प्रभुत्व उपयोग करने से समय, नाम, यशानुप्रणाली आदि में भूलें हो गई निमज्ज लिए विवक्षी होने के नाते स्वाभाविक थी। अर्चन बना स धारणा तिन प्रश्न होने से हल्दीपाटी की स्थिति का निराकरण उम न हो सका अतएव उम धरावनी से सहाडा की पहाणिया में हल्दीपाटी हान का विवरण देना पडा वा गारमटात सा है।¹⁴ परन्तु उमके द्वारा किये गये सामाजिक विवरण में बड़ी जान स्थिति देती है क्योंकि गैर स्वयं जानकारी के लिए निवृत्त सम्भव में विश्वास करता था। अतएव हर तबके से निवृत्त पूछताछ की ओर उसने बाद धानवीन द्वारा उसने अपनी धारणा बनाई। परन्तु उमने यथन में नवजीवन का संचार हो गया। उमने प्राङ्ग, कुम्भलगढ़, आदि ऐतिहासिक स्थानों के अनावा महाराजा मानसिन्, महाराजा प्रताप आदि सभ सामविदों की ऐसी सहा संच वर रख दिया है कि जसे स्थापत्य बंधव शीघ्र और स्वभाव धांसी के प्राग नाच रहे हा।

इसके इतिहास लेखन में पौराणिक एवं ख्यात प्रणाली की भी मूलक प्रतिबिम्बित हाती है। भौगोलिक वनन और वन वनन में पौराणिक पद्धति का उपयोग उनके इतिहास में मिलता है। ख्याता में लिये रोचक प्रयोगों से वह बड़ा प्रभावित हुआ जिनका समावेश उसने 'एनाल्स' में बड़ी भावुकता से किया है। जसा ख्याता में बड़ी-बड़ी घटनाओं का जिक्र रहना है वेचक महोदय ने उनका भी प्रयोग यथा साध्य किया परन्तु ख्यात लेखन प्रणाली को कुछ हद तक अपनाकर कभी कभी ऐतिहासिक तथ्या का निभाव वह नहीं कर सका। टॉड की लखन हौन की ख्याति को प्रशंसा और लेखन सामग्री का उपयोग का प्रथम मोषान 'ना' हैस्टिंग के पत्रों द्वारा दृष्टिगोचर होता है। उसकी रिपोर्टों मानचित्रों व सकेतो का वितरीकरण सभी ब्रिटिश सेमों व अधिकारियों में किया गया जिनके पत्रम्बरूप चारा धार से उनकी प्रशंसा का ताता मग गया जो हैस्टिंग व प्रसेतो से प्रमाणित है। इस प्रारम्भिक प्रमाण के गम में इतिहास के साधन की विपुल सामग्री का मूल्यांकन 1806 में 1813 तक हा चुका था और उनकी भाषना एक अच्छे सम्राट्टक के रूप में हो चुकी थी।¹⁵

उसकी यात्रा बुद्धि का परिचय विंगना के प्रथम बार हुआ जबकि उसने कई मासिक और योजपूर्ण शोध प्रदत्त रायल एशियाटिक सोसाइटी में पत्रों, और उन्हें तथा अन्य लोगों को पेरिस एशियाटिक सोसाइटी का भेज। इन शोध प्रबंधों का विषय यात्रापूर्ण थे। जिनमें गुप्त मंदिरा, राजपूत वंश मेवाड़ के धार्मिक संस्थाना यूरोपिय एवं भारतीय मुद्राभा के प्रभाव शिलालेख व। जिसमें उनके पांडित्य का नीरभ देग विशेषों में प्रमाणित हुआ। पुनश्च जो सामग्री वह अपने साथ लखन में लाया था उसका प्रकाशन राजस्थान के अधि-कांश रायों के सदन में एनाल्स ऑफ एन्टीक्विटीज के नाम से पहली जिल्द 1829 में और दूसरी जिल्द 1835 में प्रकाशित हुई। उसने 1835 में अपनी परिचामी भारत यात्रा का प्रथम ममान्त कर लिया था परन्तु जब उसे छपवाने का वह 14 नवम्बर को उद्वन प्राया तो 27 घण्टे मूर्छित रहने और अन्त में निधन के कारण उनका प्रकाशन देखने में पाया। 17 नवम्बर 1835 ई. को 53 वर्ष की अवस्था में वह इस सगर से निरा हो गया।¹⁶

15 टॉड ट्रवल्स प 47

16 टॉड ट्रवल्स प 50 51

कनन माह्व की श्यानि उसक 'एनाल्स' पर अधिक आधारित है। परंतु उसका अक्षेपण प्रवृत्ति का परिचय बड़े तम जो यूरोपिय सभ्यताओं के सम्बन्ध में है व उसी आभा के साथ प्रस्तुति प्राप्त है। ता इस प्रश्न का उठना स्वाभाविक है कि तब उमन फिर राजस्थान का इतिहास क्या निर्या ? सबसे प्रभावशील कारण यही हो सकता है कि तब तक न यमुना और इंडस से बृहदेलसण के सर्वेक्षण न तथा एतल सम्बन्धी क्षत्र व जन सभ्यक के नोणा का स्थानीय लोक पायाया रस्म-रिवाजा तथा मायताया स परिचित करा दिया। मध्य भारत मध्य प्रदेश राजस्थान एक समुक्त प्रांत के अचला व अतिरिक्त राजस्थान के शीय और बनिदान की आस्था पिकाओं से वह बड़ा प्रभावित हुआ। जब जब वह अपने परिजनो को तथा मित्रो को पत्र लिखता था उसने सदा राजस्थान के निजी ममता का काफी जिक्र किया। इसी अर्थ में 1806 ई में उन्हें पि मसर के साथ बीनतराव मिथिया तथा महाराणा भीमसिंह की आ एकलिंगजी व मंदिर की मुद्राकात तथा सभभौते में सम्मिलित होना तथा कृष्णाकुमारी के धर्मा-नुपिक बलिदान की घटना को सुनकर उसका मन भर आया, उस उद्बग स कि भारतीय बलिदान की कसौटी पर उत्तरन वाल राजवश की यह टपनीय अवस्था है जिसको उभारना तथा प्रकाश में लाना उसका फज है। वह स्वयं लिखता है कि पहले-पहल राजस्थान के पुरखदार का उदार योजना का विचार यही स मन में उठा और उसी के बनीभूत एनाल्स लिखन की लालसा उमम जागत हुई। सम्भवत जब जब अक्सर मिला उसका सर्वे अभियात राजस्थानी शीय की कहानियों के मकलन में परिणित हुआ गया। इस धारणा के 20 वर्ष के अंतरान में राजस्थान की अधम तथा अग्रणी पाया प्रकाशित हुई। जिसमें अठ्ठा सदभाव, प्रेम तथा सौहार्द स प्रोत-प्रोत भारतीय शीय का विवरण है।¹⁷

इस देदीप्यमान टाड की कृति व कई अग्रजो में सम्बरण प्रकाशित हुए और उनके हिन्दी अनुवाद भी प्रकाश में आये। जो भी राजस्थान के शोध प्रबन्ध इतिहास में हैं या हाने "एनाल्स" एक उच्च कोटि का मारव मध्य की परिभा बनाय हुए है। शाय सस्थामा का ये दाखित है कि राजपूत वंश की उत्पत्ति मामत प्रया वणजम राजनतिक स्थिति, पुराण रिवाज व भारतीय रिवाजा की तुलना, राजस्थान की आधिक दशा आदि विषया को लेकर कुछ मायताया पर प्रकाश डालन का शुनारम्भ करें।

जब कुछ विचारक इस अनुपम ग्रन्थ को पढ़ते हैं तो यह शका उनके मन में उठती है कि टाड ने राजपूतों की प्रशंसा कर एक हिन्दू-मुस्लिम विद्वेष की भावनाओं को बढावा दिया। कुछ विचारक तो यहां तक लिखते हैं हिन्दू मुस्लिम अन्वय का जन्म दाता या ऐसा करने से वह ब्रिटिश सत्ता की जडा को मजबूत बनाना चाहता था हम इस दलील को दो भागों में बांटते हैं एक तो यह कि राजपूतों की प्रशंसा के पक्ष में एक राजनीतिक चार थी और दूसरा यह पक्ष कि वह ब्रिटिश सत्तावादी नीति का पोषक था। गूँ विचार करने पर ये दोनों दलीलें सत्य की कसीटी पर नहीं उतरती।

यदि हम एनाल्स के प्रसंग को लेता लगता है कि टाड जाति विरोध का राजनीतिक प्रेरणा से प्रसन्न नहीं था। वह तो तर्क का खोजक और गुण चाहक था। उसने राजपूतों की प्रशंसा जाति विरोध के नाते नहीं कर शीघ्र महाम बलिदान त्याग आदि गुणों को लेकर की थी। जहां उसने इन में दोष देखा है उनकी उपेक्षा नहीं की है। वह चिन्ता है कि राजपूत गुण और अर्थ गुण और दुराग्रह के समिश्रण है। अर्थात् गराज आपनी बमनम्ब आर अर्द्ध दक्षिणा जो उनमें पाई उनकी उपन सुनकर निम्ना की है। वह लिखता है कि पुरानी मान्यताओं के कारण उनमें बद्ध कराबिया भी गई थी। य लाग दूररा की आवा में देखते हैं और दूररा के बर्ना से सुनते हैं।¹⁸ जहां प्रताप¹⁹ का शाय का बखान है तो अपने अर्द्धे मित्र भीमसिंह²⁰ का वार में उस बुद्धिमान संहिष्णु और मिलनसार कहने के साथ लिखावे में विश्वास करने वाला अनियमित जीवन का आगे तथा उत्तरता में अविधिक बतलाया है। उदयसिंह की शीघ्र की जहां दुहाई दी है उनके बहु विवाह के दुष्परिणामों को भी खूब किडका है।²¹ भरिसिंह को तो अनिष्कारो बुद्धिमान बनना था है।²² जयपुर का महाराजा मायासिंह और ईश्वरसिंह तथा राजमाना का पक्ष में और अत्रिपरिपत् की अदूरक्षिता का नाम स्वल्प प्रशंशित करने में उन्ने कोई नसर नहीं रखी।²³

जहां हम मान्यतादीन नरेशों के बल और धीरस की प्रशंसा उनकी

18 टाड एनाल्स पृ 136 आर पी भा 2 पृ 30

19 टाड भा 1 पृ 397 400

20 टाड दूरवत्स पृ 34

21 टाड एनाल्स भा 1 पृ 372

22 टाड एनाल्स भा 1 पृ 496

23 टाड एनाल्स भा 3 अध्याय 6 पृ 1361-1362

कृति में पाते हैं वहाँ विद्यने नरेशों की एकानता, राजनीतिक लघुता घातक विरोध, ब्रू डावत शक्तावता का घमनस्य जिसको उसने निरिद्ध प्रमाणित किया है।²⁴ साथ ही साथ उसने घनमर व खानियों की कृति चारणों व ब्राह्मणों की मांगने की प्रकृति कई नरेशों के सलाहकारों की सुध नीति को अच्छे लक्षण की सजा में नहीं लिया है। जालमसिंह की प्रशंसा²⁵ की है ता जोधपुर के महाराजा भीमसिंह की निंदा भी की है। इसी प्रकार महाराजा जसवंतसिंह की दिलीरी का बयान उसकी पुस्तक में मिलता है वहाँ उसने धीविर्य और गव को ठीक नहीं बतलाया है। उसने जसवंतसिंह की कभी भयन उद्यान की प्रयत्नशालता में ही रचि रखना बतलाया है यह बतलाते हुए कि यदि वह जयपुर से मिलकर औरगजब की नाति का विरोध करता ता राजस्थान का इतिहास ही दूसरा होता। विजयसिंह के बारे में वह लिखता है कि उसका नसीब में विजय निधी ही नहीं थी। यदि मारवाड़ निबल हुआ तो उसमें गुनाबराय पासवान का प्रभाव एक बड़ा कारण था।²⁶ जसवंत के बरीसाल, मूलराज और सालमसिंह के पद यत्रा का पर्दाफाश करने में उसने कोई कसर नहीं रखी। वह लिखता है कि जयपुर की राजमाता ब्रू डावतजी पर महारत पीवान का प्रभाव राज्य का निबल करने में एक प्रमुख बिंदु था। पुन वह लिखता है कि जालमसिंह के समय एक दर्जी और बनिव की काजिग न जयपुर राज्य की धार्थिक स्थिति का निबल बना लिया था।²⁷ जब हम उस राजपूत जाति का प्रथमक कहते हैं तो एक तथ्य वक्ता व हमारे पहनू को नहीं देवते जिसमें वस्तु स्थिति पर पर्दा डालन की कभी काजिग नहा की।

इस प्रशंसा या निंदा में काँ राजनातिक चाल नहीं थी। वह एक सच्चे इतिहास की भलक थी जा टॉड ने प्रस्तुत की थी। घनएव य कथन निराधार है कि वह राजपूतों का चारण और भाट था या उनकी प्रशंसा उसकी एक राजनीतिक चाल थी। या वह हिन्दू मुस्लिम विभेदक प्रकरण का एक मदाता था। वास्तविकता ता यह थी कि जो उसने मूल्या कर में जमा प्रमाणित हुआ उसने उस उसी दग से प्रस्तुत किया एमी

24 टॉड एनाल्स भा 1 पृ 417

25 टॉड एनाल्स भा 3 पृ 1613-1619

26 टॉड एनाल्स भा 2 पृ 986-988

27 टॉड एनाल्स भा 2 अध्याय 13, पृ 58, टॉड का पत्र पृ 1

टॉड एनाल्स भा 3 पृ 1363

स्थिति में रणभेद या घम भेद भाति की वर्षा उनके दृष्टिकोण में बतलाना मवया समगत है ।

टाड के एक पन्थ पर प्रकाश डालना आवश्यक है जो उसके कृतित्व तथा व्यक्तित्व से सम्बन्धित है । उसके रक्त में स्फोटलण्ड जैसे स्वतंत्र प्रेमी सम्भाग की पितृ परम्परा के सस्वारों का सपुट था । इसका पिता व प्रपिता ने वहाँ के स्वतंत्रता का आन्दोलन की पन्थापना को दखा था । इंग्लण्ड द्वारा छपनाई गई दमन नीति का रोप अब भी जागत था । इनके दास्तानों का सुनकर जानक टाड में स्वतंत्रता प्रेम ज्वालत होना स्वाभाविक था । पुनश्च इसका जन्म प्राप्त की राय ज्ञानि के तीन वर्ष पश्चात अर्थात् 1782 ई में हुआ था । इन्हीं दिनों इंग्लण्ड का जनमत प्राप्त ज्ञानि का पन्थ घर था । फोक्स²⁸ के लेखा में प्राप्त की ज्ञानि ने समानता स्वतंत्रता और एकरता के सिद्धांतों का पूरा प्रतिपालन था और इन सिद्धांतों को सर्वत्र बड़ी शक्ति से पन्थ जाता था । वहमवध और कालरिजी की कविताप्राप्त भी इन भावों की स्पष्ट झलक थी जिनका इंग्लण्ड में बड़ी मायता थी बालक टाड इन जनमत के धानावरण में पन्था था और उसका आस्वादन किया हुए था । वह स्वयं एक प्रसंग में लिखता है कि मैंने मोटोमवडू हयूम मिलकर तथा गिबन के शब्दों का अध्ययन किया है और उन भावी प्रकार समझा है । हम जानने हैं इन महान विचारकों ने स्वाधीनता और स्वतंत्रता के महत्व पर बहुत बल दिया है । मतलबित पिछरे आदि इतिहासकारों ने इन लक्षकों को स्वतंत्रता के जाग रण के अग्रदूत कहा है । टाड को स्वतंत्रता प्रेम की यह पृष्ठ भूमि और उनकी इसका प्रति समता का अन्वय उनके चर्चन में कई स्थलों में मिलती है । राजपूतों के स्वभाव की प्रशंसा में गहराई में पन्थ कर वह लिखता है— In domestic circle restraint is thrown aside and no authority controls the freedom of (their) expression वह फिर लिखता है Their independence is sacred

इसी स्वतंत्रता की ज्वाला का प्रयोग करने अपनी नीति में भी खुब निभाया है यही एक प्रमुख कारण था कि उनके ऊपरी अधिकारी उसके विचारों से महमत नहीं थे । अभाग्यवश भारतीय मता नीति के तीन²⁹ स्तम्भ उसके पूर्व थे । वारेन हस्तिना मतापारी नीति के पन्थ से देरहमी का नजारा

28 टाड पन्थान्म प 147

29 पन्थीसन ट्रीटीज भा 3 प 102 103, 137 322 आदि ।

अपनी काली करतूतें बता चुका था। बेलेजली की एलाइंस नीति न घोषण की प्रतिक्रिया का नम्र नाच भारतीय रणमंच पर प्रदर्शित किया जा सबविदित है। इसी तरह साइ हेन्स्टिग्ज ने इसी नीति का परिवर्तन कर कई देशी राज्या को दबाकर ब्रिटिश-समुद्र के गिबार बना दिया था। उदारवादी टॉड को इस दूषित राजनीति के वातावरण में काम करना था। भला जम में स्वतंत्रता के विचारों की जमघूटि से पापिन टॉड इन अमानुषिक नीति का ठीक ठीक किस प्रकार परिपालन कर सकता था। वह अपने एजेंट पद से इस सत्तावादी नीति की आलाचना करी जबान में करता रहा और इससे उसके विरोध की सामग्री इकट्ठी होती रही। यही कारण था कि वह केवल स्वतंत्र अधिकार का प्रयोग केवल कुछ वर्ष ही कर पाया जिस अवधि में जोधपुर और सिरोंही क्षत्र उसके अधिकार में अलग कर दिये गये और जससमर और मेवाड़ के दावरे में भी उस पर अकुश सगा दिया गया। स्वाभिमानों टॉड को विवश होकर अपने उत्तरदायित्व से मुक्ति लेनी पड़ी।

अपने 'एनाल्स' में तो उसने 'एलाइंस' नीति की जो भरकर निंदा की है और अपनी सरकार को आगाह किया कि भारत में ब्रिटिश सत्ता इस नीति से स्याई नहीं हो सकती। वह लिखता है—'With our present system of alliances so pregnant with evil from their origin would lead to fatal consequences

जब उसके ऐसे विचारों का संपदन कर ऊपरीय अधिकारी उन अपनी नाति का समर्थन रियासतों के हिता में अद्ययुग की भांजी बदलाने लग तो इसके प्रतिवाच में उसने लिखा कि जो पवित्र सतयुग की दुहाई आप देकर राजाओं को गुमराह कर रहे हैं वह ठीक नहीं। मुझे सच है कि क्या ये लोग अपने भाइयों का सूटी पर टांक दें? क्या उनकी तलवारों का प्रयोग इस जातन में किया जायगा और क्या उनकी डाला का प्रयोग टोकियों के लिए होगा?' ब्रिटिश सत्तावादी नीति का संपदन करते हुए लिखते हैं—our glory is smouir than reality our conquest is like Alexander is conguss! वह हस्तक्षेप नीति का विरोध में साहस से लिखता है कि इन राज्यों में हस्तक्षेप करना घातक प्रमाणित होगा और इससे विवाद और भगड पड़ेंगे। यदि हम उनके विरुद्ध अर्थों के प्रयोग से दयनीय नीति को अपनायें तो वह नीति इन राज्यों का निराधुमकेतु बनगी। यदि हम इनका विनीनीकरण करेंगे तो राज्यों का विस्तार करेंगे तो इसका फल यह होगा कि हम उनमें उनकी प्रसन्नता छीन लेंगे

घोर हमसे अपना स्वाद्व छोना जायगा । ये लोग हमारे तभी तक मित्र बने रहेंगे और अन्ध मित्र साबित होंगे जब तक उन्हें अपने परम्परागत अधिकार तथा सत्ता को बनाय रखने का भावसाधन न दिया जायगा और जब तक उनका आंतरिक मामला में जसा कि किया जा रहा है, हस्तक्षेप अनुचित होगा ।

बने टाड के उच्च अधिकारियों के लिए टाड के ये विश्वास भिन्ना एवं ममता पूर्ण निस्सर्ई दिया परन्तु उसके पीछे छान जाने लाड बनिय न भी अपने पत्रों में स्पष्ट स्वीकार किया है कि ब्रिटिश राज्य यहां के स्वतंत्रता के विचारों का तभी मुकामला कर सकेगा जब तक उनका जहाजी बडा मजबूत बना रहेगा अन्यथा यहां ब्रिटिश राज्य 50 वर्ष से भी अधिक नहीं टिकन पाएगा । देविय टाड के विचारों की समिति किस प्रकार बनिय जस मत्तावादी पराप्त व अपरोक्ष रूप में समर्थन करते हैं । ये टाड के इतिहास चलन की गरिमा है जिसेका पहुंच पाना दुसाध्य है । रोस ने अन्ध इतिहास चलन की मजा में स्पष्टवादिता सत्याकन और साहस को प्राथमिकता दी है । इस गुण का समर्थन टाड की कृतित्व शक्ति में पूणत पाया जाता है । यह मानता था कि जहां हम किसी जानि के घम मायता व स्वतंत्रता पर धाधान पहुंचाने हैं तो हमारी भी वही गति हागी जो विश्व के बड-बड राज्या का भी प्रकृति के फलस्वरूप हुई थी । इस प्रकार की बात अपने मत्तावादी स्वामियों को रचिकर नही हूँ जो एक कटु सत्य था ।

टाड की कृति में कई ऐम स्थान हैं जहां चलन में चित्रण का समावेश है जिसे Penpicturing कहन है इतिहास में घटनाओं की उपस्थिति का चित्रण कर उनमें उसे प्राणवान बनान में कामन किया है । घामू के शिखर की चोटिया से प्राकृतिक छटा का वरणन जिसेम नयी नाते घाटिया समतल मदान हरे-भरे मत सम्मिलित हैं ऐसे दृशिय गये हैं कि व एक माथ घाँवों के समतल नाचन मच हैं । यहां तक राजस्थान के मूने मन्स्थल के वणन में आत्मा का फूक कर छोटे घास फूस, दुप्रोप्य शोमिस चलते फिरते रतीले टीने व बनती-बिगन्नी भीपडिया के दिसाव में उमर कामन ही निखाया है । जब उसकी कलम तक्षण के विश्वपण में उतरती है तो हाव-भाव नाच-गाना वस्त्र और आभूषण वाला मूर्तिशा का माभास्कार आना के शारा उतरकर हृत्पणम हो जाता है । रगवपुर बढोनी कीनस्थम्भ, मण्डार के नाक्येव घाटि का स्पष्टीकरण जितना मुनन के द्वारा नही जा मजता वह उमकी नमनी ने चित्रित कर लिया है ।³¹

31 टाड एनाम भा I पृ 275 277 289, 290, 515 670, 671

जहां सामाजिक तथा धार्मिक जीवन के इतिहास का प्रश्न है टॉड ने उमका प्रथम बार उजागर किया है। यह परिपाटी श्यामलदासजी व घोभाजी के इतिहास में नहीं देखी जाती। भरो ता मान्यता है कि जितना राजनीतिक इतिहास उसने लिखा है उसमें भी धार्मिक उसने जन जीवन, जातिगत रस्म-रिवाज, धार्मिक मान्यता त्योहार आदि के बारे में हम जानकारी दी है। जहां-जहां यह गया वहां की उपज पशुधन, सनिज, धावोहवा उमकी धारों में धारण न हो सकें जिन्हें उसने अपने सखन में उचित स्थान दिया। यहां तक कि निकार बुझता वादित्र खास ध्यवस्था में धौपधियो का प्रयाण आदि के वखन में उसने बखान कर दिया। मर, भील, भाट आदि के रस्म रिवाज और जन-जाति में यहां तक कि तरदली के वखन में जान डाल दी। जतयाथा फाग हानी दीवानी नाग पक्षमी बसत पक्षमी रथा वघन, गनगौर सत्राणि आदि धार्मिक व सामाजिक पर्वों का चित्रण बडा खूबी से कर डाला और उनक अतगत आंगिकिया का बखान नहीं छोडा। इतिहासकार में एक अच्छे समाज शास्त्री का जान हाना चाहिये और उसक जरिये इतिहास में बस प्राण प्रतिष्ठा है। सकती है, उमे हम टाड की पत्र कर खीलना हागा। उनीमवी नदी में इस धर्म को ब्यापकता से सम्मान देना टाड की धर्मभ्यता है।² टाड के एनाल्स में एक विशिष्टता बिल क्षणता लिए हुए है। क्वाकि यह राम, धीम इजिप्ट, सीरिया आदि देशों के इतिहास व लोक कथाओं और महापुरुषों के चरित्र का अच्छा पाता था और जब उसने भारतीय इतिहास पुराण लोककथाओं की जानकारी सुनकर या पढवाकर ली ता उस कई भारतीय और महापुरुषों के चरित्र में सम्यता लाई दी।³ इस स्थिति से बह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि सांस्कृतिक धर्म न प्राकृतिक सीमाओं का बहिर् प्रवराध नहीं है। जीवन व सस्कृति की धारा का प्रभाव परिवर्तन रूप स मुद्र-युगांतर में प्रवाहित हाता रहता है। इसका आधार मानकर उसने 'स प्रकाह का वग पश्चिम स पूव की ओर माडा यथाकि भारतीय बकि सांख्य की जानकारी के अभाव में उमे पाश्चात्य सस्कृति का समृद्ध जान पश्चिम स पूव की धार स गया। सांस्कृतिकता ता यह भी कि बदिह सस्कृति का प्रभाव ब्यापक रूप में मूरार व मध्य एशिया का ओर बडा इन मुद्र तत्त की ठीक पहिचान न होन से जमा कि ऊपर निग घार है कि राष्ट्रपूता की सीधियन और उनक रस्म

32 टॉड एनाल्स भा 1, पृ 74 79 85 86 - 91 140 141 168
180 धारि

33 टॉड, एनाल्स भा 1 अध्याय 1 2

रिवाज जस अस्त्र व अश्व पूजन स्त्रियो की स्थिति का उनम जोड दिया।³⁴ कुम्भलगड की वेदी को भी पारचात्य सत्यता का नमूना बतनाया । फिर भी विलक्षण बात यह भा दिखाई देती है कि टाड न सस्कृति के स्वरूप में एकता का अनुभव किया जो मानव एकता की धारा का मूलाधार बना । यहां की जनजाति में कल्ट का समावेश राजपूतों में साधियन एवं नीच में गया तथा से तुकिस्तान, तोरएणार को बोधिक राम का सका यात्रा का मनोपोटा-मियन अभियान तथा प्राचीन यूनानी फारसी रोमन अजियन गोय आदि नामों को Indo Gothic एवं Indo sythenia की सजा दी । हल्दीघाटी³⁵ की विशिष्ट और विशाल क्षेत्र की तुलना धर्मोपोली में कर क्षत्रफल और परिणाम की अपेक्षा भावात्मक घटना में समानता का समावेश किया । फिर भी इन समानताओं में टाड को तुलनात्मक अध्ययन करने का दृष्टिकोण और सांस्कृतिक सम्बन्ध प्रणाली को प्रधानता देना इतिहास का एक उपाध्ययन मानना समीचीन होगा ।

इतने बड़े ऐतिहासिक धन सचय का पिटारा अब भी अन्वेषकों की ओर झुक रहा है । हमारा मतभ्य है कि इनमें ध्यान बाल सङ्गित घटनाओं को फिर से सजोया जाय । और जित्त मायताओं का बनमान युग की नीति और रीति में स्थान है उन्हें दर्शाया जाय । विश्व एकता का जा सुत्र 'एनाल्स' में निहित है उसका छोर टूटा जाय । बश परम्परा का कटिया व पारचात्य व पूर्वोय देव श्रवना व पारस्परिक सम्बन्धों का ठीक से अनुसन्धान अपेक्षित है । यदि हम इन विश्वसता एवं श्रवता का तारतम्य बिना सकें तो हम उस महान भात्मा को धारवत शांति का भागीदार बना सक्य ।

कनक टाड में एक अन्ध व उदार प्रशासक होने का गुण है । वह प्रजा पर अपनी सत्ता थोपने का बजाय उनकी वेदना समझने का प्रयत्न करता था । वह मानव भावनाओं का अन्वेषण परसिया था । जब वह नीचा व पलाका में गया और उनकी मनोवृत्ति का अध्ययन किया तो उनमें उनका उग्र स्वभाव तथा लूट कसोट की प्रवृत्ति का विश्लेषण करते हुए ठीक निरूपण किया कि नीच प्रारम्भ से इस भूभाग के स्वामी थे जिसेको उनसे छीन लिया गया । ये बात उनको हरदम चूभ रही थी जिसका विशिष्ट लूट कसोट का वृत्ति में होता था ।

34 टाड, एनाल्स पृ 70 98

35 टाड एनाल्स, भा 1 पृ 393 - 394

अतएव एक उदार प्रणामक के रूप में वह अपनी यात्रा के वर्णन में लिखता कि उनके स्वामित्व का पदजाना उनको जंगलों की सम्पत्ति को निशुल्क उपयोग करने का द्वार हा दिया जाना चाहिये । यही कारण है कि भीलो के साथ की गई संधियाँ में उस प्रकार की व्यवस्था में टॉड का भाग्यमान बढ़ा महापक बना । 'याव सम्बन्धी नियम बनाने में भाउसका दृढ़मत था कि वह नियम या कानून नहीं है जिसमें समानता और मद्भावना न हो । मकान न भा इसा प्रकार के विचार कानून के सम्बंध में लिखे थे । व लिखते हैं कि— *We propose no rich innovation we wish to give no shock to the prejudice of any part of our subject without wounding religious or caste feelings* ।

टॉड का हृदय द्रवित हो जाता है जब यह किमानों की स्थिति का वर्णन करता है । वह हमेशा साथ साथ बराबर शक्ति के विरोधी रहा । उसने पंचवर्षीय एवं निश्चित लगान जो उसका पूर्व शासक मानते आये थे उसका विरोध किया । मेवाड़ में प्रचलित लाटा व डूता जिसे सभी प्रामोण पसंद करते थे वह भी उसका पक्षधर था । अपने 'एनाल्स में किसानों की अननीय दशा पर टिप्पणी करते हुए उसने लिखा है कि किमान राजकीय दबाव की चक्की में पीसा जाता है वह ठीक नहीं है । गोला प्रथा तथा साठुकारी शिवाज का भी वह कभी पक्षधर नहीं था जो उसके उच्च विचारों का प्रतीक है । इन सभी प्रथाओं की निंदा करते हुए वह लिखता कि यह सभी अयवस्थित समाज के पोषक तत्व है जिनका आधार लोभ और लूट की प्रवृत्ति साथ है । एक प्रनुत्ता के पुत्रों में जिनका साहस था और कुचल हुए व्यक्ति के प्रति कितना मोहूद³⁶ । आज के युग में सत्ताधारियों के लिये टॉड की नाति प्रेरणा स्रोत बन सकती है ।

कमल टॉड और मेवाड़

कमल टॉड 1806 में सिंधिया तथा अपने अधिकारी के साथ मरा प्रथम मेवाड़ में आया । यहाँ महाराणा भागवत के मित्तन के पक्षधर ने उसे उत्त राणा के रहने सहने, वातचार और व्यवहार में परिचित करा दिया । उसने महाराणा की प्रशंसा में लिखा है कि उसमें एक सम्य और पिच्छ राजा के पूर्ण लक्षण विद्यमान हैं । सम्भवत वह उसी समय से महाराणा का पूर्ण प्रशंसक बन गया ।³⁷

36 टॉड ट्रेवल्स, भा 1, प 19, 32, 208 201

37 टॉड एनाल्स, प 545

भाय्यवश महाराणा भीमसिंह का प्रशासक टाड मान्यूस हेस्टिग्स के द्वारा 31 जनवरी 1818 ई के आदेश द्वारा राणा के दरबार में उसका प्रतिनिधि नियुक्त किया गया और उसका शासकीय पद एजेन्ट टू द वेस्टन राजपूत स्टेट निरूपित हुआ जिसका वेतन 1500/ रु मासिक था । जब जहाज पुर के माग से वह नापारा पहुँचा तो उसको बंधाई देने के लिए एक सरदार गया और वहाँ से सौटने पर उसने मोतीमगरी जो उदयपुर से 2 मीन की दूरी पर है वहाँ उसके स्वागत की व्यवस्था की गई । राजकुमार जवानसिंह ने टाड को विद्यार्थे हुए बालिन पर 8 माघ 1818 को प्राणवानी कर एक शान्तार और शालीन ढंग से स्वागत किया । कनल टाड राज कुमार के आचरण से इतना प्रभावित हुआ कि वह लिखता है कि राजकुमार में प्रताप के बशज्र होने के विनाश और शालीन गुण विद्यमान थे ।³⁸ टाड को मूरजपोल द्वार से नगर में प्रवेश कराया गया और उसके ऊहरने की व्यवस्था रामप्यारी³⁹ बाग में की गई जो एक चाकोराकार भव्य भवन था जिसमें आवास के कई कमरे बीच में दालान जिसके तीनों ओर बरामदे थे । महाराणा ने एजेन्ट की महमानदारी में एक सौ बाल पिठाई मेक व फला के भोजे साथ ही एक हजार रु की घेती सेवकों को वाटने के लिए भेजी गई ।

दूसरे दिन टाड को चार बजे राजप्रासाद में निमन्त्रित किया गया और भ्रमणवानी में भन्नी, मुसददी, सरदार और राजकीय सवाजमा भेजा गया । इसकी सवारी भटियानी चाहेटे से जपेश चोक होती हुई महला पहुँची । स्वयं टाड न राज महला तथा माय में जन समुदाय भाट गायक आदि के उल्लास का अच्छा बरण किया है । त्रिपानिया और गणेश डयोडी हात हुए उस ल जाया गया जहाँ बाजीराव के साथ महाराणा की मठ हुई थी । मन्मल की दरी पर गन्गी थी और उसके सामने एजेन्ट को बिठाया

38 वही पृ 549 हकीकत वही में भीमसिंह ने टाड का औरचारिक पुन स्वागत सवाजम तथा सरदारा के साथ मूरजपोल दरवाजे पर किया । हकीकत पृ 46

39 रामप्यारी महाराणा हमीरसिंह (सि)की कृपा पात्र आता थी जिसका राज दरबार के काम में बड़ा प्रभाव था । यह बाग पुराने तापमानों के निकट स्थित है जिसमें आजकल राजकीय प्रायुर्वेद रसायनशाळा तथा एक शोध संस्थान चलता है । मुम्बयार पर कनल टाड के नाम की एक प्लेट भी लगी हुई है । मन्मल घब जीएन सीएन दशा में है ।

गया और उनके शोना और मन्थार व पामधान तथा पीछे अनुचरों की पत्कि थी । कुछ समय बातचीत के उपरांत अनुर पान की रस्म पदा की गई और उसे एक हाथी व घोड़ा मय साज-सज्जा के बण्ठी आदि उपहार म दिये गये । 40

उस दिन महाराणा भी एजेट की रेजीडेन्सी गये और औपचारिक चषा व भेंट म सजा युक्त हाथी, घोड़े, शाल ढाणें व कीमती वस्त्र व जवाहरात से भावसी सम्मान की रस्म पदा की । 41

सन 1818-1821 के माघ इन चार वर्षों म(1818-1821) में महाराणा का सम्पर्क इतना घनिष्ट हो गया कि दशहरा, दीपावली होनी आदि त्यौहारों तथा चौगान पर हाथी घोड़े जैसे आदि की दौड़ व सटाइया म टाड का आमन्त्रित किया जाता था और हर समय बड़े सम्मान के साथ विग्न की रस्म पदा की जाती थी जिसका विनाश बचन महाराणा भीमसिंह की हकीमत बहियो⁴² में उपलब्ध है । इस प्रकार के सम्पर्क से दोनों के मधुर सम्बन्ध रहने और जिष्टाचार पूरा व्यवहार की जानकारी हम मिलती है । कोई भी उत्सव या त्यौहार राजकीय रूप म मनाया जाता था टाड की उपस्थिति उनके महमानों के साथ हाना अनिवाय सा होता था ।

जब टाड मेवाड़ का एजेट बनकर आया उस समय लगातार पूष के तीन चार महाराणाओं के बालक या अयोग्य होने और राय प्रबाध में अध्ययन, सरदारा म फूट और राज परिवार म यह कलह आदि होने से मेवाड़ की आंतरिक स्थिति बहुत बिगड़ गई थी । भरतों के समय-समय पर होने वाले आक्रमणों ने जन-जीवन को अस्त व्यस्त कर दिया था । राय की आर्थिक व्यवस्था ऐसी खाली हो चली थी कि राजकोष में धान वाली रकम मुकान्तारों की जेबों की भरती थी । जागीरदारों ने भी खालसा भूमि का अधिकांश भाग अपनी-अपनी जागीर में सम्मिलित कर दिया था । सरकारी चुगी की वसूली अवध रूप म अधिकारी वगैरे हथप लेते थे । केवल भीतरी गिर्वा के परगनों व आस पास व गांवों स सरकारी रकम वसूल होने पाती थी । चारों ओर डाकुआ व आन्क से जन और धन की हानि होना एक स्वानाधिक घटना बन चुकी थी । चू टावतों और

40 टाड, एनाल्स, भा 1, पृ 549-550 42 बही पृ 551-55

41 बही पृ 553

42 हकीमत बही, महाराणा भीमसिंह न 25, 27, 28

शक्तावतों का पारस्परिक विरोध बढ़ता जा रहा था। महाराणा का राज-
 राज चलाने के लिए इधर उधर से कज का प्रबन्ध करना पड़ता था।
 छोटे-छोटे सरदार भी विरोध के माग को अपनी परतुने लगे थे। भील भी जंगली
 इलाकों में लूट कर्माट पर उतरा था।⁴³ बस मवाद की स्थिति शान्ति थी इसमें कोई
 सन्देह नहीं परन्तु इस स्थिति का चित्रण जो टाड ने किया है वह अतिरिक्त
 अवश्य है। जब टॉड 1806 में सिन्धिया की सवामें रहने वाक अपनी राजसूत के साथ
 पहल-पहल मवाद में आया ता उसने जसा कि वह लिखता है कि मवाद
 की दशा अच्छी थी परन्तु जब एप्रैल के रूप में 12 वर्ष के बाद पुनरा
 आता है तो वह लिखता है जहाजपुर हाकर कुम्भलमर जात हुए मुक एक
 सौ चालीस भील में दा कटरा के मिखा और कही मनुष्य के परा के विह
 तक नहीं सिद्धाई थिये। जगह जगह अबूल के पड़ सके थे और राम्ता
 पर घात उग रहा थी। उजड़ गावा में चीन सूझर आति बय पट्टी
 ने अपने रहने के स्थान बना रखे थे। भीलवाण जा एक मरसहन कर्म
 था, तथा मवाद में व्यापार का केन्द्र था और जहा 6000 घरों की आवाणी
 थी बिल्कुल उजड़ गया। महाराणा का बवल उन्पवृत् चित्तौड़ तथा
 माडल पर अधिकार रहे गया था और सना रखने के लिए उमके राज्य
 की आय काफी न थी। उम समय राज्य की आर्थिक दशा ऐसी थी कि
 महाराणा को अपने खच के लिए कान के जानममिह भाग में रूपय उधार
 लेने पड़त थे। मेर और भील दशा से निवले कर मुमाफिरी का त्त
 थे। रूपये का सात मेर हुए चित्तौड़ था जब कि मवाद के वाक चित्तौड़
 सर। महाराणा के तवल में 50 मदार भी नही रहत थे और काठारिण का
 सरदार जिसकी जागोर की सामाना धामन्ना १०० 50 000 रूपय थी अब
 एक भी घोडा रखने की स्थिति में नहा था।⁴⁴

वह फिर एक जगह लिखता है कि उन्पवुर में जहा 50 हजार
 पर आवाद थे वहा बवल तीन हजार रहे गये थे। ता आश्चर्य का वाक
 है कि स्वयं लेखक जब रामप्यारी वाक से राजसूत जा रहा था ता वह
 लिखता है कि हजारों नागरिक स्त्रिया वाक बच बनारा में उसका जय

43 टाड, एनाल्स भा 1 प 553 - 555 आभा उन्पवुर राज्य का इतिहास
 भा 2 प 673 703

44 टॉड एनाल्स भा 1 प 554 555 आभा उन्पवुर राज्य का इतिहास
 भा 2 प 702 703

जयकार कर रहे थे और वदिना के मृत्यु गान और कविता को बड़े शाय से दिया व सुना जा रहा था। यहाँ तक कि लोग उसको पारिवेशक देकर प्रोत्साहित कर रहे थे। महल के प्राणण में भी बड़ी भीड़ थी इस विवरण से तो लगता है कि उदयपुर की आबादी तीन हजार पर से कई गुना अधिक थी।⁴⁵

ऊपर के वर्णन में अनेक विरोधानास हैं जिनकी महाराणा अग्निह (ग्नि) भामसिंह तथा जवानसिंह की हकीकतों खतूनियों और भण्डारा के रिवाजों से स्पष्ट किया जा सकता है। जहानपुर से कुम्भलमर के एक सौ चालीस मील में टॉड को एक भी मनुष्य के पद चिह्न न मिलना निराधार है। क्योंकि उपरोक्त साधना में उस भू भाग से जिसका जिक्र टॉड ने निरजन होने का निरूपा है वह आबाद था और उसके अंतर्गत सखड़ी गाँव में जमान चुगी आग्नि बमून होते थे। भीलवाड़ा का भी वीरान बताया गया था और यह दावा किया गया था कि टाड के आने पर लोग हर्षोल्लास में लौट रहे थे। परन्तु तत्कालीन मापन इस बात के साक्ष्य है कि उस अवधि में बगल हाट और बाजार लगते थे। महाराणा के पास केवल उदयपुर, चित्तौड़ और माडलगढ़ रह गए थे इसमें भी मृत्यु कम है। हुर्डा, महाडा भीतरी गिर्बा, जावर आग्नि भागा का लगान व दाएँ राजकाय में जमा हात थे। यहाँ तक कि जावर से 50 000 का राशय की वार्षिक आय हाती थी।⁴⁶

नीमसिंह का आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में टाड लिखता है कि ज्ञानसिंह (कोटा) तथा वापना से वज्र लेकर अथवा दैनिक धन्य की व्यवस्था करने की इतनी थी और अथवा गहन जेवर भी ब्रेचना पड़ा था। परन्तु पाठ की आधारी का बहिया और राज्य की प्राय-धन्य के लवा की बहिया से असा स्थिति नया जगता। रोजमर्रा की पोषाक और मान व जवाहरात नामसिंह उपयोग में लाते थे और त्योहार पर तो इससे भी अधिक मूल्य की पोषाक और आभूषण काम में लाये जाते थे जो कपडगार भण्डार और पाण्ड की घोवरी में लिए जाते थे, और उन्हें दैनिक बहिया में दर्ज किया जाता था।⁴⁷

इसी तरह वह लिखता है कि महाराणा के पास पचास घोड़े

45 वही भा 1 प 550 वही न 25 नगीनावाडी दि स 1875

46 हकीकत वही अग्निह (ग्नि) व हकीकत वही नीमसिंह 1875-1880

47 पाठ की घोवरी व कपडगार बहिया 1861 1885

नहीं थे जी घपनी सवारी के अवसर पर उपनयन हो । वस्तुतः स्थिति ऐसी थी कि महाराणा के तबले में नए नए घोड़े खरीद कर दाखिल किए जाते थे उनकी सूची और उनकी नामावली पचास से बड़े गुना अधिक थी । तबले भी दस के लगभग थे । त्रिनम घोड़े रखे जाते थे और ताम घोड़े को सापसी रोजाना दी जाता थी । साता की पायगा नीका की पायगा सरगा की पायगा दसा की पायगा पूनखुदारी पायगा और बड़ी पायगा उस उम्र समय का प्रमुख घुड़साले था⁴⁸ । बड़ा हाथपद लगता है कि कोठारिया के सरदार के पास महला में जान के लिए एक भी घोड़ा नहीं था ।

बनल टांड की नियुक्ति महाराणा की सत्ता को प्रभावशाली बनाने तथा उनके जागीरगारों द्वारा दबाये गये गांवों को पुनः प्राप्त कराने में उनकी अधिक स्थिति का सुधारने विराज को प्रशस्ती मजदूरी पर कराने में महामता करने के लिए की गई थी ।⁴⁹ इस प्रशस्ती का पूर्ति के लिए उसने कायब्रम में सक्षम पहने प्राथमिकता महाराणा और जागीरदारों के सम्बन्ध को दी गई । उनके दरबार में हाजिर रहने कृष्ण घोड़े के साथ राजधानी में बने रहने तथा सालस के गांवों का वादम स्थितान धारि ऐसे विवादग्रस्त प्रश्न थे त्रिनको सत्तर महाराणा और जागीरदारों में उनका बना रहता था । इस विवाद का मूलभूत भाव था कि महाराणा ने महाराणा और जागीरगारों का बँटका में भाग दिया और उस महल का समाधान दूना गया परन्तु सरगारों का बँट में करना साधारण बात नहीं थी क्योंकि वे न तो दबाये गये गांवों को ही लौटाना चाहते थे और न महाराणा की इच्छा अनुसार मजदूरी जमीयत के खर्च में अपने समय तक रहकर पारसी देना चाहते थे । वे अपने प्राचीन मामलों अधिकारों को यथावत बनाये रखने पर बल दे रहे थे । महाराणा नामसिंह का हकीकत बहिया⁵⁰ में लगता है कि लगभग कालीब 1876 में कालीब 7 तक महलों जगन्निवास भीमविलास धारि स्थानों में तामर प्रदर न रान तक समझीन सम्बन्धी बँटके लगातार चलनी रही । एक स्थिति ता रावत भीर

48 हकीकत बहिया 1861 1880

49 एडम का पत्र टांड का 3 फ कांस 6 मार्च 1818 न 7 फा मा धा स्थिनी एडम का पत्र मन्काफ को, 2 फ कांस, 6 मार्च 1818 न फी मी दिनी

50 महाराणा नामसिंह की हकीकत बहिया वि स 1876

मिह इतना उत्तजित हो गया कि कनल टाड ने उसका विरोध किया और वह उठ कर चल गया। जो सरदार विरोध कर रहे थे उन्हें स्वयं महाराजा ने रात में ममभाषा में अत में 5 मई 1818 को 15 घण्टे के वाप-दिवाप के वाप एक कोलनामा तयार किया गया जिस पर बेगू के मरदार ने सबसे पहल हस्ताक्षर किये और तब अमट देवनड अति मोहन के मरदारों और अथ सरदारों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने हस्ताक्षर कर लिये। शतावती के मुख्य सरदार ने सबसे अत में अथ हस्ताक्षर किये।

कोलनामों का कुल दस धाराओं में सरदारों द्वारा दवाई गई खालमा नूमि के अथावा गण विस्वा कर अदि राज्य के हक परित्यागत अथन ठिकाना में चोरी न हान देने देशी या परदेशी सौभागरी बनजारों अदि ध्यापारिया की रक्षा करन महाराजा की आनानुसार सेवा करने, प्रजा के साथ मन्व्यवहार करन कोलनामों का पूरा निर्वाह करन और कोलनामों की अर्थ नया मानन वाप सरदार की उचित दण्ड दन का प्रावधान था।⁵¹

महाराजा भीममिह ने इन शर्तों के अतगत ठिकाना के खालसों के गावा का आच पडना न गुरू की और जागीरदारों से अपने असली पट्टों का मगवाया। पट्टा बही न 80 मवन 1877 से अत हाता है कि जिनके पाम पट्टे थे और उनके गावा का विवरण था उह छोडकर बाकी के गावा का खानम कर लिया गया और जिनके पट्टे नहीं पेश हुए, उ अहरगात्र भीण्डर अक गावा की ठिकाने के बड बूड़ों की याद के अतुनार नथ पट्टे कर लिये गये।

परन्तु फिर भी कोलनामों पर पूरा अमल नहीं होने पाया, जिससे अत 1827 में अथान कोड की दूसरा कोलनामा तयार करना पडा।⁵² टाड के अथ जान के वाप अथज अथिकारी अथों ने 1853 में सारी स्थिति को पुन आच की और टॉड के कोलनामों की अलोचना की गई। क्योंकि अमन अतून के अमा कराने का दापित्व सरदारों पर अला था और के अमका विरोध कर रहे थे। परन्तु टाड के अमपन में यह कहना है कि

51 कोलनामों की धाराओं के लिये दर्थे इस पुस्तक में प्रकाशित लेख

जेम्स टाड का मवाद सामन्ती के साथ कोलनामा पृ 142 - 45

52 अथान उन्धपुर राज्य का इतिहास भा 2, पृ 709

पुरानी सामाजी व्यवस्था के प्राचीन ढांच को बरत कर महाराणा की सत्ता की पुनर्स्थापना का प्रयत्न किया था क्योंकि पुरानी व्यवस्था को कायम रखने के बहाने सरकार अपने अधिकारों पर ता बल दे रहे थे परन्तु महाराणा के प्रति अपने कर्तव्यों की उपेक्षा कर रहे थे जो सवथा माय नहीं था । उनके विचार में परम्परागत संस्थाएँ विकास और सुधार में बाधाएँ उपस्थित कर रही थी उनके बने रहने का कोई औचित्य नहीं था और टाड का प्रयत्न व्यवस्था स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास था ।⁵

कनल टाड का दूसरा महत्वपूर्ण काम भवाड की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना था क्योंकि उस समय 30 000 रु में अधिक राजस्व की आय न थी । ब्रुक ने 1818 ई की राय की आय 120000 बताई है जो बढ़कर 1821 ई में 8 77 634 रु हो गई और 1822 में 11-12 लाख रु तक अनुमान किया गया । महाराणा श्रीसिंह की हकीकत बही से केवल जावर की खान में आय 50 हजार रु थी तो ब्रुक के आँकड़े टाड के आँकड़ों से अधिक विश्वस्त दीख पड़ते हैं । लगता है कि कनल टाड ने आय को कम बतलाकर बड़ी हुई आय बतलाने में उमन अपनी उपस्थिति का डिग्री पीटना चाहा हो । अपने समय के आर्थिक संकट की पुष्टि में जारावरमल से कज लिखाकर महाराणा के दैनिक व्यय के लिए 18 रु प्रति सफ़ा यात्रे दर से 1000 रु स्थिर किया । मूत्र के देने के लिए वह समय समय पर महाराणा को पत्र भी लिखता रहता था । एक दो पत्रों⁵⁴ में टाड ने लिखा कि आप भीम पटलन बनाकर और राज परिवार को सालसे की जमीन देकर राय की अथ व्यवस्था का मतुलन बिगडा रहे हैं । ऐसी हालत में कजशरा के मूत्र की अभावगी कैसे होने पायगी ? इस प्रकार की चिठ्ठियों में स्पष्ट है कि टाड महाराणा के शासन में सधि के विरुद्ध हस्तक्षेप करने लग गया था जिससे महाराणा तथा उसके अधिकारी वगैरे में ब्रिटिश सत्ता की ओर प्रतिलोचन की भावना पनपन लगी थी । सम्भवतः इस स्थिति का समझकर टाड जन धन आंतरिक गौतन प्रबंध से अपना हाथ सँचने लगा था जो उस समय के उमरे पत्रों ध्वनित से होता है ।

राज्य आय की वृद्धि हेतु सुधार के लिए टाड ने कई स्थानों की

53 हनरी जारेन्स का पत्र सेक्रेट्री गवर्नमेंट का दि 21 अगस्त 1855
कान्स 4 जनवरी 1857, न 115 फो पा 51 बरिष्ठ टाड(पालि)

54 कनल टाड का पत्र दि 1877 अ स 13, म घ केन्द्र

चूगी बमूला का काम मुकालेगारों को सुपुन किया और पुराने मुकालेगारों को बंधावन् बनाये रखा। इन चूगीयों के नाकों से हान वाली आय राज्य की आय का मुख्य साधन था। उसका कुछ एक पत्रों⁵ से प्रमाणित होता है कि वह इस आय स्रोत से बमूली में महाराणा की महापता करता था और उससे इस सम्बन्ध में आश्वस्त रहता था।

राजस्व बमूली में भी उसने कामदारों व अपने चपरामियों द्वारा बमूली की व्यवस्था की थी। इस दूसरे प्रबन्ध से यह आशय था कि राज्य के कामदार यदि बमूली में डिसाई करें तो उसका चपरामी बमूली में अनियमितता पर राक लगा सकें। आशय तो ठीक था क्योंकि अराजकता के कारण राजकाय कामगार बमूली में अपने स्वयं की सिद्धि करते थे जिस पर चपरामिया द्वारा उन पर अक्रुश रखा जा सकता था। परन्तु इस द्वय प्रबन्ध से कृषकों का अनुविधा होती थी और अपने प्रदायगी में कभी-कभी चपरामिया का दबाव भी असहनीय हो जाता था। आगे चलकर ये व्यवस्था बदल कर दी गई।⁶

ये तो ठीक है कि मराठा के आक्रमण और सरदारों के लूट-वसूली में भागीदारी के कारण कई व्यापारी मरवा ड्योडकर अथवा चले गये थे। कनस टाड ने घोषणा-पत्र निकाल कर किसानों और व्यापारियों का पुनर्नौटन और उनकी सुरक्षा का आशवासन दिया। फलतः कई व्यापारी पुनर्मेवाड लौट आए। परन्तु यह मारा श्रय कनस टाड का नहीं जाता। महाराणा भीमसिंह ने भी राजस्थान मध्यप्रदेश और संयुक्त प्रांत के व्यापारियों को समय-समय पर लगने वाले हाटों में आमंत्रित किया था। एक आदेश में महाराणा ने स्थानीय जागीरदारों का आग्रह किया कि वे अपनी अपनी अमनगारों के व्यापारियों को भी एकलिंग जी में हान वाली एक पाक्षिक मेले में भर्जे जिनकी सुरक्षा की व्यवस्था सरकार देगी और उनसे मत की चूगी माफ कर दा जायगी। महाराणा ने जयपुर सीरोज प्रयाग और पंजाब आदि प्रांतों में भी क्या आशय के घोषणा पत्र भेजे। इस प्रकार के घोषणा पत्रों से मरवाड की मुम्बवस्था पर तथा राज्य की आर्थिक

55 पत्र टॉड का भीमसिंह के नाम में 1876 का दि 6 म ध के- वहीं में 1877, पाना में 14,

56 टॉड का पत्र मटवाफ का 26 अथवा काम 12 जून 1819 न 34 35 को पो न आ दि 51 बगिठ पा सो पृ 32

नीति पर प्रकाश पड़ता है। महाराणा न इन्डार स सेठ ने जोरामप का उन्पपुर म बुलावर झपती पेड़ी स्थापित की। नये गड वमान किसानों का सहायता देने धार म लुटेरो को दण्ड दिवाने धीर राज्य में शान्ति स्थापित करने म धरना सहयोग दिया। 7

टॉड क सम्बन्ध म जो घालोष्य बिगू है उसम लगना है कि टॉड का मानम मभीपुरा इम म मवाद के साथ मधुर सम्बन्ध बनाये ररान का था परन्तु कुछ बातें स्पष्टता की बड़ा अड़ाधर सम्भवत उमन इमनिए मिरर दी क्योंकि प्रमुमता की नीति का धीरिय भी उन बतयाना था। दोनों पगों में सम वय बनाय रगना उसका खानुप धीर धाय - कुशमता का प्रमाण है।

—

57 सहीवारी का रिवाज श्रीमसिंह के समय का रजिस्टर न 1 म म ध के टॉड राजस्थान भा 1, पृ 555 562, घोन्ना, उन्पपुर राज्य का इतिहास, भा 2 पृ 706 709,

कालजयी अमर इतिहासकार टॉड

--एडवोकेट रघुचर सिंह छूटावत

कनल जेम्स टॉड का ग्रन्थ राजस्थान (एनलज) प्राज विश्व में एक अमर कृति बन गई है। उसमें एक माघ तान गुणा का समावेश है। राजस्थान का वैज्ञानिक तन्म स विज्ञान हुआ पहला इतिहास ग्रन्थ है। माघ ही उसकी भाषा में एक महाकाव्य की भाष्यता है। इन दोनों गुणा का साथ वह समाजशास्त्र का भी एक अनुपम ग्रन्थ है। इस प्रकार यह एक साया (महाग्रन्थ) है। और इसी के फलस्वरूप वह काल का सीमाप्रा को लाय कर आज भी अमर है।

प्राभा जी ने टॉड को राजस्थान के इतिहास का पिता कहा है। पर वानुसंगो ने बहुत ही श्रेष्ठ पूण शक्ति में लिखा है कि टॉड के रूप में राजस्थान की हेरोडोटस मिल गया।

टॉड की महानता लोगों ने स्वाकार न कर उसका समझन का प्रयास नहीं किया। उसने अल्पकाल में जो सेवा की है वह भूतार्थ नहीं जा सकती है। 1799 में वह भारत में आया व 1822 में चला गया। इस अल्प अवधि में उसने कई ग्रन्थों में विविध प्रायामों में जो राजस्थान की सेवा की है उतनी एक विद्वान् हीन हुए कोई व्यक्ति न कर सका।

सर्वप्रथम उसने राम पुर प्रान्त का सर्वेक्षण किया व एक महा नक्शा बनाया। इसके पहले कोई मानचित्र न था व जो थ पुर एकदम बलत था। नक्शा बनाने के बाद वह पारिवर्तिकल एजेंट बनकर आया और सारी व्यवस्था की। प्राथिक शिक्षा में सुधार लाने के लिए व्यापक प्रयास किया व सामंता के साथ कौलनम किया। तदन्तर भारत ऐतिहासिक नामग्री की इकट्ठा कर राजस्थान का इतिहास लिखा जा एक अनुपम कृति है। इसके फलस्वरूप राजपूत जाति की कीर्ति जो भारत में नामासुद्ध था वह भूगण्डन में पतन गई। टॉड ने शीघ्र के इतिहास से बीरा के उन्हारणे देकर यह सिद्ध किया कि त्रिन बीरा पर यूरोप गव करना है उससे राजस्थान में तो कहीं अधिक बीरा थोड़ा हुए है।

1931 में 'निहासकार' नामक मन्त्रालय में जब अग्रेजी में कहा कि यदि भारत को स्वराज्य दिया गया तो वह अपनी स्वाधीनता की रक्षा न कर सकेगी तब उत्तर में गांधी जी ने टाइ का उदहारण देकर कहा कि राजस्थान में काँ गांव ऐसा नहीं है जिसमें लानीडाम जमा वीर व कोई रण भय ऐसा नहीं जो अस्माधानी में कम हो। अतः रक्षा करने में हम सक्षम हैं। अग्रज निरुत्तर हो गये क्योंकि ऐसा कहने वाला स्वयं एक अग्रज था।

एतज का मन्त्रालय में तुलना की जा सकती है। जो भारतीय बाहु मय मन्त्रालय का स्थान है उनी स्थान राजस्थान में टाइ के 'एतज' का है।

इस घटके प्रमाणों में वान भारत में मुख्यतः बंगाल में जिस प्रकार महाभारत की कथाओं में वानीयम माघ ऋषि प्रमता मन्त्रालय का ग्राह्य महाभारत में ताक चपू, काव्य उदयमानों की रचना का उमा प्रकार इस आनुविध महाभारत से वीरमच चटकी विजे ब्रजान राय प्रमति विन्ता न ताककी व उपायमानों की रचनाओं की है। समूज भारतीय बाहु मय का एक नया दृष्टिकोण मिला है। पहले भारतीय बाहु मय में बबन पाण्डित्य कथामा की व पात्रों की भरमार थी पर टाइ के इन घटकों प्रमाणों के बाद गेतिहासिक प्रमा की बात आई। हम यह धरिभार पूर्वक कह सकते हैं कि साहित्य या राजनीति में जो 19 वीं शताब्दी में पुनर्जागरण हुआ है वह टाइ की दन है।

भारत का पहली बार महमूस हमें कि उसने पाप भी प्रताप दुगास चूडा कुम्भा साया जब अग्रतिम वीर है जिहान मध्य काल में अपनी अमिट छाप छोडी एमे चरित्रवान यक्ति लिए जा किसा राष्ट्र के लिए गौरव की बात है और जिनके अग्रज मूल्य अघकार में प्रकाशित सकेत हैं।

इस प्रकार टाइ राजस्थान के निमाण के लिए एक अवतारी पुरूप सिद्ध हुआ। उस व्यक्ति की महानता व उच्चता इसी से प्रकट होती है कि उसने जो सभ्यता जति चतुथ का समपण किया है उसमें प्राथना की है कि जो महान जाति जिसने पूरे एक महमस वप सधय कर युद्ध अकाल अराजकता को पराजित किया है वा आपके सरक्षण में आई है। आपका कर्षय होगा कि इस महान जाति का जीव ही पुनः स्वाधीनता प्रदान करें जा महान जतिश जाति के लिए एक गौरवपूर्ण कृत्य होगा। और श्री का उद्धत करत हुए 1947 के जुलाई में जब भारत मंत्री लाड पधिक नारं में मन्त्रालय में कहा कि हम जो स्वाधीनता भारत का दे रहे हैं उसकी नीव तो दूरदर्शी अग्रज विमानों ने पहले ही डाल दी थी।

हम मूल रूप में टॉड की दृष्टि को निम्नलिखित विद्वेषों में संक्षिप्त कर सकते हैं—

1. सर्वप्रथम टॉड ने राजस्थान का मानचित्र बनाया।
2. सचि के बाद ग्रामिक के रूप में वह सबसे 4 वर्ष रहा, पूरे शासन का सुदृष्ट कर दिया।
3. ग्रन्थ प्रबंध मुचालू रूप में इस प्रकार किया कि पूरा उजड़ा हुआ परगना फिर बस गया और 4 वर्ष में मात्र 4 गुनी हो गई।
4. सामंतों के साथ बिना विवाद के बातचीत कर उनको सतुष्ट कर दिया व सब तरह की शिकायतों व उपद्रव सत्तम कर लिए।
5. इतिहास जो राजा का बचि व स्थानों तक सम्मिलित था उसका पहली बार वृत्तान्तिक स्वरूप प्रदान किया फलतः उसका रचा इतिहास इतिहास की सीमाओं का साथ कर एक सागा (महाग्रन्थ) बन गया। जिस प्रकार महाभारत पंचम वेद बन गया उसी प्रकार टॉड राजस्थान (एनरुज) ग्रन्थ कदम इतिहास ग्रन्थ न रहकर एक विश्व कोष बन गया है। इसमें बीरों के चरित्र भूगोल समाजशास्त्र सामंती प्रथा की विवचना यात्राओं कृषि व मन्त्रिजों का विवरण राजपूतों की गौरव गाथाओं के साथ उनका सामाजिक कुरीतियों इत्यादि नाना का समावेश है। जसे महाभारत के लिए कहा गया है जो उसमें है व अग्रन्त भी है और जो इसमें नग है वह और बड़ी नहीं मिलता।
6. इसमें उपरांत जिस शता में लिखा गया है उसमें बारे में कहा गया है उसमें हमारे व्यास व चरित्रों का समावेश है। एसी भव्य मन्त्री व दशन हमारे ग्रन्थों में नहीं मानते हैं। हममें महाकाव्य की भव्यता दिखती है।

सक्षम मयह कहा जा सकता है टॉड ने 'राजस्थान' लिखकर भारत भूमि का गौरवावित किया स्वराज्य का भाग प्रशस्त किया व राजपूत जाति की कीर्ति का विषयव्यापी बना लिया। इस महापुरुष का एसा ही स्मारक बना कर राजस्थान को उन्नत माना चाहिए। पर चार राजस्थान इस वास्तविकी इतिहासविद का स्मारक बनाव या नही टॉड प्रत्येक राजस्थानवासी के हृदय में धरम बना रहेगा।

जब तक हृदीण्टी व दिव्य व रण मन्त्र सुश्रुत कर्मों जब तक प्रत्येक राजपूत धर्मन परो में जुझाव की पूजा करता रहेगा और जब तक सार सभार के पयटक प्रत्येक पुस्तक भण्डार पर टॉड राजस्थान ग्रन्थ करता रहेगा उस काव तक टॉड बिना स्मारक के ही धरम बना रहेगा। टॉड ने धरनी धरम कृति से काव व देश की सीमाओं का साथ कर उन मन्त्र वास्तव्या वाणी व वर पुत्रा में स्थान बना लिया = जिनका मानवता कर्मा ना नही मुना सकते।